

**TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182061

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Call No. H 83.7

Accession No. H 6299

G67A

Author

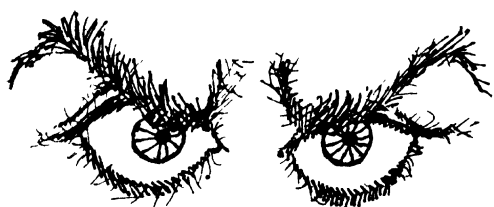
शिवकुमार शर्मा

Title

311यम स्वर

This book should be returned on or before the date last marked below.

आदमखोर



अपुनरुत्थान
श्रवणकुचार गोस्वामी

प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

प्रकाशक : प्रतिभा प्रतिष्ठान, १६८५ दखनीराय स्ट्रीट, नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली-२/सर्वाधिकार : सुरक्षित/संस्करण : प्रथम, १९९२/मूल्य : एक सौ रुपये
मुद्रक : अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२ ISBN 81-85827-01-X

AADAMKHOR *novel* by Shravan K. Goswami / Rs. 100.00

निवेदन

पाठकों की सुविधा के लिए यह बताना मुझे आवश्यक प्रतीत होता है कि इस उपन्यास में लगभग पैंतालीस वर्षों के काल-खंड को लिया गया है, जिसका विस्तार सन् १९४५ से १९९० तक माना जा सकता है।

आदमखोर

इमली टोली

: १ :

तब यह शहर बहुत छोटा था। मुश्किल से इसकी आबादी बीस हजार की रही होगी। इमली टोली में कुल मिलाकर यही कोई तीस-बत्तीस झोंपड़ियाँ थीं। बीच में तालाब और तालाब के पूरब, उत्तर तथा दक्षिण में ये झोंपड़ियाँ फैली थीं। पश्चिम की तरफ से एक रास्ता चौक की तरफ जाता था, जिस पर कभी-कभार मोटरगाड़ी भी दौड़ा करती थीं। जब इस रास्ते से कोई ट्रक या कार गुजरती तो बच्चे उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ते और खूब शोर मचाते। इस शोर को सुनकर घर की औरतें भी अपना-अपना काम छोड़कर बाहर आ जातीं। कुछ के मन में मोटर-गाड़ी देखने की लालसा होती और कुछ इस चिंता से बाहर निकल आतीं कि उनके घर का कोई बच्चा गाड़ी के चक्कों के नीचे न आ जाए।

इस मुहल्ले में इमली का कोई पेड़ नहीं है, फिर भी इस मुहल्ले का नाम इमली टोली है। कुछ लोगों का कहना है कि पहले तालाब के घाट के किनारे इमली का एक बहुत बड़ा पेड़ था। पेड़ पर हर साल बहुत इमलियाँ लगती थीं। इमलियाँ होती भी बहुत स्वादिष्ट थीं। आसपास के लोग अक्सर यहाँ इमलियाँ तोड़ने के लिए जमा रहते थे। लोग जितनी इमलियाँ तोड़ते, इस पेड़ पर उतनी ही इमलियाँ और निकल आती थीं—ऐसी लोगों की मान्यता थी। पेड़ की इस विशेषता के कारण लोगों में यह विश्वास भी जम गया था कि इस पेड़ पर कोई भूत रहता था। यह उसी भूत की करामात थी कि मौसम में पेड़ की इमलियाँ बार-बार तोड़े जाने पर भी कभी कम नहीं होती थीं।

लोग बताते हैं कि सन् १८५७ के गदर की आग इस नगर में भी फैली थी। अँगरेजों ने क्रांतिकारियों को खूब सताया था। एक दिन उसी इमली के पेड़ के नीचे एक लॉरी आकर रुकी। लॉरी से पच्चीस-तीस आदमियों को उतारा गया। सबके हाथ पीछे से बँधे हुए थे। एक मोटे और मजबूत अँगरेज ने बंदर की तरह इमली के पेड़ पर चढ़कर मोटी-मोटी रस्सियों को नीचे लटकाना शुरू कर दिया। जब रस्सियाँ लटका दी गईं, तब वह नीचे आकर रस्सी से बने फंदों की जाँच करने

लगा। जब यह काम पूरा हो गया तो उसने चिल्लाकर कहा था, “रेडी।” एक सिपाही एक स्टूल लेकर आगे बढ़ा। स्टूल की ऊँचाई यही कोई ढाई फीट रही होगी। उस सिपाही के पीछे चार सिपाही और चले। इन सिपाहियों के घेरे में एक विद्रोही था। उस विद्रोही से कहा गया कि वह स्टूल पर चढ़ जाए। स्टूल पर चढ़ने के लिए सामने एक और छोटा स्टूल रखा था। विद्रोही छोटे स्टूल को रौदता हुआ बड़े स्टूल पर आकर खड़ा हो गया। अब विद्रोही से कहा गया कि रस्सी के फंदे को वह खुद अपने गले में डाल ले। विद्रोही ने वैसा ही किया। उसके बाद मोटे अँगरेज ने जोर से स्टूल को अपनी लात मारकर गिरा दिया। एक जोर की चीख के साथ विद्रोही की जीभ बाहर निकल आई और दोनों आँखें फट-सी गईं। इस समय तक मुहल्ले के लोग जमा होकर तमाशा देख रहे थे—बड़ी उत्सुकता के साथ। लेकिन पहली फाँसी को देखते ही लोग भय से भाग खड़े हुए अपनी-अपनी झोंपड़ियों की तरफ।

बारी-बारी से सभी विद्रोहियों को उसी इमली के पेड़ की डालियों से लटका दिया गया। लगभग एक महीने तक पेड़ से लाशें झूलती रही थीं। चील और कौए लाशों को नोचते रहे। जब कोई लाश नीचे गिर पड़ती तो वहाँ कुत्ते और कभी-कभी सियार भी जमा हो जाते थे।

लाशों की बदबू और अँगरेजों के भय के कारण इमली टोली के लोगों ने लगभग दो महीने तक इस मुहल्ले को तब खाली कर दिया था। जब लोग मुहल्ले में फिर लौटकर आए तो लोगों ने देखा कि पेड़ की पत्तियाँ झड़ने लगी हैं। धीरे-धीरे डालियाँ भी सूखने लगीं। फाँसी-कांड के बाद पेड़ पर इमलियाँ फिर कभी नहीं लगीं और पेड़ धीरे-धीरे सूखता चला गया। एक दिन आँधी-तूफान में इमली का वह पेड़ भहराकर गिर पड़ा। उसी इमली के पेड़ के कारण इस मुहल्ले का नाम इमली टोली पड़ा है—ऐसा पुराने लोगों का मानना है।

तालाब के पूरब में मोचियों की कुछ झोंपड़ियाँ हैं। मर्द जूते बनाने और ढोल-ताशे बजाने का काम करते। औरतें भी कभी-कभी काम पर जातीं। पर उनका एक ही काम था। जब किसी के घर बच्चे का जन्म होनेवाला होता तो इन्हें बुलाया जाता। जो औरतें जितनी अनुभवी होतीं, उनकी उतनी ही ज्यादा माँग होती। इन औरतों का काम होता प्रसव करवाना और उसके बाद जच्चा की मालिश आदि करना। तब प्रसव-कार्य के लिए लोग अस्पताल या डॉक्टर के पास जाना बुरा मानते थे।

तालाब के उत्तरी हिस्से में कुछ डोमों और मुसलमानों की झोंपड़ियाँ थीं। एक कतार में मुसलमानों के घर थे और दूसरी कतार में डोमों के घर। डोमों के यहाँ बाँस से टोकरी, बेना (पंखा), सूप, टट्टी आदि बनाने का काम होता। कभी-कभी इन्हें अर्थी बनाने का भी काम मिल जाता। अर्थी बनाने का काम मिलने से ये ज्यादा

खुश होते; क्योंकि अर्थी में लगा बाँस इन्हें ही मिल जाता और उससे ये कई चीजे बनाकर बेच डालते थे। मरघट पर दान-दक्षिणा के अलावा इन्हें अर्थी से बहुत सारे कपड़े भी मिल जाते। इसके बाद दशकर्म तथा बारहवें या तेरहवीं के दिन इन्हें खाने-पीने का सामान भी मिल जाता। मरे हुए जानवरों को ढोने से भी इनकी कमाई हो जाती। गाय-भैंस के मरने पर तो इन्हें ज्यादा ही लाभ होता। लेकिन छोटे-से नगर में लोग कभी-कभी ही मरते थे और जानवरों का मरना तो बहुत ही कम होता था।

बाँस के बने सामान लेकर डोम-डोमिनें बुधवार और शनिवार को उन्हें बेचने के लिए बाजार जाते। बाकी दिन सभी घर पर ही रहते और काम करते हुए एक-दूसरे को भद्दी-भद्दी गालियाँ देते। कभी-कभी मार-पीट भी कर लेते। जब किसी हिंदू के घर श्राद्ध का भोज होता, डोमिनें अपने बच्चों के साथ वहाँ पहुँच जातीं। जब झूठी पत्तलें फेंकी जातीं तो वे पत्तलों पर झपट्टा मारतीं। पत्तलों पर पड़े अवशिष्ट खाने-पीने के सामानों को वे टोकरी में रखती जातीं। इस क्रम में अक्सर उन्हें कुत्तों का भी मुकाबला करना पड़ता। जब कुत्ते उन पर गुरगुराते तो आदमी और कुत्ते की यह लड़ाई देखते ही बनती। लेकिन कुत्ते इस लड़ाई में टिक नहीं पाते; क्योंकि उन्हें भगाने के लिए डोमिनें अपने बच्चों को साथ लेकर आतीं। उनके हाथ में एक डंडा भी होता था। भोज की जूठन जो घर के लोग खा सकते, खा लेते। बाकी जूठन सूअरों को दे दी जाती।

डोमों और मोचियों के यहाँ सूअरों की कोई कमी नहीं रहती थी। उनकी हर झोंपड़ी के सामने या पिछवाड़े एक सूअरबाड़ा जरूर दिखाई देता। इमली टोली के किसी भी घर में पाखाना नहीं था। औरत-मर्द सभी मैदान में ही जाते थे। मैदान की गंदगी की सफाई का काम सूअर बड़ी ईमानदारी और तन्मयता के साथ करते। जब किसी डोम या मोची के घर उत्सव जैसी कोई घटना होती, तब किसी सूअर की जान खतरे में पड़ जाती।

मुसलमानों के घर भी मोचियों तथा डोमों के घरों से मिलते-जुलते थे। उनके घरों में सिर्फ सूअरों का बाड़ा नहीं बना होता था। मर्द चाय-पानी पीकर अपने-अपने कामों पर निकल जाते। कुछ लोग झाड़वर थे तो कुछ लोग खलासी। कुछ घर ऐसे भी थे, जहाँ के प्रायः सभी लोग मोटर गाँरेजों में मिस्त्री का काम करते थे। चार-पाँच व्यक्ति बस के कंडक्टर भी थे, पर उनका काम बस के टिकट बेचना ही था। कई व्यक्ति ऐसे थे, जो रद्दी खरीदने और बेचने का काम करते थे। घरों से मर्दों के चले जाने के बाद औरतें तालाब के घाट पर जमा होने लगतीं। कुछ घर के गंदे बरतनों की सफाई में जुट जातीं और कुछ घाट पर पटक-पटककर कम्पों की धुलाई में लग जातीं। कुछ औरतें अपने घरों में बरतनों को धोकर बाहर देतीं।

दोपहर को अक्सर हर घर के बरामदे में औरतें बैठी नजर आतीं। सामान्यतः इस समय 'जूं-मारन अभियान' चलता। हर औरत के पीछे एक औरत बैठी मिलती, जो बड़ी तन्मयता से जूँ निकालने और मारने का काम करती। इस अभियान में मुस्लिम, मोचिन और डोमिन औरतें बिना किसी भेद-भाव के शरीक होतीं।

तालाब 'इमली तालाब' के नाम से आज भी जाना जाता है। इस तालाब में अब तक किसी को मछली मारते नहीं देखा गया है। कभी-कभी कोई बंसी डालकर बैठा भी तो उसकी बंसी में मछली नहीं फँसी। बंसी में कभी साँप फँस जाता तो कभी मेढक। पुराने लोग बताते हैं कि इस तालाब में पहले आधा-आधा मन तक की मछलियाँ हुआ करती थीं। मगर जब से इस तालाब के किनारे विद्रोहियों को फाँसी पर लटकाया गया तब से यह तालाब पूरी तरह मछली-विहीन हो गया।

इमली तालाब इमली टोली की जान है। इस तालाब में लोग नहाते, गंदगी डालते, गंदगी धोते और इसका पानी भी पीते। कुछ ग्वाले यहाँ अपनी गाय-भैंसों को हर दिन नहलाते। यह दोपहर का समय होता। इस समय मुहल्ले के बच्चे भी तालाब में तैरना शुरू कर देते। कुछ शरारती बच्चे तो गाय-भैंसों की पीठ पर बैठकर यमराज की नंगी मुद्रा में तालाब-यात्रा भी करते। प्रायः सभी झोंपड़ियाँ तालाब के किनारे-किनारे ही बनी थीं। हर झोंपड़ी के पीछे से एक गंदी नाली निकलती जिसका पानी तालाब में निरंतर गिरता रहता।

मुहल्ले के बच्चे गुल्ली-डंडा खेलने, गोली खेलने और गाली-गलौज में ज्यादा रुचि लेते। इनमें से अधिकांश नंग-धड़ंग रहते और उनकी नाक बहती होती। पास ही मिशन का स्कूल है, लेकिन पढ़ने के लिए वहाँ इस मुहल्ले का कोई बच्चा नहीं जाता। अक्सर यह होता कि उस स्कूल के कुछ बच्चे पेट खराब होने का बहाना बनाकर इसी मुहल्ले में खेलने के लिए चले आते। इनमें से कुछ बच्चे तो हर दिन स्कूल से भागकर यहाँ आ जाते और तालाब में मुहल्ले के अन्य बच्चों के साथ तैरना शुरू कर देते।

एक बार मिशन का पादरी इस मुहल्ले में आया। उसने मुहल्ले के सभी बच्चों को तालाब के घाट पर जमा किया। उसने सबको पढ़ने-लिखने का महत्त्व समझाया। इस पर सभी बच्चे मिशन स्कूल जाने को तैयार हो गए; क्योंकि पादरी ने बच्चों को रोज लेमनचूस देने का प्रलोभन दिया। बच्चों ने लेमनचूस लेकर उस दिन खा लिया, पर अगले दिन पढ़ने के लिए मिशन स्कूल में कोई नहीं गया। मुहल्ले के उम्रदार लोग पढ़ाई-लिखाई को बेकार का काम मानते थे। पादरी ने उन्हें समझाने की कोशिश कई बार की थी, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली थी।

पूरे मुहल्ले में न तो किसी की झोंपड़ी में घड़ी थी और न कोई घड़ी देखना ही जानता था। सुबह चार बजे जब गिरजाघर का घंटा बजता, तब मुहल्ले की औरतें

अपने-अपने घरों से निकलकर अपनी-अपनी झोंपड़ियों के पीछे फारिंग होने के लिए बैठने लगतीं। इसी समय सूअर भी अपने-अपने बाड़ों से निकल आते और चपर-चपर की आवाज से मुहल्ले को गुंजार कर देते। दिन में लोगों को समय का पता मस्जिद की अजानों से मिलता या फिर परछाईं देखकर लोग समय का अंदाज लगाते। जब मिशन स्कूल खुला होता तब दस बजे से चार बजे तक हर घंटे पर घंटी बजती और लोगों को समय का पता चलता जाता। मुहल्ले में यदि कोई ऐसा आदमी आ जाता जिसकी कलाई में घड़ी बँधी होती तो मुहल्ले के प्रायः सभी बच्चे, बूढ़े, लड़कियाँ और औरतें उससे जरूर पूछते, “केतना बजा है?”

जहाँ कभी इमली का पेड़ हुआ करता था, वहाँ उन दिनों लोहे का एक खंभा गड़ा था। उसके ऊपरी छोर पर चारों ओर शीशा लगा एक झोंपड़ीनुमा बक्सा लगा था। उसके भीतर एक लैंप था। शाम को लगभग पाँच बजते-बजते एक आदमी अपने कंधे पर एक सीढ़ी लादे आता। उसके एक हाथ में मिट्टी के तेल का एक कनस्तर होता। वह सीढ़ी लगाकर लैंप का कपाट खोलता और कपड़े से पोंछ-पोंछकर बक्से के शीशों की सफाई करता। इसके बाद वह लैंप निकलता और उसे लेकर नीचे उतर आता। लैंप में मिट्टी का तेल डालकर वह पुनः ऊपर जाता और दीयासलाई की तीली से लैंप जलाकर, कपाट को अच्छी तरह बंद कर नीचे आ जाता। लैंप की लौ को देखते ही मुहल्ले के बच्चे तालियाँ बजा-बजाकर नाचने लगते। बच्चों की तालियों की आवाज सुनते ही पूरे मुहल्ले को मालूम हो जाता कि शाम होने लगी है।

रात होते ही हर झोंपड़ी के भीतर ढिबरी जला दी जाती, जिसकी मद्धिम-मद्धिम रोशनी किसी-किसी झोंपड़ी के छप्पर को बेधकर बाहर निकलती दिखाई देती।

अँधेरा होते ही पूरा मुहल्ला एकाएक काँव-काँव करने लगता। कहीं पति-पत्नी झगड़ रहे होते, तो कहीं कोई बाप अपने बेटे को पीट रहा होता। कहीं सास-पतोहू का झगड़ा चल रहा होता तो कहीं जवान बेटे के साथ बाप के संग्राम की पैंतरेबाजी शुरू हो जाती। मुहल्ले के अधिकांश मर्द इस समय तक शराब के नशे में धुत्त होकर अपने-अपने घरों को लौटते। इनमें से जो रद्दी खरीदने-बेचने-वाले होते, वे अफीम और मदक का नशा करते। ये शराबियों की तरह चीखते-चिल्लाते तो नहीं, मगर इन पर एक अजीब निष्क्रियता जरूर सवार हो जाती। कभी-कभी ऐसा भी होता कि कोई शराबी अपनी बीबी को झोंटे से पकड़कर घसीटता हुआ रास्ते पर ले आता और वहाँ मुहल्ले के लोग बीच-बचाव करने या तमाशा देखने की नीयत से जमा हो जाते।

इस तरह शोर-शराबे, मार-पीट, गाली-गलौज और हंगामे के बीच से गुजरती हुई इमली टोली हर रात धीरे-धीरे नींद की गोद में लुढ़क जाती।

: २ :

गंदगी इमली टोली की तब भी पहचान थी और आज भी है। यहाँ के सूअरों, निवासियों तथा गंदगी के चलते कोई भी आदमी यहाँ आना पसंद नहीं करता। यहाँ कोई नया आदमी तभी नजर आता, जब उसे मरे हुए जानवर को फेंकवाने के लिए किसी डोम की जरूरत होती या फिर किसी के मरने पर अर्थी बनवाने की आवश्यकता होती। कभी-कभी लोग ढोल और ताशों की व्यवस्था करने के लिए भी आते। लेकिन यह कहना गलत होगा कि इमली टोली की पहचान सिर्फ गंदगी ही थी। इमली टोली का नाम इस शहर के कोने-कोने में प्रसिद्ध था तब। इसकी प्रसिद्धि का एकमात्र श्रेय शिवू भगत को प्राप्त था।

डोम पट्टी में रहनेवाला शिवू भगत भी जाति से डोम ही था। मगर सभी डोमों से बिलकुल अलग। नाटे कद का आदमी। लगभग पचपन की उम्र। साँवला रंग। गोल चेहरा। बड़ी-बड़ी पारदर्शी आँखें। चपटी नाक। सिर पर छोटे-छोटे काले और घने केश। दोनों कानों में लटकती सोने की छोटी-छोटी बालियाँ। माथे पर चंदन का टीका। गले में रुद्राक्ष की माला। घर पर धोती और गंजी पहनने की आदत। लेकिन घर से निकलने पर शिवू भगत का बाना बदल जाता। तब उसके शरीर पर साफ धुला कुरता और ठेठने के ऊपर तक धोती होती। हाथ में बेंत की एक छड़ी। पैर नंगे। सिर पर सफेद साफा।

यह बताना आवश्यक नहीं कि शिवू भगत सफाईपसंद था। घर में घरवाली के अलावा और कोई नहीं। घरवाली पूरे मुहल्ले में भगताइन के नाम से ख्यात थी। भगताइन भी अपने पति के समान ही साफ-सुथरी रहनेवाली थी। वह अपनी झोंपड़ी को लीप-पोतकर स्वच्छ रखती। इमली टोली में भगत का एकमात्र घर ऐसा था जहाँ सूअरबाड़ा नहीं था और जहाँ सूअरों का प्रवेश वर्जित था। भगत ने अपनी झोंपड़ी के सामने मिट्टी की थोड़ी ऊँची चहारदीवारी बना दी थी, जिसके सामने लकड़ी का एक छोटा-सा दरवाजा लगा था।

शिवू भगत का घर सूना इस अर्थ में था कि उसके आँगन में कभी अपने बच्चे की किलकारियाँ नहीं गुँजीं। मगर इस बड़े अभाव को दोनों ने मिलकर इस प्रकार पी लिया था कि उन्हें अपने निस्संतान होने का कभी कोई दुख ही नहीं हुआ।

शिवू भगत केवल नाम का ही भगत नहीं था। वास्तव में वह भगत ही था। उसमें कई गुण थे। अपने गुणों के कारण ही वह पूरे शहर में प्रसिद्ध था। उसकी ख्याति का अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि महीने में चार-पाँच बार उसके घर के सामने जरूर किसी-न-किसी की कार आकर रुकती—भगत को अपने साथ ले जाने के लिए। किसी को कैसी भी मोच आ गई हो, भगत के छूते ही मोच गायब हो जाती। शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द हो, भगत के मंत्र फूँकते ही दर्द हवा हो जाता। तंत्र-मंत्र, झाड़-फूँक, ओझाई तथा जड़ी-बूटियों का ज्ञाता

शिवू भगत इमली टोली की शान था। यही बात थी कि जब वह अपनी झोंपड़ी से निकलता तो हिंदू उसे राम-राम और मुसलमान सलाम जरूर बोलते।

भगताइन ने अपने पति से बहुत कुछ सीख लिया था। इसलिए नगर की औरतों के बीच उसकी भी काफी इज्जत थी। लेकिन दोनों ने कभी लालच नहीं किया। यदि वे चाहते तो इमली टोली में उनकी झोंपड़ी कब की पक्की इमारत बन गई होती। भगत और भगताइन दोनों का बड़ा सम्मान था इमली टोली में। परंतु शाम होते ही मियाँ-बीवी दारू पीकर, एक-दूसरे को गालियाँ देते-देते थककर सो जाते। कभी-कभी दोनों में मार-पीट भी हो जाती। दूसरे दिन जागने पर इसका भी पता नहीं चलता कि पिछले दिन भगत-भगताइन में गाली-गलौज या मार-पीट भी हुई थी।

जिस ओर मुसलमानों की झोंपड़ियाँ बनी थीं, उस हिस्से को लोग मियाँ पट्टी कहते थे। मियाँ पट्टी और डोम पट्टी आमने-सामने ही थीं।

शिवू भगत के घर के ठीक सामने अब्बास अली की एक कमरे की झोंपड़ी थी। झोंपड़ी के छप्पर पर कहीं-कहीं टीन के टुकड़े और कहीं-कहीं खपड़े लगे हुए थे। सामने जो दरवाजा लगा था, वह काफी नीचा था। फलतः झुककर ही झोंपड़ी में जाना और वहाँ से निकलना पड़ता था। कमरे में एक दरवाजा पीछे भी था। तब लोग घरों में खिड़कियाँ बनवाना पसंद नहीं करते थे। इसी कोठरी में चुल्हानी थी और इसी में लोगों का सोना भी होता था।

अब्बास अली चालीस का रहा होगा। पतला-दुबला चेहरा। तीखी नाक। गोल-गोल आँखें। माथे पर घुँघराले बाल हठ्ठियों की तरह। चारखाने की लुंगी और कुरता पहनने की आदत। गंदगी से कुछ ज्यादा प्यार। महीने में एक बार किसी जुम्मे को नहा लेने की विवशता। पूरे शरीर पर भालू के समान उगे बाल, जिन्हें छिपाए रखने के लिए वह कुरते के सभी बटन बंद रखता। बाँह भी वह बटनदार ही बनवाता ताकि उसकी कलाई भी ढकी रहे। मगर वह अपने इस ऐब को लोगों से छिपा नहीं पाता, क्योंकि उसके शरीर से बराबर एक तीखी गंध निकलती रहती। लोगों का कहना है कि इसी कारण अब्बास की कई शादियाँ तय हुईं और टूट गईं। तीस साल की उम्र तक अब्बास अली की शादी नहीं हो सकी।

एक दिन वह अपनी झोंपड़ी में ताला लगाकर एकाएक मुहल्ले से पंद्रह दिनों के लिए गायब हो गया। जब वह लौटा तो उसके साथ पच्चीस साल की एक खूबसूरत लड़की थी। अब्बास अली के लौटते ही इमली टोली के घर-घर में दुलहन की खूबसूरती की चर्चा हवा की तरह फैल गई।

उसी शाम अब्बास की झोंपड़ी में एक मौलवी साहब कुछ लोगों के साथ आए। उन्होंने निकाह पढ़वाया और अब्बास अली शादीशुदा हो गया।

कुछ ही दिनों के बाद लोगों को यह भी मालूम हो गया कि अब्बास की

घरवाली एक हिंदू लड़की है और वह किसी गाँव से सौ रूपए में खरीदी गई है। उसका असली नाम सोनिया है। इन नाम को बदलकर मौलवी साहब ने उसे एक नया नाम दे दिया—नूरजहाँ। तब इस तरह की किसी घटना के कारण कोई सांप्रदायिक तनाव नहीं पैदा हुआ करता था। फलतः इमली टोली के लोगों ने भी इस घटना पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। लोगों की निगाह में यह एक जायज शादी थी और इस शादी के बाद नूरजहाँ इमली टोली की बहू बन गई, जो आगे चलकर नूरी के नाम से मुहल्ले में जानी जाने लगी।

शादी के दस महीने के बाद ही अब्बास अली एक बेटे का बाप बन गया। लड़के का नाम उसने जहूर अली रखा। एक साल के बाद एक लड़की हुई। उसका नाम बेनजीर रखा गया। एक साल के बाद फिर एक लड़का हुआ—बेहद खूबसूरत, अपनी माँ की ही तरह। उसकी सुंदरता को देखते हुए किसी ने अब्बास से कहा, “इनका नाम आफताब अली रखो। देखना, अल्लाह ने चाहा तो तुम्हारा यह बेटा दुनिया में आफताब की तरह चमकेगा।”

इस तरह हर साल नूरी को बच्चे होने लगे। मगर आफताब के बाद पैदा होनेवाले बच्चे जी नहीं सके। पिछले दस वर्षों में नूरी ने कुल नौ बच्चों को जन्म दिया। छः तो गुजर गए और बचे सिर्फ तीन—जहूर अली, बेनजीर और आफताब अली। जल्दी-जल्दी बच्चों को जन्म देने के कारण सोनिया का सोने जैसा रूप गलकर कहीं बह-सा गया था। नूरी के चेहरे से अब कोई नूर नहीं टपकता।

अब्बास अली सुबह होते ही काली चाय में डुबोकर पापा खाता और अपनी पीठ पर एक बोरा डालकर घर ने निकल जाता। बोरे में एक तराजू होता और दो बटखरे। एक बटखरा एक सेर का होता और दूसरा आधा सेर का।

अब्बास अली मुहल्ले-मुहल्ले और गली-गली चिल्लाता हुआ घूमता—“रद्दीवाला...पुराना अखबार...काँपी-किताब...कागज...” कभी उसे कागज मिलता और कभी वह खाली हाथ ही घर लौट आता। जिस दिन वह कागज लेकर घर आता, वह अपना बोरा नूरी के सामने पटक देता। नूरी इसका मतलब समझ जाती। वह तुरंत बोरे को उलट देती और कागज भहराकर जमीन पर फैल जाते। नूरी अच्छे और मजबूत कागजों को छाँटकर अलग कर लेती। इस बीच अब्बास अली मैदान की तरफ हो जाता। नूरी उसे काली चाय में थोड़ी मुरही डालकर दे देती। अब्बास अली चाय पीने लगता और इधर नूरी छँटे हुए कागजों को तौलने लगती। कागजों को तौलने के बाद वह अब्बास की तरफ नजर उठाकर देखती। अब्बास अली मन-ही-मन कुछ जोड़-घटाव कर कागजों की कीमत बताता। यह सुनते ही नूरी तौले गए कागजों को सहेजकर एक किनारे रख देती। इसके बाद वह अपनी संदूकची खोलती। संदूकची से वह एक छोटी-सी लाल थैली निकालती। थैली के भीतर से वह कुछ सिक्के निकालती और उन्हें बार-बार गिनने के बाद अपने

खाविंद को थमा देती। अब्बास अली सिक्को को अपनी जेब के हवाले करता और बाकी बचे कागजों को बोरे में ठूसना शुरू कर देता। इस काम में नूरी भी उसकी मदद करती। बोरे में कागजों को भरने के बाद अब्बास अली उसे अपनी पीठ पर लादता और झोंपड़ी के बाहर निकल जाता।

नूरी अपने मियाँ से ही कागज खरीदती और खाली समय में उनसे ठोंगा बनाने का काम करती। इस काम में उसकी बेटी बेनजीर भी उसकी सहायता करती। जब ठोंगे बन जाते तब जहूर अली ठोंगों को आसपास की किराना दूकानों पर बेच आता। जिस दिन वह ठोंगा बेचकर आता, उसे एक अधन्नी (आधा आना) मिलती। अधन्नी से वह जो कुछ भी खरीदता, उसमें से थोड़ा अपने छोटे भाई आफताब और छोटी बहन बेनजीर को देना कभी नहीं भूलता।

लाला के हाथ कागज बेचने के बाद अब्बास भी दूसरे रद्दीवालों की तरह ही मदकखाने की तरफ चला जाता। वहाँ वह घंटों बैठा रहता और मदक पीता हुआ मदकियों की बातें ध्यान से सुनता रहता। कभी-कभी वह भी बोलता, परंतु खुद बोलने से ज्यादा उसे दूसरों की बातें सुनना पसंद था। मदकखाने से निकलते समय वह थोड़ी अफीम भी ले लेता जिसे वह घर पर सोते समय खा लिया करता। जिस दिन उसे कागज नहीं मिलता, उस दिन उसे उधार में मदक और अफीम की प्राप्ति मदकखाने से हो जाती थी।

अँधेरे में अब्बास अपने घर पहुँचता और खाना खाकर चुपचाप जमीन पर एक बोरा बिछाकर सो जाता। उस समय तक जहूर और आफताब भी सो जाया करते थे। उन सबके सो जाने के बाद नूरी ढिबरी के सामने बैठकर ठोंगे बनाने में लग जाती। कुछ देर तक बेनजीर भी अपनी माँ का साथ देती। पर ज्यादा देर तक वह काम नहीं कर पाती। नूरी जब उससे सोने के लिए कहती, तभी वह भी कोठरी के एक किनारे जाकर पहले से बिछे बोरे के ऊपर सो जाती।

प्रायः प्रतिदिन रात के साढ़े बारह बजे तक नूरी ठोंगे बनाती रहती। जब उसके कान में निसार मियाँ की साइकिल की घंटी सुनाई पड़ती, तब उसे पता चल जाता कि बारह से ज्यादा का समय हो गया है। निसार मियाँ सिनेमा में फिल्म चलाने का काम करता था। रात को शो बारह बजे तक खत्म हो जाता। इसके बाद मशीनरूम बंद करवाकर ही वह हर दिन घर लौटता था।

मियाँ पट्टी के लड़कों की उम्र जैसे ही छः या सात की होती, उन्हें किसी मोटरगैरेज में काम सीखने के लिए भेज दिया जाता। जहूर अली अब दस का हो गया था और आफताब अली आठ का। अब्बास मियाँ दोनों को गैरेज भेजने के चक्कर में था। लेकिन नूरी को यह पसंद नहीं था। वह तो अपने दोनों बेटों को मिशन स्कूल भेजना चाहती थी।

एक दिन चुपके से उसने दोनों लड़कों को मिशन स्कूल पहुँचा भी दिया था।

उस दिन तो इस बात का पता अब्बास को नहीं चल सका। अगले दिन शनिवार को जब दोनों बच्चे तड़के उठकर स्कूल जाने की तैयारी करने लगे, तब यह बात खुल गई। अब्बास ने दोनों को डाँट-डपटकर घर से बाहर निकलने से भी मना कर दिया। इस पर नूरी ने अब्बास का बड़ा विरोध किया। मगर नूरी की एक न चली।

अब्बास का कहना था, “क्या करेंगे ये दोनों पढ़-लिखकर? इमली टोली का कोई भी लड़का स्कूल जाता है क्या? मियाँ पट्टी के लौड़े गैरेज में जाते रहे हैं और ये दोनों भी वहीं जाएँगे।”

घर से निकलते समय अब्बास ने अपने दोनों बेटों को आदेश दिया, “चलो, आज तुम दोनों को सलीम उस्ताद के गैरेज में पहुँचा दें। उस्ताद का गैरेज यहाँ से ज्यादा दूर भी नहीं है।”

नूरी ने आगे बढ़कर आफताब को बलपूर्वक अपनी ओर खींच लिया और कहा, “हम इसको गैरेज में नहीं जाने देंगे।”

“तो क्या इससे भी ठोंगे बनवाएंगी तू?” अब्बास ने क्रोध से पूछा और आफताब को लपक लेना चाहा। नूरी पहले से ही सावधान थी, इसलिए अब्बास सफल नहीं हो सका। हारकर वह बड़बड़ाता हुआ जहूर को अपने साथ लिए सलीम उस्ताद के गैरेज की तरफ बढ़ गया। जहूर ने अपने अब्बा का तनिक भी विरोध नहीं किया। वह चुपचाप अपने अब्बा के साथ-साथ चलने लगा।

नूरी ने आफताब को एक बार बड़े प्यार से चूमा और उसे कसकर अपनी छाती से लगा लिया।

: ३ :

अब्बास अली की गृहस्थी की गाड़ी बस इसी तरह जैसे-तैसे चल रही थी। उसके मन में न तो कोई महत्वाकांक्षा थी और न उसे पूरा करने की ललक। सच तो यह है कि इमली टोली के हर घर का यही हाल था। सभी एक तरह से संतुष्ट-से लगते थे। यही कारण था कि इमली टोली की जिंदगी एक निश्चित ढर्रे पर चल रही थी।

नूरी देहात से आई थी। इमली टोली में आने के बाद उसने यह भी नहीं जाना कि वह जिस शहर में रहती है, वह कैसा है और कितना बड़ा है। घर-गृहस्थी से उसे कभी फुरसत ही नहीं मिलती कि वह कहीं जा भी सके। इमली टोली और खोखा बाबू डॉक्टर की दुकान के अलावा वह तीसरी जगह को जानती भी नहीं थी। उन दिनों शहर में एक ही सिनेमाघर था, जो नजदीक ही था। तब बहुत कम औरतें सिनेमा देखने जाया करती थीं। सिनेमाघर की वालकनी को बीच में लकड़ी की एक पतली दीवार देकर दो हिस्सों में बाँट दिया गया था। एक ओर संभ्रांत

किस्म के दर्शक बैठते थे और दूसरी तरफ औरतें। औरतों से टिकट का दाम कम लिया जाता और मर्दों से ज्यादा। मुस्लिम औरतें तो सिनेमा बिलकुल ही नहीं जाती थीं। जब वे घर से कहीं जातीं तो रिक्शे पर चादर का पर्दा पहले टँगवा देतीं फिर रिक्शे पर सवार होतीं। इस प्रचलन का प्रभाव हिंदू महिलाओं पर भी पड़ा। फलतः वे भी ऐसा ही करतीं।

उन दिनों यहाँ साइकिलरिक्शा नहीं चलता था। तब हथरिक्शे का ही जमाना था। दोनों पहिए लकड़ी के हुआ करते थे—बड़े-बड़े। रिक्शे को एक आदमी खींचता था। जब रिक्शा चलता तो 'गड़-गड़' की तेज आवाज होती थी।

उस समय तक इमली टोली ने यह नहीं जाना था कि बिजली कैसी होती है। शहर के कुछ पैसेवालों के घरों में बिजली थी, इसलिए उनके यहाँ से रेडियो बजने की आवाज भी सुनाई पड़ जाती थी। हाँ, इमली टोली में सिर्फ निसार मियाँ के घर एक ग्रामोफोन जरूर था। कभी-कभी वह ग्रामोफोन बजाता तो उसके घर के सामने हर उम्र के श्रोताओं की भीड़ लग जाती। 'अँखियाँ मिला के, जिया भरमा के चले नहीं जाना'—यह गाना उन दिनों काफी प्रचलित था और निसार मियाँ बार-बार इसी रेकार्ड को बजाया करता।

एक दिन अब्बास ने झोंपड़ी में घुसते ही नूरी से कहा, "जरा पीठ से बोरा उतार लो।"

उस दिन बोरे में काफी कागज थे और अब्बास का हाथ बोरे को पकड़े-पकड़े लाल हो गया था। नूरी ने बोरा उतार दिया। अब्बास ने तीन-चार बार हाथ को झटका तब उसे राहत का अनुभव हुआ। अपनी आदत के अनुसार वह मैदान की तरफ चला गया। नूरी बोरे को उलटकर अपने काम के कागजों को छाँटने में जुट गई।

'इलस्ट्रेटेड वीकली' को अब्बास 'इटली' बोला करता था, इसलिए नूरी भी उसे 'इटली' ही कहती थी। ठोंगा बनाने के लिए वह 'इटली' को ज्यादा पसंद करती थी; क्योंकि उसके कागज से ठोंगे मजबूत और जरा बड़े बनते थे। 'इटली' के ठोंगों की माँग भी ज्यादा हुआ करती थी। कागजों को छाँटते समय अक्सर दोनों लड़के भी आ जाते थे और वे तसवीरें देखने में लग जाते थे। आज भी यही क्रम जारी था। जहूर और आफताब एक 'इटली' को लेकर अलग बैठ गए थे और फोटो देखने में मशगूल थे। हर दिन की तरह बेनजीर अपने अब्बा के लिए चाय बनाने में लगी थी।

एकाएक एक 'इटली' से कुछ कागज गिर पड़े—सुंदर और दोनों तरफ छपे हुए। उन कागजों पर वैसा ही सिरकटा चित्र बना था, जैसा चित्र एक रुपए के नोट या सिक्कों पर बना होता था। नूरी को वे कागज बड़े लुभावने लगे। उन्हें उसने बार-बार उलट-पुलटकर देखा। उसे लगा कि वे कागज नोट जैसे ही थे, पर

ये बहुत बड़े-बड़े। वह समझ नहीं सकी कि वे कागज कैसे थे। उसने उन कागजों को सँभालकर अपनी संदूकची में रख दिया। उसने तय किया कि जब जहूर के अब्बा अकेले में होंगे तब वह उनसे पूछेगी कि ये कागज कैसे हैं?

हर दिन की तरह अब्बास मैदान से आने के बाद चाय पीकर कागज बेचने के लिए चला गया। उस दिन कागज बेचकर वह सीधे अपने घर चला आया। घर पहुँचते ही उसने नूरी से कहा, “आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। बदन में हलका-हलका दर्द है।”

नूरी ने जल्दी से जमीन पर बोरा बिछा दिया। उस पर उसने एक लेंदरा भी डाल दिया। अब्बास चुपचाप लेंदरे पर पसर गया। उसने धीरे-से पूछा, “बुतरू लोग कहाँ गए हैं?”

“उसमान मियाँ के घर के सामने कठपुतली का नाच हो रहा है। सब वहीं देखने गए हैं।” यह कह नूरी अब्बास अली के समीप बैठ गई और अपने मियाँ का बदन दबाने लग गई।

कुछ देर के बाद अब्बास बोला, “बस कर।”

नूरी को उन कागजों की याद आ गई। उसने कागजों को संदूकची से निकालकर अब्बास को दिखाया। उन कागजों को देखते ही अब्बास एकाएक उछलकर बैठ गया। वह बोला, “सामने का दरवाजा जल्दी से बंद कर दे।”

यह सुनकर नूरी कुछ सहम-सी गई। उसने तुरंत दरवाजा भिड़का दिया और पूछा, “क्या हुआ? आप इस तरह चौंक क्यों गए? कोई खास बात है क्या?”

“ये नोट तुझे कहाँ से मिले?” अब्बास ने थानेदार की तरह पूछा।

नूरी ने सहमी हुई आवाज में उत्तर दिया, “एक ‘इटली’ से मिले हैं।”

यह सुनते ही अब्बास ने नूरी को अपनी बाँहों में भर लिया। अपने मियाँ की यह हरकत नूरी को कुछ अच्छी नहीं लगी। वह छिटककर जरा दूर हट गई। उसने पूछा, “जरा हमको भी तो बताइए कि अचानक आपको यह क्या हो गया है, जो आप इतना बौरा रहे हैं?”

अब्बास तो खुशी से पागल हुआ जा रहा था। नोटों को बार-बार गिनते हुए वह बोला, “जहूर की अम्माँ, हम लोगों की तो किस्मत ही बदल गई। अब हम गरीब नहीं रहे।”

“अब हम गरीब नहीं रहे! यह क्या बोल रहे हैं आप? आप कहीं पगला तो नहीं गए हैं? झोंपड़ी में बैठे-बैठे आप अमीर कैसे बन गए?”

“अरे, तू नहीं जानती कि ये कागज क्या हैं?”

“हम नहीं जानते हैं कि ये कागज क्या हैं इसीलिए तो आपको दिखा रहे हैं। जरा हमको भी बताइए न कि ये कागज क्या हैं?”

“ये कागज नहीं हैं, पगली। ये तो सौ-सौ रुपए के दस नोट हैं यानी पूरे एक हजार।”

नूरी को अपने मियाँ की बात का विश्वास नहीं हुआ। वह पूछ बैठी “यह आप कैसे जानते हैं? सौ रुपए का नोट आपने कहाँ देख लिया?”

“सौ रुपए का नोट एक बार हमने लाला के पास देखा था।”

“किस लाला के पास?”

“जहाँ हम कागज बेचा करते हैं।”

यह सुनते ही नूरी काठ-सी हो गई। वह फटी-फटी आँखों से अब्बास के हाथ में पड़े नोटों को इस प्रकार देखने लगी मानो उसके मियाँ के हाथ में कोई खतरनाक चीज हो।

“क्यों, क्या हो गया तुझे? तू ऐसे क्यों देख रही है मेरी तरफ? ले इन नोटों को कहीं छिपाकर रख दे। किसी को इनके बारे में कुछ मालूम नहीं होना चाहिए।”

नूरी आगे बढ़ी। उसने नोटों को थामा और उन्हें संदूकची में किसी कपड़े के भीतर छिपाकर रख दिया। उसने यह काम तो कर लिया, पर वह एक बड़ी चिंता में पड़ गई। उसे भीतर-ही-भीतर बड़ा डर लगने लगा। उसने अब्बास के समीप आकर धीरे-से पूछा, “आज आपने ‘इटली’ कहाँ से खरीदी थी?”

“एक साहब की कोठी से।” अब्बास ने बताया।

“कौन साहब?”

“है एक साहब। तीन-चार दिनों में वह विलायत जानेवाला है। मगर यह सब तू क्यों पूछ रही है?”

“रुपया ‘इटली’ से ही मिला है। जाइए, जाकर साहब का रुपया लौटा दीजिए।”

“अभी।”

“हाँ, अभी।”

“पगली, पाया हुआ रुपया कोई लौटाता है क्या? उस साहब के पास तो बहुत रुपया है। उसको तो याद भी नहीं होगा कि उसने किसी ‘इटली’ में रुपया भी रखा है।”

“चाहे जो हो, आप उस साहब का रुपया लौटा दीजिए। हमें बड़ा डर लग रहा है भीतर से।”

“सुन, उस साहब के लिए एक हजार रुपया तो हाथ का मौल है। लेकिन हमारे लिए यह बहुत बड़ी दौलत है। तू यही समझ कि हमारी गरीबी पर तरस खाकर खुदा मियाँ ने इस घर पर यह मेहरबानी की है। खुदा मियाँ की इस मेहरबानी को मत ठुकरा वरना खुदा मियाँ हमसे नाराज हो जाएँगे।”

इसी समय दरवाजा खुला। तीनों बच्चे कठपुतली का नाच देखकर आ गए

थे। आफताब अपनी माँ को नाच के बारे में बताने लग गया।

“चलो अब तुम लोग खाना खा लो।” यह कहकर नूरी चुल्हानी के पास आकर बैठ गई। बेनजीर अपनी अम्माँ का हाथ बँटाने में लग गई।

□

खा-पीकर सभी सो गए। आज नूरी ठोंगा बनाने के लिए नहीं बैठी। वह भी बोरे पर आकर बेनजीर की बगल में लेट गई। आज उसकी आँखों में नींद नहीं थी। यों इस समय सोने की उसकी आदत भी नहीं थी। साढ़े बारह बजे के पहले तो वह कभी सो ही नहीं पाती थी।

उसे एक घटना याद आ गई। एक बार उसकी माँ का एक रुपया कहीं खो गया था। उस रुपए को ढूँढ़ने की उसने बड़ी कोशिश की थी, फिर भी उसे अपना खोया हुआ रुपया वापस नहीं मिल सका था। इस घटना के कारण कई दिनों तक वह काफी परेशान रही थी। नूरी सोचने लगी कि एक रुपया खो जाने पर तो उसकी माँ उतनी हैरान-परेशान हुई थी, तो उस साहब की क्या हालत होगी? वह साहब तो जरूर अपने घर में खूब चीख-चिल्ला रहा होगा और रो रहा होगा। हो सकता है कि रुपए खो जाने से वह विलायत भी न जा सके। मुमकिन है कि उसने विलायत जाने के लिए यह रुपया सँभालकर ‘इटली’ में रख छोड़ा हो। यह भी हो सकता है कि उसने यह रुपया अपनी मेम से छिगाकर रखा हो। चाहे जो हो, रुपया साहब को लौटाना बहुत जरूरी है। वह मुबह होते ही आफताब के अब्बा को रुपया थमा देगी और बोलेगी, ‘जाइए, साहब का रुपया लौटा दीजिए।’

मगर, क्या आफताब के अब्बा उसकी बात मान लेंगे? वह तो कह रहे थे, ‘यह खुदा मियाँ की मेहरबानी है हम पर।’ क्या खुदा मियाँ की इस मेहरबानी को वह लौटा देंगे? नहीं, नहीं, वह ऐसा कभी नहीं करेंगे। लेकिन हम भी इस धन को इस घर में कभी नहीं रखने देंगे। ऐसा करना पाप होगा। अगर हम लोग यह पाप करेंगे तो हम लोगों को इसकी सजा भी भुगतनी पड़ेगी। नहीं, नहीं, हमारे तीन-तीन बच्चे हैं...हम ऐसा कभी नहीं होने देंगे...यह खुदा मियाँ की मेहरबानी नहीं है...क्या पता अल्ला हमारा इतिहास ही ले रहा हो...कि देखें ये लोग एक हजार रुपया पाकर क्या करते हैं?...रुपया दबा लेते हैं या साहब को लौटा देते हैं...?

नूरी ने मन-ही-मन ठान लिया कि वह मुबह होते ही आफताब के अब्बा को साहब के घर रवाना कर देगी—रुपया लौटाने के लिए।

दूसरी ओर अब्बास अली भी जाग ही रहा था। उसके बदन का दर्द तो कब का छू-मंतर हो गया था। अब उसके मन में लड़ू फूट रहे थे। यह योजना बना रहा था कि इन रुपयों का क्या किया जा सकता है।

अब्बास ने सोचा कि वह घूम-घूमकर रद्दी खरीदने का काम अब बंद कर देगा और लाला की तरह ही अपना गोदाम बना लेगा। फिर उसने सोचा कि रद्दी

खरीदने और बेचने का काम ही गंदा है। इसलिए वह कोई नया धंधा शुरू करेगा। एक बार उसके जी में आया कि वह रिक्शे चलवाएगा। फिर उसे लगा कि यह काम भी अच्छा नहीं है। इसके बाद उसने तय किया कि वह चौक पर एक छोटा-सा होटल खोलेगा। इस काम में उसे फायदा-ही-फायदा नजर आया। लोगों से नगद पैसे लेकर खिलाओ और खुद मुफ्त में खाओ। दिन-भर पैसों के बीच खेलो। दूध की मलाई खाओ और मलाई से घी निकालकर बेच दो या खुद ही खा लो। होटल का सबसे बड़ा फायदा यह है कि घर में खाने-पीने की कोई कमी नहीं रहेगी। बच्चे भी खूब खाएँगे और नूरी भी बार-बार चूल्हा जलाने से बच जाएगी। उसने होटल का नाम भी सोच लिया—नूरी मुस्लिम होटल। फिर उसने सोचा कि अपनी औरत का नाम होटल के साथ नहीं जोड़ना चाहिए। नाम कुछ ऐसा रखना चाहिए कि बाहरी आदमियों को यह पता भी नहीं चल सके कि यह होटल हिंदू का है कि मुसलमान का। यह सब सोचते हुए अब्बास की आँखें कब लग गईं, उसे मालूम ही नहीं हो सका।

: ४ :

अब्बास अली अपनी पीठ पर बोरा लादकर घर से निकलने ही जा रहा था कि उसके सामने नूरी आकर खड़ी हो गई। उसने उसके हाथ में कलवाले नोट थमा दिए और कहा, “लीजिए, साहब को यह रुपया लौटा दीजिएगा। भूलिएगा मत। हम रात-भर सो नहीं सके हैं। बराबर यही लगता रहा कि घर में कोई खतरनाक चीज पड़ी है।”

अब्बास कुछ भी नहीं बोल सका। उसने चुपचाप अपनी जेब में रुपए रख लिए। जाते-जाते नूरी ने एक बार फिर कहा, “भूलिएगा मत। जरूर दे दीजिएगा साहब को।”

अब्बास ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप अपनी झोपड़ी से निकल पड़ा। आज उसके पैरों में अन्य दिनों जैसी गति नहीं थी। वह कुछ धीरे-धीरे चल रहा था। उसके मन में सवाल-जवाबों का तूफान उठ चुका था। वह खुद अपने से सवाल पूछता और फिर वह खुद को जवाब भी देता। उसे लगा कि उसके भीतर एक अब्बास और बैठा है, जो उसके सवालों का जवाब देता चल रहा था।

‘कैसी पगली है यह औरत ! चुपचाप मेरे हाथ पर लाकर रख दिया रुपया और बोल दिया—लीजिए साहब को रुपया लौटा दीजिएगा। —हमारे समझाने के बाद भी उसने ऐसा क्यों किया ?’

‘वह देहात की है न ! वह क्या जाने इन नोटों की कीमत। उसे यह मालूम ही नहीं है कि हम खट-खटकर मर भी जाएँगे तो भी हमारे पास इतना रुपया कभी नहीं जमा हो पाएगा। सौ-सौ के दस नोट यानी पूरे एक हजार रुपए। इतने रुपए से

हम चाहें तो गुजारे के लायक अपना एक घर भी खरीद सकते हैं या फिर एक छोटा होटल ही खोल सकते हैं।'

'नहीं। अभी घर खरीदना ठीक नहीं होगा। पहले होटल खोलना चाहिए। अगर होटल चल निकला तो नया घर भी बन जाएगा। लेकिन नूरी को कैसे समझाया जाए? वह तो जिद पर अड़ी है कि साहब...'

चलते-चलते अब्बास मिशन स्कूल के मैदान की तरफ निकल आया था। वह पल-भर के लिए रुका। उसे लगा कि उसके पैर अब और आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं थे। मैदान के अंतिम छोर पर ही उस साहब की कोठी थी, जिस साहब को रुपए लौटाने थे। अब्बास ने एक बार चारों तरफ अपनी निगाह दौड़ाई। मैदान पूरी तरह खाली था। आज शायद स्कूल में छुट्टी थी वरना इस समय तो यहाँ बच्चों का मेला नजर आता। वह एक पेड़ के नीचे अपना बोरा फैलाकर बैठ गया। अपनी जेब से उसने एक डबिया निकाली जिसमें चूना था और कागज की एक पुड़िया भी जिसमें खैनी थी। वह अपनी हथेली पर चूना तथा खैनी रखकर मलने लगा। खैनी मलते हुए वह कुछ देर के लिए रुपए लौटानेवाली बात को भूल-सा गया। खैनी के तैयार हो जाने पर उसने अपनी बाई हथेली पर पड़ी खैनी को दाहिनी हथेली से ठोका और एक लंबी-सी फूंक मारी। खैनी का वह हिस्सा सामने की तरफ उड़ गया, जो बिलकुल चूर्ण बन गया था। इसके बाद अब्बास ने थोड़ी खैनी जीभ के नीचे होंठ में डाल दी और बाकी को कागज की एक पुड़िया में बाँध-कर जेब के हवाले कर दिया। खैनी खाते ही वह बोरे पर पसर गया। उसके सोचने का क्रम फिर चालू हो गया।

'नूरी तो मूरख है। हम मूरख नहीं हैं। हम जानते हैं रुपए का मतलब। उसके कह देने से हम थोड़े ही यह बेवकूफी कर देंगे। अरे, यह तो अल्ला मियाँ की मेहरबानी है। नहीं तो रुपया हमारे ही घर क्यों आता? साफ है कि इसके पीछे अल्ला मियाँ का कोई करिश्मा छिपा हुआ है। वह तो सबसे बड़ा कारसाज है न। उसे तो सब मालूम है कि किसको क्या चाहिए। बुजुर्गों का कहना है कि अल्ला मियाँ एक मौका सबको देता है। जो इस मौके का फायदा उठा पाता है, उसकी जिंदगी बन जाती है और जो इस मौके से फायदा नहीं उठा पाता है, वह जहाँ-का-तहाँ ही रह जाता है। शायद अल्ला मियाँ ने वही मौका हमारे सामने पेश कर दिया है। हम चाहें तो इस मौके का फायदा भी उठा सकते हैं। नहीं-नहीं, हम इस मौके को कभी नहीं ठुकराएँगे। हम इस मौके का फायदा उठाएँगे—जरूर फायदा उठाएँगे।'

'लेकिन क्या ऐसा करना जायज होगा? कुरान में तो लिखा है कि आदमी को हराम की कमाई पर कभी नहीं जीना चाहिए। हर इन्सान को हराम की कमाई से दूर रहना चाहिए।'

‘तो क्या यह हराम की कमाई है?’

‘तो और क्या? यह तो हराम की कमाई है ही।’

‘वह कैसे?’

‘क्या तूने मेहनत करके यह रुपया कमाया है?’

‘नहीं।’

‘फिर कहाँ से मिल गया तुम्हें एक हजार?’

‘बस यों ही।’

‘जब तूने मेहनत नहीं की रुपया कमाने के लिए, तो इस रुपए पर तेरा कोई हक नहीं है। जा, जिसका यह रुपया है उसे ही लौटा दे।’

‘उसे ही क्यों लौटा दूँ?’

‘यह किसी की अमानत है।’

‘नहीं-नहीं, हम ऐसा नहीं कर सकते।’

‘तो क्या तू अमानत में खयानत करेगा?’

‘नहीं-नहीं, यह किसी की भी अमानत नहीं है। यह मेरी अमानत है।’

‘तो तू बेईमानी पर उतर आया है! क्या तू जानता है कि जो अमानत में खयानत करता है, उसे अल्ला की तरफ से कैसी सजा मिलती है?’

‘कैसी सजा मिलती है?’

‘ऐसा आदमी दाने-दाने से मुहताज हो जाता है और उसके बच्चे उससे छिन जाते हैं। इसलिए अगर तू अपने बच्चों की खैर चाहता है, तो तौबा कर अपने नापाक इरादे से और इसे उस आदमी को जल्द-से-जल्द लौटा दे, जो इसका असली मालिक है।’

अब्बास एकाएक उठकर बैठ गया। उसे लगा कि भीतर से किसी ने उसे उठकर बैठने को मजबूर कर दिया। देखते-ही-देखते उसका शरीर पसीने से तर हो गया। वह उठकर जरा टहलने लग गया। हवा लगने से धीरे-धीरे उसके बदन का पसीना सूखने लगा। इस समय उसे बड़ी राहत मिल रही थी। कुछ देर इसी तरह चहलकदमी करने के बाद उसने बोरे को उठाकर अपने कंधे पर रखा और बढ़ चला साहब की कोठी की ओर। अब उसने भी तय कर लिया था कि वह साहब की अमानत लौटा देगा।

कोठी के सामने पहुँचते ही अब्बास एकाएक ठिठककर खड़ा हो गया। आज उसने आगे बढ़कर लोहे के गेट को खोलने की कोशिश नहीं की। वह कुछ क्षणों तक गेट के सामने यों ही खड़ा रहा और फिर किसी सोच में पड़ गया। उसे लगा कि उसके भीतर एक तीसरा अब्बास भी छिपा है, जो उससे कुछ बोल रहा है, ‘बेवकूफ! कहाँ जा रहा है भीतर? यह तू कैसी नादानी करने जा रहा है? क्या कोई हाथ में आई दौलत इस तरह लौटाता है? बड़ा चला है ईमानदारी दिखाने! क्या

तू सचमुच ईमानदार है ? बोल है क्या तू ईमानदार ? रोज कागज तौलते समय तू हेरा-फेरी करता है और दो सेर कागज को एक सेर बना देता है । फिर भी तू आज ईमानदार बनने चला है । बोरे के भीतर तू चुंबक छिपाकर रखता है ताकि तराजू का पलड़ा उठे ही नहीं । हर दिन तो तू चोरी और बेईमानी करता है फिर क्या हो गया है तुझे आज ? क्या तुझे आज किसी पागल कुत्ते ने काट खाया है ?'

इसी समय साहब का शेर जैसा कुत्ता भूँकता हुआ गेट की तरफ लपका । उसे देखते ही अब्बास वहाँ से भाग खड़ा हुआ । उसे ऐसा लगा कि यदि वह वहाँ और खड़ा रह जाता तो कुत्ता उछलकर इस पार आ जाता और अब्बास के चीथड़े-चीथड़े कर डालता । वह हाँफता हुआ फिर उसी पेड़ के नीचे आ पहुँचा, जहाँ वह कुछ देर पहले लेटा हुआ था ।

अचानक अब्बास बुदबुदा उठा, 'या अल्ला, यह तूने हमें किस इतिहास में डाल दिया है ? न रुपया लौटाते बनता है और न रखते । अब तू ही बता हम क्या करें ?'

अब्बास ने अपनी जेब में हाथ डालकर देखा । नोट जहाँ-कहाँ पड़े थे मगर नोटों को छूते हुए ऐसा प्रतीत हुआ कि एक साथ दस बिच्छुओं ने उसे डंक मार दिया हो और डंक की लहर उसके सारे शरीर में फैलने लगी हो ।

अपना बोरा फैलाकर अब्बास उस पर बैठ गया । एक बात उसके मन में एकाएक कौंध उठी—वह रुपया अपने पास नहीं रखेगा । वह रुपया किसी के पास जमा कर देगा । मगर सवाल यह था कि वह रुपया जमा कहाँ करेगा ? लाला के पास ? नहीं, नहीं, लाला अच्छा आदमी नहीं है । वह बेईमान है । रुपया देखते ही वह हजार-हजार सवाल करना शुरू कर देगा । पूछेगा—कहाँ से लाए हो इतना रुपया ? क्या तुम्हारा अपना है ? मगर तुम्हारे पास एक हजार कहाँ से आ गया ? जरूर कोई गड़बड़ है । अच्छा ला, रख लेता हूँ । लेकिन याद रखना कि अगर कोई ऐसी-वैसी बात हुई तो अच्छा नहीं होगा ।

'पर नूरी पूछेगी तो हम क्या जवाब देंगे ?'

'तो बोल देंगे साहब को लौटा दिए ।'

'अगर उसने कह दिया कि खाओ मेरी कसम...' या कह दिया कि खाओ बच्चों की कसम, तो ?'

'यही तो मुश्किल है । साली बात-बात में कसम खिलाने लगती है ।'

'तो कसम भी खा लेंगे । क्या फर्क पड़ता है कसम खाने में ? हर दिन तो हम झूठी कसम खाते ही रहते हैं—अल्ला की । एक कसम और खा लेंगे ।'

'हाँ, यह हुई न मर्दोवाली बात । फिलहाल तू एक काम कर ।'

'क्या ?'

'लाला के पास रुपया जमा मत कर । लाला दबा भी सकता है । हो सकता है कि वह यह बात किसी और को बता दे । तब तू मुसीबत में पड़ सकता है ।'

‘तो क्या करें हम ?’

‘तू उस बंगाली प्रोफेसर के पास चला जा, जहाँ से तू बराबर अखबार खरीद करता है। वह ईमानदार आदमी है। उसके पास तुम्हारी दौलत महफूज रहेगी। इस बीच तू सोचता भी रह। जब कोई बात समझ में आ जाए तो अपनी रकम लेकर कोई नया धंधा शुरू कर लेना। इस बीच नूरी भी सब कुछ भूल-भाल जाएगी।’

अब्बास को लगा कि उसके सामने छाया हुआ कुहरा देखते-ही-देखते बिलकुल छंट गया है। उसके चेहरे पर खुशी की एक नई रंगत आ गई। वह उठा और पीठ पर अपना बोरा डालकर चल पड़ा।

अब अब्बास की चाल में तेजी थी।

: ५ :

अब्बास समय से पहले ही घर लौट आया। नूरी उसका ही इंतजार कर रही थी। अपने मियाँ को देखते ही उसकी बाँछें खिल गईं। उसने छूटते ही पूछा, “रूपया साहब को दिया कि नहीं ?”

“हाँ।” मरी-सी आवाज में अब्बास ने उत्तर दिया। अपने पीठ पर से बोरा उतारकर उसने एक तरफ फेंक दिया।

आज बोरा खाली था। उसे देखकर नूरी को अच्छा नहीं लगा। वह पूछ बैठी, “आज कुछ भी नहीं मिला ?”

“नहीं मिला।”

अब्बास अपने बोरे पर ही बैठ गया। उसे देखकर नूरी को यही लगा कि उसका खाविद आज काफी थक गया है। उसने पूछा, “लगता है बहुत थक गए हैं आप ?”

“नहीं। बस यों ही।”

“जब आपने रूपया लौटाया तो साहब ने कुछ कहा क्या ?” नूरी ने जानना चाहा।

अब्बास ने तो कल्पना भी नहीं की थी कि उससे यह सवाल भी पूछा जा सकता है। अब वह क्या जवाब दे ? वह कुछ सोचे, इसके पहले ही उसके मुँह से निकल गया, “साहब बहुत खुश हुआ।”

“साहब ने कुछ कहा या नहीं ?”

“हाँ।”

“क्या ?”

“यही कि...”

“हाँ, हाँ, बताइए न ? क्या कहा ?”

“अब क्या बताएँ ?...” अब्बास को जल्दी में कोई जवाब नहीं सूझ रहा था ।
 “साहब ने जो कहा, वही बताइए न ।” नूरी की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी ।

अब्बास क्या उत्तर दे, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था । वह एकाएक उठकर खड़ा हो गया और बोला, “जरा बधना तो दे । हम अभी आते हैं मैदान से होकर, तो पूरी बात बता देंगे ।”

नूरी लपककर पिछले दरवाजे तक गई और वहाँ पड़े बधने को उठा लाई ।

अब्बास बधना लेकर पहले तालाब की तरफ चला गया । तालाब से उसने बधने में पानी लिया और फिर मैदान की ओर बढ़ गया । अभी उजाला था, इसलिए उसे बधना लेना पड़ा । अगर अँधेरा होता तो वह बधना ढोने की तकलीफ भी नहीं उठाता ।

नूरी चूल्हे के सामने आकर बैठ गई । उसने चूल्हा सुलगाया और उस पर चाय का बरतन चढ़ा दिया । बेनजीर आज घर पर मौजूद नहीं थी । आफताब डोम पट्टी में कहीं खेल रहा था ।

अब्बास मैदान से लौट आया । उसके सामने चाय का कटोरा रखते हुए नूरी ने पूछा, “भूख तो लगी ही होगी । पापा खाएँगे तो ले आएँ ?”

अब्बास ने ‘हाँ’ में अपना माथा हिला दिया । नूरी कुछ पापे कागज पर रखकर ले आई । कटोरे की वगल में कागज रखकर वह बोली, “लीजिए, खाइए ।”

अब्बास काली चाय में पापा डुबोकर खाने लगा । नूरी अब्बास की तरफ बड़े ध्यान से देख रही थी । यह अब्बास ने ताड़ लिया । उसने पूछा, “क्या बात है ? आज तू मुझे इस तरह क्यों घूर रही है ? पहले तो तू ऐसा नहीं किया करती थी ?”

“आज आप बड़े अच्छे लग रहे हैं ।” यह बोलकर नूरी अपने मुँह को साड़ी के आँचल से ढककर हँसने लगी ।

अब्बास नूरी की इस बात से भीतर-ही-भीतर कहीं कटकर रह गया । उसे प्रतीत हुआ कि नूरी को शायद अब तक यह विश्वास नहीं हो सका है कि उसने साहब की अमानत उसे लौटा दी है ।

“आपने बताया नहीं कि रुपया लौटाने पर साहब ने आपसे क्या कहा ?”

नूरी के इस प्रश्न से अब्बास को बड़ी राहत मिली । वह शुरू हो गया, “रुपया लेकर साहब ने हमको बड़े ध्यान से देखा । उसने नोटों को गिनकर देखा । नोट पूरे थे । वह हमसे बोला—यू मैन, टुम बहोट ईमानडार मैन है । टेक, हम टुमको डस रुपीज बरुशीश में डेटा है ।”

“फिर ?”

“साहब ने हमारी तरफ दस रुपए का एक कड़क नोट बढ़ा दिया ।”

“फिर आपने क्या किया ?”

“हमने कहा—नहीं साहब, हम भीख नहीं लेता।”

“बिलकुल ठीक जवाब दिया आपने।” नूरी ने गर्व के साथ कहा।

“इस पर साहब बोला—मैन, यह भीक नहीं हाय। यह बख्शिश हाय—आई
...आई...पता नहीं इसके बाद क्या बोला वह अँगरेजी में...?”

“फिर?”

“साहब ने जबरदस्ती हमारी जेब में दस रुपए का यह नोट ठूस दिया।”
अब्बास ने कुरते की ऊपरी जेब से नोट निकालकर नूरी की तरफ बढ़ा दिया।

नूरी ने नोट ले लिया। नोट बिलकुल नया था और कड़क भी। नया नोट देखकर वह खुश हो उठी। इस पर अब्बास ने कहा, “देहातन, दस रुपए का नया नोट देखकर आज तू कितना इतरा रही है! मगर कल क्या हो गया था तुझे, जब तेरे पास सौ-सौ के ऐसे ही दस नए नोट थे? कल तू मरी क्यों जा रही थी?”

“वे नोट नहीं थे। वे साँप थे साँप। रात-भर हमें यही लगता रहा कि सँदूकची से एक साथ दस साँप फन काढ़े निकल आए हैं और हमें और हमारे बच्चों को उसने के लिए फूटकारें मार रहे हैं।” नूरी ने अभिनय के साथ कल की अपनी मनःस्थिति का चित्रण किया।

“यह तेरा वहम था।”

“नहीं जी। वह वहम नहीं था। हमें तो रात-भर ऐसा ही लगता रहा था। बड़ा अच्छा काम किया आपने जो सब साँपों को उनके साहब के पास ही पहुँचा दिया।”

“तेरे बहकावे में आकर हमने नोट लौटा तो दिए, लेकिन अब लगता है कि हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई।”

“क्यों?”

“बस ऐसा ही लग रहा है।”

“क्यों?”

“अब क्या बताएँ कि क्यों ऐसा लग रहा है।”

“रह-रहकर आपका मन डोल क्यों जाता है? सच-सच बताइए, आपने साहब को रुपया लौटाया कि नहीं?”

“लौटा दिया है।”

“सच?”

“हाँ सच। अल्ला कसम।”

नूरी जानती थी कि अब्बास बात-बात में ‘अल्ला कसम’ बोला करता था, इसलिए इस कसम पर उसका विश्वास नहीं जमा।

इसी समय आफताब आ गया। नूरी ने उसे रोककर अब्बास की तरफ बढ़ा दिया और कहा, “अल्ला कसम खाने से काम नहीं चलेगा। आफताब के माथे पर

हाथ रखकर कसम खाइए।”

“क्या?” अब्बास जरा ताब में आ गया।

“यही कि आपने साहब को रुपया लौटा दिया है।”

यह सुनते ही अब्बास क्षण-भर के लिए ठिठक-सा गया। एक बार तो उसका हाथ आफताब के माथे तक आ भी गया, पर फिर उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

“क्यों, क्या हुआ? अपना हाथ क्यों खींच लिया?”

“तू हम पर यकीन क्यों नहीं कर रही है?” अब्बास ने खीझकर पूछा।

“पता नहीं क्यों, यकीन नहीं हो रहा है।” नूरी ने बड़े साहस के साथ अपने मन की बात कह दी।

“तो तुझे यकीन दिलाने के लिए आखिर हम क्या करें? अब्बास अली की झुंझलाहट बढ़ने लगी।

“खाइए अपने बेटे की कसम।”

यह सुनकर अब्बास का चेहरा तमतमा गया। पर इसी समय उसकी कुटिल बुद्धि ने उसे एक राह दिखा दी। अब्बास ने आफताब के सिर पर अपना दाहिना हाथ तुरंत रख दिया और कहा, “हम अपने बेटे की कसम खाते हैं कि हमने प्रोफेसर साहब को सौ-सौ के दस नोट दे दिए हैं।”

“यह परो...फेस...र...कौन आ गया बीच में?” नूरी ने ताज्जुब के साथ पूछा।

“साहब प्रोफेसरी करता है।”

यह सुनकर नूरी को अब यह विश्वास हो गया कि उसके मियाँ ने आज पहली बार सच्ची कसम खाई है।

□

जहूर अली गैरेज से सात बजे तक लौट आया करता था, लेकिन आज वह पहले ही आ गया। आया क्या, गैरेज से एक लड़का जहूर को अपने साथ रिक्शे पर बिठाकर यहाँ तक ले आया था। जहूर का बदन तबे की तरह जल रहा था और वह सिरकटी मुरगी की तरह छटपटा रहा था।

नूरी ने जल्दी से जमीन पर एक बोरा बिछाया और उस पर एक लेंदरा डालकर जहूर को लिटा दिया। जहूर के सारे शरीर में दर्द हो रहा था और वह, “हाय बाप...हाय मैया...” बोल-बोलकर चिल्ला रहा था। एकाएक उसे कँपकँपी भी होने लगी। नूरी ने एक दूसरा लेंदरा लाकर उसके शरीर पर डाल दिया। कँपकँपी बढ़ती ही जा रही थी। अब जहूर चिल्ला रहा था, “जाड़ा लग रहा है...हाय बाप...हाय मैया...बहुत जाड़ा लग रहा है...”

नूरी ने बेनजीर से कहा, “जा फकरू के घर से एक कंबल माँगकर ले आ।

जल्दी से। पूछे तो बता देना कि जहूर को जाड़ा देकर बुखार आ गया है। उसको ही ओढ़ाना है।”

बेनजीर जल्दी ही कंबल लेकर वापस आ गई। जहूर के शरीर को नूरी ने दोहरे कंबल से ढक दिया। इस पर भी जहूर तड़पता ही रहा। नूरी अब क्या करे, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह जहूर की बगल में खुद लेट गई और उसने कसकर उसे अपनी बाँहों में भर लिया ताकि जहूर की कैपकपी बंद हो सके। कुछ देर ऐसे ही चिपकाए रहने से जहूर का काँपना तो थोड़ा कम हो गया, लेकिन उसका बुखार ज्यों-का-त्यों था। पूरा शरीर अभी भी जल रहा था। नूरी के मन में आया कि वह जहूर को खोखाबाबू डॉक्टर के पास ले जाए, मगर जहूर तो ले जाए जाने की स्थिति में भी नहीं था।

बेनजीर और आफताब दोनों बुत की तरह खड़े होकर सब कुछ देखते चल रहे थे। दोनों ने ऐसा दृश्य इसके पहले कभी नहीं देखा था। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि जहूर को क्या हो गया है।

नूरी ने बेनजीर से कहा, “बेटी, जा जरा भगत मौसा को बुला ला।”

“अम्माँ, भगत मौसा तो चले गए।” नूरी ने अपनी जगह पर खड़े-खड़े बता दिया।

“कब?”

“अभी-अभी गए हैं। हम कंबल लेकर आ रहे थे, तो वह जा रहे थे।”

“तो जा देख तो भगताइन मौसी घर में हैं कि नहीं?” नूरी ने फिर कहा।

बेनजीर तुरंत झोंपड़ी से निकल पड़ी। उसने लौटकर बताया, “मौसी आ रही हैं।”

भगताइन ने आते ही पूछा, “क्या बात है, बेटी? क्या हुआ?”

नूरी की दोनों आँखें अनायास ही छलक पड़ीं। उसने सिसकते हुए कहा, “देखो न मौसी, जहूर को क्या हो गया है।”

भगताइन ने जहूर को बड़े ध्यान से देखा। उसके पूरे शरीर को छुआ और तब वह बोली, “जरा ढिबरी यहाँ लेकर आओ तो।”

नूरी ने भगताइन के हाथ में ढिबरी दे दी। ढिबरी की मद्धिम रोशनी में भगताइन ने जहूर के हाथ, पाँव, पेट और गालों को छू-छूकर देखा।

“क्या बात है, मौसी?” नूरी ने चिंतित स्वर में पूछा।

“बेटी, अभी कुछ झलक नहीं रहा है। बस, इसको अभी कोई दवा-उवा मत देना। कल सुबह तक अपने आप पता चल जाएगा।”

यह कहकर भगताइन ने नूरी को ढिबरी थमा दी।

: ६ :

बुखार और बदन के दर्द के कारण जहूर रात-भर बेचैन रहा। कभी-कभी वह बड़बड़ाने भी लगता। उसके बिस्तर पर नूरी थी। रात-भर वह भी जागती रही। आधी रात तक तो अब्बास भी जागता रहा, पर बाद में उसे नींद आ गई। नूरी ने अब्बास को जगाए रखना ठीक नहीं समझा। बेनजीर और आफताब तो कब के सो गए थे। रात को खाना बनाना भी संभव नहीं हुआ। अब्बास होटल से कुछ रोटियाँ खरीद लाया था। घर में दाल बनी रखी थी। सबने दाल-रोटी खाकर काम चला लिया। नूरी तो वह भी नहीं खा सकी।

निसार मियाँ की साइकिल की घंटी की आवाज जब नूरी को सुनाई पड़ी, तब उसे पता चला कि आधी रात गुजर गई है। आज उसे पूरे मुहल्ले में बड़ा सन्नाटा लग रहा था। कहीं से कोई आवाज नहीं आ रही थी। आज उसे पहली बार यह पता चला कि आधी रात के बाद का सन्नाटा कितना डरावना होता है।

पीछे तालाब भी बिलकुल शांत था। कभी-कभी उसमें से छप्प की आवाज आती। यह कैसी आवाज है? इस तालाब में तो मछलियाँ हैं ही नहीं। मछलियाँ नहीं हैं तो क्या हुआ? इसमें बेंग तो काफी हैं। कभी-कभी इस तालाब से साँप भी निकल आते हैं। साँप की याद आते ही नूरी के सामने एक काल्पनिक चित्र उभरने लगा। उसने देखा कि उसकी आँखों के सामने कल के दसों नोट साँप का रूप धारण कर प्रकट हो गए हैं। उसे ऐसा लगने लगा कि सारे के सारे साँप आज जहूर के बिस्तर के चारों ओर अपने-अपने फन फैलाए फूटकारें मार रहे हैं। जब कोई साँप जहूर को डसने के लिए अपना फन बढ़ाता तो नूरी उसके सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगती। नूरी को अचानक झपकी आ गई और उसकी आँखें कुछ पल को लग गई। इसी बीच उसके कानों में जहूर की एक चीख सुनाई पड़ी। नूरी ने आँखें खोलीं। उसने देखा कि जहूर के माथे से खून बह रहा था और वह ठंडा पड़ चुका था। साँप अब गायब थे।

नूरी एक बार काँप उठी। उसने जहूर को एक बार फिर कसकर अपनी बाँहों में भरकर छाती से चिपका लिया। जहूर को अब नींद आ गई थी और वह आराम से सो रहा था।

नूरी सोचने लगी कि बार-बार उसके सामने सौ-सौ के नोटों की याद क्यों आ जाती है? क्या उसके मन में भी कोई पछतावा है? नहीं, ऐसी बात नहीं है। वह तो खुश है कि उसके मियाँ ने साहब का रुपया लौटा दिया है।

नूरी सोचने लगी, जब हमने आज ही यह एक अच्छा काम किया है, तो हमारा बेटा बीमार क्यों पड़ गया? क्या अल्ला को यह मालूम नहीं हुआ कि हमारे मियाँ ने आज एक कितना नेक काम किया है? आज के जमाने में कौन ऐसा काम करता है? रास्ते पर अधन्नी पड़ी मिल जाने पर तो लोगों की नीयत बेईमान

हो जाती है। यह तो एक हजार रुपए का मामला था—पूरे एक हजार का। अल्ला को अगर मालूम न भी हुआ तो अब मालूम हो जाएगा। जब उसे मालूम हो जाएगा तो जहूर भी जरूर ठीक हो जाएगा। लगता है कि शायद अल्ला को अब यह बात मालूम हो गई है। इसीलिए तो जहूर को अब नींद आ गई है। मगर, यह क्या? इसका बदन तो अभी भी तबे जैसा ही तप रहा है। ऐसा क्यों? क्या कहीं कोई गड़बड़ी है? अल्ला तो अपने सच्चे बंदों को कभी भी कोई तकलीफ नहीं पहुँचाते।

नूरी को एक बात सताने लगी। उसने अपने सोए हुए मियाँ की तरफ एक बार देखा। वह फिर सोच में लीन हो गई। यह आदमी बुरा नहीं है। इसमें बुराई बस यही है कि यह बात-बात में अल्ला की कसम खाता है—वह भी झूठी कसम। पता नहीं दिन-भर में यह कितनी बार अल्ला की झूठी कसमें खाता है? लोगों का कहना है कि झूठी कसम कभी नहीं खानी चाहिए। अगर कोई अपनी बीवी की झूठी कसम खाता है तो उसकी बीवी मर जाती है। अगर कोई अपनी औलाद की झूठी कसम खाता है तो उसकी औलाद मर जाती है।

यह सोचते ही नूरी एक बार काँप उठी। वह मन-ही-मन सोचने लगी—यह आदमी अगर अल्ला की झूठी कसम खा सकता है तो क्या अपनी औलाद के नाम पर झूठी कसम नहीं खा सकता है?

शाम के समय का वह पूरा दृश्य नूरी की आँखों के सामने आ गया जब अब्बास अपने छोटे बेटे आफताब के माथे पर हाथ रखकर कसम खा रहा था।

नूरी के मन ने खुद अपने से ही सवाल-जवाब करने शुरू कर दिए—

‘क्या आफताब के अब्बा आफताब के सिर पर हाथ रखकर झूठी कसम भी खा सकते हैं?’

‘जो आदमी बार-बार अल्ला के नाम पर झूठी कसम खा सकता है, वह सब कुछ कर सकता है।’

‘क्या अपनी औलाद की भी झूठी कसम खा सकता है वह?’

‘क्यों नहीं?’

‘क्या उसे इसका डर नहीं कि इसका उसकी औलाद पर क्या असर होगा?’

‘जिस आदमी को खुदा की परवाह नहीं, वह अपनी औलाद की क्या परवाह करेगा?’

‘अपनी औलाद की बात ही कुछ और होती है।’

‘वह तो है, मगर औलाद खुदा से बड़ी चीज तो नहीं होती।’

नूरी की आँखों के सामने हलका-सा अँधेरा छाने लगा और उसके भीतर शक के बादल मँडराने लगे। वह धीरे-से उठी। दीवार पर ठुकी काँटी के सहारे अब्बास का कुरता टंगा हुआ था। उसने उतारकर हर जेब की तलाशी ली। सौ-सौ के नोट

कहीं नहीं थे। यह देखकर उसने राहत का अनुभव किया।

नूरी के मन के भीतर सवाल-जबाब फिर शुरू हो गए—

‘जेब में तो नोट नहीं हैं। इसका तो यही मतलब हुआ कि जहूर के अब्बा ने सचमुच साहब को रुपया लौटा दिया है। यह आदमी बिलकुल झूठा तो नहीं ही लगता है।’

‘लेकिन रुपए-पैसे के मामले में बड़ों-बड़ों की नीयत पलट जाती है। देखा नहीं, कल यही आदमी क्या-क्या बोल रहा था? यह बोल रहा था—तू यही समझ कि हमारी गरीबी पर तरस खाकर खुदा मियाँ ने इस घर पर मेहरबानी की है। खुदा मियाँ की इस मेहरबानी को मत ठुकरा वरना खुदा मियाँ हमसे नाराज हो जाएँगे। जो आदमी ऐसा है, वह इतनी आसानी से इतनी मोटी रकम लौटा आया होगा—यह मानने की बात नहीं है।’

‘मगर इसकी जेब में तो कुछ भी नहीं है। इसका तो यही मतलब है कि जहूर के अब्बा ने रुपया लौटा दिया है।’

‘यह भी तो हो सकता है कि इस आदमी ने रुपया किसी के पास जमा कर दिया हो?’

‘किसके पास?’

‘किसी के भी पास।’

‘नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।’

‘इस पापी और बेईमान दुनिया में क्या नहीं हो सकता है? रुपए के लिए जब बाप अपनी जवान बेटी को बेच सकता है तो...?’

यह सोचते ही नूरी काँप उठी। उसे वह दृश्य याद आ गया जब इसी आदमी ने चाँदी के सौ सिक्के उसके बाप को दिए थे और सोनिया के बाप ने सोनिया को अब्बास अली के हवाले कर दिया था। नूरी की आँखें अनायास ही बहने लगीं।

नूरी के मन का आत्मालाप पुनः चालू हो गया —

‘हमारे बाप ने तो गरीबी के कारण ऐसा किया था।’

‘तो तेरा मियाँ कौन-सा धन्ना सेठ है? यह भी तो एक गरीब आदमी ही है। अगर तेरा बाप रुपए के लिए तुझे बेच सकता है तो क्या एक हजार के लिए यह अब्बास अपनी औलाद की झूठी कसम भी नहीं खा सकता है? एक हजार के लिए तो दस बेटे-बेटियों के माथे पर हाथ रखकर झूठी कसम खाई जा सकती है।’

नूरी रो पड़ी। उसने जहूर को अपनी छाती से और कसकर चिपका लिया। इस समय अगर यमदूत भी जहूर को लेने आ जाता तो वह जहूर को नूरी से अलग नहीं कर सकता था। उसे जहूर के साथ जहूर की अम्माँ नूरी को भी ले जाना पड़ता।

नूरी जहूर से अलग होकर उठ बैठी। उसने दोनों हाथ जोड़कर अपनी आँखों

को मुँद लिया। वह मन-ही-मन प्रार्थना करने लगी। वह अपने जेहन में खुदा को लाना चाह रही थी। पर खुदा का आकार-प्रकार कैसा होता है, यह तो वह जानती ही नहीं थी। इसलिए उसके मन में कोई छवि ही नहीं बन पा रही थी। उसे तो अब्बास ने आज तक यह भी नहीं बताया था कि नमाज कैसे पढ़ी जाती है। घर में ऐसी कोई तसवीर भी नहीं टँगी थी जिसके सामने जाकर वह प्रार्थना कर पाती।

जब-जब वह अपने हृदय में खुदा की कोई छवि बिठाना चाहती, वहाँ हनुमानजी की छवि उपस्थित हो जाती। उसने बड़ी कोशिश की कि उसके हृदय में हनुमानजी की छवि न आए, पर ऐसा नहीं हो पा रहा था। हारकर वह हनुमानजी को ही अपने हृदय में बिठाकर उनसे प्रार्थना करने लगी, “हे बजरंगबली ! हे हनुमानजी ! अब तुम्हीं मेरे बेटे की रक्षा कर सकते हो। इसे बिलकुल ठीक कर दो। हमसे अपने जीवन में कोई पाप नहीं हुआ है। आज ही हमने एक नेक काम किया है। जहूर के अब्बा ने साहब का खोया हुआ रुपया साहब को लौटा दिया है। इसकी वह कसम भी खा चुके हैं। गरीब होकर भी हमने लालच नहीं किया। क्या यह इसी पुण्य का फल है कि मेरा बेटा जहूर बीमार पड़ गया है ? अगर मेरा जहूर कल सुबह तक बिलकुल ठीक नहीं हो गया तो हम यही मानेंगे कि तू भी झूठा है।”

नूरी को लगा कि उसके कान में धीरे से कोई फुसक गया है, “पगली, तू मुझे झूठा बना रही है ? क्या तेरा खसम झूठा नहीं हो सकता ?”

प्रार्थना में मुँदी नूरी की दोनों आँखें फट से खुल गई और वह अपने मियाँ के चेहरे की तरफ ध्यान से देखने लगी।

मजे में सो रहा था अब्बास। उसके चेहरे पर ऐसा कुछ भी नहीं था जिसके आधार पर यह अनुमान लगाया जा सके कि उसे कोई फिक्र भी है।

नूरी का मन तर्क-वितर्क में फिर लग गया—

‘यह आदमी किस ठाठ से सो रहा है ! इसे इस बात की जरा भी परवाह नहीं है कि इसका बड़ा बेटा बीमार है। इसकी बीवी दिन-भर काम करती रही है और अभी भी रात में अकेली जाग रही है। अगर इसके मन में अपने बेटे के लिए प्यार होता तो यह भी अभी जाग रहा होता। वह बोलता—जहूर की अम्माँ, अब तू सो जा। अब हम बैठते हैं इसके पास। जा, थोड़ा आराम तू भी कर ले।—मगर यह आदमी तो खरटि भर रहा है। सच तो यह है कि इस आदमी को न तो हमसे मुहब्बत है और न हमारे इन बच्चों से। इस आदमी को किसी से कोई मुहब्बत नहीं है। हाँ, इसकी आँखों में पहली बार मुहब्बत की एक झलक दिखी थी—जब इसने मेरे हाथ में सौ-सौ के दस नोट देखे थे।’

गिरजाघर का घंटा बजने लगा। यानी चार बज गए। नूरी ने जरा दरवाजा खोलकर बाहर देखा। मुहल्ले की औरतें अपने-अपने घरों से निकलकर मैदान की तरफ जाने लगी थीं। उनके पीछे-पीछे सूअर भी जा रहे थे। सूअरों में औरतों से भी

आगे निकल जाने की होड़ मची थी।

नूरी कैसे बाहर निकले ?

नूरी ने बेनजीर को जगाया और कहा, “जा बेटी, मैदान हो आ। तेरे लौटेने पर हम चले जाएँगे।”

: ७ :

जहूर नींद में था, अतः नूरी ने उसे छूना ठीक नहीं समझा। रोज की तरह वह घर के काम-धाम में लग गई। घर में झाड़ू लगाकर उसने चूल्हा जला लिया। बेनजीर पिछली रात के जूठे बरतन तालाब से धोकर ले आई थी। उसने चाय का बरतन माँ के सामने रख दिया। चूल्हे पर चाय का पानी चढ़ाकर नूरी ने आफताब से कहा, “बेटा, जा, चम्मन मियाँ की दुकान से चाय-पत्ती और चीनी ले आ।”

“पैसा अम्माँ ?” आफताब ने हाथ फैला दिया।

“ले।” नूरी ने ताख में पड़ी दुअन्नी उठाकर दे दी।

आफताब चला गया।

अब्बास अली भी तालाब की तरफ हो आया था। वह अपनी नियत जगह पर आकर बैठ गया। इसका मतलब था कि अब उसे चाय-नाश्ते की जरूरत थी।

आफताब चाय-पत्ती और चीनी लेकर आ गया।

खोलते पानी में चाय-पत्ती और चीनी डालते ही चाय खदबदाने लगी और देखते-देखते चाय तैयार हो गई।

नूरी ने अब्बास के सामने चाय का कटोरा रख दिया। एक कागज पर पापा भी। आफताब अपनी चाय लेकर अपने अब्बा के पास ही बैठ गया। बाप और बेटा दोनों मिलकर चाय-पापा खाने-पीने लगे।

“ले बेनजीर, तू भी नाश्ता कर ले।” नूरी ने कहा।

बेनजीर चुल्हानी के पास ही बैठ गई।

“जहूर के अब्बा, एक बात पूछें हम ?” नूरी ने बहुत सहमते हुए अपने मियाँ से यह सवाल किया।

“क्या बात है ?” उत्तर देते हुए पता नहीं क्यों अब्बास का स्वर काँप-सा गया।

“आपने साहब को रुपया लौटा दिया था न ?”

“क्या तू मुझपर शक कर रही है ?” अब्बास ने अपने होंठों से सटे हुए कटोरे को एकाएक जमीन पर रख दिया।

“नहीं, ऐसी बात नहीं है। रात को तो आप सो गए थे।”

“तो ?”

“जहूर आधी रात के बाद भी बहुत देर तक छटपटाता रहा था। उसकी

तकलीफ देखकर मन में बड़े बुरे-बुरे खयाल आ रहे थे।”

“कैसे बुरे खयाल?”

“हम सोचने लगे—आखिर हम लोगों से क्या भूल हो गई, जो खुदा हम पर ऐसा नाराज हो गया कि कल हमारा बेटा ज़िबह की गई मुरगी की तरह छटपटा रहा था। हमने सोचा, आपसे एक बार फिर पूछ लें। शायद आप साहब को रुपया लौटाना भूल गए हों?”

यह सुनते ही अब्बास के शरीर में आग-सी लग गई। वह तमतमाया हुआ उठा और उसने कसकर चाय के कटोरे पर लात मार दी। कटोरा उछलकर दरवाजे को पार करता हुआ तालाब की तरफ चला गया। भला एल्यूमीनियम के कटोरे में वजन ही कितना होता है।

अब्बास ने अपनी पीठ पर बोरा डाला और बड़बड़ाता हुआ झोंपड़ी से बाहर निकल पड़ा।

नूरी चुपचाप अपनी जगह पर बैठी रही। उसने अब्बास से कुछ भी नहीं कहा। वह केवल अब्बास को दरवाजे से निकलते हुए देखती रही। उसकी समझ में यह बात नहीं आ पा रही थी कि जहूर के अब्बा इस बात पर इतना क्यों भड़क गए? उसने उन्हें कोई गाली तो दी नहीं थी?

“अम्माँ!” जहूर की भरी-भरी-सी आवाज नूरी के कानों में पड़ी। वह तुरंत उसके पास गई। जहूर ने करवट ली और अपनी आँखों को खोलते हुए अपनी अम्माँ की तरफ देखा। जहूर का चेहरा देखते ही नूरी जोर से चिल्ला पड़ी, “या खुदा, यह क्या हो गया मेरे लाल को?”

नूरी की आँखें खुद-ब-खुद बहने लगीं।

यह देखकर बेनजीर और आफताब भी घबरा गए। दोनों अपनी अम्माँ के पास आ गए।

जहूर का चेहरा सूज-सा गया था और जहाँ-तहाँ लाल दाने उभर आए थे। देखने में जहूर का चेहरा बड़ा अजीब लगने लगा था।

“बेटी, जा जल्दी से भगताइन मौसी को बुला ला। अगर मौसी न हों तो मौसा को ही बुला लाना।”

बेनजीर तुरंत चली गई।

जहूर निरीह-सा कभी अपनी अम्माँ को देखता तो कभी अपने छोटे भाई आफताब को।

बेनजीर लौट आई। उसके पीछे-पीछे भगत और भगताइन दोनों आ गए। झोंपड़ी में घुसते ही भगत ने पूछा, “क्या बात है, बेटी?”

“मौसा, देखिए न जहूर को क्या हो गया है?” नूरी ने विव्हल होते हुए कहा। भगत और भगताइन दोनों ने जहूर के चेहरे को देखा। इसके बाद भगत ने

उसके शरीर के ऊपर से कंबल हटाकर हाथ-पैर और पेट को देखा। पूरे शरीर में लाल-लाल दाने उभर आए थे। भगत ने भगताइन की तरफ देखते हुए नूरी से कहा, “नूरी बेटी, जहूर को तो माता निकल आई हैं।”

यह सुनते ही नूरी के मुँह से एक चीख-सी निकल पड़ी।

“घबराने की कोई बात नहीं है, बेटी। माता जल्दी ही शांत हो जाएँगी। ये जो कुछ भी माँगें, इन्हें दो। इनकी खूब खातिर करो। खूब मन लगाकर सेवा करो। बस इन्हें कोई डॉक्टर दवा मत देना और पवित्रता का पूरा-पूरा खयाल रखना। माता ने चाहा तो वह जल्दी ही लौट जाएँगी।”

नूरी को लगा कि उसके ऊपर कोई भारी चीज गिर पड़ी है और वह न तो चीख ही पा रही है और न किसी को सहायता के लिए आवाज ही दे पा रही है।

“भगताइन, तू जरा रुककर नूरी बेटी को विधि-विधान बता दे। घर में पहली बार माता आई हैं न, इसलिए बेचारी जरा घबरा गई है।” इतना बोलकर भगत ने झुककर जहूर की तरफ देखा। उसने एक बार अपने दोनों कानों को छूकर अपने दोनों हाथ जोड़ दिए और धीरे-से कहा, “मैया, मेरे नाती पर कृपा करना।”

भगत उठा और झोंपड़ी के बाहर चला गया।



आज शाम को भी अब्बास खाली हाथ ही लौटा।

झोंपड़ी के भीतर काठ की एक चौड़ी चौकी बिछी थी, जिस पर लेटा हुआ जहूर छप्पर की तरफ टुकुर-टुकुर ताक रहा था। बेनजीर नीम की पत्तियों से उसे हवा कर रही थी। नूरी ने अभी-अभी जो अगरबत्ती जलाई थी, उसकी खुशबू पूरे घर में फैली थी।

यह सब देखकर अब्बास कुछ पूछने के लिए अपना मुँह खोलने ही जा रहा था कि नूरी उससे पहले ही बोल उठी, “जहूर को माता निकली हैं। इस बीच हम लोगों को पाक-साफ रहना होगा। घर में गोشت-वोशत नहीं बनेगा और दाल में हल्दी भी नहीं पड़ेगी।”

अब्बास ने चुपचाप बोरा कोने में रख दिया। वह बाहर निकलकर मैदान की तरफ जाने लगा।

जहूर की हालत देखकर उसके भीतर एक तूफान-सा उठ खड़ा हुआ। वह सोचने लगा, ‘क्या नूरी को हम पर शक हो गया है?’

‘लगता तो ऐसा ही है। तूने भी तो उसके सामने झूठी कसम खा ली है।’

‘तो क्या करते हम? जब वह कसम खाने के लिए जोर डालने लगी तो हमें कसम खाने के लिए मजबूर होना पड़ा।’

‘बेवकूफ, तूने झूठी कसम खाकर अच्छा नहीं किया है। अगर यह बात उस

पर खुल गई कि तूने साहब की अमानत नहीं लौटाई है तो वह तुझे कभी माफ नहीं करेगी ।’

‘तो अब क्या करें हम ?’

‘अभी भी तू रुपया लौटा दे ।’

‘साहब तो कल बिलायत चला गया । हम आज पता लगाने गए थे कि साहब यहाँ है या नहीं ।’

‘अगर साहब यहाँ होता तो क्या तू रुपया लौटा देता ?’

‘.....’

‘अरे बोल न, तू चुप क्यों हो गया ?’

‘.....’

‘तू चुप हो गया । यही तो सबूत है तेरी नीयत खराब हो गई है । तू बेईमान हो गया है ।’

‘नहीं, नहीं, मैं बेईमान नहीं हूँ ।’

‘अगर तू बेईमान नहीं है, तो तूने नूरी से झूठ बोलने की कोशिश क्यों की ? तू साफ-साफ बता देता उसे कि तूने साहब को रुपया नहीं लौटाया है ।’

‘यह तो बहुत मुश्किल काम था ।’

‘सच तो यह है कि एक हजार देखकर तेरी नीयत डोल गई है और तू अपने बच्चों की झूठी कसम भी खा बैठा । यह तूने बहुत बड़ी खता की है । इसकी सजा तुम्हें मिलकर रहेगी ।’

‘नहीं-नहीं, हमने कोई खता नहीं की है । झूठी कसम तो हम रोज ही खाते हैं । कसम खाने से क्या होता है ? कुछ भी नहीं होता है ।’

‘क्या कहा ? झूठी कसम खाने से कुछ भी नहीं होता है ?’

‘.....’

‘बोल न, अब तू फिर क्यों चुप हो गया ? अरे झूठी कसम खानेवाला शैतान ! तू क्यों नहीं समझता कि हर बुरे काम का अंजाम बुरा ही होता है । तूने अपनी देवी जैसी बीवी के साथ विश्वासघात किया है । तूने उसके साथ बहुत बड़ा धोखा किया है । अगर जहर को कुछ हो गया और नूरी को तेरी चाल का पता चल गया तो वह तुझे कभी भी माफ नहीं करेगी ।’

‘नहीं-नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा । हमारे जहर को कुछ भी नहीं होगा । अगर जरूरत पड़ी तो हम जहर के इलाज पर पानी की तरह रुपया बहा देंगे ।’

‘कौन-सा रुपया ? वही एक हजार न, जिसे तूने दबा लिया है ।’

‘तो और कहाँ से लाएँगे हम ?’

‘नूरी पूछेगी कि कहाँ से तू खर्च कर रहा है तो तू अपनी बीवी को क्या जवाब देगा ?’

“.....”

‘तेरे पास इसका कोई जवाब ही नहीं है। आखिर तू जवाब देगा भी कहाँ से?’
‘तो हम क्या करें?’ हम साहब को कहाँ से लाएँ ढूँढ़कर? वह तो कल ही विलायत चला गया।’

‘तू बेईमान है। अगर साहब यहाँ होता तो क्या तू उसकी अमानत उसे लौटा देता? तू कभी भी ऐसा नहीं करता। तेरे भीतर शैतान बस गया है। अब तू उसकी ही बातें सुनने लगा है। याद कर शैतान के बताए हुए रास्ते पर चलकर आदम और हौब्बा की क्या हालत हुई थी। तूने जो खता की है, उसका नतीजा बहुत ही बुरा होनेवाला है... बहुत ही बुरा होनेवाला है...’

‘क्या होनेवाला है?’

‘जो होनेवाला है, वह तेरी आँखों के सामने आ जाएगा। तू अपनी दोनों आँखें फाड़कर देखता रह जाएगा और तेरा सब कुछ...’

‘तू चुप क्यों हो गया? बोल, बोल...आगे बोल...क्या हो जाएगा हमारा...?’

अब्बास को प्रतीत हुआ कि उसके भीतर कोई था जो जोर-जोर से ठहाके लगाने लगा था। उसके ठहाकों ने अब्बास को पसीना-पसीना कर दिया। वह पस्त-सा तालाब के घाटवाले चबूतरे पर बैठ गया। उसका माथा उसके दाहिने हाथ पर आकर कब टिक गया, उसे इसका पता भी नहीं चल सका।

: ८ :

अब्बास मैदान से लौटकर अपनी झोंपड़ी में नहीं गया। वह सीधे मदकखाना चला गया। उसने मदक के दम लगाए और अफीम लेकर घर पहुँच गया।

“आप कहाँ चले गए थे? चाय खराब हुई जा रही थी, इसलिए हमने बच्चों को दे दी। अब तो खाना भी तैयार है, खा लीजिए। अभी मौसी आनेवाली है।”

“कौन मौसी?” अब्बास ने यों पूछा मानो वह किसी मौसी को जानता ही नहीं।

“भगताइन मौसी।”

“क्यों?”

“वह देवी के गीत गाएँगी। हमें और बेनजीर को भी मौसी के साथ ही बैठना होगा।”

अब्बास ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप खाना खाने के लिए बैठ गया।

नूरी ने तामचीनी की थाली में खाना परोस दिया। दाल का रंग देखकर अब्बास को अपने भीतर से अच्छा नहीं लगा। उसने कहा, “दाल हटा दे।”

“फिर आप भात कैसे खाएँगे ?” नूरी ने पूछा ।

“पानी-भात खा लेंगे । एक टुकड़ा प्याज और एक मिर्च दे दे । थोड़ा-सा नमक भी ।”

नूरी ने दाल का कटोरा हटा दिया । एक तश्तरी में उसने नमक, मिर्च और प्याज के साथ बड़ा-सा कटोरा अब्बास के सामने रख दिया । अब्बास ने सबसे पहले कटोरे में भात डाला । भात के ऊपर पानी और फिर उसमें थोड़ा-सा नमक मिला लिया । इस बीच नूरी ने प्याज के छिलके उतार दिए ।

अब्बास भात-पानी खाने में जुट गया । खाते समय आज उसने एक बार भी नूरी की तरफ सिर उठाकर नहीं देखा जबकि नूरी उसे लगातार देखती रही । नूरी के चेहरे को देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह जहूर के अब्बा से कुछ पूछना चाह रही थी, मगर अपना मुँह नहीं खोल पा रही थी । दोनों में से किसी ने किसी से न कुछ कहा और न पूछा । अब्बास खाना खाकर चुपचाप उठ गया । हाथ धोकर वह जहूर की चौकी के पास जाकर खड़ा हो गया । बेनजीर नीम की पत्तियाँ डुला रही थी । अब्बास ने उसके हाथ से नीम की पत्तियाँ ले लीं और वह खुद जहूर के सिरहाने बैठकर नीम की पत्तियों को डुलाने लगा ।

जहूर ने एक अजीब दृष्टि से अपने अब्बा की तरफ देखा । अब्बास जहूर के देखने के अंदाज से भीतर-ही-भीतर थोड़ा सहम-सा गया । वह अपना माथा झुकाकर चुपचाप नीम की पत्तियाँ डुलाने लगा ।

“बेनजीर, जा मौसी को बुला ला ।” नूरी ने कहा ।

“जा रहे हैं ।” बेनजीर ने कदम बढ़ाया ही था कि नूरी फिर बोल पड़ी, “तू मत जा । हम ही चले जाते हैं । चौकी के पास जरा बोरा बिछाकर रख । हम अभी मौसी को बुलाकर लाते हैं ।”

नूरी झोंपड़ी के बाहर निकल गई ।

बेनजीर अपने काम में लग गई । उसने दो बोरे चौकी की बगल में जमीन पर बिछा दिए । सबसे पहले आफताब बोरे पर आकर पसर गया । बेनजीर ने उसे ऐसा करने से रोका और कहा, “चल उठ, यह तेरे लिए नहीं है । बड़ा आया है इस पर पसरनेवाला !”

बेनजीर ने आफताब को जबरदस्ती उठाकर बिठा दिया । आफताब को यह बड़ा बुरा लगा । चूँकि उसके अब्बा वहाँ मौजूद थे, इसलिए वह चुप तो लगा गया, मगर उसने बेनजीर को मुँह चिढ़ाकर अपने अपमान का बदला ले लिया ।

नूरी लौट आई । उसके पीछे-पीछे भगताइन थी । भगताइन के साथ मुहल्ले की दो और हिंदू औरतें थीं । सभी बोरे पर आकर बैठ गईं । भगताइन ने नूरी और बेनजीर से इशारे में कहा, “तुम दोनों भी आ जाओ ।”

नूरी और बेनजीर भी बोरे पर बैठ गईं ।

अब्बास उठकर बाहर चला गया।

भगताइन ने खड़े होकर एक बार जहूर को बड़े ध्यान से देखा फिर वह वॉरे पर बैठ गई। अब उसने देवी का गीत गाना शुरू किया—

चलहु रे जोगनिया पूत भीख माँगे,
पूत न देव मइया जोगिन बनवै।

चलहु रे जोगनिया पूत भीख माँगे...

भगताइन के साथ आई दोनों औरतें भगताइन का गाने में साथ दे रही थीं, लेकिन नूरी और बेनजीर चुप बैठी तीनों को देख रही थी। भगताइन ने कहा, “तुम दोनों भी गाओ।”

भगताइन ने दूसरा गीत प्रारंभ कर दिया—

मोहनी भवानी जगतारन मइया,
मोहनी भवानी जगदंबा मइया।
देवी दुवारे अँधरा पुकारे,
देवी दुवारे कोढ़िया पुकारे।
देवी धजा फहराऊँ मेरी माता...

इस बार माँ-बेटी दोनों ने अपना-अपना मुँह चलाना शुरू कर दिया। चूँकि उन्हें गीत के बोल मालूम नहीं थे, फलतः बीच-बीच में उनसे जरा गड़बड़ी भी हो जाती थी।

लगभग आध घंटे तक गाने का कार्यक्रम चला।

अचानक बेनजीर ने अपने सिर के बाल खोल दिए और वह अपना सिर धुनने लगी। यह देखकर नूरी तथा अन्य औरतें बेहद घबरा गईं। पर, भगताइन जरा भी विचलित नहीं हुईं।

ऐसा लगा कि बेनजीर पर कुछ सवार हो गया है और वह भूत का स्वाँग भरने लगी है। कई मिनटों तक वह ऐसा करती रही, फिर वह एकाएक शांत हो गई।

बेनजीर ने नूरी की तरफ जलती हुई आँखों से एक बार देखा। नूरी सहमकर खड़ी हो गई।

बेनजीर अब बोलने लगी, “मैं नहीं छोड़ूँगी...मैं सबको ले जाऊँगी...इस घर को उजाड़कर रहूँगी...”

बेनजीर की आवाज काफी तेज थी। उसे सुनकर अब्बास भी भीतर आ गया।

अब्बास को देखते ही बेनजीर ने फिर बोलना शुरू कर दिया, “आ गया तू ? ...मदकी...अफीमची...बेईमान...डंडीमार...झूठा...कसमखोर...”

अब्बास की समझ में कुछ भी न आ सका कि यह क्या हो रहा है। वह बेनजीर की तरफ गुस्से से लाल-पीला होता हुआ बढ़ा। उसका इरादा था कि वह बेनजीर

का झोंटा पकड़ लेता और उसकी जमकर मरम्मत कर देता।

भगताइन ने अपनी जगह से उठकर अब्बास को ऐसा करने से रोका।

अब्बास ठिठककर खड़ा-का-खड़ा रह गया।

बेनजीर बोलने लगी, “तू रुक क्यों गया ? तू मुझे मारने चला था न ? तू मेरा झोंटा पकड़ने आ रहा था न ? तू मुझे मारने आ रहा था न ?...ले मार... आ आगे बढ़...अब तू रुक क्यों गया ?...”

भगताइन बेनजीर के सामने अपने दोनों हाथ जोड़कर खड़ी हो गई। उसने पूछा, “आप कौन हैं ?”

यह सुनकर बेनजीर ठहाका मारकर हँसने लगी। वह कुछ देर तक इसी प्रकार हँसती रही, फिर बोली, “भगताइन, तू भी मुझे नहीं पहचानती ! तू पूछती है कि मैं कौन हूँ ?”

“हाँ, आप कौन हैं ?” भगताइन ने अत्यंत नम्रता के साथ पूछा।

“मैं हूँ...माता...देवी...” बेनजीर के मुख से निकला।

“प्रणाम माताजी, कहिए आपकी क्या सेवा की जाए ?” भगताइन ने विनम्र भाव से प्रश्न किया।

बेनजीर फिर ठहाका लगाकर हँसने लगी। जब उसकी हँसी थम गई, तब उसने कहा, “यह अब्बसवा मुझे मारने चला था न ?...इसको इसकी सजा मिलकर रहेगी...यह पापी है...इस पापी के घर में सोनिया नहीं रह सकती...यहाँ जहूर नहीं रह सकता...यहाँ बेनजीर भी नहीं रहेगी...यहाँ आफताब को भी नहीं रहना है...यहाँ कोई नहीं रहेगा...एक दिन यह झोंपड़ी खाली हो जाएगी...यहाँ सिर्फ एक चुड़ैल रहेगी...एक चुड़ैल...”

भगताइन ने आगे बढ़कर बेनजीर के पैर पकड़ लिए। वह गिड़गिड़ाने लगी, “माता, ऐसा मत करिए। आप क्यों नाराज हैं ? अगर कोई भूल-चूक हुई है तो माफ कर दीजिए...इस परिवार के हर प्राणी के ऊपर कृपा कीजिए माता...ये लोग बड़े गरीब आदमी हैं...”

बेनजीर भभक-सी उठी, “कौन कहता है कि ये लोग गरीब आदमी हैं ? पूछो अब्बसवा से कि क्या वह अब भी गरीब आदमी है ?”

अब्बास अब तक बहुत बर्दाश्त करता रहा था। अब और बर्दाश्त करना उसके लिए कठिन हो गया। वह बोला, “हम अभी लाते हैं हाजी साहेब को। वही ठीक कर सकते हैं इस लड़की को। इस पर तो कोई चुड़ैल सवार लगती है।”

अब्बास दरवाजे की तरफ लपका।

बेनजीर फिर बोलने लगी, “अरे अब्बासवा तू कहाँ जा रहा है ? ठहर जरा। मैं तुझे चुड़ैल लगती हूँ न ? तूने मुझे चुड़ैल कहा है न ? तू मेरे लिए हाजी को बुलाएगा ? हाजी मेरे शरीर का स्पर्श करेगा ? सुन, जरा ध्यान से सुन ले...तू लाख

उपाय कर ले... अब तो वही होगा... जो मैंने कह दिया है...

नूरी थर-थर काँपने लगी। वह कुछ बोलना चाह रही थी, पर उसकी बोली ही नहीं फूट पा रही थी।

अब बेनजीर ने बोलना बंद कर दिया। अब्बास भी अपनी जगह पर खूँटे की तरह गड़ा रह गया। अब वह बेनजीर की ओर टकटकी लगाए देखने लगा।

बेनजीर अचानक 'धड़ाम्' की आवाज से बोरे पर गिर पड़ी। भगताइन ने बेनजीर को सँभालना चाहा। भगताइन की उँगलियों ने जैसे ही बेनजीर के शरीर का स्पर्श किया, वह जोर से चिल्ला पड़ी, "हाय राम! यह क्या हुआ? इसका शरीर तो जल रहा है!"

नूरी ने बेनजीर को अपनी छाती से चिपका लिया। उसे लगा कि उसके बदन में भी आग लगी है। तेज जल रहा था बेनजीर का शरीर। नूरी फूट-फूटकर रोने लगी।

"घबराओ मत, बेटी। लगता है, इस पर भी माता उतर रही हैं। इनको भी सँभालो। इनकी भी सेवा-सँभाल करो। सब ठीक हो जाएगा।" भगताइन ने नूरी को ढाँढस बँधाते हुए कहा।

भगताइन उठकर चलने लगी। उसने इशारा किया। बाकी दो औरतें भी उसके साथ चल पड़ीं।

अब झोंपड़ी के सामनेवाले दरवाजे के पास अब्बास किकर्तव्यविमूढ़ की मुद्रा में खड़ा था और नूरी बेनजीर को अपनी छाती से चिपकाए बोरे पर बैठे आँसू बहा रही थी। अब तक जो हुआ, उसे देखकर आफताब भी काफी डर गया था, अतः वह भी अपनी अम्माँ के साथ चिपक गया।

"मुनिए।" नूरी ने अब्बास की तरफ देखते हुए कहा।

"बोल।" अब्बास का बड़ा ठंडा उत्तर था।

"कहीं से एक चारपाई या चौकी मिल सकती है?"

"कहाँ से मिलेगी? कौन देगा?" अब्बास ने उखड़े स्वर में जवाब दिया।

"देखिए, बेनजीर को काफी तेज बुखार है। इसे जमीन पर सुलाना ठीक नहीं। जरा निसार मियाँ के यहाँ चले जाएँ। शायद वहाँ से कुछ मिल जाए। कहीं से खटोला भी मिल जाए तो माँग लीजिएगा।"

अब्बास चुपचाप चला गया।

नूरी के कानों में बेनजीर के मुँह से निकली बातें गूँजने लगीं, 'यह अब्बासवा मुझे मारने चला था न?... इसको इसकी सजा मिलकर रहेगी... यह पापी है... इस पापी के घर सोनिया नहीं रह सकती... यहाँ जहर नहीं रह सकता... यहाँ बेनजीर भी नहीं रहेगी... यहाँ आफताब को भी नहीं रहना है... यहाँ कोई नहीं रहेगा... यह झोंपड़ी खाली हो जाएगी... यहाँ सिर्फ एक चुड़ैल रहेगी...'

नूरी डर के मारे काँपने लगी । उसने आफताब को अपनी छाती से चिपका लिया । आफताब अपनी माँ का चेहरा एकटक देख रहा था । वह भी बड़ा डरा-डरा लग रहा था ।

“बेटा आफताब ।” नूरी ने कहा ।

“क्या अम्माँ ?” आफताब ने बहुत धीरे-से जवाब दिया ।

“बेटा, जरा दरवाजा भिड़का दे ।”

यह सुनकर आफताब ने कुछ भी नहीं कहा । दरवाजा भिड़काने के बजाय वह अपनी माँ से और भी कसकर चिपट गया ।

: ६ :

रात को किसी के घर से एक खटोला मिल गया था । बेनजीर को उसी पर लिटा दिया गया । नूरी जहूर और बेनजीर के बीच जमीन पर बोरा बिछाकर लेटी थी । दोनों बच्चे अभी भी नींद में थे । आफताब अपने अब्बा के साथ सो रहा था ।

नूरी रात-भर जागती रही । अभी उसकी आँखें लगी ही थीं कि गिरजाघर का घंटा टन्-टन् बजने लगा । नूरी उठकर बैठ गई । वह कैसे क्या करे ? अगर वह अभी मैदान की तरफ नहीं जाती है तो फिर उजाले में जाना संभव नहीं हो पाएगा । यदि वह अभी जाती है, तो उसे जहूर के अब्बा को जगाना पड़ेगा । वह उन्हें जगाए कि नहीं ? इतनी सुबह अब्बास कभी नहीं जागता था । उसकी नींद सबसे बाद में टूटती थी । जगाने से कहीं वह नाराज न हो जाए ! पर उसे जगाने के सिवा दूसरा कोई रास्ता भी नहीं था ।

नूरी ने अब्बास के कंधे पर धीरे-से हाथ रखा । अब्बास चिहुँककर उठ बैठा, “कौन ?”

“हम हैं ।” नूरी ने धीमी आवाज में कहा ।

“क्या बात है ?” अब्बास ने उखड़े हुए स्वर में पूछा ।

“आप डर गए क्या ?”

“काम क्या है, सो बता ।” यह बोलकर उसने सबसे पहले जहूर और बेनजीर की तरफ देखा । दोनों सो रहे थे । उसे राहत मिली ।

“हम मैदान की तरफ जा रहे हैं । जरा बच्चों का खयाल रखिएगा ।” नूरी ने कहा ।

“ठीक है । जाओ ।”

नूरी ने बहुत धीरे-धीरे दरवाजा खोला ताकि कोई आवाज न हो और किसी की नींद न टूट जाए ।

नूरी चली गई ।

अब्बास ने उठकर अपने कुरते की जेब से एक अधजली बीड़ी निकाली । आले

पर ढिबरी जल रही थी। ढिबरी की ली से उसने बीड़ी सुलगा ली। पहले कोठरी में ढिबरी जलने के कारण हलकी-हलकी एक विशेष प्रकार की गंध फैली थी, लेकिन अब बीड़ी का धुआँ एक दूसरी ही गंध झोंपड़ी में फैलाने लगा।

अब्बास को आज इस कोठरी में कुछ डर-सा लगने लगा था। इस कोठरी में वह अकेले कई सालों तक रह चुका था, पर उसे ऐसा डर कभी नहीं लगा था। मगर आज उसे बड़ा भय लग रहा था। उसकी नजर बेनजीर के खटोले पर टिकी थी। वह डर रहा था कि कहीं बेनजीर जग न जाए और कल रात की तरह ही वह फिर बकने लगे।

बेनजीर तो नहीं जगी, लेकिन कल की घटना ने अब्बास को बेहद परेशान कर दिया। एक तरह से वह भी रात-भर जागता ही रहा था। सोने का नाटक-भर करता रहा था। वास्तव में वह डरा हुआ था और डर के मारे उसे नींद नहीं आ रही थी। वह सोच रहा था बेनजीर के बारे में। बेनजीर कल जो कुछ बोली थी उसका एक-एक शब्द उसके दिमाग में रह-रहकर चक्कर काटने लगा। वह समझ नहीं पा रहा था कि बेनजीर ने यह क्यों कहा कि इस झोंपड़ी में कोई नहीं रहेगा... यहाँ बेनजीर नहीं रहेगी... यहाँ सोनिया नहीं रहेगी... कमाल है बेनजीर ने अपनी अम्मा का नाम नूरी नहीं कहा... उसने अपनी अम्मा को सोनिया कहा... आगे उसने यह भी कहा—यहाँ आफताब भी नहीं रहेगा... यहाँ केवल एक चुड़ैल रहेगी... आखिर सब-के-सब लोग कहाँ चले जाएँगे? और क्यों चले जाएँगे?

चुड़ैल !

यहाँ सिर्फ एक चुड़ैल रहेगी। बेनजीर ने ऐसा क्यों कहा? मगर, उसने हमारे बारे में तो कुछ कहा ही नहीं। तो हम कहाँ रहेंगे? क्या हम भी इस घर में नहीं रहेंगे? ऐसा तो उसने कुछ नहीं कहा था। इसका मतलब क्या हुआ? क्या वह इस झोंपड़ी में रहेगा? वह इस झोंपड़ी में रहेगा तो फिर यहाँ चुड़ैल कैसे रहेगी? या फिर किसी चुड़ैल के रहते वह यहाँ कैसे रह पाएगा?

अब्बास को सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात के लिए हो रही थी कि बेनजीर ने कल उसे सबके सामने 'अब्बासवा' कहा था। उसने उसे मदकी... अफीमची... बेईमान... डंडीमार... और झूठा कसमखोर कहा था...

तो क्या बेनजीर हमारे बारे में सब कुछ जानती है?

नहीं, नहीं, बेनजीर हमारे बारे में कहाँ से कुछ जान सकती है? वह तो एक मासूम लड़की है, जो कहीं आती-जाती भी नहीं। दिन-भर अपनी अम्मा के साथ-साथ घर का काम-काज करती रहती है या फिर ठोंगे बनाने में लग जाती है। फिर उसने हमें मदकी क्यों कहा? उसने हमें अफीमची क्यों कहा? वह कैसे जानती है कि हम बेईमान हैं? वह कैसे जानती है कि हम डंडीमार हैं और हम झूठी कसम खाते हैं?

यह सब बेनजीर कहाँ बोल रही थी ? वह तो इस ढंग से बोलना जानती भी नहीं । उसके ऊपर तो कोई सवार होकर उससे यह सब बोलवा रहा था, 'मगर, उसने हमारे बारे में तो कोई गलत बात नहीं कही है । यह तो सच ही है कि हम मदक पीते हैं' 'हम अफीम खाते हैं' 'कागज तौलते समय हम डंडी भी मारते हैं' 'कुछ-कुछ हम बेईमानी भी करते हैं' 'अपना धंधा ही ऐसा है कि ग्राहकों को यकीन दिलाने के लिए बार-बार खुदा की कसम भी खानी पड़ती है'...

बेनजीर ने यह भी कहा था, 'कौन कहता है कि ये लोग गरीब आदमी हैं ? पूछो अब्बासवा से पूछो कि क्या वह अब भी गरीब आदमी है ?'

इन वाक्यों को याद करते ही अब्बास को लगा कि उसकी गंजी एकाएक पसीने से भीग उठी है और माथे से बहता हुआ पसीना ललाट पर आकर फैल गया है । उसने अपनी लुंगी से ललाट का पसीना पोंछ लेना चाहा, मगर पसीना था कहाँ ?

बेनजीर का कहना था कि 'अब्बासवा' अब गरीब आदमी नहीं है । इसका मतलब तो यही है न कि बेनजीर को सबकुछ मालूम हो गया है । शायद उसे यह भी मालूम हो गया है कि हमारे पास काफी रुपया है । लेकिन यह बात तो किसी को भी मालूम नहीं है । नूरी भी यही जानती है कि हमने साहब की अमानत साहब को लौटा दी है । जब हमने दस रुपए का नया नोट उसकी तरफ बढ़ाकर कहा था—यह साहब ने बख्शिश दी है तो वह कितनी खुश हुई थी ! मगर, नूरी ने दूसरे दिन फिर हमसे यह सवाल क्यों पूछा था, 'आपने साहब को रुपया लौटा दिया न ?'

नहीं, नहीं, नूरी को हम पर पूरा-पूरा यकीन नहीं है । उसे हम पर थोड़ा-थोड़ा शक भी है । इसीलिए तो उसने हमसे बार-बार जानना चाहा कि हमने साहब को रुपया लौटाया है या नहीं ? उसे यकीन दिलाने के लिए हमने आफताब के सिर पर हाथ रखकर कसम भी खाई थी, 'हम अपने बच्चों की कसम खाते हैं कि हमने प्रोफेसर साहब को सौ-सौ के दस नोट दे दिए हैं ।' सो तो ठीक है । लेकिन, क्या यही सच है ? क्या तूने झूठी कसम नहीं खाई है ? नहीं, नहीं, हमने झूठी कसम कहाँ खाई है ! हमने तो यही कहा है कि हमने प्रोफेसर साहब को सौ-सौ के दस नोट दे दिए हैं । सो हमने प्रोफेसर साहब को सच में रुपया दे दिया है । इसमें झूठ क्या है ? हमने जो किया है, वही कहा भी है ।

दगाबाज ! तू चालाकी से अपने को पाक-साफ बताना चाहता है ? तूने प्रोफेसर साहब के पास रुपया जमा किया है । तूने रुपए के मालिक को रुपया लौटाया कहाँ है ? ऊपर से तू यह भी झूठ बोल गया कि वह साहब तो विलायत चला गया है । झूठी कसम खाते हुए तुझे जरा भी डर नहीं लगा कि तेरी झूठी कसम का क्या नतीजा हो सकता है ? तूने अपनी औलाद की कसम खाकर अल्ला मियाँ की निगाह में बहुत बड़ा जुर्म किया है । क्या तू जानता है कि जिसकी कसम खाई जाती है, अगर कसम झूठी होती है तो वह मर जाता है ?

अब्बास को फिर बड़ी बेचैनी महसूस होने लगी। वह खड़ा होने लगा, लेकिन उसे लगा कि किसी ने जबरदस्ती उसे बैठे रहने पर मजबूर कर दिया है और अब वह उसे समझाने लगा है—तू डर क्यों रहा है? तूने बिलकुल सही काम किया है। यह सब बकवास है कि किसी की झूठी कसम खाने से कोई मर जाता है। अगर यह बात सच होती तो सबसे पहले खुदा की ही मौत हो जाती। मगर, लोग हर दिन खुदा या अल्ला की झूठी कसमें खाते हैं और अल्ला मियाँ को कुछ भी नहीं होता, बल्कि उसकी शान और भी बढ़ती ही जाती है। झूठी कसम खाने के बहाने से ही सही, लोग अल्ला का नाम तो ले लेते हैं न? अगर यह सच होता कि जिसके नाम की कसम खाई जाती है, वह मर जाता है तो सबसे पहले आफताब को बीमार पड़ना चाहिए था। ऐसा इसलिए होना चाहिए था क्योंकि तूने आफताब के सिर पर हाथ रखकर ही कसम खाई थी। तू देख ही रहा है कि आफताब ठीक-ठाक है और बीमार जहूर और बेनजीर हैं—जिनके नाम की तूने कसम खाई ही नहीं है।

झोंपड़ी के दरवाजे में हरकत हुई। नूरी लौट आई थी। उसने भीतर घुसते ही कहा, “जाइए, आप भी हो आइए।”

नूरी के कपड़े गीले थे, यैदान होकर वह हर दिन तालाब में डुबकी लगाने के बाद ही झोंपड़ी में घुसती थी। इमली टोली में आने के बाद उसने यह नियम बना लिया था। अपने गाँव में तो वह कभी भी नदी पर जाकर नहा आया करती थी, लेकिन यहाँ ऐसा करना संभव नहीं था। तड़के अँधेरे में ही वह अपनी झोंपड़ी से निकलती थी। रास्ते में जहाँ-तहाँ गंदगी फैली रहती थी। कभी-कभार उसके पैर गंदे भी हो जाते थे, इसलिए भी मैदान जाने के बाद स्नान करना उसे आवश्यक लगता था। चूँकि घर में अभी दो बच्चों को माता निकल आई थीं और पवित्रता का पूरा-पूरा निर्वाह करना अनिवार्य था, इसलिए स्नान किए बगैर झोंपड़ी में घुसने की बात नूरी सोच भी नहीं सकती थी।

गीले कपड़ों में लिपटी नूरी की तरफ अब्बास ने एक बार ध्यान से देखा और वह झोंपड़ी के बाहर चला गया। नूरी ने दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

अब्बास सोचने लगा नूरी के बारे में। यह औरत भी कमाल है! जाड़ा हो या बरसात—गिरजाघर का घंटा बजते ही यह बिस्तर छोड़ देती है। सबसे पहले यह मैदान जाती है। लौटते हुए तालाब में डुबकी लगाती है और तभी झोंपड़ी में कदम रखती है। यह औरत जाड़ा-बरसात सब कुछ झेलती है, पर नहाना कभी भी बंद नहीं करती है। इमली टोली में ऐसी और कोई औरत नहीं, जो अँधेरे में ही नहा लेती हो। यह सब सोचते हुए अब्बास के मुँह से अनायास ही गाली देते हुए निकल पड़ा, “अपनी हिंदुवानी चाल अभी भी चलाए जा रही है!”

: १० :

बेनजीर पहचान में नहीं आ रही थी। उसका चेहरा बुरी तरह सूज गया था —लाल-लाल दानों के कारण। उसे देखकर अब्बास एक बार हिल-सा गया। जब बेनजीर ने उसकी ओर देखा, उसने झटके से अपना चेहरा अपराधी के समान झुका लिया। उसके मन में अभी भी यह खौफ बना हुआ था कि बेनजीर कहीं फिर न बोलना शुरू कर दे। जहर की तरह बेनजीर के भी पूरे बदन में लाल दाने निकल आए थे।

जहर के दानों में दूध भर आया था और उसे बेहद बेचैनी मालूम पड़ रही थी। चौकी पर लेटने में उसे काफी तकलीफ हो रही थी। घर में ऐसा कोई मुलायम बिस्तर भी नहीं था कि उसे बिछाया जा सके। ऐसे में कहीं से और लेंदरा भी नहीं माँगा जा सकता था। अगर माँगा भी जाता, तो कोई देता ही नहीं।

नूरी के चेहरे पर मायूसी की छाप साफ-साफ नजर आ रही थी। वह अकेले आखिर क्या-क्या करे? अपने बच्चों को सँभाले कि चूल्हा जलाकर कुछ बनाने की सोचे। उसने अपने मियाँ की तरफ देखा। अब्बास समझ गया कि नूरी को कुछ कहना है। उसने पूछा, “कोई बात है क्या?”

“हाँ।”

“क्या?”

“सोचते हैं, आज कैसे क्या होगा? चूल्हा कैसे जलेगा?” नूरी ने उदासी के साथ कहा।

“तू जैसा बोल।”

“आप तो चूल्हा जलाना जानते...?”

“तू फिक्र मत कर। हमें यह काम आता है।”

“हमारे होते हुए आप यह काम करें, अच्छा नहीं लगेगा। फिर आपको अपने धंधे पर भी तो जाना है।”

अब्बास चुप लगा गया।

“आज आप घर पर ही रहते तो बड़ा अच्छा होता।”

“क्यों?”

“बीच-बीच में आपकी जरूरत पड़ सकती है। कल तो बेनजीर ठीक थी, इसलिए काम चल गया था। आज तो वह भी...”

“आखिर करना ही क्या है?” अब्बास के पूछने का लहजा बड़ा उखड़ा-उखड़ा था।

“सबसे पहले तो हमें नीम की पत्तियाँ चाहिए।”

“कहाँ से मिलेंगी?”

“बंगालीबाबू के बगीचे में नीम हैं। आफताब ने देखा है।”

“हाँ अब्बा, हमने देखा है।” आफताब बीच में ही टपक पड़ा।

“चल हमारे साथ।” अब्बास ने तुरंत कहा।

“इसको पेड़ पर चढ़ने मत दीजिएगा।” नूरी ने हिदायत दी।

अब्बास ने नूरी की इस बात का कोई जवाब नहीं दिया, जैसे उसने यह बात सुनी ही नहीं हो।

“आप दोनों उधर से होटल में चाय भी पी लीजिएगा।” नूरी ने जहूर के अब्बा से कहा।

नीम की पत्तियाँ लाने के बाद आज अब्बास ने ही चूल्हा जलाया। उसे हल्दी के बगैर दाल का रंग बड़ा उबाऊ लगता था, अतः उसने दाल बनाने का झमेला ही खत्म कर दिया। अपने साथ वह थोड़ा पोस्ता खरीद लाया था। चावल में पोस्ता डालकर उसने मरसठ का भात बना लिया। जब वह अकेला था, अक्सर वह ऐसा ही भात अपने लिए बनाया करता था।

मरसठ का भात सबको बड़ा पसंद आया।

अब झोंपड़ी में बैठे रहना अब्बास को बड़ा दूभर लग रहा था, क्योंकि उसके पास कोई काम तो था नहीं। दूसरी ओर नूरी को तनिक भी फुरसत नहीं थी। कभी जहूर अम्माँ को अपने पास बुलाता तो कभी बेनजीर बुलाती। दोनों बच्चों की अलग-अलग माँगें होतीं। अक्सर जहूर अपने शरीर को खुजलाना चाहता। खुजली के कारण कभी-कभी वह रोने भी लगता। अगर नूरी सामने न होती और उसे बराबर रोकती न रहती तो शायद जहूर अपने बदन को खुजला ही डालता। यह खुजलाना जहूर के लिए जहर हो जाता। जब नूरी उसे खुजलाने से मना करती या उसका हाथ पकड़ लेती तो वह रोने लगता। ऐसे समय में नूरी की आँखें भी भर आतीं। पर बेचारी करती भी क्या? वह चुपचाप नीम की पत्तियों से हवा करने लगती या फिर पत्तियों से ही दानों को बहुत धीरे-धीरे सहलाने लगती। आज तो जहूर को उठने-बैठने और करबट बदलने में भी तकलीफ हो रही थी। दाने इस तरह फैल गए थे कि शरीर पर सरसों रखने को भी जगह नहीं बची थी। जहूर आज डरावना भी लगने लगा था।

बेनजीर को आज जहूर जैसी तकलीफ तो नहीं थी पर कल बेनजीर को भी इसी हाल से गुजरना होगा—यह सोच-सोचकर नूरी बहुत परेशान थी। मगर अपने मन की बात वह किसके सामने व्यक्त करे? कौन सुनेगा उसकी व्यथा-कथा?

बेनजीर की नजर यदि भूल से भी अब्बास पर पड़ जाती तो अब्बास अचानक परेशान हो उठता। उसे यही डर सताने लगता कि कहीं बेनजीर फिर से बकना शुरू न कर दे। आज अपनी ही बेटी से उसे इतना खौफ लग रहा था कि वह बराबर सोच रहा था कि किसी तरह वह इस झोंपड़ी से निकल भागे। लेकिन आज घर से निकलने की मनाही हो गई थी। आज नूरी ने पहली बार उसे काम पर जाने से

रोका था। आज अब्बास को रोकना जरूरी भी हो गया था। यदि जरूरी नहीं होता तो नूरी उसे कभी रोकती भी नहीं। घर में अब्बास के रहने मात्र से नूरी अपने को थोड़ा मजबूत पा रही थी। यदि वह अकेली होती तो शायद आज वह घबरा भी जाती।

आफताब के लिए सब कुछ पूर्ववत् था। आज उसे होटल की चाय मिली, इसलिए वह कहीं ज्यादा खुश था। उसकी तो यही इच्छा हुई कि उसे वैसी चाय एक गिलास भरकर मिल जाती तो मजा आ जाता। दूधवाली चाय कितनी अच्छी होती है! उसका स्वाद कितना मजेदार होता है। वह अपनी अम्माँ से यह जरूर कहेगा, 'अम्माँ, यह काली चाय मत बनाया करो। रोज दूधवाली चाय ही बनाया करो।' आफताब गुल्ली-डंडा खेलकर पानी पीने के लिए घर आया। पानी पीकर वह अपनी माँ के साथ सटकर बैठने लगा। नूरी ने उसे अलग ही बैठने का इशारा किया। आफताब को माँ का ऐसा करना कुछ अच्छा नहीं लगा। फिर भी उसने अपनी माँ से कहा, "अम्माँ, तुम रोज-रोज काली चाय क्यों बनाती हो? तुम रोज दूधवाली चाय बनाया करो।"

आफताब की बातें सुनकर नूरी ने मुसकराते हुए अपने मियाँ की तरफ एक सवालिया निगाह डाली। अब्बास क्या बोलता। नूरी समझ गई कि यह लड़का आज होटल से चाय पीकर आया है, इसीलिए ऐसी बातें बोल रहा है। नूरी अपने बेटे को क्या जवाब दे? उसने तुरंत गड़कर एक जवाब दे दिया, "बेटा, काली चाय पीने से आदमी ज्यादा मजबूत होता है।"

"और दूधवाली चाय पीने से?" आफताब ने भी तुरंत यह सवाल दाग दिया।

"दाँत सड़ जाते हैं।"

आफताब ने अपनी माँ से फिर पूछा, "क्या अब्बा के दाँत इसीलिए सड़ गए हैं?"

"शैतान कहीं का।" आफताब की पीठ पर हलकी-सी धौल लगाकर नूरी ने उसे अब्बास की तरफ भेज दिया, "जा, अपने अब्बा से ही यह सवाल पूछ ले।"

अब्बास अपने बेटे का सवाल सुन चुका था। उसके दाँत सचमुच बड़े गंदे और सड़े-सड़े-से थे। आफताब ने तो डर के मारे अपने अब्बा से कोई सवाल नहीं किया, मगर अब्बास जरूर कुछ सोचने लगा—इमली टोली की बहुत अच्छी रीत है कि यहाँ के मुस्लिम परिवार के लोग अपने बच्चों को छुटपन में ही गैरेज में भेज दिया करते हैं—काम सीखने के लिए। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि ऐसे बच्चे बार-बार न खाने को माँगते हैं और न अपने माँ-बाप से बेतुके सवाल ही पूछ पाते हैं। अगर आज यह आफताब भी गैरेज जा रहा होता, तो ऐसा सवाल कैसे पूछता? उसे कौन बताए कि जिस घर में दूध खरीदा ही नहीं जा सकता, उस घर में दूधवाली चाय कैसे बन सकती है? गरीबी से बचने का एक बढ़िया उपाय यह

भी है कि बचपन से ही बच्चों को गरीबी और अमीरी के फर्क के बारे में सोचने-समझने का कोई मौका ही न दिया जाए। अगर यह लड़का इसी तरह घर में कुछ दिन और रह गया तो यह और भी टेढ़े सवाल पूछ सकता है। इसे सवालों से दूर रखने का एक ही उपाय है कि इसे भी जल्दी-से-जल्दी गैरेज में भेज दिया जाए। जरा जहूर ठीक हो जाए। इस बार हम जहूर के साथ आफताब को भी गैरेज में भेजकर ही रहेंगे। नूरी अगर कुछ बोलेगी तो इस बार हम उसको बढ़िया से सरिया भी देंगे। औरत को घर में औरत की तरह ही रहना चाहिए। उसे हर बात में टाँग अड़ाने का मौका कभी नहीं देना चाहिए।

दिन तो किसी तरह कट गया।

दीया-बत्ती करने के पहले ही नूरी ने घर में एक बार फिर झाड़ू लगाई। हाथ-पैर धोकर वह तैयार भी हो गई। कुछ देर के बाद भगताइन आ जाएगी। उसके साथ कलवाली औरतें भी होंगी। नूरी ने सबके लिए जमीन पर बोरा बिछा दिया।

ढिबरी जलाकर नूरी ने अगरबत्ती भी जला दी। कोठरी सुगंध से भर गई।

भगताइन आ गई। उसके साथ आज तीन औरतें थीं। भगताइन ने कल की तरह जहूर तथा बेनजीर को एक बार बड़े ध्यान से देखा और अपने दोनों हाथ जोड़कर वह बोलने लगी, “माता, दोनों बच्चों पर दया करना...”

भगताइन बोरे पर बैठ गई। अब उसने माता का गीत गाना शुरू कर दिया और बाकी औरतें भी उसका साथ देने लगीं।

इधर गीत शुरू हुआ और उधर अब्बास को भीतर से बड़ी बेचैनी मालूम पड़ने लगी। उसे ऐसा लग रहा था कि अब जैसे ही भगताइन का गाना बंद होगा, वैसे ही बेनजीर कल की तरह ही भूत भरने लगेगी और बकना शुरू कर देगी। मालूम नहीं आज वह उसके बारे में क्या-क्या बोल जाए?

भीतर से इस खौफ के कारण अब्बास नूरी को बिना कुछ बताए झोंपड़ी से टल गया। यह वह समय था, जब अब्बास के पैर मदकखाने की तरफ अनायास ही बढ़ने लगते थे। आज भी यही होने जा रहा था। इसी समय अब्बास को यह बात याद आ गई कि उसकी जेब में तो आज फूटी कौड़ी भी नहीं है। आज मदकखाने से उधार मिलना संभव भी नहीं; क्योंकि उधार का उसका खाता पहले ही काफी बढ़ चुका था।

अब अब्बास क्या करे?

वह धीरे-धीरे चलता हुआ सोचने लगा। उसके पैरों ने उसे लाला के गोदाम के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

लाला ने अब्बास को खाली हाथ देखते ही पूछा, “क्या बात है? आज खाली हाथ क्यों चले आ रहे हो?”

“आज धंधे पर हम नहीं जा सके।” अब्बास ने सिर झुकाकर जवाब दिया।

‘क्यों?’

“घर में दो-दो बच्चे बीमार हैं।”

“तो?”

“पाँच रुपए की जरूरत है।”

“अब्बास मियाँ, अगर तुम दस मिनट पहले आ जाते तो मैं तुम्हें पाँच नहीं दस भी दे देता। अभी-अभी मैंने महाजन को गल्ले के सारे-के-सारे रुपए दे दिए हैं। अभी तो महाजन ने चौक भी पार नहीं किया होगा।” लाला ने बनावटी सहानुभूति का प्रदर्शन किया।

लाला की इस आदत को अब्बास खूब अच्छी तरह जानता था, अतः उसने जोर डालते हुए फिर कहा, “बहुत जरूरी है, लालाजी।”

“यह तो मैं भी समझ रहा हूँ, पर करूँ क्या?”

“कोई उपाय कीजिए न?”

“क्या हुआ है तुम्हारे दोनों बच्चों को?” लाला ने संदेह के साथ यह सवाल किया, क्योंकि उसे यह याद है कि अब्बास पहले भी बच्चों के बीमार होने का बहाना बनाकर मदक और अफीम के लिए रुपए ले जाता रहा है।

“दोनों बच्चों को माता निकल आई हैं।”

यह सुनते ही लाला ने अपनी जेब टटोलनी शुरू कर दी। कुरते की भीतरी जेब से उसने तीन सिक्के निकालकर अब्बास की तरफ बढ़ाते हुए कहा, “लो, ये रुपए दूधवाले को देने थे। जब तुम्हें जरूरत है तो तुम्ही ले जाओ। मगर, कल जरूर कटवा देना।”

रुपए पाते ही अब्बास के पैर स्वचालित मशीन की तरह हरकत में आ गए और वे मदकखाने की तरफ तेजी से बढ़ने लगे।

: ११ :

जहूर बहुत छटपटा रहा था। बार-बार वह अपने शरीर को खुजलाने की जिद कर रहा था। शरीर पर फैले दानों को देखने से लगता कि उनके भीतर पानी भरा है। यदि जरा भी खरोंच लग गई तो पानी बहकर बाहर आने लगेगा। जहूर की तकलीफ देखकर नूरी रह-रहकर पिघल पड़ती। मगर यही तो समय था जब जहूर को सँभाले रखना था। यदि जहूर कोई नादानी कर गया तो मुश्किल पैदा हो जाएगी। आज वह बार-बार चिल्ला भी रहा था।

जहूर के बार-बार चिल्लाने के कारण अब्बास भी जाग रहा था। जहूर की बगल में ही बेनजीर का खटोला पड़ा था। बेनजीर को भी नींद नहीं आ रही थी और वह अपनी माँ का धीरज देख रही थी कि कैसे वह रात-दिन जहूर और उसकी सेवा में जूटी थी। बेनजीर अपनी तकलीफ छिपाए रखने की पूरी-पूरी कोशिश

करती। जब वह बिलकुल ही नहीं सह पाती, तभी वह अपनी माँ को आवाज देती।

“अम्माँ, सुनो। एक बात सुनो।” जहूर ने धीमी आवाज में कहा।

“बोलो, बेटा, हम सुन रहे हैं।”

“अब्बा, सुनिए।” जहूर ने अपने अब्बा को संकेत से अपने पास बुला लिया।

“बोलो बेटा, क्या बात है?” अब्बास ने पूछा।

“अम्माँ, हमारे और भी तो छोटे-छोटे भाई-बहन थे?” जहूर ने सवाल पूछा।

“हाँ, थे तो।” नूरी ने गीली आवाज में उत्तर दिया।

“अब्बा, आपने उन्हें कहाँ पहुँचा दिया था?”

यह प्रश्न सुनते ही अब्बास भीतर से एक बार हिल उठा। उसने नूरी की तरफ इस तरफ देखा मानो वह पूछ रहा हो कि जहूर को क्या जवाब दिया जाना चाहिए।

“अम्माँ, अब्बा चुप क्यों हो गए?” जहूर वे अब्बास से पूछकर अपनी अम्माँ से यह प्रश्न किया।

“बेटा, तुम्हारे दूसरे भाई-बहन अल्ला मियाँ के घर चले गए।” नूरी का उत्तर था।

“क्यों? क्या अल्ला मियाँ ने उन लोगों को अपने पास बुलाया था?” जहूर ने फिर सवाल किया।

“हाँ।” इस बार अब्बास ने उत्तर दिया।

“अल्ला मियाँ का घर कितनी दूर है?” जहूर ने जानना चाहा।

“बहुत दूर है, बेटा।” अब्बास बोला।

“आप जानते हैं, अब्बा?”

“हाँ।” अब्बास बहुत मुश्किल से बोल सका।

“अम्माँ, अल्ला मियाँ हमको भी बुला रहे हैं।” जहूर ने धीरे-से बताया।

यह सुनते ही नूरी रोने लगी। रोते-रोते ही उसने जहूर से कहा, “नहीं, नहीं, ऐसा मत बोलो, बेटा...ऐसा मत बोलो...”

“अम्माँ, तुम रोती क्यों हो? हम तो अपने भाई-बहनों के पास जा रहे हैं।” जहूर ने रुक-रुककर अपना यह कथन पूरा किया।

नूरी को रोता देख बेनजीर भी रोने-रोने को हो आई। उसकी आँखों की कोरों में भी आँसू की बूँदें चमकने लगीं।

“सोजा बेटा, तू सोजा। तुम्हें कुछ भी नहीं होगा।” अब्बास ने जहूर को समझाया।

“हाँ अब्बा, हमें नींद आ रही है। अब हम सोने जा रहे हैं। अम्माँ, तुम भी सो जाओ। अब्बा, आप भी सो जाइए। बेनजीर को भी सोने के लिए बोल दीजिए। आफताब कहाँ है?” जहूर ने कहा।

“वह तो सो रहा है।” रोते-रोते नूरी ने बताया।

“आफताब बड़ा अच्छा लड़का है। वह पहले ही सो रहा है।” इतना बोलकर जहूर ने अपनी दोनों आँखों को मींच लिया।

जहूर ने तो अपनी आँखें मींच लाँ, लेकिन उसके ऐसा करने से नूरी और अब्बास की आँखों की नींद उड़ गई। दोनों एक-दूसरे की तरफ देखते और सिर झुकाकर कुछ सोचने लगते।

कुछ देर के बाद बेनजीर को भी नींद आ गई।

“जहूर के अब्बा?” नूरी ने धीरे-से कहा।

“क्या बात है?”

“हमको बड़ा डर लग रहा है।”

“क्यों?”

“मालूम नहीं क्यों?”

“डरने की कोई बात नहीं है।”

“भीतर से बड़ा डर लग रहा है।”

“डर मत।”

“जहूर ऐसा क्यों बोल रहा था?”

“ज्यादा तबीयत खराब होने से कभी-कभी लोग इसी तरह अंट-संट बोलने लगते हैं।”

“मगर, जहूर तो बहुत साफ-साफ बोल रहा था।”

“पगली, तू क्यों नाहक परेशान है! देख, सभी सो रहे हैं। तू भी जरा एक नींद ले ले। जरा हम भी आराम कर लेते हैं।”



इमली टोली की औरतों का मैदान की तरफ आना-जाना शुरू हो गया था। इसी समय अब्बास की झोंपड़ी से रोने की आवाज आने लगी। मुहल्ले की औरतें अचानक झोंपड़ी की तरफ मुड़ने लगीं।

झोंपड़ी के भीतर नूरी जहूर की चौकी पर अपना माथा पटक-पटककर रो रही थी। आफताब अभी भी नींद में था।

अब्बास नूरी को अपनी पूरी ताकत से सँभालने की कोशिश कर रहा था, पर वह सफल नहीं हो पा रहा था। बला की ताकत आ गई थी इस समय नूरी में।

देखते-ही-देखते झोंपड़ी के सामने भीड़ जमा हो गई।

भगताइन दौड़ी-दौड़ी आ गई। उसे देखते ही नूरी उसके पैरों से लिपटकर रोने लगी, “मौसी, जहूर चला गया... वह हमको दगा देकर चला गया... हमको जरा-सी नींद क्या आ गई कि वह चुपके से चला गया...”

भगताइन भी रो पड़ी। उसने नूरी को उठाकर अपनी छाती से चिपका लिया।

वह उसके सिर पर हाथ फेर-फेरकर समझाने लगी, “चुप हो जा बेटी, जानेवाले को कौन रोक सकता है? माता को यही मंजूर था...तो कोई क्या करे? तुमसे तो कोई भूल भी नहीं हुई—चुप हो जा...”

“कैसे चुप हो जाएँ, मौसी?...वह तो खुद बोल रहा था—अल्ला मियाँ उसको बुला रहे हैं...उसके दूसरे भाई-बहन जहाँ गए हैं...वह वहीं जाना चाहता है...मगर, हम लोग उसकी बात का मतलब नहीं समझ सके...वह पहले ही हम लोगों को बता रहा था...मौसी, जहूर को पहले ही सब कुछ मालूम हो गया था...”

“बेटा अब्बास, जाओ तैयारी करो।” भगताइन ने अब्बास की तरफ देखते हुए कहा।

अब्बास उठकर झोंपड़ी के बाहर चला गया।

अब्बास के झोंपड़ी से निकलते ही औरतें झोंपड़ी में भर गईं। इसके बाद रोने-चीखने का एक हृदयविदारक दौर शुरू हो गया, जिसने इमली टोली के एक-एक व्यक्ति को हिलाकर रख दिया।

□

दिन के बारह बज रहे होंगे। धूप कुछ तीखी लग रही थी। अब्बास मुहल्ले के कुछ लोगों के साथ कब्रिस्तान से लौट रहा था। वह आगे था और उसके पीछे दूसरे लोग थे। अब्बास ने इमली टोली में पैर रखते ही देख लिया कि उसकी झोंपड़ी के सामने अभी भी औरतों की वैसी ही भीड़ जमा है, जैसी भीड़ सुबह जमा हो गई थी। भीड़ को देखते ही उसका दिल धक्क कर गया। एकाएक उसके चलने की गति तेज हो गई। वह लपकता हुआ अपनी झोंपड़ी की तरफ बढ़ा।

अब्बास को देखते ही झोंपड़ी के सामने खड़ी औरतों ने उसके लिए रास्ता खाली कर दिया। अब्बास ने बाहर से ही देख लिया कि बेनजीर का खटोला एक कपड़े से पूरी तरह ढँका है। उसे देखते ही वह चिल्ला पड़ा, “नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।”

आफताब बुरी तरह रो रहा था। वह दौड़कर अब्बास से लिपट गया।

चूल्हे के पास भगताइन के साथ कुछ औरतें थीं, जो नूरी को होश में लाने के लिए तरह-तरह की कोशिशें कर रही थीं। नूरी पूरी तरह अचेत थी और उसके केश बिखरे हुए थे। उसके दाँत जम गए थे।

यह सब देखकर अब्बास अपने को काबू में नहीं रख सका। उसने बेनजीर के चेहरे से कपड़े को हटाकर एक बार देखा और वह फूट-फूटकर रो पड़ा, “बेटी, तूने क्यों कहा था कि यहाँ कोई नहीं रहेगा...यहाँ से जहूर भी चला जाएगा...तुम भी चली जाओगी...यहाँ आफताब भी...नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता...हम ऐसा नहीं होने देंगे...”

अब्बास ने आफताब को उठाकर अपने सीने से कसकर ऐसे चिपका लिया जैसे कोई उससे आफताब को छीनने आ रहा हो। वह आफताब को अपने सीने से चिपकाए हुए ही जमीन पर बैठ गया।

अब उसके कानों में बेनजीर की बातें गूँजने लगीं, 'एक दिन यह झोंपड़ी खाली हो जाएगी... यहाँ सिर्फ एक चुड़ैल रहेगी... यह अब्बसवा मुझे मारने चला था न ? ... इसको इसकी सजा मिलकर रहेगी... यह पापी है... इस पापी के घर में... अब्बसवा से पूछो क्या वह अब भी गरीब आदमी है... ?'

अब्बास के सामने अब सब कुछ स्पष्ट होता जा रहा था। उसके भीतर छिपे दूसरे अब्बास ने उससे कहा, 'लालची कुत्ते ! अमीर बनने के चक्कर में तूने यह क्या कर दिया ? ... एक हजार रुपए के लिए तूने अपनी देवी जैसी बीवी से झूठ बोला ? ... एक हजार रुपए दबाकर तूने क्या पा लिया ? ... यह उसी बेईमानी का नतीजा है... तूने अपनी देवी जैसी बीवी से झूठ बोला और देवी ने तुझसे तुरंत बदला ले लिया। ... अगर तूने उस दिन बेनजीर की बात पर गौर किया होता... उसकी बातों के इशारे को समझा होता तो आज यह सब कभी नहीं होता... बेनजीर की आधी बात तो सच हो गई... कहीं उसकी बात पूरी तरह सच न हो जाए...'

अब्बास को लगा कि वह एकाएक निर्बल हो गया है। उसने आफताब को अपनी गोद से उतार दिया। अब वह फूट-फूटकर रोने लगा। उसके रोने की आवाज इतनी तेज थी कि औरतें भी मुड़-मुड़कर उसी की तरफ देखने लगीं।

शिवू भगत दौड़ा हुआ झोंपड़ी के भीतर आ गया। उसने अब्बास को उठाना चाहा, पर अब्बास ने भगत से ही लिपटकर रोना शुरू कर दिया। बहुत मुश्किल से भगत अब्बास को समझा-बुझाकर झोंपड़ी के भीतर से बाहर निकाल सका।

"अब्बास, यह रोने का समय नहीं है। धीरज से काम लो। जो लोग तुम्हारे साथ कब्रिस्तान से लौटे हैं, वे लोग अभी यहीं खड़े हैं। जाओ, तैयारी करो। लो, जल्दी से कफन-दफन का इंतजाम कर लो।"

शिवू भगत ने अब्बास के हाथ पर दस-दस के दो नोट रख दिए। भगत ने ही कय्यूम से कहा, "बेटा, जाओ कब्रिस्तान में जहूर की कब्र की बगल में ही एक गड्ढा और खोदकर तैयार करो। हम लोग जल्द ही आ रहे हैं।"

कय्यूम अपने कंधे पर फिर कोड़ी रखकर चल पड़ा।

: १२ :

कब्रिस्तान से लौटते-लौटते अँधेरा हो गया।

अब्बास ने बहुत डरते-डरते अपनी झोंपड़ी में प्रवेश किया। सामने जमीन पर नूरी बैठी थी। उसकी गोद में आफताब पड़ा था। दोनों देखने में पत्थर की मूरती

जैसे लग रहे थे। न हिलना, न डुलना। बिलकुल गतिविहीन। बगल में भगताइन बैठी थी। उसी ने अपना माथा उठाकर अब्बास की तरफ एक नजर देखा।

“क्या बात है, मौसी?” अब्बास ने डरते-डरते पूछा।

“क्या बताएँ, बेटा?”

अब्बास का शरीर अचानक थरथराने लगा। वह मुश्किल से पूछ सका, “फिर कोई बात है क्या, मौसी?”

“बेटा, आफताब का बदन बुरी तरह जल रहा है।”

यह सुनकर अब्बास सन्न रह गया। बड़ी कठिनाई से वह झुका। उसने आफताब के शरीर का स्पर्श किया। आफताब का बदन वैसा ही जल रहा था। उसने नूरी के कंधे पर हाथ रखकर उसे जरा हिलाना चाहा। नूरी एकाएक चौंकर पड़ी। सामने अपने मियाँ को देखते ही वह फफक-फफककर रोने लगी और रोते हुए ही बोलने लगी, “आफताब के अब्बा, यह लड़का भी उसी रास्ते पर चल पड़ा है... बेनजीर की एक-एक बात सच होती जा रही है... अगर हमारे आफताब को कुछ हो गया तो हम इसी इमली तालाब में डूबकर अपनी जान दे देंगे... आफताब के अब्बा, आप सुन लीजिए... हमारे बेटे को कुछ भी नहीं होना चाहिए...” इतना कहकर नूरी ने अब्बास का कुरता कसकर पकड़ लिया। उसने अपना माथा जरा झुकाया तो अब्बास का कुरता चर्र से बोल गया। पुराना कुरता नूरी का झटका बर्दाश्त नहीं कर सका और गले के पास से फट गया।

अब्बास कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था।

दरवाजे पर आहट-सी हुई। अब्बास ने देखा, वहाँ शिबू भगत खड़ा है। उसके साथ मुहल्ले के दो आदमी और थे।

सभी भीतर आ गए।

नूरी का रोना जारी था। भगताइन उसे चुप कराने की कोशिश भी करती जाती और स्वयं भी रोती चलती। भगत कुछ देर तक चुपचाप खड़ा रहा। वह कुछ बोलना चाह रहा था, पर वह कैसे और कहाँ से शुरू करे, उसकी समझ में यह नहीं आ पा रहा था।

नूरी आफताब को लिए-लिए एकाएक भगत के पैरों पर बहराकर गिर पड़ी। वह भगत के पैरों से लिपटकर रोती जा रही थी और बोलती जा रही थी, “मौसा, जहूर चला गया... बेनजीर भी चली गई... आप देखते रहे... आपने कुछ भी नहीं किया... कम-से-कम इसको तो बचा लीजिए... अगर यह नहीं बचा तो हम इसी इमली तालाब में डूबकर अपनी जान दे देंगे...”

नूरी के ऐसा करने से आफताब जमीन पर आ गिरा था। भगत ने तुरंत उसे अपनी गोद में उठा लिया। भगत को लगा कि अचानक उसकी काया किसी गरम चीज से सट गई है। इस ताप के बावजूद उसने आफताब को अपने सीने से चिपका

लिया। भगत ने बहुत साहस करके कहा, “मुनो बेटी, अब्बास तुम भी मुनो।”

दोनों ने अपने-अपने कान खड़े कर लिए।

“आफताब भी अपने भाई और बहन की तरह होता चला जा रहा है। इसे बचाने का अब बस एक ही रास्ता बच रहा है।”

“क्या मौसा?” मियाँ-बीवी दोनों एक साथ ही पूछ बैठे।

“तुम दोनों इस लड़के को मुझे दे दो। मैं इसे तुम लोगों में खरीद लेता हूँ। अब मैं ही इसकी देख-भाल करूँगा। अगर यह लड़का भी इसी झोंपड़ी में रह गया ... तो शायद इसका भी वही होगा...”

“नहीं, नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता।” नूरी एक बार फिर भगत के चरणों पर गिरकर लोटने लगी। भगताइन ने बहुत मुश्किल से नूरी को उठाकर बिठाया।

“क्या आफताब हमेशा के लिए आपके पास रहेगा?” अब्बास ने पूछा।

“यह मेरे पास उस समय तक रहेगा जब तक कि इसका मारकेश टल नहीं जाता।”

अब्बास मौन हो गया। वह क्या बोले? वह नूरी की तरफ देखने लगा।

“मौसा, ऐसा करने से हमारा बेटा बच तो जाएगा न?” नूरी ने ऐसे पूछा जैसे वह भगत से आफताब के जीवित रहने की निश्चित गारंटी माँग रही हो।

“बेटी, किसी को मारना और किसी को जीवन देना तो ऊपरवाले का काम है। मैं क्या हूँ? मेरे हाथ में क्या है? मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है। बस, मैं कोशिश ही कर सकता हूँ। तुम दोनों ने भी कोशिश की, मगर न तो जहूर बचा और न बेनजीर ही बच सकी। अब मैं कोशिश करके देखना चाहता हूँ। शायद आफताब बच जाए...” भगत ने रुक-रुककर अपनी बात पूरी की।

भगत की बात का नूरी और अब्बास पर जादू जैसा प्रभाव पड़ा।

“ठीक है मौसा, ले जाइए आफताब को।” नूरी कैसे यह बोल गई, इसे समझने में अब्बास को परेशानी-सी हो रही थी। वह तो अभी भी चुप खड़ा था। इस मामले में कुछ भी बोलने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी।

भगत ने आफताब को नूरी की गोद में डाल दिया। आफताब बिलकुल चुप था और सब कुछ देख रहा था।

भगत ने अपनी जेब टटोली। उसमें एक चवन्नी पड़ी थी। उसने चवन्नी निकालकर नूरी की तरफ बढ़ा दी और कहा, “आओ अब्बास, अब तुम दोनों मिलकर यह बोलो कि आफताब आज से हमारा बेटा नहीं रहा। हमने इसे एक चवन्नी में शिवू भगत के हाथ बेच दिया है।”

बड़ा हृदयविदारक दृश्य उपस्थित हो गया। नूरी तो कुछ बोल ही नहीं सकी। जो बोलना था, उसे अब्बास ने ही बोलकर पूरा किया। उसी ने चवन्नी भी ली।

भगत ने आफताब को अपनी गोद में ले लिया। वह बोला, “आफताब, आज से तू हमारा बेटा बन गया। हमने तुम्हें तुम्हारे माँ-बाप से एक चबन्नी में खरीद लिया है। अब तुम हमारे ही घर पर रहोगे।”

आफताब अभी भी चुप था। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह बोलना ही भूल गया हो।

“चलो भगताइन, घर चलो।” भगत ने भगताइन की तरफ देखा।

“चलो।” भगताइन भगत के पीछे-पीछे चल पड़ी।

भगत और भगताइन झोंपड़ी के बाहर चले गए। भगत के साथ आए दोनों आदमी भी चले गए।

झोंपड़ी में अब सिर्फ अब्बास और नूरी बच गए।

नूरी पहले जहाँ बैठी थी, वह वहाँ फिर बैठ गई। अब वह फिर मूरत जैसी निश्चल लगने लगी। माथा झुका हुआ। सिर के केश बिखरे हुए। अस्त-व्यस्त साड़ी। थका-थका शरीर।

अब्बास ने आज पहली बार नूरी को इतना थका-हारा देखा। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पहलेवाली नूरी कोई और थी और यह कोई दूसरी ही नूरी है। अब्बास नूरी से क्या बोले, उसे कैसे ढाँढस बँधाए यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। पिछले कई दिनों से लगातार नूरी ने जहूर तथा बेनजीर की सेवा में जिस तरह समय गुजारा था, उसे याद कर अब्बास अब हैरान था। क्या यही वह औरत है, जिसने अपने बेटे और बेटी को बचाने के लिए रात और दिन एक कर दिया था। जो औरत स्वचालित मशीन की तरह भाग-दौड़ रही थी, वह आज पत्थर बनी बैठी थी।

यह घर जो कभी तीन बच्चों से गुलजार रहा करता था, आज अचानक सूना हो गया था। इसके सूनेपन से एक अजीब डरावनी आवाज-सी निकलती प्रतीत होने लगी अब्बास को। उसने पीछे का दरवाजा बंद कर दिया। ऐसा करने के लिए उसे नूरी के सामने से गुजरना पड़ा, पर नूरी को इसका आभास भी नहीं हुआ। नूरी की इस भंगिमा ने अब्बास को विचलित कर दिया। उसने तुरंत सामने का दरवाजा बंद कर दिया। वह नूरी की बगल में आकर बैठ गया। उसने नूरी के कंधे पर अपना एक हाथ रखते हुए धीमी आवाज में कहा, “नूरी...”

इतना कहना था कि नूरी ने चौककर अब्बास के सीने पर अपना सिर टिका दिया। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह चली।

अब्बास केवल नूरी के सिर पर हाथ फेरने लगा। उसने अपने मन में सोचा, ‘इसे रो लेने देना चाहिए। शायद रोने से ही इसका गम कुछ कम हो सके।’

“जहूर के अब्बा... यह क्या हो गया?” नूरी ने रोते-रोते पूछा।

“अब हम जहूर के अब्बा कहाँ हैं?” अब्बास ने अनायास ही यह उत्तर दे दिया।

यह सुनते ही नूरी का रोना और तेज हो गया। अब वह रोने के साथ-साथ बोलने भी लगी, “हाँ, ज़हूर अब नहीं है... वह चला गया... बेनजीर भी चली गई... आफताब को भगत मौसा ले गए... यह क्या हुआ? यह झोंपड़ी देखते-ही-देखते इतनी खाली कैसे हो गई?... कल तक यहाँ पाँच-पाँच प्राणी थे... इस घर का कोना-कोना भरा लगता था... आज सब कहाँ चले गए?... यह झोंपड़ी आज इतनी खाली-खाली क्यों लग रही है?... इस झोंपड़ी में अब हम भी नहीं रह सकते... यह झोंपड़ी ही मनहूस है... यह हमारे सभी बच्चों को खा गई है...”

अब्बास ने नूरी के मुँह पर अपना हाथ रख दिया ताकि वह और कुछ न बोल सके—इस झोंपड़ी के खिलाफ। अब्बास ने नूरी को समझाते हुए कहा, “पगली, तू यह बात क्यों भूल गई कि तू इसी झोंपड़ी में एक दिन दुलहन बनकर आई थी। अल्ला मियाँ ने इसी झोंपड़ी में तुझे सारे बच्चे दिए थे... तू इस झोंपड़ी को मनहूस क्यों बता रही है?”

“मगर कहाँ गए हमारे सब बच्चे? कोई भी तो नहीं बचा।” नूरी ने रुक-रुक कर अपनी बात पूरी की।

“जिसने दिए थे, उसने वापस ले लिए। इसमें अफसोस करने की क्या बात है? खुदा का शुक्र है कि आफताब तो है न हमारे पास।” अब्बास ने नूरी को समझाने की कोशिश की।

“आज वह भी बेगाना हो गया... आज वह भी हमारा नहीं रहा...”

“ऐसा क्यों बोल रही है तू? आफताब है तो हमारा ही बेटा न?”

“अब वह हमारा बेटा कहाँ रहा?”

“क्यों? अब वह हमारा बेटा क्यों नहीं रहा?”

“उसे हमने बेच जो दिया। आज से उसके माँ-बाप भगत-भगताइन हो गए। आफताब अब हमारा बेटा नहीं रहा। भगत मौसा ने चवन्नी देकर उसे खरीद लिया है...”

“भगत मौसा ने खरीद लिया है तो क्या हुआ? वह बेटा तो हमारा ही कहलाएगा न? वह रहेगा भी हमारी आँखों के सामने ही।”

नूरी अपने खाबिद के लिए हमेशा ‘आप’ शब्द का ही प्रयोग करती रही थी, लेकिन आज उसके मुँह से ‘आप’ के स्थान पर ‘तुम’ निकलने लगा, “तुम मर्द हो न?... तुम कभी नहीं समझ सकते कि हमारा दुख क्या है?... एक माँ का दुख क्या होता है?... अब आफताब इस झोंपड़ी में नहीं रहेगा... वह हमारे पास भी नहीं रहेगा... वह हमारे पास सोएगा नहीं... हम माँ होकर भी एक बाँझ की तरह अपना जीवन कैसे गुजारेंगे?... बताओ, बताओ... जवाब दो... नहीं तो हमारा गला घोटकर हमको भी इस जीवन से छुटकारा दिलवा दो...”

नूरी आवेश में आकर अब्बास के सीने पर मुक्के मारने लगी और अब्बास उसे काबू में करने की कोशिश करने लगा ।

: १३ :

भगत और भगताइन ने बेंगा को बचा लिया । बेंगा—आफताब का नया नाम था । आफताब को खरीदने के बाद उसे नया नाम देना जरूरी हो गया था । लोग ऐसा मानते हैं कि यदि किसी घर में बच्चे जन्म लेकर मर जाते हों और किसी बच्चे को बचाना आवश्यक हो, तो वैसे बच्चे को लोग वड़ा ऊटपटांग नाम दे दिया करते हैं । चूँकि आफताब के भाई और बहन की मृत्यु का आघात बिलकुल ताजा था, अतः भगत और भगताइन ने आफताब को बचाने का यही तरीका सोचा कि उसे उसके माँ-बाप बेच दें । आफताब सुंदर तो था ही । उसके चलने का ढंग भी बड़ा प्यारा था । जब वह चलता तो लगता है कि जैसे कोई बेंग उछल-उछलकर चल रहा हो । उसकी चाल की इस विशेषता को ही ध्यान में रखकर आफताब का 'बेंगा' नामकरण कर दिया गया । यह नाम सबकी जिह्वा पर आसानी से चढ़ भी गया । आफताब बोलने में सबको थोड़ी कठिनाई होती थी और कभी-कभी लोग भूल से आफताब को अब्बास और अब्बास को आफताब बोल दिया करते थे ।

बेंगा की जान बच गई, पर उसका सौंदर्य नष्ट हो गया । पूरे शरीर पर चेचक के बड़े-बड़े दाग रह गए । उसका प्यारा-प्यारा मुखड़ा विकृत हो गया । उसे अचानक देखकर पहचानने में परिचितों को भी एक बार कठिनाई होने लगी ।

नूरी भीतर से बहुत खुश थी कि उसका लाल बच गया । जिस दिन उसने आफताब को बेचा था, उसने मान लिया था कि वह भी कब्रिस्तान पहुँचा दिया गया है । हाँ, अब्बास को वैसे कोई खुशी नहीं थी । उसे आफताब का विकृत चेहरा पसंद न था और न नया नाम ही ।

इधर अब्बास में एक भारी परिवर्तन हुआ । पहले वह नमाज के लिए जुम्मे के दिन भी मस्जिद नहीं जाता था, लेकिन इधर वह दिन में पाँच बार नमाज पढ़ने लगा । यदि वह घर से बाहर होता और नमाज का समय हो जाता, तो वह जमीन पर बोरा बिछाकर नमाज पढ़ने के लिए बैठ जाता । उसके भीतर अब 'मजहब' ने अपनी जड़ें जमानी शुरू कर दी थीं । इसी का नतीजा था कि वह अब बेंगा को बेगाना-सा मानने लगा था । उसे लगता कि उसके बेटे आफताब का मजहब बदल दिया गया है और अब वह मुसलमान नहीं रहा । उसके जेहन में यह बात भी आती कि यदि उसने किसी हाजी की मदद ली होती तो शायद जहूर और बेनजीर भी बच जाते । उसने नूरी को अपने ढंग से दोनों की सेवा-सँभाल के लिए आजादी देकर भूल की । उसके मन में यह बात जम-सी गई कि नूरी के हिंदू तौर-तरीके के कारण ही उसके बच्चे उससे छिन गए ।

अब वह कोशिश करने लगा कि नूरी पूरी तरह मुस्लिम बन जाए—देखने में, बोलने में, पहरावे में, चाल-ढाल में और तौर-तरीकों में। परिवर्तन की यह लहर धीरे-धीरे इमली टोली के हर मुस्लिम परिवार में दिखाई पड़ने लगी थी। पहले इस मुहल्ले में मुल्ला-मौलवी नजर भी नहीं आते थे, मगर अब उनका आना-जाना अचानक यहाँ बढ़ गया था। एक मौलवी साहब अब्बास के घर बराबर आने-जाने लगे, जिन्हें मुहल्ले के लोग मौलवी साहब न बोलकर 'मूली साहेब' बोलते थे।

बेंगा प्रायः दिन-भर नूरी के पास रहता। इससे नूरी को बड़ी खुशी मिलती। रात होते ही भगत और भगताइन बेंगा को अपने घर बुला लेते। बेंगा नए घर में प्रसन्न था। आफताब की झोंपड़ी मिट्टी की बनी थी और उसमें एक ही कोठरी थी। फर्श तो था ही नहीं। सबको जमीन पर सोना पड़ता था। बरसात के दिनों में खपरैल का छप्पर चूता भी था। भगत का घर ईंटों से बना था और उसमें दो कमरे थे। हर कमरे में रोशनी रहती और हवा भी आती रहती। फर्श पक्का था। सोने के लिए सबके पास अपनी-अपनी खटिया थी। बेंगा भगताइन के पास ही सोता था। भगताइन तो मुहल्ले-भर की मौसी थी, इसलिए बेंगा भी उसे 'मौसी' ही बोलता। इस घर में आकर बेंगा ज्यादा खुश था। उससे कहीं ज्यादा खुश तो भगत और भगताइन थे; क्योंकि बुढ़ापे में उन्हें 'संतान-सुख' मिल रहा था।

नूरी ठोंगा बनाने में लगी थी। बेंगा उसकी बगल में जाकर बैठ गया और वह भी ठोंगा बनाने की कोशिश करने लगा। उसे ऐसा करते देख नूरी को बेनजीर की याद आ गई। वह जब जीवित थी, अपनी माँ के साथ बैठकर ठोंगा बनाया करती थी। तब नूरी कितना ज्यादा काम कर लिया करती थी। कभी-कभी बेनजीर ठोंगे बेच भी आया करती थी। वैसे ठोंगे बेचने का काम जहूर का था। अब यह काम अब्बास खुद करने लगा था। नूरी को अब ठोंगे का हिसाब ठीक-ठीक नहीं मिल पाता। कभी अब्बास उधार लगा आने की बात कहता तो कभी वह कहता कि ठोंगे का भाव गिर गया है। नूरी अब्बास के इस रवैये से तंग आ गई थी। अब वह सोचने लगी थी कि या तो वह खुद ठोंगा बेचने जाया करेगी या फिर वह ठोंगा बनाने का काम ही बंद कर देगी।

नूरी ने बेंगा को अपनी गोद में बिठा लिया। उसे चूमते हुए उसने पूछा, "बेंगा बेटा, तुम्हें मौसी के घर कैसा लगता है?"

"बहुत अच्छा, अम्माँ।"

"मौसा-मौसी तुम्हें प्यार करते हैं?"

"बहुत।"

"तुमने नाश्ता कर लिया?"

"हाँ।"

"क्या-क्या खाकर आया है?"

“जलेबी और कचौड़ी।”

यह सुनकर नूरी जरा उदास हो गई। वह याद करने लगी कि उसके बच्चों ने जलेबी और कचौड़ी कब खाई थी। वह कुछ याद नहीं कर सकी।

“अपनी अम्माँ के लिए क्यों नहीं लाया?”

“कल ला दूँगे।”

“तो क्या तू रोज-रोज जलेबी-कचौड़ी खाता है?”

“हाँ, मौसा लाकर देते हैं रोज।”

“तू चाय भी पीता है वहाँ?”

“हाँ। मौसी दूधवाली चाय बनाती है।”

नूरी पुनः उदास हो गई। उसे उस दिन की याद आ गई, जिस दिन यही लड़का होटल से दूधवाली चाय पीकर आया था और बोल रहा था, अम्माँ, दूधवाली चाय बनाया करो!

“मगर मौसी कल से हमको चाय नहीं देगी।”

“क्यों?”

“मौसी कहती है, बच्चों को खाली दूध पीना चाहिए।”

“बेटा, मौसी ठीक कहती है। तू चाय मत पिया कर। दूध ही पिया कर।”

“हम दूध क्यों पिया करें?”

“दूध पीने से बच्चे जल्दी बड़ते हैं, बेटा।”

“तब तुम हमको दूध क्यों नहीं देती थीं?”

नूरी एक बार फिर उदासी के भँवर में फँस गई। अब वह बेंगा को क्या जवाब दे? वह कैसे अपने बेटे को बताए कि वह उसे दूध क्यों नहीं दिया करती थी।

“हम लोगों के पास बकरी नहीं है न, इसीलिए। मौसी के पास तो बकरी है।”

“हाँ, मौसी के पास बकरी है। मौसी कह रही थी, बकरी बच्चा देगी।”

“अच्छा!”

“बकरी का बच्चा लोगी, अम्माँ?”

यह सुनते ही नूरी के नेत्र आँसुओं से गीले हो गए। वह मन-ही-मन सोचने लगी, जिस अभागिन ने अपना जाया दूसरे के हाथों बेच दिया, वह बकरी का बच्चा लेकर क्या करेगी? फिर भी उसने अपने आँसुओं को पोंछते हुए कहा, “हाँ, जब बकरी बच्चा देगी, तो एक बच्चा हमारे लिए जरूर ले आना।”

“अम्माँ, तुम अभी क्यों रो रही थीं?”

“नहीं बेटा। आँखों में कुछ पड़ गया था।”

“दोनों आँखों में?”

इस सवाल ने नूरी को चौंका दिया। उसने आफताब के गाल पर चुंबन जड़

दिया और कहा, “अब तू बड़ा समझदार होता जा रहा है।”

कुछ पलों तक दोनों चुप बैठे रहे।

“बेंगा, आज रात को तू यहाँ हमारे पास सोएगा?” नूरी ने पूछा।

“नहीं।” बेंगा ने टप् से जवाब दे दिया।

यह उत्तर सुनकर नूरी दंग रह गई। उसने पूछा, “ऐसा क्यों, बेटा?”

“यहाँ खटिया कहाँ है?” इतना बोलकर बेंगा झोंपड़ी के बाहर फुरं से निकल गया।

घर का काम-धाम करते और ठोंगे बनाते हुए नूरी दिन का समय ठीक-ठाक निकाल देती। दिन के समय बेंगा भी अक्सर उसके पास आता-जाता रहता, इसलिए दिन काटना नूरी को बिलकुल नहीं अखरता। जैसे ही दीया-बत्ती का समय होता, नूरी के हृदय में एक डरावना और घुप्प अँधेरा फैलने लगता। ढिबरी जलाते ही वह अपनी झोंपड़ी के दोनों दरवाजे बंद कर देती। उसे डर लगता रहता कि यदि ये दरवाजे खुले रहेंगे तो शायद फिर कोई नई बला इस घर में घुस आएगी। नूरी को बराबर यही लगता कि मौत अभी भी इस झोंपड़ी के चक्कर लगा रही है। ऐसे एकांत क्षणों में उसे बेनजीर की उस दिनवाली बातें याद आने लगतीं। जहूर चला गया...बेनजीर भी चली गई...एक तरह से आफताब भी इस घर को छोड़कर चला ही गया। बेनजीर ने यह भी कहा था—सोनिया भी यहाँ नहीं रहेगी...यहाँ एक चुड़ैल रहेगी...

नूरी सोचती—बस यही एक बात होनेवाली है। हमें भी यहाँ से जाना है... वह कब और कैसे यहाँ से जाएगी...उसे मालूम नहीं। जाने की आशंका उसे भयभीत कर जाती। इसी कारण उसे लगता कि मौत झोंपड़ी के चक्कर लगा रही है।

मगर, कभी-कभी नूरी यह भी सोचती कि कहीं ऐसा तो नहीं कि अब वह नूरी न रही हो...अब वही चुड़ैल बन गई हो...जिस चुड़ैल के बारे में बेनजीर बोल गई है...

अकेले में इसी तरह की बे-सिर-पैर की बातें नूरी के दिमाग में चक्कर काटने लगतीं। वह इन बातों को झेलने की पूरी कोशिश करती, लेकिन जब इन बातों को झेलना असंभव हो जाता तो वह भगताइन मौसी के पास चली जाती।

भगताइन नूरी का दर्द अच्छी तरह समझती थी। वह उसे समझाती, अपनी सहानुभूति देती और देती वह समझदारी जिसके सहारे नूरी अब तक अपने को सँभाल सकी थी।

इस समय तक अक्सर बेंगा सो जाया करता था। अगर वह जगता होता तो वह खटिता पर अपनी दोनों टाँगें फैलाकर लेट जाता और नूरी उन्हें दबाने लगती। यह पुराना नियम था। जब तक आफताब अम्मा से अपनी टाँगें नहीं दबवा

लेता था, उसे नींद नहीं आती थी। फिर तो ऐसा अनुकूलन हो गया कि आफताब की टाँगें दबाए बगैर नूरी को भी चैन नहीं मिल पाता था। इसी वजह से जब नूरी देखती कि बेंगा सो गया है तो भी वह बेंगा की खटिया के पास बैठकर हौले-हौले उसकी टाँगों को दबाने लगती। नूरी के दोनों हाथ तो बेंगा की टाँगों पर चल रहे होते और नेत्र आँसुओं से गीले हो आते। यह कारुणिक दृश्य भगताइन मौसी नहीं देख पाती, इसलिए वह वहाँ से किसी बहाने टल जाती।

: १४ :

“हजरात, आज रात को आठ बजे, मदरसा के मैदान में एक शानदार जलसा होने जा रहा है। इस जलसे में, दिल्ली के मशहूर आलिम मौलाना तिरबेदी की तकरीर होगी। इस अजीमोशान जलसे में शरीक होकर, शबाबेदारायन हासिल करें...”

चौराहे पर खड़ा एक आदमी भोंपू से यह ऐलान कर रहा था। ऐलान खत्म कर वह आगे बढ़ गया।

अब्बास दुकान से पान ले रहा था। पानवाले ने अब्बास से पूछा, “यह मौलाना तिरबेदी कौन है? कई दिनों से मैं इनकी बड़ी तारीफ सुन रहा हूँ। सुना है ये बहुत बढ़िया तकरीर करते हैं।”

“हाँ साबिर मियाँ, आपने ठीक ही सुना है मौलाना के बारे में।” अब्बास ने समर्थन किया।

“मैंने तो यह भी सुना है कि मौलाना पहले हिंदू थे—बराहमन घराने से। बाद में उन्होंने इस्लाम कुबूल किया। इसीलिए उनके नाम के पीछे तिरबेदी लगा है।”

“अच्छा! यह तो हमें मालूम ही नहीं था।” अब्बास ने कहा।

“अब्बास भाई, अगर तुम चाहो तो मैं भी तुम्हारे साथ चल सकता हूँ मौलाना की तकरीर सुनने। आज जरा पहले ही दुकान बंद कर दूंगा। बोलो, चलोगे?” पानवाले ने पूछा।

“ठीक है साबिर मियाँ, तय रहा। हम यहाँ आ जाएँगे और साथ-साथ चलेंगे मदरसा के मैदान में।”

अब्बास पान की गिलौरी मुँह में डालकर चल पड़ा।

शहर में कब-कब किस मौलाना का आगमन होता है और किस मौलाना की कहाँ तकरीर होनेवाली है, आजकल अब्बास इसका पूरा पता रखता था। पहले उसकी झोंपड़ी में कोई मजहबी तसवीर नहीं टँगी थी। लेकिन अब उसने झोंपड़ी की दीवार पर मक्का-मदीना और दुलदुल घोड़े की तसवीरें टाँग रखी थी। पहले अब्बास सात-आठ दिनों के बाद अपनी दाढ़ी जरूर बनवा लिया करता था, लेकिन

अब उसने दाढ़ी बढ़ा ली थी। पहले अब्बास मुसलमान होने के नाते ईद और बकरीद दूसरे लोगों की नकल पर मनाया करता था। ईद-बकरीद पर वह अपने लिए, नूरी के लिए और बच्चों के लिए नए कपड़े बनवाता, लेकिन उसे ठीक से यह भी पता नहीं था कि ईद और बकरीद मनाने के पीछे क्या कारण हैं? वस्तुतः मुसलमान होने के बावजूद अब्बास अपने मजहब के बारे में नहीं के बराबर जानकारी रखता था। सबसे पहले वह अपने को एक रद्दीवाला मानता था। रद्दी खरीदना और बेचना ही पहले उसका मजहब था और पेशा भी। लेकिन अब अब्बास मजहब का मतलब समझने लगा था और उसकी नजर में मजहब का सबसे ऊँचा मुकाम था। पहले इमली टोली के लोग उसके लिए अपने थे, लेकिन अब मुहल्ले के लोगों को वह हिंदू और मुसलमान दो वर्गों में बाँटकर देखना सीख चुका था।

□

मदरसा का मैदान बहुत बड़ा नहीं था। उसमें शमियाना गाड़कर चार चौकियाँ रखकर मंच बना दिया गया था, जिस पर एक लंबी मेज पड़ी थी। मेज पर एक सफेद चादर बिछी थी। चादर पर दो गुलदस्ते गुलदान में लगे थे। मंच पर बड़ी मस्जिद के इमाम और मौलाना तिरबेदी बैठे हुए थे।

इसलामिया नौजवान कमेटी के सेक्रेटरी अभी मौलाना का इस्तकबाल कर रहे थे।

अपने इस्तकबाल के बाद मौलाना तिरबेदी लोगों के सामने आकर खड़े हो गए।

मौलाना तिरबेदी अन्य मौलानाओं की तरह नहीं थे। उन्होंने पीले रंग का एक लंबा चोंगा पहन रखा था और उनके हाथ में एक मोटी लाठी थी जो साँप जैसी लगती थी। देखने में गोरे-चिट्टे। मजबूत काठी। सिर पर बड़े-बड़े खिचड़ी बाल। उम्र यही कोई साठ के आसपास। दाढ़ी लंबी-लंबी, जिस पर मेहँदी लगी थी। आँखें छोटी-छोटी और खोपड़ी में धँसी हुई।

“दोस्तो”, मौलाना के इस संबोधन ने सबको चौंका दिया। अमूमन कोई मौलाना अपने सुननेवालों को ‘दोस्त’ कहकर संबोधित नहीं करता, इसलिए लोगों को लगा कि यह मौलाना बिलकुल अलग किस्म का आदमी है और इसकी तकरीर में जरूर कोई खासियत होगी। इसलिए लोग सावधान होकर बैठ गए।

“मैंने आप लोगों को दोस्त कहा और आप चौंक गए। शायद आपको ऐसा लगा कि आपके खूबरू कोई मौलाना नहीं, बल्कि एक ऐसा शख्स खड़ा है, जो सबको अपना दोस्त मानता है और जो शख्स सबको अपना दोस्त मानता है, वह मौलाना कैसे हो सकता है?”

इस बात पर लोग हँस पड़े।

“आप यकीन मानें मैं कोई मौलाना हूँ भी नहीं। मैं तो एक मामूली इंसान

हूँ। मामूली आदमी होने के नाते मैं आपके सामने दीने-इसलाम के बारे में कोई चौंकानेवाली बात नहीं बोल पाऊँगा। मैं जैसा मामूली हूँ, मेरी तकरीर भी वैसी ही मामूली होगी।”

मौलाना की इस बात से लोगों को यह साफ-साफ लग गया कि यह मौलाना मामूली नहीं; बल्कि कोई गैर-मामूली मौलाना है।

“इसलाम और मुसलमानों के मुतल्लिक आज लोगों के बीच कई तरह की गलतफहमियाँ फैलाने की कोशिश की जा रही है। इन गलतफहमियों में एक खास गलतफहमी यह है कि इसलाम में औरतों को दोगुना दर्जा हासिल है जबकि हकीकत कुछ और है। हकीकत तो यह है कि इसलाम के पहले दुनिया की हर कौम में औरत को मर्द से नीचा और छोटा माना जाता था। उसकी बेइज्जती की जाती थी और उसे तरह-तरह के जुल्मों का शिकार बनाया जाता था।”

मौलाना ने जरा रुककर यह अनुमान लगाने की कोशिश की कि उनकी तकरीर का लोगों पर कैसा प्रभाव पड़ रहा था।

“मैं आपको बताना चाहता हूँ कि इसी हिंदुस्तान में जब किसी औरत का खाविद मर जाता था, तो उस बेवा को अपने खाविद की लाश के साथ जलाकर मार डाला जाता था। चीन की औरतों को लोहे के तंग जूते पहनाए जाते थे। अरब में लड़कियों को जिंदा दफन कर दिया जाता था। तवारीख गवाह है कि औरतों पर होनेवाले ये जुल्म हाल-हाल तक चालू थे। मगर, आज से सैकड़ों साल पहले अरब मुल्क में प्यारे नबी सल्लह नजर आते हैं, जिन्होंने औरतों पर ढाए जानेवाले जुल्मों का खात्मा कर दिया।

“प्यारे नबी सल्लह ने अरबी सोसाइटी में औरतों को मर्द के बराबर का दर्जा दिलाया। पहले जायदाद और दौलत में औरत को कोई हक नहीं होता था। लेकिन नबी ने औरतों को भी ये हक अता किए। माँ-बाप और रिश्तेदारों की जायदाद में भी औरतों को वारिस माना गया। आज की दुनिया में, कई मुल्कों में औरतों को ये हक अब तक हासिल नहीं हो सके हैं। इंगलिस्तान दुनिया का एक ऐसा मुल्क है, जहाँ जहूरियत है। मगर, इस मुल्क में भी सन् १९२८ के पहले औरतों को वोट देने का हक हासिल नहीं था। लेकिन, हम जानते हैं कि आज से चौदह सौ साल पहले ही प्यारे नबी सल्लह ने ये सारे हक औरतों को दे दिए। इसीसे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इसलाम औरत की कैसी और कितनी कद्र करता है।”

सुननेवाले मौलाना तिरबेदी की तकरीर ध्यान से सुनने में मग्न थे।

“प्यारे नबी ने यह बताया कि औरतों के साथ कैसा सलूक किया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ उन्होंने यह भी तय कर दिया कि औरत को किस ढंग से रहना चाहिए और उसके कौन-कौन-से फर्ज हैं। जिस मजहब ने औरतों को इतनी इज्जत बखशी, उस इसलाम पर आज कुछ लोग यह इलजाम लगाते हैं कि

इसलाम किसी भी मर्द को अनेक बीवियाँ रखने की इजाजत क्यों देता है ?”

श्रोता चौकन्ने होकर बैठ गए यह सुनने के लिए कि अब मौलाना क्या बोलने-वाले हैं।

“इस सिलसिले में हमें तवारीख, मर्द की आदतों और उसकी जिस्मानी जरूरतों के कुछ पहलुओं पर ध्यान देना होगा। राजा दशरथ की कई बीवियाँ थीं। कृष्णजी का संबंध रुक्मिणी, सत्यभामा और राधा के अलावा बेहिसाब गोपियों के साथ था। वल्ली औरतों के साथ हम मरगन जैसे देवताओं को ऐश करते हुए पाते हैं। ये बातें बड़ी पुरानी हैं और इनका जिक्र पुराणों में मिलता है। तवारीख से यह पता चलता है कि राजे-महाराजे कई-कई औरतों से शादी रचाते थे। हरम में ऐसी अनेक औरतें रखी जाती थीं जिनका इस्तेमाल राजे-महाराजे किया करते थे।

“पहले अरब में भी बीवियों की गिनती पर कोई पाबंदी नहीं थी। लोग अपनी मरजी के मुताबिक शादियाँ करते और बाँदियाँ भी रखते थे। तलाक पर भी कोई पाबंदी नहीं थी। जब जिसकी मरजी होती थी, वह अपनी बीवी को तलाक दे देता था। इन हालात के सुधार के लिए इसलाम ने शादी और तलाक के नियम बना दिए। हमारे प्यारे नबी ने मर्द की आदतों और जरूरतों का खयाल रखते हुए यह तय कर दिया कि एक मर्द ज्यादा-से-ज्यादा चार औरतों से शादी कर सकता है और यह भी तय कर दिया कि मर्द अपनी बीवी को किन हालत में तलाक दे सकता है।”

मैदान में बैठे लोग मौलाना तिरबेदी की तकरीर में खोते चले जा रहे थे।

“जो लोग इसलाम को अच्छी तरह नहीं समझते, वे कहते हैं कि इसलाम में मर्दों को ज्यादा आजादी दी गई है और औरतों को मर्द की बाँदी बना दिया गया है। यहाँ मर्द की जरूरतों और मादा पर तबज्जो देना होगा। कुदरत ने मर्द को ऐसा बनाया है कि उसे किसी भी समय सोहबत की जरूरत पेश आ सकती है। कुदरत ने उसे हमेशा और हर हाल में इस काम के काबिल बनाया है जबकि औरतों का मामला मर्दों से बिल्कुल अलहदा है।

“कुदरत ने औरतों को ऐसा बनाया है कि वे माहवारी, हमल के दिनों में और बच्चे की पैदाइश के बाद भी कुछ समय तक मर्द के काम के लायक नहीं रहतीं। ऐसे समय में मर्द बहक सकता है और अपनी जिस्मानी जरूरतों को पूरा करने के लिए हराम रास्ते पर भी जा सकता है। अगर मर्द को यह आजादी मिल जाए तो सोसाइटी में बदकार औरतों की बाढ़ आ जाएगी और उससे जो गंदगी फैलेगी, उसका आप खुद भी अंदाजा लगा सकते हैं। इसलिए इसलाम ने ऐसी सूरत निकाली जिससे मर्द जायज तरीके से अपनी जिस्मी जरूरतों को पूरा कर सके। उसने जो राह निकाली, उनमें तंगी नहीं रखी गई कि मर्द हराम रास्तों पर चलने

को मजबूर हो जाए।”

मौलाना ने देखा कि उनके सामने बैठे लोग बिलकुल खो-से गए हैं और वे तकरीर को सुन नहीं रहे हैं; बल्कि पी रहे हैं।

“इसलाम ही एक ऐसा मजहब है, जिसने सबसे पहले बदचलनी और बदकारी को हराम ठहराया और मर्द को चार बीवियाँ रखने की इजाजत देकर इस दुनिया को जहन्नुम बनने से बचा लिया। इस तरह यह जाहिर है कि दीने-इसलाम ने मर्द को चार शादियों की इजाजत देकर बिलकुल सही काम किया है। इससे यह भी जाहिर होता है कि इसलाम एक साइंटिफिक मजहब है। इसलिए जो लोग इसलाम पर यह इल्जाम लगाते हैं कि इसलाम में औरत को मर्द के मुकाबले नाचीज माना गया है, वे गलती पर हैं। सच तो यह है कि इसलामी कानून ने औरत को जैसा ऊँचा दर्जा दिया है, वह दुनिया में एक मिसाल है और इस मिसाल का कोई जवाब नहीं है।”

इतना बोलकर मौलाना अपनी कुरसी की ओर बढ़ गए और लोग शमियाने से सरकने लगे जबकि वड़ी मस्जिद के इमाम की तकरीर अभी बाकी थी।

: १५ :

नूरी अपने सोने के लिए जमीन पर अलग बोरा बिछाती थी और अब्बास का लेदरा जरा दूर बिछा दिया करती थी। रात जब गहराने लगती, अब्बास अपना लेदरा सरकाकर नूरी के पास ले आता और वह नूरी को अपने बिस्तर पर खींच लेता।

अब्बास बराबर यह चाहता रहा कि जो कुछ हुआ, उसे नूरी भूल जाए और वह नए सिर से अपनी जिंदगी शुरू करे। अब्बास ने मान लिया था कि आफताब उर्फ बेंगा अब उसका बेटा नहीं रहा। वह बेंगा को देखता तो उससे बात तक नहीं करता। अब्बास की इच्छा थी कि इस झोंपड़ी में किसी नए बच्चे का जन्म हो। इस नीयत से उसने हर रात कोशिश की, पर नूरी को नहीं मना सका। अब्बास जबरदस्ती पर भी उतर आता। तब नूरी बिस्तर से उठती और ढिबरी जलाकर बैठ जाती। कई रातें उसने इसी तरह जगने हुए गुजारी।

अब्बास अब तक नूरी की इस हरकत को बर्दाश्त करता रहा था, लेकिन एक दिन वह आपे से बाहर हो गया। उसने गुस्से में नूरी से कहा, “यह क्या तमाशा है? तेरे बच्चे मर गए तो इसका मतलब यह तो नहीं कि हम साधु-संन्यासी बन जाएँ?”

नूरी ने कोई जवाब नहीं दिया।

अब्बास ने नूरी के शरीर को झकझोरते हुए पूछा, “तू चुप क्यों है? कुछ बोलती क्यों नहीं?”

“अब हमें यह सब अच्छा नहीं लगता है।” नूरी ने बहुत धीमी आवाज में जवाब दिया।

“यह तो कोई बात नहीं हुई। अगर हम मियाँ-बीवी हैं, तो हमें मियाँ-बीवी की तरह रहना भी चाहिए।”

“.....”

“अगर तेरा यही रवैया रहा तो हमें मजबूर होकर हराम रास्ते पर चलना होगा।”

“तो आपको मना किसने किया है?”

“अगर तू यही चाहती है तो अब यही होगा।”

“हम कौन होते हैं चाहनेवाले या न चाहनेवाले? आप क्या-क्या करते हैं, क्या हम देखने जाते हैं? आपके जी में जो आता है, आप वही तो करते हैं।”

“तू हम पर तोहमत लगाती है। समझ गए हम—खूब अच्छी तरह समझ गए। अब तेरे साथ हमारा गुजारा मुश्किल है। अब हमें कोई-न-कोई उपाय करना ही होगा।”

यह बोलकर अब्बास ने अपना लेंदरा नूरी के बोरे से काफी दूर कर लिया।

□

बड़ी मस्जिद के इमाम ने अब्बास की बातें बड़े ध्यान से सुनीं। वह कुछ सोचने का स्वाँग करता रहा, फिर उसने अपना मुँह खोला, “अब्बास मियाँ, इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं है। तुम्हारी परेशानी दूर करने का मेरे पास एक उपाय है।”

अब्बास चहक उठा, “कौन-सा उपाय, इमाम साहब?”

“मेरी नजर में एक बेवा है।”

“बेवा?” अब्बास की आवाज एकाएक गमगीन हो गई।

“हाँ बेवा।”

“उसकी क्या उम्र होगी?”

“यही कोई पचास की होगी।”

“इमाम साहब, वह तो हमसे काफी बड़ी है।” अब्बास के स्वर में उदासी थी।

“अरे, मैं उसकी बात कहाँ कर रहा हूँ, वह तो लड़की की अम्माँ है।”

“हम तो कुछ और ही समझ बैठे थे।” अब्बास की जान-में-जान आई।

“उस बेवा की एक लड़की है। लड़की काफी खूबसूरत है, पर रंग जरा साँवला है। घर के काम-काज में काफी होशियार है लड़की। अगर तुम चाहो तो तुम्हारी निस्बत मैं लड़की की अम्माँ से बातचीत कर सकता हूँ। लड़की यही कोई उन्नीस-बीस की होगी।”

“इमाम साहब, आप जरूर मेरी निस्बत बातचीत कीजिए।”

“पर मियाँ, इसमें सब मिला-जुलाकर कोई आठ-नौ सौ रुपए का खर्च है।”

“हम तैयार हैं।”

अब्बास निकला तो था अपने धंधे पर, पर रास्ते में अचानक उसकी नजर बड़ी मस्जिद के इमाम पर पड़ गई। उसे यह जरा भी उम्मीद नहीं थी कि उसका मामला इतनी जल्दी फिट बैठ जाएगा। इमाम साहब के आश्वासन ने अब्बास को एक बार फिर जवान बना दिया। वह मिशन के मैदान से गुजर रहा था। उसके जी में आया कि आज थोड़ा आराम कर लिया जाए। धंधा-पानी तो रोज चलता ही रहता है। वह एक पेड़ के नीचे बोरा बिछाकर बैठ गया। जब से एक बीड़ी निकाल-कर उसने सुलगा ली।

अब्बास बोरे पर पसर गया। उसके मन में तरह-तरह की तरंगें उठ रही थीं—कैसी होगी हमारी होनेवाली नई बीवी? इमाम साहब तो यही बोल रहे थे कि लड़की खूबसूरत है। अरे, जरा साँवली है तो क्या हुआ? लैला भी तो काली ही थी। लड़की उन्नीस-बीस की है, यह सबसे बड़ी बात है। रही आठ-नौ सौ रुपए की बात तो उसकी फिक्र क्यों की जाए? प्रोफेसर साहब के पास मेरे एक हजार रुपए जमा हैं न। उसी रुपए से काम चल जाएगा...साली नूरी! बहुत अकड़ने लगी है इधर। अपने बदन को हाथ तक नहीं लगाने देती। जरा-सा छुओ तो साली छिटक-कर दूर जा बैठती है, जैसे हमारे हाथ में कांटे लगे हों।

‘ठीक है, तू तो नई बीवी ले आएगा, पर क्या तूने यह भी सोचा है कि नूरी पर क्या बीतेगी?’

‘यह सोचना हमारा काम नहीं है।’

‘नूरी से पूछे बगैर तुझे ऐसा नहीं करना चाहिए।’

‘क्यों?’

‘यह गलत होगा।’

‘क्यों गलत होगा?’

‘हो सकता है कि नूरी इस पर एतराज कर बैठे?’

‘नूरी कौन होती है एतराज करनेवाली?’

‘तेरी बीवी।’

‘वह हमारी बीवी है? अगर वह हमारी बीवी होती तो क्या...’

‘तो क्या तू अपनी पहली बीवी के रहते हुए भी दूसरी शादी रचाएगा?’

‘क्यों नहीं?’

‘यह नाजायज है।’

‘कैसे? यह नाजायज कैसे है? हमारे मजहब में हर मर्द को यह हक हासिल है कि वह चार-चार बीवियाँ रख सकता है। तुमने सुना नहीं—उस दिन मौलाना तिरबेदी अपनी तकरीर में लोगों को बता रहे थे।’

‘क्या तेरी हैसियत है कि तू दो-दो बीवियाँ रख सके?’

‘तुम कौन होते हो यह पूछनेवाले?’

‘मैं इसलिए पूछ बैठू क्योंकि मैं तेरी हैसियत अच्छी तरह जानता हूँ।’

‘क्या जानते हो हमारी हैसियत के बारे में तुम?’

‘यही कि तू एक मामूली रद्दीवाला है। तेरी कमाई इतनी कम है कि उससे दाल-भात का भी तू ठीक-ठीक इंतजाम नहीं कर पाता। घर चलाने के लिए तेरी बीवी और बेटी ठोंगे बनाया करती थीं, तब कहीं जाकर तेरे घर में दोनों शाम चूल्हा जल पाता था।’

‘वे दिन लद गए। अब ऐसी बात नहीं है।’

‘अब क्या हो गया? क्या तेरे को कारूँ का खजाना मिल गया?’

‘हाँ, हाँ, यही समझो कि हमें कारूँ का खजाना मिल गया है।’

‘कहाँ से?’

‘यह पूछनेवाले तुम कौन होते हो?’

‘मुझे सब पता है। तू हराम की दौलत पर इतना इतरा रहा है। बता, क्या यह सच नहीं है?’

‘हराम की दौलत! और हमारे पास!!’

‘हाँ, हाँ, हराम की दौलत और तेरे पास। क्या तू उसी दौलत के बल पर नहीं उछल रहा है, जो तेरी नहीं बल्कि उस साहब की है...’

‘अब वह हमारी है।’

‘तेरी कैसे हो गई?’

‘क्योंकि हमारे पास है।’

‘कमीना आदमी! तू क्यों नहीं समझता कि उस हराम की दौलत के हाथ आते ही तेरा कुनबा खत्म हो गया? देखते-देखते तेरे दो बच्चे मर गए... तू अपनी बीवी की नजर से गिर गया है...’

‘हम अपनी बीवी की नजर से गिर गए हैं?’

‘हाँ, हाँ, तू अपनी बीवी की नजर से गिर गया है।’

‘कौन करता है इस बात की परवाह?’

‘क्या कहा—तू इस बात की परवाह नहीं करता है?’

‘हाँ, हाँ, हमें नूरी की कोई परवाह नहीं है।’

‘अरे बेवकूफ, तू यह क्यों नहीं समझता कि नूरी एक ऐसी औरत है, जो तेरी दूसरी बीवी को कभी बर्दाश्त नहीं कर सकेगी। वह अपनी जान दे देना पसंद कर सकती है, मगर वह सौत के साथ कभी नहीं रह सकेगी...’

‘मत रहे।’

‘यह मामला इतना आसान नहीं है जितना तू समझ रहा है। नूरी बहुत बड़ा

तमाशा खड़ा कर देगी ।’

‘अगर ऐसी बात है तो हम भी दिखा देंगे नूरी को कि हम उससे भी बड़ा तमाशा खड़ा कर सकते हैं...’

‘सोच ले...तू आग से खेलने जा रहा है ।’

‘चुप बे ! अब और ज्यादा बकर-बकर मत कर ।’

अब्बास ने अपने भीतर के अब्बास को कसकर झिड़क दिया और भीतर के अब्बास की बोलती बंद हो गई ।

: १६ :

पिछले चार-पाँच दिनों से अब्बास और नूरी में बातचीत बंद थी । नूरी समय पर नाश्ता-खाना परोस देती और फिर किसी काम में लग जाती । अब्बास माथा झुकाकर नाश्ता-खाना खा लेता । जरूरत के कुछ शब्द ही नूरी बोलती और अब्बास भी कम-से-कम लफ्जों का इस्तेमाल करता ।

एक झोंपड़ी में रहते हुए भी दोनों बिलकुल अलग-अलग हो गए थे । इस अलगाव का कारण बस इतना था कि नूरी यह नहीं चाहती थी कि अब्बास उसके समीप केवल अपनी काम-वासना की पूर्ति के लिए आए । नूरी पिछले दिनों जिन स्थितियों के बीच से गुजरी थी, उन स्थितियों ने उसे एक प्रकार से संवेदनहीन बना दिया था । नूरी को स्वयं भी ऐसा लगता कि अब वह हाड़-मांस का पुतला नहीं, बल्कि पंजर मात्र रह गई है । उसने जो आघात सहे थे, उन आघातों ने उसके हृदय को पाषाण जैसा बना दिया था । वह चाहती थी कि उसके ताजा घावों पर उसका खाविद रुई के फाहे रखता या सहानुभूति के मरहम लगाता ताकि उसके हरे घाव तेजी से भर पाते । लेकिन ऐसा न करके अब्बास उसके शरीर से केवल खेलना चाहता था । वह बिलकुल भूल-सा गया था कि इसी झोंपड़ी से एक दिन में बारी-बारी से दो लाशें निकली थी । उन लाशों को कब्रिस्तान पहुँचानेवाला यह अब्बास ही था, फिर भी उसे अब कुछ भी याद नहीं रहा ।

एक दिन अब्बास सुबह का नाश्ता करके झोंपड़ी से निकलने लगा । उसने अपनी पीठ पर बोरा नहीं रखा, फलतः नूरी ने स्मरण कराया, “बोरा लेना तो आप भूल ही गए ।”

अब्बास ने मुड़कर नूरी की तरफ गुस्से से देखा । वह बोला, “आज इसकी जरूरत नहीं है ।”

अब्बास झोंपड़ी के बाहर चला गया ।

नूरी ने फिर कुछ नहीं कहा ।

कुछ देर के बाद वेंगा आ गया । वह नूरी के समीप बैठ गया । वेंगा ने नया पाजामा और कुरता पहन रखा था । वह इस पोशाक में बड़ा जैँच रहा था । नूरी

उठी और एक उँगली में काजल लेकर उसने बेंगा के दाहिने गाल पर हलका-सा लगा दिया।

“यह क्या, अम्माँ?” बेंगा ने पूछा।

“आज तू बड़ा जैच रहा है, इसीलिए हमने काजल का यह टीका लगा दिया ताकि किसी की नजर न लगे।”

बेंगा हँस पड़ा।

नूरी बेंगा से काफी देर तक बतियाती रही।

बारह बजे के करीब भगताइन आई और बेंगा को अपने साथ ले गई।

इस घटना ने आज नूरी के हृदय पर एक गहरी लकीर बना दी। वह सोचने लगी, ‘पहले हम बेंगा को भगताइन के घर से इसी तरह ले आया करते थे, लेकिन आज बात दूसरी हो गई है। बेंगा हमारा बेटा है, लेकिन उसे हम बेटा कह नहीं सकते... वह हमारा होकर भी आज भगत-भगताइन का ही बेटा है। भाग्य ने हमारे साथ भी कैसा मजाक किया है! बोलने को तो ऊपरवाले ने हमें कई बच्चे दिए... लेकिन अब हमारे पास ऐसा एक भी बच्चा नहीं बचा है जिसे हम ‘अपना’ कह सकें...’

नूरी ने सामने और पीछे के दरवाजों को भीतर से बंद कर दिया और वह अपनी बदनसीबी पर एकाएक फूट-फूटकर रोने लगी।

□

शाम का समय था। नूरी की झोंपड़ी के सामने कुछ बच्चे खेल रहे थे—गोली-गुच्चू। बच्चों में बेंगा भी शामिल था। अगले दरवाजे के पास बैठकर नूरी बच्चों के इस खेल को बड़े ध्यान से देख रही थी।

दरवाजे के सामने आकर एक रिक्शावाला रुका। उसने रिक्शे का हत्था जमीन पर रखा। रिक्शे के हुड के सामने एक मैली-सी चादर बँधी हुई थी। रिक्शे को देखते ही बच्चों ने अपना खेल बंद कर दिया और उत्सुकता के साथ वे रिक्शे की तरफ देखने लगे। एक शैतान लड़के ने आगे बढ़कर परदे को थोड़ा सरकाना चाहा, लेकिन रिक्शेवाले ने हुड़ककर उसे भगा दिया।

नूरी भी खड़ी हो गई और वह रिक्शे की तरफ गौर से देखने लगी।

पहले परदे के भीतर से मर्द का एक पाँव निकला। पाँव में लाल रंग के नए जूते और मोजे थे। पाजामा भी नया था। जब मर्द पूरी तरह बाहर निकल आया, तब बच्चे तालियाँ बजा-बजाकर बोलने लगे, “अरे, यह तो बेंगा का अब्बा है! इसके साथ एक दुलहन भी है...”

यह बात देखते-देखते पूरी इमली टोली में फैल गई।

अब्बास ने रेशम का नया कुरता पहन रखा था। माथे पर कशमीरी टोपी थी। आँखों में सुरमा पड़ा था। उसके साथ रिक्शे से दुलहन उतरी, उसका मुँह घूँघट से

ढँका हुआ था, पर उसके हाथों तथा पैरों के रंग से यह साफ पता चल रहा था कि दुलहन काली है। फिर भी गोटेदार साड़ी में वह काफी जँच रही थी।

पहले तो नूरी कुछ समझ ही नहीं सकी, लेकिन जब अब्बास माथा झुकाकर झोंपड़ी में घुसने लगा, तब नूरी के सामने सब कुछ साफ हो गया।

नूरी दरवाजे पर अब्बास के सामने आकर चट्टान की तरह खड़ी हो गई। उसकी आँखें दहक रही थीं। उसने आगे बढ़कर दुलहन का घूँघट हटा दिया।

दुलहन को एक नजर देखकर नूरी ने व्यंग्यपूर्ण लहजे में कहा, “तो यह है तुम्हारी नई अब्बासिन !”

“हाँ।” अब्बास ने सिर्फ इतना ही कहा।

“तो तुम भी सुन लो कि इस झोंपड़ी में या तो हम रहेंगे या फिर यह। फैसला करो—क्या करना है ?” नूरी ने बड़े आत्मविश्वास के साथ यह सवाल किया।

झोंपड़ी के सामने मुहल्ले के लोग जमा होने लगे। औरतें तो झोंपड़ी के भीतर ही घुसने की कोशिश करने लगीं। इस बीच शिवू भगत भी आ गया। उसने लोगों से झोंपड़ी के सामने से हटने के लिए कहा। जब लोगों पर उसकी बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो उसने भीतर से सामने का दरवाजा बंद कर दिया। लोग तुरंत पीछे के दरवाजे की तरफ जाकर जमा होने लगे। भगत ने बड़बड़ाते हुए पीछे का दरवाजा भी बंद कर दिया।

कमरे में पूरी तरह अँधेरा छा गया।

नूरी ने तुरंत ढिबरी जलाने की कोशिश की, मगर दियासलाई कहीं नजर नहीं आ सकी।

हारकर भगत ने दोनों दरवाजे खोल दिए।

“अच्छा हुआ मौसा जो आप आ गए। देखिए तमाशा !”

भगत ने बारी-बारी से अब्बास और उसकी नई दुलहन को देखा। एक गहरी साँस खींचकर वह बोला, “अब्बास ! यह तूने क्या किया ? यह तो तूने बहुत गलत काम किया है।”

अब्बास को भगतजी की यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने बड़े क्रोध के साथ कहा, “भगतजी, यह हमारा जाती मामला है। इसमें आप दखल न दें तो बेहतर होगा। हमारे मामले में आपको दखल देनी भी नहीं चाहिए; क्योंकि न तो आप हमारे कोई रिश्तेदार लगते हैं और न आप मुसलमान ही हैं।”

अब्बास के इन वाक्यों ने भगत के सीने पर एक साथ कई छिद्र बना दिए। आज से पहले अब्बास ने भगत को बराबर ‘मौसा’ ही कहा था, लेकिन आज पहली बार उसने मौसा के स्थान पर ‘भगतजी’ कहा था।

भगत ने झोंपड़ी के भीतर अब एक पल भी रहना उचित नहीं समझा। वह अपना मुँह लटकाकर चुपचाप बाहर निकल गया।

नूरी 'मौसा' के इस अपमान को बर्दाश्त नहीं कर सकी। वह शेरनी की तरह दहाड़ने लगी, "तू आज इतना बेहया कैसे बन गया ? जिस आदमी के हम पर सौ-सौ एहसान हैं, आज तूने उसी आदमी की बेइज्जती कर दी..."

"मियाँ-बीबी के झगड़े में खामखाह अपनी टाँग अड़ानेवाले के साथ यही होता है।" अब्बास बेधड़क बोला।

"कैसा मियाँ और कैसी बीबी ? पहले तू यह बता कि इस घर में तू किसके साथ रहेगा ?" नूरी का जलता हुआ सवाल अब्बास के माथे पर गाज की तरह गिर पड़ा।

"जोहरा भी यहीं रहेगी।" अब्बास ने बताया।

"नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता। या तो यहाँ हम रहेंगे या फिर यह कलूटी रहेगी। इस झोंपड़ी में एक साथ दो औरतें नहीं रह सकतीं।" नूरी के स्वर में संकल्प की छाप थी।

"तू भी यहाँ रह और जोहरा भी यहीं रहेगी।"

"यह कभी नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता ?"

"हम सौतन को बर्दाश्त नहीं कर सकते।"

"यह तेरी छोटी बहन बनकर रहेगी।"

"तुम यह अच्छी तरह मुन लो कि हम यहाँ किसी की नौकरानी बनकर नहीं रह सकते।"

"तू ज्यादा बकर-बकर मत कर। जरा मेरी बात समझने की कोशिश कर।"

"हमें तुम्हारी कोई बात समझने की जरूरत नहीं है।"

"तो तू भी हमारी बात अच्छी तरह सुन ले। इस घर में जोहरा भी रहेगी और तू भी रहेगी।"

"यह यहाँ क्यों रहेगी ? यह यहाँ कभी नहीं रह सकती।"

"यह घर हमारा है। हम इस घर में किसी को भी रख सकते हैं। यह हमारी मरजी है।"

"यह ठीक है कि यह तेरा घर है। मगर यह तेरा घर है तो यह घर हमारा भी है। इसलिए हमारे रहते हुए तू किसी भी दूसरी औरत को यहाँ नहीं रख सकता।"

"यह कोई दूसरी औरत नहीं है। यह तुम्हारी ही तरह हमारी बीबी है। इसके साथ हमारा निकाह हुआ है।"

"हम क्या जानें कि तू इसे निकाह करके ला रहा है कि कहीं से भगाकर ला रहा है ?"

"नूरी, अब चुप कर। तू बहुत बढ़-चढ़कर बोल रही है। इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा।"

“इससे बुरा और क्या होगा ?”

“इससे भी बुरा हो सकता है ।”

“जो होगा, देखा जाएगा । मगर, पहले तू इस औरत को यहाँ से कहीं और ले जा । इस घर को और तमाशा न बना ।”

“हम बार-बार कह रहे हैं कि यह कोई दूसरी औरत नहीं है । यह हमारी जायज बीवी है और यह हमारे साथ इसी झोंपड़ी में रहेगी ।”

“एक बीवी के जिंदा रहते हुए दूसरी बीवी लाने को तू जायज कहता है ? ऐसा कहते हुए तेरी जीभ नहीं गल गई ?”

“अगर हम चार बीवियाँ भी कर लें, तो वह भी जायज ही माना जाएगा । ऐसा करने की हमारे मजहब में इजाजत है ।”

“हम नहीं जानते किसी के मजहब की बात । हम तो सिर्फ इतना जानते हैं कि दुनिया की सभी औरतों का एक ही मजहब होता है और वह यह है कि कोई भी औरत अपनी सौत को अपने साथ रखना कभी पसंद नहीं कर सकती ।”

“लेकिन तुम्हें जोहरा के साथ यहीं रहना होगा ।”

“ऐसा कभी नहीं हो सकता ।”

“यानी तू नहीं मानेगी ?”

“कभी नहीं ।”

“कभी नहीं ?”

“हाँ, हाँ, कभी नहीं ।”

“तो हम तुम्हें तलाक दे देंगे ।”

“तलाक देकर तो देख ।”

“सोच ले फिर से ।”

“सोच लिया है ।”

“तलाक—एक बार हुआ । तू अभी भी सोच ले ।”

“और आगे बोल ।”

“तलाक—दो बार हो गया । अभी भी सोच ले ।”

“कुछ सोचना नहीं है ।”

“तलाक—लो, तीन बार हो गया । तुझे तलाक मिल गई ।”

“तलाक...तलाक...तलाक...तलाक...लो हम पाँच बार तुम्हें तलाक दे देते हैं...तुमसे दो बार ज्यादा...”

नूरी ने अपनी संदूकची को सहेजा और उसे उठाकर वह एक यात्री की तरह अब्बास के सामने आकर खड़ी हो गई । एक बार उसने दहकते हुए नेत्रों से अब्बास की तरफ देखा और बोली, “आज बेटी बेनजीर की एक-एक बात सच हो गई । इस घर से जहूर चला गया...बेनजीर चली गई...एक तरह से बेंगा भी चला गया...”

अब इस घर में हममें से कोई नहीं बचा...सभी चले गए...बेनजीर ने कहा था—
यहाँ एक चुड़ैल रहेगी...उसकी वह बात भी आज सच हो गई...अब इस घर में
काली-कलूटी चुड़ैल ही रहेगी...अरे अब्बसवा ! तू ही रह इस चुड़ैल के साथ..."

यह सुनते ही अब्बास ने गुस्से से अपना दाहिना हाथ नूरी पर उठा लिया।
लेकिन वह नूरी पर हाथ नहीं चला सका; क्योंकि तब तक नूरी सँदूकची के साथ
भगत के घर की तरफ तेजी से निकल गई।

: १७ :

अपनी झोंपड़ी से निकलकर नूरी भगत के घर चली आई। उसे देखकर भगत-
भगताइन दोनों को ही राहत मिली। भगत ने कहा, "आओ बेटी, तुमने बहुत
अच्छा किया जो तुम इस समय यहाँ चली आई।"

भगताइन ने आगे बढ़कर नूरी की सँदूकची थाम ली और उसे चारपाई के
नीचे रख दिया।

नूरी भगताइन से लिपटकर फफक-फफककर रोने लगी। भगताइन भी अपने
को नहीं रोक सकी। उसकी आँखों से भी आँसू बहने लगे।

बेंगा घर पर नहीं था। उसे देखने के लिए भगत बाहर निकल गया। सच्ची
बात तो यह थी कि नूरी का फफक-फफककर रोना उससे सहा नहीं जा सका,
इसलिए वह यह बोलकर बाहर निकल गया, "हम बेंगा को देखकर आते हैं।"

भगत घर से निकलकर तालाब के घाट पर बैठ गया। हलका-हलका अँधेरा
चारों ओर फैलने लगा था। तालाब का पानी बिल्कुल स्थिर लग रहा था। भगत
ने सामने पड़े एक कंकड़ को उठाकर पानी में फेंक दिया। पानी में कंकड़ के गिरते
ही एक परिधि बनी जो क्रमशः बड़ी होती हुई देखते-देखते पानी में विलीन हो गई।
भगत के मन में यह बात उठी कि मनुष्य का जीवन भी तालाब के पानी के समान
ही होता है। जब व्यवस्थित जीवन में दुर्घटना का एक छोटा-सा भी कंकड़ पड़
जाता है, तो जीवन की व्यवस्था भंग हो जाती है। मगर, यह स्थिति स्थायी नहीं
होती। समय उसे उसी तरह पाट देता है, जैसे जल से उपजी परिधियाँ जल में ऐसी
घुल-मिल जाती हैं कि पता भी नहीं चल पाता कि पानी में कभी कोई कंकड़ भी
गिरा था।

नूरी पिछले दिनों की दुर्घटनाओं के प्रभाव से उबर भी नहीं सकी थी कि
आज उसकी जिंदगी में फिर एक ऐसी दुर्घटना हो गई, जिसकी उसने कभी कल्पना
भी नहीं की होगी। जहूर और बेनजीर की मौत के पीछे तो ईश्वर की इच्छा मानी
जा सकती है, लेकिन आज जो कुछ भी हुआ उस का दोषी तो सिर्फ अब्बास ही है।
जो आदमी अपने बच्चों के लिए खाने-पीने और ओढ़ने-बिछाने का उचित प्रबंध भी
नहीं कर पाता है, उसे यह क्या सूझी कि उसने एक और शादी कर ली।

अब्बास का यह कदम भगत को बड़ा गलत और अनुचित लग रहा था। मगर, अब उसमें यह साहस भी नहीं बचा था कि वह अब्बास को कुछ समझाने की कोशिश कर पाता। आज अब्बास ने पहली बार भगत को 'मौसा' न बोलकर 'भगतजी' कहा था। उसकी इस बात ने भगत के हृदय पर गहरा घाव बना दिया था। भगत के सामने यह तुरंत स्पष्ट हो गया कि अब्बास ने आज परंपरा से चले आ रहे संबंध के महीन, पर मजबूत धागे को 'भगतजी' बोलकर एक झटके के साथ तोड़ दिया। जब अब्बास ने यह कहा था, 'भगतजी, यह हमारा जाती मामला है। इसमें आप दखल न दें तो बेहतर होगा। हमारे मामले में आपको दखल देना भी नहीं चाहिए; क्योंकि न तो आप हमारे कोई रिश्तेदार लगते हैं और न आप मुसलमान ही हैं', तब भगत को ऐसा लगा था कि अब्बास ने आज लाज-लिहाज और पिछली हर बात को पूरी तरह भुला दिया है।

पहले तो अब्बास ऐसा नहीं था। उसे इतना बोलना भी नहीं आता था। अब तो वह काफी बोलने लगा है और खालिस उर्दू बोलने लगा है। पहले वह सिर्फ एक रद्दीवाला था—एक मामूली फेरीदार। मगर अब तो वह हर मामले में मजहब को घुसेड़ डालता है।

अब नूरी का क्या होगा? कहाँ जाएगी वह बेचारी? जब से वह अब्बास के घर आई है, आज उसने पहली बार उस घर से अपने पैर निकाले हैं। उसने पैर भी निकाले तो कहाँ गई—अपने ही घर के सामने। उसके घरवालों ने भी कभी यह पता नहीं लगाया कि उनकी बेटी जिंदा भी है या मर गई। दुनिया में कैसे-कैसे माँ-बाप होते हैं जो अपनी जवान बेटी को बेचने में भी कोई लाज-शरम का अनुभव नहीं करने। ऐसे ही लोगों के कारण लड़कियाँ बेची और खरीदी जाती हैं। अगर यह अब्बास ही नूरी को सौ रुपए में खरीदने के बाद किसी रंडीखाने में बेच आता तो कोई उसका क्या कर लेता!

यह सब सोचकर भगत भीतर से बाहर तक काँप-सा गया। अब उसे यहाँ और बैठना उचित नहीं लगा। वह अपने घर की तरफ बढ़ गया।

अब्बास के घर के सामने अभी भी इक्के-दुक्के लोग खड़े थे। औरतें झोंपड़ी के भीतर घुस भी रही थी और उसमें से निकल भी रही थीं। यह देखकर भगत को कुछ अच्छा नहीं लगा। वह चुपचाप अपना माथा झुकाकर अपने घर आ गया।

सामने ही नूरी बैठी मिली। उसकी बगल में बेंगा भी सटकर बैठा हुआ था।

भगत अपनी खटिया पर थका-हारा-सा बैठ गया।

नूरी धीरे-धीरे सुबकने लगी।

नूरी का सुबकना भगत के कानों से होते हुए उसके हृदय को मथने लगा। उससे सहा नहीं जा सका। उसने नूरी को समझाते हुए कहा, "मत रो बेटी, मत रो। सब ठीक हो जाएगा।"

“मौसा, अब क्या ठीक होगा? ... अब तो सब कुछ खतम हो गया ... उसने हमें तलाक दे दिया है ...”

“उसने तुम्हें तलाक दे दिया है?” भगत एकाएक अपनी खटिया से उठ खड़ा हुआ। उसने कोने में पड़ी अपनी मोटी लाठी सँभाल ली। वह अब्बास के घर की तरफ बढ़ने को भी हुआ, पर उसी समय उसके कानों में अब्बास के वे वाक्य गूँजने लगे, जिन वाक्यों को सुनकर वह चुपचाप निर्बल एवं निरुत्तर की तरह अब्बास की झोंपड़ी से अपना माथा झुकाकर निकल आया था कुछ ही घंटे पहले। अब उसे अब्बास के पास नहीं ही जाना चाहिए; क्योंकि अब्बास से अब उसका कोई नाता नहीं बच गया था। न तो वह अब्बास का कोई रिश्तेदार ही था और न मुसलमान ही।

“यह तो अब्बास ने बहुत बड़ा पाप किया है। उसे ऐसा कभी नहीं करना चाहिए था।” यह कहते हुए भगत अपनी खटिया पर धीरे-से बैठ गया।

भगत के इस कथन ने नूरी के सुबकने को क्रंदन में बदल दिया। भगताइन नूरी को चुप कराने लगी। नूरी को रोते देखकर बेंगा भी रोने लगा।

“अब्बास के पास अपनी शादी के लिए आखिर इतना रुपया आया कहाँ से?” भगत बड़बड़ाया।

“पता नहीं, मौसा।” नूरी ने यह कहा ही था कि उसके जेहन में उस दिन की वह घटना पूरी तरह कौंध उठी, जिस दिन उसे सौ-सौ के दस नोट एक ‘इटली’ के भीतर से मिले थे। उसने वे रुपए अब्बास को दे दिए थे ताकि वह रुपए साहब को लौटा सके। अब तो उसे उस घटना के बाद की एक-एक बात याद आने लगी। धीरे-धीरे उसके सामने सब कुछ साफ होता चला गया। अब नूरी को पूरा-पूरा विश्वास हो चला कि अब्बास ने रुपया साहब को नहीं लौटाया था और उसने नूरी से झूठ कह दिया था कि उसने साहब को रुपया लौटा दिया था। शायद इसीलिए उस रात बेनजीर ने अब्बास को काफी भला-बुरा कहा था और उसने यह सवाल भी किया था—‘अब्बास से पूछो कि क्या वह अब भी गरीब आदमी है?’ उस दिन बेनजीर ने अपने अब्बा को मदकी, अफीमची, बेईमान, डंडीमार और झूठा कसम-खोर भी कहा था।

तो क्या उस दिन अब्बास ने आफताब के सिर पर हाथ रखकर झूठी कसम खाई थी?

यह सब याद कर नूरी का मन घृणा से भर उठा। उसके जी में आया कि वह वहाँ से उठकर सीधे अब्बास के पास चली जाए और उसकी दाढ़ी नोच ले। अब नूरी को यह पक्का विश्वास हो गया कि अब्बास ने साहब को रुपया नहीं लौटाया था, फिर भी उसने अपने बच्चों की झूठी कसम खाई थी। यह उसकी झूठी कसम का ही नतीजा था जो देखते-ही-देखते उसके दो-दो बच्चे मर गए ... यह बेंगा भी

मर गया होता अगर मौसा-मौसी इसे खरीदकर अपने घर नहीं ले आते।

“मौसा, अब समझ में आ रहा है कि शादी के लिए उसके पास कहाँ से रुपया आया?” नूरी ने कुछ सोचते हुए कहा।

“कहाँ से आया अब्बास के पास रुपया?” भगत ने आश्चर्य के साथ पूछा।

नूरी ने पूरी घटना की जानकारी मौसा और मौसी को दे दी। यह सुनकर भगत ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, “हम नहीं जानते थे कि अब्बसबा इतना कमीना आदमी है, जो धन के लिए अपने बच्चों की झूठी कसम भी खा सकता है। इस आदमी से नीच और कौन हो सकता है! अब तो हम भी कह सकते हैं कि इसी कारण माता तुम्हारे यहाँ प्रकट हुई थीं और वह अपने साथ जहूर और बेनजीर को लेती गईं... अगर यह बेंगा भी उस घर में रह गया होता, तो शायद...”

नूरी ने बेंगा को अपनी छाती से चिपका लिया मानो अभी भी इस बात की आशंका हो कि उसके बेटे को कोई उससे छीनने आ रहा हो।

“अब हमारा क्या होगा, मौसा?” नूरी ने सुबकते हुए पूछा।

“बेटी, भगवान् जो भी करेंगे, अच्छा ही करेंगे। तू कुछ दिन यहीं रह। हो सकता है कि इस बीच कोई रास्ता निकल आए।” भगत का कहना था।

“मौसा, यहाँ रहना बहुत मुश्किल है। सुबह जागते ही सबसे पहले हमारी नजर उस घर पर पड़ेगी... हो सकता है उन दोनों में से किसी पर हमारी नजर पड़ जाए और हमारा खून खौलने लगे... इसलिए हमारा यहाँ रहना ठीक नहीं होगा, मौसा...”

“तुम कहती तो ठीक हो, मगर तुम और जाओगी भी कहाँ? तुम्हारा इस दुनिया में और है ही कौन?”

भगत खटिया से उठकर खड़ा हो गया। भगताइन को लगा कि अब भगत पीने के लिए जाएगा; क्योंकि उसके पीने का समय हो चला था।

भगताइन ने कमरे से बाहर निकलकर भगत को इशारे से अपने पास बुलाया। उसने धीरे-से कहा, “जब तक नूरी यहाँ है, पीने मत जाओ। तुम पीकर यहाँ हल्ला-गुल्ला करोगे तो क्या नूरी को अच्छा लगेगा? वह अपने मन में क्या सोचेगी?”

भगत ने कहा, “भगताइन, तू हमें इतना मूरख क्यों समझती है! अरे, हम तो इसलिए पीने लगे क्योंकि भगवान् ने हमारे आँगन में किसी खेलनेवाले को भेजा ही नहीं। घर में हुड़दंग मचानेवाला कोई नहीं था, इसलिए पीकर हम ही हुड़दंग मचाने लगे। लेकिन आज इस घर में हमारी एक बेटी भी है और एक नाती भी... आज यहाँ पीकर क्यों आएँगे हम? हम तो जरा मैदान की तरफ जा रहे हैं।”

यह सुनकर भगताइन को राहत मिली। उसने एक लोटा लाकर भगत के हाथ में थमा दिया।

भगत मैदान की तरफ बढ़ गया।

भगताइन ने भीतर आकर एक हड़िया से चावल निकाले, एक थाली में। दूसरी हड़िया से कटोरे में थोड़ी दाल निकाली। दोनों चीजें लाकर उसने नूरी के सामने रखते हुए कहा, “बेटी, जरा देख ले कि कहीं कंकड़-पत्थर तो नहीं हैं। रात के समय हमें ठीक से सूझता नहीं है।”

बेंगा अपनी माँ की गोद से उछलकर उतर गया और थोड़े चावल उठाकर फाँकता हुआ घर के बाहर निकल गया।

“ई बेंगवा रोज यही शरारत करता है।” भगताइन हो-हो कर हँसने लगी।

: १८ :

भगत चाहता था कि नूरी उसके साथ रहे। इसके पीछे भगत-भगताइन का एक ही स्वार्थ था। यदि नूरी भगत के यहाँ रहती, तो बेंगा भी उसके साथ ही रहता। बेंगा के साथ भगत-भगताइन का ऐसा लगाव पैदा हो गया था, जिसके टूटने की कल्पना-मात्र से दोनों काँप उठते थे। भगत-भगताइन ने नूरी को बहुत समझाया, लेकिन नूरी का फैसला नहीं बदल सका। यदि नूरी भगत के घर रहना स्वीकार कर लेती तो अब्बास भगत से दुश्मनी कर बैठता। भगत को हारकर नूरी के लिए एक झोंपड़ी की तलाश करनी पड़ी।

भगत के दरवाजे पर दो रिक्शेवाले आकर खड़े हो गए। दोनों ने जोर-जोर से घुँघरू बजाकर अपने आगमन की सूचना भगत को दे दी।

“चलो बेटी, रिक्शा आ गया है।” भगत ने नूरी से कहा।

नूरी कमरे से निकलकर बरामदे में आ गई। उसके तन पर नई लाल साड़ी थी। साथ में बेंगा था। उसके शरीर पर भी नए-नए कपड़े थे।

भगताइन नूरी की संदूकची लेकर बाहर निकली।

भगत ने स्वयं अपने हाथ से अपने घर के सामनेवाले दरवाजे पर ताला लगाया।

भगत बेंगा के साथ एक रिक्शे पर बैठ गया। दूसरे रिक्शे पर भगताइन और नूरी बैठ गई। इस रिक्शे के हुड के सामने चादर बाँधकर पहले ही परदा कर दिया था रिक्शेवाले ने।

आसपास के घरों की औरतें बाहर निकल आई थीं और वे बड़ी उत्सुकता से सब कुछ देख रही थीं। कुछ बच्चे भी जमा हो गए थे और उनमें से कुछ बेंगा से पूछ रहे थे, “कहाँ जा रहा है, बेंगवा?”

बेंगा बेचारा क्या बोलता? उसे तो खुद यह पता नहीं था कि वह जीवन की किस यात्रा पर निकल रहा था और उसकी मंजिल कहाँ है। पर वह खुश जरूर नजर आ रहा था। वर्षों बाद आज उसे रिक्शे की गद्दी पर बैठने का सौभाग्य जो

प्राप्त हुआ था। पिछली बार वह रिक्शे पर तब बैठा था जब वह बीमार हुआ था और उसे लेकर नूरी खोखाबाबू डॉक्टर के पास गई थी। आज भी उसके साथ उसकी माँ चल रही थी, अतः वह बड़ा आश्वस्त लग रहा था।

इस समय अब्बासिन अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर खड़ी थी। नूरी को देखते ही उसने दरवाजा भीतर से बंद कर लिया।

पुरानी बस्ती की एक तंग गली में आकर दोनों रिक्शेवाले रुक गए। सभी रिक्शे से उतर गए।

भगत ने रिक्शावालों को भाड़ा देकर विदा किया। गली के साथ एक मैदान था, जिसे पार करने के बाद एक कतार में बनी कुछ कच्ची झोंपड़ियाँ थीं। इनमें से एक झोंपड़ी के सामने आकर सभी रुक गए।

भगत को देखते ही एक बुढ़िया लाठी टेकते हुए सबके सामने आकर खड़ी हो गई। उसने नूरी को एक बार नजर भरकर देखा फिर बेंगा के माथे पर हाथ रखकर कहा, “खुदा जहन्नुम में भेजे उस हरामी को जिसने दूसरी बीबी करके इन दोनों को बेसहारा कर दिया।”

भगत ने नूरी से कहा, “बेटी, यह पठानिन हैं, यह झोंपड़ी इन्हीं की है।”

नूरी ने झुककर पठानिन के पैर छू लिए। अपनी माँ को ऐसा करते देख बेंगा ने भी पठानिन के पैरों पर अपना माथा झुका दिया और चरणों को छू लिया।

पठानिन का हृदय भर आया। उसने नूरी को अपने गले से लगा लिया। वह बोली, “बेटी, मैं समझ सकती हूँ तुम्हारा गम। मैंने भी झेला है तलाक का गम।”

पठानिन ने आगे बढ़कर झोंपड़ी का ताला खोल दिया और ताला-कुजी नूरी को थमाते हुए कहा, “लो बेटी, सँभालो अपनी झोंपड़ी को।”

नूरी झोंपड़ी के भीतर चली गई। उसमें एक खिड़की थी, जो पीछे की तरफ खुलती थी। झोंपड़ी लिपी-पुती और साफ-सुथरी थी। उसका दरवाजा लकड़ी का बना था और मजबूत भी था। अब्बास की झोंपड़ी की तुलना में यह कहीं ज्यादा अच्छी और बड़ी थी।

पठानिन सबको छोड़कर चली गई। जब वह लौटी तो उसके साथ आठ-नौ साल की एक लड़की थी, जिसके एक हाथ में दो बोरे और दूसरे हाथ में एक मचिया थी।

लड़की ने झोंपड़ी के भीतर दोनों बोरे बिछा दिए। पठानिन ने सबको इशारे से बोरो पर बैठने के लिए कहा।

भगत के सामने लड़की ने मचिया रख दी।

“बैठिए, भगतजी।” पठानिन ने अनुरोध किया।

पठानिन खुद भगताइन और नूरी के पास बैठ गई। उसने लड़की को अपने पास बुलाकर उसके कान में कुछ कहा, जो दूसरों को सुनाई नहीं पड़ सका।

लड़की कोठरी के बाहर चली गई।

पठानिन ने नूरी से मुखातिब होते हुए कहा, “बेटी, इसे तू अपना ही घर समझकर यहाँ रह। यहाँ तुझे कोई तकलीफ नहीं होगी। यहाँ किसी किसम का कोई खतरा नहीं है। दूसरी झोंपड़ियों के लोग भी अच्छे हैं।”

“जी।” नूरी ने अपना सिर झुला दिया।

“मुझे भगतजी ने तेरे बारे में सब कुछ बता दिया है। तेरे साथ बहुत बड़ा जुल्म हुआ है।” पठानिन के शब्द थे।

“नूरी बेटी, कभी पठानिन के साथ भी ऐसा ही हुआ था, जो तुम्हारे साथ हुआ है। मगर पठानिन ने बहुत हिम्मत से काम लिया और इन्होंने अपने मियाँ पर मुकदमा कर दिया। यह हाईकोर्ट तक लड़ती रही और हर जगह इनकी जीत भी होती गई। हारकर इनके मियाँ को गुजारे के लिए इन्हें माहवारी देनी पड़ी। पठानिन को जायदाद में हिस्सा भी मिला। यहाँ जो जमीन है, वह पठानिन की ही है। पठानिन ने इसे मुकदमे में जीता है।” भगत ने बड़े गर्व के साथ नूरी को बताया।

यह सुनना नूरी को बहुत अच्छा लगा।

“बेटी, तू चाहे तो तू भी अपने मियाँ पर मुकदमा करके उससे अपने लिए गुजारा वसूल कर सकती है। मगर इसके लिए बहुत हिम्मत की जरूरत होगी।” पठानिन का कहना था।

“अम्माँ, अब मुकदमा लड़कर क्या होगा? मुकदमे से गुजारा तो मिल सकता है, मगर दिल का घाव तो नहीं भर सकता।” नूरी ने अपने मन को खोला।

“सो तो तू ठीक ही कह रही है, बेटी।” पठानिन ने स्वीकार किया।

“अम्माँ, हमने उस आदमी को अपने चित्त से ही निकाल दिया है। अब तो हम उसका नाम भी सुनना नहीं चाहते।” नूरी का कहना था।

“इसीलिए लोग कहते हैं कि हिंदू लड़कियाँ बहुत सहती हैं—बहुत सह सकती हैं।” पठानिन की राय थी।

भगत ने मचिया से उठते हुए कहा, “अब हम लोग चलेंगे, नूरी बेटी।”

“नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है, भगतजी? बैठिए, बैठिए, अभी उठिए मत। मैंने चाय लाने के लिए कहा है। मैं अभी देखकर आती हूँ कि रेहाना क्यों देर कर रही है?”

पठानिन उठ खड़ी हुई। वह दरवाजा लाँघकर बाहर निकल गई। भगत को फिर बैठना पड़ा। पठानिन तुरंत लौट आई। उसके पीछे-पीछे रेहाना एक लोटे में चाय लेकर आ गई। उसके एक हाथ में लोटा था और दूसरे हाथ में मिट्टी के चार प्याले।

लड़की ने प्यालों में चाय डालकर सबके सामने रख दी। अपनी कुरती की जेब

से दो बिस्कुट निकालकर उसने बेंगा को थमा दिए।

सभी फू-फू कर चाय पीने लगे। चाय काफी गरम थी और उसमें दूध भी नहीं पड़ा था। बेंगा कुतर-कुतरकर बिस्कुट खाने लगा। एक-दो बार उसने अपनी माँ की चाय में बिस्कुट डुबोकर भी खाया।

जब सबने चाय पी ली तो पठानिन ने मिट्टी के प्यालों को अपने हाथ से समेटकर उन्हें कोठरी के बाहर रख दिया। नूरी ने ऐसा करने से पठानिन को रोका भी, पर पठानिन कब माननेवाली थी।

प्याले हटाकर पठानिन ने कहा, “अच्छा, अब मैं चलती हूँ, भगतजी। आप लोग बातचीत कीजिए।”

पठानिन के जाते ही कोठरी का माहौल एकाएक गंभीर हो गया। सभी अचानक चुप हो गए। सबकी निगाहें झुकी हुई थीं और लग रहा था कि किसी भी क्षण सब-के-सब रो पड़ेंगे।

बेंगा सबकी चुप्पी का कोई मतलब नहीं समझ पा रहा था। वह केवल सबकी तरफ बारी-बारी में देखे जा रहा था।

भगत मचिया से उठकर खड़ा हो गया। उसके उठते ही नूरी उसके पैरों से लिपटकर रोने लगी।

भगताइन भी अपने पर काबू नहीं रख सकी। उसके नेत्र भी बहने लगे। रोते-रोते ही उसने नूरी को उठाकर खड़ा किया। खड़ी होते ही नूरी मौसी से लिपटकर रोने लगी।

बेंगा भौंचक्क था। उसकी समझ में जब कुछ भी नहीं आ सका तो वह खुद भी रोने लगा। भगत ने उसे अपने पास बुलाकर अपने सीने से लगा लिया।

रोना-धोना कुछ देर तक चलता रहा। जब इसका वेग कुछ मंद पड़ गया तब भगत ने नूरी से कहा, “बेटी, ऐसा तू कभी मत समझना कि हमने तुझे अपने घर से निकाल दिया है। हम तो अभी भी यही चाहते हैं कि तू हमारे साथ लौट चल और हमारे ही पास रह।”

“मौसा, ऐसा मत कहिए आप। इस दुनिया में अब कौन है हमारा? एक आपका सहारा है और दूसरा मौसी का। आप दोनों के सिवा हम तो यहाँ किसी को जानते भी नहीं।” नूरी ने रुक-रुककर अपने मन की बात पूरी की।

“बेटी, तू किसी बात की चिंता मत करना। भगवान् चाहेंगे तो सब ठीक हो जाएगा। बस जरा धीरज से काम लेना। औरत का सबसे बड़ा सहारा धीरज ही है।” मौसी ने नूरी को समझाया।

“अच्छा बेटी, अब हम जा रहे हैं।” पहले भगत ने अपना कदम बढ़ाया। पीछे-पीछे भगताइन चली।

दोनों झोंपड़ी के बाहर निकल गए। दोनों जब चलने लगे, तब पीछे से नूरी ने

कहा, “मौसा, बेंगा को अपने साथ नहीं ले जाइएगा ?”

यह सुनते ही भगत अनायास रो पड़ा। उसने झुककर बेंगा को अपने गले से लगा लिया और उसे बार-बार चूमना शुरू कर दिया। ऐसा लगा कि भगत के हृदय का बाँध एकाएक टूट पड़ा था।

भगताइन भी साड़ी के पल्लू से अपना मुँह दबाकर सिसकती जा रही थी।

“मौसा, हमारे पास आज वह चवन्नी नहीं है जिसे देकर आपने हमारे बेटे को खरीदा था। अगर वह चवन्नी आज हमारे पास होती तो हम आपसे यह विनती जरूर करते कि आप अपनी चवन्नी वापस लेकर हमारे बेटे को लौटा दीजिए। मगर वह चवन्नी तो इमली टोली में ही छूट गई।”

“नही बेटी, तू ऐसा मत बोल...तू ऐसा मत बोल...यह बेंगा तेरा है...यह आज से तेरे पास ही रहेगा...यह तेरे बुढ़ापे की लाठी है...इसे हम तुझसे छीनने का पाप कैसे कर सकते हैं ?”

: १६ :

उस दिन जाते समय भगताइन ने नूरी की मुट्ठी में जबरदस्ती दस-दस के तीन नोट थमा दिए थे। नूरी उन्हें रखना नहीं चाहती थी, लेकिन भगताइन की बात न मानना उसके लिए संभव नहीं था। भगत-भगताइन ने नूरी की विदाई में उसी तरह खर्च किया था, जैसा खर्च माँ-बाप अपनी बेटी की विदाई के अवसर पर करते हैं। कभी-कभी नूरी सोचने लगती कि भगत-भगताइन के साथ आखिर उसका कैसा संबंध है। जिससे उसका संबंध जोड़ा गया था, उसने तो उसे तीन बार ‘तलाक ...तलाक...तलाक’ बोलकर सदा के लिए छोड़ दिया। भगत-भगताइन से तो उसका किसी प्रकार का नाता नहीं था, फिर भी दोनों ने उसके लिए जो कुछ किया, उसे नूरी भूल नहीं सकती थी। वह उनके सामने श्रद्धावनत थी।

नूरी कई दिनों तक इसी उधेड़बुन में रही कि अब उसे क्या करना चाहिए ? अपना तथा बेंगा का पेट भरने के लिए कुछ-न-कुछ करना बहुत जरूरी था। उसके पास जो पैसे थे, वे धीरे-धीरे खर्च हो चुके थे। इमली टोली में रहते हुए ही उसने अपने मन में यह निश्चय कर लिया था कि वह अपने बेटे बेंगा को मिशन स्कूल में पढ़ाएगी। वह मौसा-मौसी से यह कहनेवाली ही थी कि बेंगा का नाम स्कूल में लिखवा देना चाहिए कि इसी बीच वह जलजला उसके जीवन में आ गया जिसके बारे में उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। नूरी ने यही सोचा था कि वह ठोंगा बनाकर जो कमाई करती है, उससे ही बेंगा को पढ़ाएगी। मगर नूरी का सोचा पूरा नहीं हो सका।

पठानिन से बात चली तो पठानिन ने नूरी को राय दी, “देखो बेटी, हम जैसी बेसहारा औरतों के बस की बात नहीं है कि हम अपने बच्चों को स्कूल भेज सकें

पढ़ने-लिखने के लिए। अल्लाह ने तुझे एक लाल दिया है। खुदा के शुक्र से वह आठ-नौ साल का हो गया है। मैं तो यही कहूँगी कि तू इसे कोई हुनर सिखवा दे। पढ़ा-लिखा आदमी भले बेकार रह जाए, मगर हुनरमंद आदमी कभी बेकार नहीं बैठ सकता।”

“मगर अम्माँ, पढ़ाई-लिखाई की बात कुछ और ही होती है।” नूरी का कहना था।

“सो तो है, बेटी। मगर, जरा तू ही सोच कि क्या यह तेरी हैसियत की बात है कि तू अपने बेटे को स्कूल में पढ़ा सके?”

“अम्माँ, इसके लिए हम मेहनत-मजदूरी भी करने को तैयार हैं।” नूरी ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा।

“बेटी, तुझे तो बहुत अच्छी तरह याद होगा कि जब तू भगतजी के साथ यहाँ आई थी, तो तेरे रिक्शे के सामने परदा बँधा था?” पठानिन ने याद दिलाया।

“हाँ, याद है, अम्माँ।”

“जहाँ की मुस्लिम औरतें एक मुहल्ले से दूसरे मुहल्ले तक रिक्शे के सामने बगैर परदा बँधवाए आना-जाना नहीं कर सकतीं, वे मेहनत-मजदूरी कर सकेंगी?”

“ऐसा क्यों, अम्माँ?”

“बेटी, मेहनत-मजदूरी करने के लिए घर के बाहर निकलना होगा। मर्दों के साथ और उनके बीच काम करना होगा। हमारा मुस्लिम समाज अपनी औरतों को ऐसा करने की इजाजत नहीं देता। हमारे साथ घर के भीतर चाहे जैसा भी बुरा सलूक किया जाए, लेकिन हम बाहर नहीं निकल सकतीं। हमें हर हाल में परदे के भीतर ही रहना होगा।” पठानिन ने गमगीन आवाज में कहा।

“अम्माँ, तब आप ही बताइए कि हम क्या करें?” नूरी ने विवशता के साथ पूछा।

“बेंगा कोई हुनर सीख ले तो ठीक रहेगा।”

“कौन-सा हुनर?”

“मेरी नजर में तो एक ही काम है।”

“कौन-सा काम?”

“तू इसे गैरेज में भेज दे। चार-पाँच साल में यह बढ़िया मिस्त्री बन जाएगा।”

यह सुनकर नूरी को ऐसा लगा कि उसकी छाती पर किसी ने कसकर मुक्का मार दिया है। उसके जी में आया कि वह पठानिन से साफ-साफ कह दे कि वह अपने बेंगा को गैरेज में कभी नहीं भेजेगी। पर धीरे-धीरे वह नरम पड़ने लगी। उसके चेहरे के भावों को पढ़ते हुए पठानिन ने कहा, “मेरी जान-पहचान का एक गैरेज-वाला है। तू कहेगी तो मैं उस पर जोर डाल सकती हूँ कि वह तेरे बेटे को अपने गैरेज में रख ले।”

नूरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। पठानिन ने इसे नूरी की स्वीकृति मान ली।
 वह यह कहती हुई खड़ी हो गई, “ठीक है, मैं आज ही उससे बात कर लूंगी।”



सुबह आठ बजे के करीब बारह-तेरह साल का एक छोकरा आया बेंगा को अपने साथ गैरेज ले जाने के लिए। वह छोकरा उस्मान भाई के गैरेज में काम करता था। नूरी ने बेंगा को खिला-पिलाकर पहले ही तैयार कर दिया था। बेंगा के शरीर पर साफ-सुथरे कपड़े थे। उन कपड़ों को देखकर उस छोकरे ने कहा था, “अरे, तू काम सीखने गैरेज चल रहा है कि पढ़ाई-लिखाई करने के लिए स्कूल जा रहा है?”

बेंगा तो कुछ भी नहीं समझ सका लेकिन नूरी ने बात समझ ली। उसे यह स्मरण हो आया कि जहर जब गैरेज जाया करता था तो वह घर से गंदे कपड़े ही पहनकर जाया करता था। नूरी ने बेंगा के कपड़े बदलने चाहे लेकिन बेंगा इसके लिए तैयार नहीं हुआ। वह अड़ गया, “हम कपड़े नहीं बदलेंगे।”

नूरी ने बेंगा को वैसे ही गैरेज जाने दिया।

सारा दिन नूरी ने बड़ी बेचैनी में गुजारा।

चारों ओर अँधेरा फैलता जा रहा था। बेंगा अभी तक गैरेज से लौटकर नहीं आया था। नूरी बैठी उसका इंतजार कर रही थी।

लगभग आठ बजे रात को बेंगा घर लौटा। वह अकेला था। उसे उस छोकरे ने गली के नुक्कड़ पर छोड़ते हुए कहा था, “जाओ, अब अपने घर चले जाओ।”

बेंगा को देखकर नूरी उसे अचानक पहचान नहीं सकी। उसे लगा कि उसके सामने कोई दूसरा लड़का खड़ा है।

बेंगा के साफ-सुथरे कपड़े गंदे हो गए थे। नूरी ने बेंगा के दोनों हाथों को बारी-बारी से देखा। दोनों हाथ काले पड़ गए थे। उसके कपड़ों और पूरे शरीर से ग्रीस, मोबिल और पेट्रोल की बू आ रही थी। गालों पर जहाँ-तहाँ कालिख पुती थी।

बेंगा का यह रूप देखकर नूरी रोने को हो आई। बहुत मुश्किल से उसने स्वयं को नियंत्रित किया।

“बेटा, दोपहर को कुछ खाने को मिला था?” नूरी ने पूछा।

“नहीं।” बेंगा ने जवाब दिया।

“कुछ भी नहीं?” नूरी ने जोर देकर पूछा।

“चाय मिली थी दूधवाली।”

“शाम को क्या मिला था?”

“वही चाय।”

“यानी तू दिन-भर भूखा रहा?”

“हाँ, माँ।” बेंगा की सूरत रोनी हो आई।

“चल, जल्दी से हाथ-मुँह धो ले और खाना खा ले।” नूरी ने कहा।

बेंगा जैसे-तैसे हाथ-मुँह धोकर बैठ गया। उसके हाथ अभी साफ नहीं थे। उन हाथों को साफ करना संभव भी नहीं था। उसके लिए साबुन की जरूरत थी और घर में साबुन होने का सवाल ही नहीं था। नूरी सोड़े से कपड़ों की धुलाई करती थी और अपने केशों के लिए वह दूधी मिट्टी का उपयोग करती थी। इमली टोली की औरतों ने अब तक ‘गमकउवा साबुन’ का प्रयोग करना सीखा नहीं था, तो बेचारी नूरी कैसे जानती साबुन का महत्त्व !

नूरी ने एल्यूमीनियम के कटोरे में भात रखकर उस पर दाल डाल दी। साथ में प्याज का एक टुकड़ा भी रख दिया।

बेंगा खाने पर टूट पड़ा।

बेंगा ने जब भरपेट खाना खा लिया, तब नूरी ने बेंगा के ही कटोरे में अपने लिए भी दाल-भात निकाल लिया और खाने बैठ गई।

बेंगा कोठरी के बाहर निकल गया। आसमान में तारे निकले हुए थे और तारों को देखना उसे बहुत भाता था। कुछ देर तक वह तारों को बड़े ताज्जुब के साथ देखता रहा।

“बेंगा !” नूरी के पुकारने की आवाज सुनते ही बेंगा झोंपड़ी के भीतर आ गया।

नूरी ने जमीन पर दो बोरे बिछा दिए थे, जिन पर एक चादर पड़ी थी। यह चादर भगताइन ने नूरी को दी थी।

“आ बेटा, लेट जा।” नूरी ने बेंगा से कहा।

बेंगा अपनी दोनों टाँगों को पसारकर लेटने ही जा रहा था कि नूरी ने कहा, “नहीं, नहीं, ऐसे नहीं। इन कपड़ों को तू उतार दे। हम तुझे पुराना कुरता-पाजामा देते हैं।”

नूरी ने अपनी संदूकची से पुराना कुरता-पाजामा निकालकर बेंगा को दिया।

“तुम बाहर जाओ।” बेंगा ने झेंपते हुए कहा।

नूरी हँसती हुई कोठरी के बाहर चली गई। कुछ देर तक वह बाहर ही खड़ी रही।

“अब चली आओ, अम्माँ।” बेंगा ने आवाज दी।

नूरी भीतर आ गई।

बेंगा अपनी दोनों टाँगें फैलाकर चादर पर लेट गया।

नूरी हौले-हौले बेंगा की दोनों टाँगों को दबाते हुए बतियाने लगी, “बेटा, आज तूने क्या-क्या काम किया ?”

“माँ, दिन-भर हम होटल से चाय लाते रहे।” बेंगा का उत्तर था।

“चाय ? चाय क्यों लाता रहा तू ?”

“गैरेज में मिस्त्री लोग बार-बार चाय पीते हैं।”

“और क्या किया तूने?”

“और पान-बीड़ी लाते रहे।”

“और क्या किया तूने?”

“कुछ नहीं।”

“फिर तेरे कपड़े इतने गंदे कैसे हो गए?”

“उस्ताद ने गाड़ी के नीचे सुला दिया था।”

“जमीन पर कुछ नहीं बिछा था?”

“तेल लगा एक बोरा बिछा था।”

“क्या गैरेज में सभी इसी तरह गंदे रहते हैं?”

“हाँ। वहाँ तो लोगों को पहचानना भी कठिन है, अम्माँ।”

“क्यों?”

“गैरेज में सभी भूत लगते हैं—काले-काले।”

“तेरे उस्ताद कैसे आदमी हैं?”

बेंगा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने चुप्पी साध ली।

“तू चुप क्यों हो गया, बेटा? बोल न, तेरे उस्ताद कैसे हैं?”

“अम्माँ, उस्ताद अच्छा आदमी नहीं है।”

“यह तूने कैसे जाना कि तेरा उस्ताद अच्छा आदमी नहीं है?”

“वह बात-बात में गाली देता है।”

“क्या गाली देता है?”

“मादरचोद बोलता है।”

यह सुनते ही नूरी सन्नाटे में आ गई।

“और मारता भी है क्या?”

“हाँ।”

“कहाँ?”

“यहाँ।” बेंगा ने चूतड़ पर अपना हाथ रखकर दिखा दिया।

“तूने उस्ताद को ऐसा करने से मना नहीं किया?”

“किया।”

“तब उस्ताद ने क्या कहा?”

“उस्ताद का कहना है—बगैर मार खाए और गाली सुने तू काम कैसे सीख सकता है?”

यह सुनकर नूरी कुछ सोचने लगी।

बेंगा की आँखें रह-रहकर झपकने लगीं।

झोंपड़ी का दरवाजा भीतर से बंद कर नूरी बेंगा की बगल में लेट गई। मगर उसकी आँखों में नींद नहीं थी।

: २० :

नूरी ने ठोंगा बनाने का काम फिर शुरू कर दिया। गुजारे के लिए ऐसा करना जरूरी था। उस्मान मियाँ बेंगा को पैसा नहीं देता था। उसका कहना था कि जब एक साल बीत जाएगा तब वह कुछ देने के बारे में सोचेगा। बेंगा हर दिन गैरेज से लौटकर वहाँ का जो हाल बताता था, उससे नूरी ने यही अनुमान लगाया कि गैरेज में लोग बेंगा से नौकर जैसा काम लेते हैं। जिसके जी में आता है, वह बेंगा को माँ-बहन की गाली दे देता है। कभी-कभी लोग उसे पीट भी देते हैं। बेंगा से ज्यादा उम्र के लड़के भी उसे सताते हैं और उस पर अपने काम का बोझ डाल देते हैं।

सुबह गैरेज में पहुँचते ही उससे झाड़ू लगाने के लिए कहा जाता था। अब तो बेंगा गैरेज का पक्का झाड़ूदार बन गया है। जब वह रात को घर लौटता तो थककर बुरी तरह चूर हो जाता था। वह अक्सर अपने दोनों हाथों में दर्द होने की शिकायत करता। उसे हर दिन कुएँ से पता नहीं कितनी बालटियाँ पानी निकालना और ढोना पड़ता था। सबके लिए चाय, पान और बीड़ी लाना उसकी ड्यूटी पहले से ही थी।

पठानिन के कहने पर उस्मान मियाँ ने बेंगा को दोपहर के समय खाने के लिए एक घंटे की छुट्टी देना शुरू कर दिया था। उस समय बेंगा, जब अपने घर लौटता तो मुहल्ले के अन्य लड़कों के साथ खेलने के लिए उसका जी मचल उठता। एक बार वह दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगा। उस दिन वह गैरेज देर से पहुँचा। बेंगा को देखते ही उस्मान गरज पड़ा, “का रे बेंगवा ! काहे देर हुआ ? अपनी मइया के साथे सुत गया था का ?”

इस घटना की जानकारी पाकर नूरी उस दिन अकेले में बहुत रोई थी। उसने उस्मान मियाँ को देखा नहीं था, लेकिन उसके मस्तिष्क में उस्मान की एक धुँधली-सी आकृति बन गई थी, जो किसी क्रूर तथा अशिष्ट व्यक्ति की ही हो सकती थी। उस्मान ने कितनी गंदी गाली दी थी बेंगा को ! अगर बेंगा इसका अर्थ समझ पाता तो शायद वह काम पर दोबारा जाता ही नहीं। पर वह बेचारा क्या जाने कि उस्मान मियाँ की गाली का क्या मतलब होता है। उसने तो इस गाली पर ध्यान भी नहीं दिया होगा। दूसरी गालियों की तरह वह इसे भी चुपचाप पी गया होगा। उसकी दृष्टि में तो यह गाली हो भी नहीं सकती थी; क्योंकि यह सच था कि बेंगा अपनी माँ के साथ ही सोया करता था। मगर, इस गाली ने नूरी के हृदय पर एक गहरा घाव-सा बना दिया।

नूरी बराबर यही सोचती कि कोई दूसरा रास्ता निकल आता तो बड़ा अच्छा

होता। वह बेंगा को उस्मान मियाँ के गैरेज से हटाकर किसी ऐसे काम में लगाना चाहती थी, जहाँ लोग बात-बात पर माँ-बहन की गालियाँ न देते हों, बात-बात पर बच्चे को मारते न हों और काम सिखाने के नाम पर बेंगा जैसे लड़कों को अपना मुफ्त का नौकर न समझते हों।

बेंगा सिर्फ एक आदमी की तारीफ किया करता था—वह था जोन मिस्त्री। जोन मिस्त्री क्रिस्तान था और वह गैरेज के अन्य मिस्त्रियों जैसा नहीं था। उससे उस्मान मियाँ भी जरा दबता ही था; क्योंकि जोन मिस्त्री टूटी-फूटी अँगरेजी भी जानता था। जब गैरेज में कोई अँगरेज अपनी कार लेकर आता, उस समय जोन मिस्त्री ही साहब से बातचीत के लिए आगे बढ़ा दिया जाता। अँगरेज साहब काम का बढ़िया दाम देते थे और जाते-जाते ‘बख्शीश’ भी दे जाया करते थे। बेंगा जोन के समीप रहना ज्यादा पसंद करता था, अतः कई बार उसे भी ‘बख्शीश’ पाने का फख्र हासिल हो चुका था।

नूरी बेंगा को गैरेज के काम से हटा लेने के बारे में जब भी पठानिन से कुछ कहती, पठानिन नूरी को ही समझाने लगती, “बेटी, हुनर चीज ही ऐसी है। बिना उस्ताद की मार खाए और गालियाँ मुने कोई हुनर सीख ही नहीं सकता है। तू जरा सब्र से काम ले। ये बुरे दिन भी निकल जाएँगे। अल्लाह ने चाहा तो तेरा बेंगा एक बढ़िया मिस्त्री बनकर निकलेगा उस्मान मियाँ के गैरेज से।”

उस दिन बेंगा बहुत खुश नजर आ रहा था। बेंगा को खुश देखकर नूरी को बहुत अच्छा लगा। उसने पूछा, “क्या बात है बेटा, आज तू बहुत खुश नजर आ रहा है?”

“हाँ, माँ। देखो न आज हमें क्या मिला है।” बेंगा ने चमड़े का एक पर्स निकालकर अपनी अम्माँ के हाथ पर रख दिया।

“यह क्या है?” नूरी ने पूछा।

“मालूम नहीं।”

“तुम्हें कहाँ से मिला?”

“साहब की गाड़ी में गिरा हुआ था।”

“कौन साहब?”

“एक साहब गैरेज में आए थे। उन्हीं की गाड़ी में यह गिरा हुआ था।”

नूरी ने पर्स को उलट-पुलटकर देखा। पर्स फूला हुआ था, पर नूरी की समझ में नहीं आ पा रहा था कि वह पर्स को खोले कैसे? इधर-उधर खींचने के क्रम में पुट् की एक आवाज हुई और पर्स खुल गया। भीतर एक खूबसूरत औरत की तस्वीर लगी थी। उसके नीचे की तह में रुपए पड़े थे—बिलकुल वैसे ही बड़े-बड़े और कड़क नोट जैसे नोट उसे ‘इटली’ के भीतर से मिले थे। उन नोटों के साथ कुछ दस-पाँच के नोट भी थे।

रुपए देखते ही नूरी को जैसे साँप सूँघ गया। उसे उस दिन की याद आ गई जिस दिन उसे 'इटली' से रुपए मिले थे। वे सारी बातें नूरी की आँखों के सामने तेजी से एक बार फिर घूम गईं। वह कैसे भूलती कि इन्हीं रुपयों के चलते उसके दो-दो बच्चे देखते-देखते मर गए... उसकी बसी-बसाई गृहस्थी उजड़ गई... और वह शादी-शुदा होने के बावजूद बेवा की तरह जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो गई...

नूरी ने पर्स अपनी संदूकची में सँभालकर रख दिया। उसने बेंगा से कहा, "जा हाथ-मुँह धो ले।"

नूरी ने खाना परोस दिया रोज की तरह। बेंगा भी हर दिन की तरह खाना खाकर जरा बाहर निकल गया। जब वह लौटा तो उसे बिस्तर बिछा हुआ मिला। वह अपनी दोनों टाँगों फँलाकर लेट गया।

नूरी बेंगा की टाँगों को हौले-हौले दबाते हुए बतियाने लगी। उसने पूछा, "बेटा, तूने इस बटुए के बारे में किसी को कुछ बताया है क्या?"

"नहीं, अम्माँ।"

"ठीक है। किसी को कुछ मत बताना।"

"अच्छा, अम्माँ।"

"क्या तू साहब का घर जानता है?"

"हाँ, अम्माँ।"

"कैसे जानता है तू?"

"साहब गैरेज में गाड़ी लेकर आए थे। गाड़ी में कुछ खराबी है। उस्ताद ने कहा—दो दिन लगेंगे ठीक करने में। साहब बोला—ठीक है, बनाओ। मगर अभी अपने किसी आदमी से हमें होटल पहुँचवा दो। आपका आदमी वहाँ से यह गाड़ी लेकर लौट आएगा।"

"तब क्या हुआ, बेटा?"

"उस्ताद ने जोन मिस्त्री को साहब के साथ भेज दिया।"

"तो?"

"जोन मिस्त्री हमको भी अपने साथ लेते गए।"

"अच्छा।"

"हाँ, अम्माँ।"

"फिर?"

"फिर जोन मिस्त्री ने साहब को होटल पहुँचा दिया।"

"क्या तू उस होटल को जानता है?"

"हाँ, माँ। वह होटल नदी के पास है।"

"क्या तू हमारे साथ वहाँ चल सकता है?"

“हाँ, चल सकते हैं।”

“ठीक है। अब तू सो जा।”

“अम्माँ, क्या तुम उस होटल में चलोगी? साहब बहुत अच्छा आदमी है। उसने हमको चाकलेट दिया।”

“जाना पड़ सकता है। मगर, तू अभी सो जा। तू थक गया है।”

बेंगा अपनी दोनों आँखें मींचकर सोने की कोशिश करने लगा।

नूरी के भीतर सवाल-जवाब का एक तूफान उठ खड़ा हुआ। वह क्या करे? क्या वह बेंगा के साथ जाकर साहब का बटुआ लौटा दे? अगर वह ऐसा करती है तो उसे क्या मिलेगा? कुछ भी नहीं। पहले भी एक बार वह ऐसी ही भूल कर बैठी है। उसे बटुआ नहीं लौटाना चाहिए। यदि वह बटुआ नहीं लौटाती है तो कल साहब अपना बटुआ खोजता हुआ गैरेज में जरूर पहुँचेगा। बटुए की खोज शुरू हो जाएगी। लोग जरूर बेंगा पर ही शक करेंगे; क्योंकि वही साहब की गाड़ी में उनके होटल तक गया था। तो क्या यह बटुआ उस्मान मियाँ के पास जमा करवा दे? नहीं, नहीं, नूरी ऐसी भूल नहीं कर सकती। ऐसी ही भूल उसने पहले भी की थी, जिसका दुष्परिणाम वह आज भोग रही है। अगर वह उस्मान मियाँ को बटुआ दे देगी तो उस्मान मियाँ भी वही करेगा, जो अब्बास ने किया था। इस मामले में सभी मर्द एक जैसे होते हैं। तब वह क्या करे?

इस सवाल-जवाब के क्रम में नूरी की आँखें लग गईं।

□

गैरेज जाने के लिए बेंगा अपने कपड़े पहनने लगा। यह देखकर नूरी ने उससे कहा, “बेटा, आज तू काम पर मत जा।”

“क्यों, अम्माँ?” बेंगा ने ताज्जुब के साथ पूछा।

“तू हमारे साथ चल।”

“कहाँ, अम्माँ?”

“पहले चल तो।”

नूरी ने जल्दी से वह साड़ी पहन ली, जो साड़ी उसे मौसा-मौसी से मिली थी। उसने आस-पास नजर दौड़ाकर देखा कि कहीं पठानिन तो नहीं है। वह पठानिन को बताए वगैर झोंपड़ी बंद कर निकलना चाहती थी। उसे आशंका थी कि यदि पठानिन को बटुएवाली बात मालूम हो गई तो वह नूरी को कभी भी बटुआ लौटाने नहीं देगी। मगर नूरी ने तो मन-ही-मन संकल्प कर लिया था कि वह बटुआ लौटाकर ही रहेगी।

झोंपड़ी में ताला लगाकर नूरी बेंगा के साथ चल पड़ी। कोई एक कोस पैदल चलने के बाद दोनों उस होटल में पहुँचे, जहाँ वह साहब ठहरा हुआ था।

माँ-बेटे दोनों डरते-डरते होटल के अहाते में पहुँचे।

बरामदे पर वह औरत बैठी दिखी, जिसकी तसवीर नूरी ने बटुए में लगी देखी थी। उस औरत को पहचानने में नूरी को जरा भी समय नहीं लगा।

माँ-बेटे दोनों ने एक साथ ही कहा, “सलाम, मेम साहब।”

महिला ने सलाम का जवाब सलाम में देते हुए पूछा, “क्या बात है? कौन हो तुम लोग?”

नूरी ने सारा वृत्तांत सुनाकर कहा, “मेम साहब, हम साहब का बटुआ लौटाने आए हैं।”

यह सुनते ही वह महिला आश्चर्य विस्फारित नेत्रों से नूरी और बेंगा की तरफ देखने लगी। उसने कहा, “साहब स्नान कर रहे हैं। तुम लोग तब तक यहीं बैठो और मुझसे बातचीत करो।”

महिला ने नूरी को खोदना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे नूरी की पूरी कहानी उस महिला के सामने खुल गई। महिला पिघल पड़ी। उसने कहा, “तुम लोग यहीं बैठो। साहब अब निकलनेवाले होंगे।”

नूरी ने बटुआ महिला को सौंप दिया था। वह महिला भीतर गई। उसके पति शायद नहा चुके थे; क्योंकि अब दोनों के बतियाने की आवाज बाहर साफ-साफ सुनाई पड़ रही थी। दोनों बँगला में बातचीत कर रहे थे, फलतः नूरी कुछ नहीं समझ सकी कि दोनों के बीच किस विषय पर बातचीत चल रही थी।

कोई दस मिनटों के बाद साहब बाहर आया। उसे देखते ही नूरी और बेंगा उठकर खड़े हो गए। दोनों ने अभिवादन में कहा, “सलाम, साहब।”

“बैठो, बहन,” साहब के मुँह से निकला और उसने बेंगा को अपने पास खींच-कर उसके दोनों गालों को थपथपाते हुए नूरी से कहा, “मैंने तुम्हारी पूरी कहानी सुन ली है। तुम दोनों मेरे साथ चलो—कानपुर। कानपुर में मेरी अपनी एक मिल है। मैं तुम्हारे बेटे को किसी बढ़िया काम की ट्रेनिंग दिलवा दूँगा। इसकी जिंदगी सुधर जाएगी। तुम दोनों को हम कोई तकलीफ नहीं होने देंगे।”

“बस बहन, ना मत कहना।” यह बोलती हुई भीतर से मेम साहब भी निकल आई।

नूरी क्या कहे और क्या न कहे—वह कुछ समझ नहीं सकी। उसके नेत्र गीले हो आए। वह अपने गीले नेत्रों से ही मौन कृतज्ञता ज्ञापित करने लगी।

: २१ :

भगत और अब्बास के घरों के ठीक बीचोंबीच रास्ते पर एक चमचमाती हुई ब्यूक कार आकर रुकी। मुहल्ले के बच्चे कार के आस-पास जमा होने लगे। घरों से औरत-मर्द भी बाहर निकलकर देखने लगे कि किसकी कार आई है। ड्राइवर ने उतरकर बाएँ दरवाजे को खोला। लोग यह देखकर दंग हुए कि कार से पहले नूरी

निकली और फिर बेंगा। दोनों भगत के घर के भीतर जाने लगे। आस-पास खड़े औरतों-मर्दों के मुख से निकला, “अरे ! ये तो नूरी और बेंगा हैं।”

नूरी और बेंगा के आगमन की खबर अब्बास और उसकी बीवी को भी मिली। वे दोनों भी ताक-झाँक करने लगे।

भगत अपने घर से निकला। पीछे-पीछे भगताइन थी। दोनों को नूरी ने बता दिया था कि वह अब कानपुर जा रही है।

भगत ने बनर्जी बाबू के स्वागत के लिए अपने बरामदे में कुरसियाँ रखीं, जिन्हें भगत अपने किसी परिचित से माँगकर लाया था। बीच में एक छोटी-सी कश्मीरी मेज थी, जिस पर कढ़ा हुआ एक बड़ा रुमाल बिछा था।

भगत ने हाथ जोड़कर कार में बैठे बनर्जी बाबू तथा उनकी पत्नी से कहा, “दो मिनट के लिए आप लोग हमारी मड़ैया में चलने की कृपा कीजिए। हमारी मड़ैया पवित्र हो जाएगी।”

बनर्जी बाबू ने अपनी पत्नी की ओर देखा फिर ड्राइवर की तरफ। ड्राइवर समझ गया। वह उठा और बाहर निकलकर उसने कार का दरवाजा खोला। पहले बनर्जी बाबू की पत्नी शुभ्रा कार से निकली, फिर बनर्जी बाबू।

“हम अभी आते हैं।” यह कहकर भगत भीतर चला गया। जब वह लौटा तो उसके हाथ में चीनी मिट्टी की एक नई प्लेट थी, जिसमें अंगूर थे। प्लेट को मेज पर रखकर भगत एक किनारे खड़ा हो गया और बोला, “बाबू, हम नीच लोग हैं। मगर यह अंगूर तो भगवान् का बनाया हुआ है, इसे आप लोगों को लेने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए।”

भगत को आशंका थी कि शायद बनर्जी बाबू और उनकी पत्नी अंगूर का स्पर्श नहीं करेंगे, मगर ऐसा नहीं हुआ। बनर्जी बाबू ने अंगूर के कुछ दाने उठाकर अपने मुँह में डाले और उन्हें चूसते हुए कहा, “भगतजी, आप क्या हैं—वह मैं जान गया हूँ। आप अपने को नीच मानेंगे तो ऊँच-नीच की परिभाषा फिर से बनानी होगी। यह तो आपके मंदिर का प्रसाद है, इसे हम कैसे छोड़ सकते हैं? लो शुभ्रा, तुम भी लो।”

शुभ्रा ने भी अंगूर के कुछ दाने उठा लिए।

बाहर भगत के घर के आस-पास अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई। सभी उच्च-उच्चकर भीतर देखने की कोशिश कर रहे थे। कुछ औरतें और बच्चे तो भगताइन के कमरे में भी घुस आए थे, जहाँ नूरी और बेंगा बैठे थे। बच्चे बेंगा को इशारे से अपने पास बार-बार बुला रहे थे, लेकिन बेंगा अपनी जगह से हिल नहीं रहा था।

ड्राइवर को सिपाही का काम करना पड़ रहा था। वह बच्चों को एक तरफ से भगता तो बच्चे दूसरी तरफ जमा हो जाते। एक बच्चा बार-बार कार की पॉलिश पर पड़ी धूल पर अपनी उँगली चला-चलाकर आँधी-तिरछी रेखाएँ खींचता और

फिर खुश होकर नाचने लगता। एक दूसरा लड़का बार-बार उचक-उचककर शीशे में अपना चेहरा देखता और दूसरों को भी वैसा ही करने की प्रेरणा देता।

छोटे-छोटे बच्चे न तो शीशा ही देख सकते थे और न पॉलिश पर पड़ी धूल पर लकीर ही खींच सकते थे। उन्हें तलाश थी किसी बड़े लड़के या लड़की की जो उन्हें उचका दे ताकि उनका शौक भी पूरा हो सके।

भगताइन ने शुभ्रा तथा बनर्जी बाबू को भीतर बुला लिया।

भगत ने अंगूर का एक गुच्छा प्लेट से उठा लिया और बाहर निकलकर ड्राइवर को दे दिया।

ड्राइवर प्रसन्न हो उठा।

बनर्जी बाबू तथा शुभ्रा ने देखा कि नूरी की साड़ी बदल गई थी। बेंगा ने भी नए कपड़े पहन लिए थे।

भगताइन नूरी को विदा कर रही थी। उसने नूरी के आँचल में लगभग एक सेर अरवा चावल डाला जिस पर चाँदी का एक सिक्का चमक रहा था। खोईचा बाँधते ही नूरी भगताइन से लिपटकर अनाथ बच्ची की तरह रोने लगी। आज भगताइन ने अपने ऊपर पूरी तरह काबू कर रखा था। उसकी आँखों में आँसू जैसी कोई चीज नहीं थी। उसने नूरी को समझाया, “जाओ बेटी, सदा खुश रहो। भगवान् सब कुछ देखता है। उसके घर में देर भले हो, मगर अंधेर नहीं है। सचाई का रास्ता कभी मत छोड़ना। इसी से तुम्हें और तुम्हारे बेटे बेंगा को सद्गति मिलेगी।”

भगताइन ने बनर्जी बाबू के सामने आकर कहा, “बाबू, यह औरत बहुत मुसीबतों की मारी है। इसे सहारा देकर आपने बहुत बड़ा पुनर्न किया है। भगवान् इसका सुफल आपको जरूर देंगे।”

अब भगताइन शुभ्रा के सामने आई। उसने उससे कहा, “मेम साहब, आप दोनों ने इन बेसहाराओं को सहारा दिया है। देखिएगा, भगवान् ने चाहा तो आपके आँगन में जल्दी ही किशन कन्हैया का अवतार होगा।”

शुभ्रा यह अयाचित आशीष पाकर भीतर-ही-भीतर गद्गद हो उठी। वह अपने मुख से कुछ बोल ही नहीं सकी। उसके नयनों ने ही उसके मनोभावों को प्रकट किया।

अब भगताइन ने जबरदस्ती चाँदी के पाँच सिक्के बनर्जी बाबू को और पाँच सिक्के शुभ्रा को थमा दिए।

बनर्जी बाबू और शुभ्रा दोनों ही एक-दूसरे को देखते रह गए।

नूरी को घेरकर कुछ औरतों ने बतियाना शुरू कर दिया। भगताइन ने सबको किनारे करते हुए कहा, “जाओ बेटी, तुम लोगों को देर हो रही है।”

नूरी बाहर निकली। उसके साथ-साथ बेंगा भी चल रहा था। नूरी ने झुककर भगत के चरणों की धूल अपने माथे से लगा ली। बेंगा ने भी वैसा ही किया।

भगत ने बेंगा की बलैया लेते हुए कहा, “यहाँ से जाकर अपने मौसा को भूल मत जाना।”

“नहीं भूलेंगे, मौसा।” बेंगा ने तपाक् से जवाब दिया, जिसे सुनकर भगत को आंतरिक खुशी मिली।

शुभ्रा कार की पिछली सीट पर बैठ चुकी थी। बनर्जी बाबू बाहर खड़े थे। ड्राइवर ने अगली सीट का दरवाजा नूरी तथा बेंगा के लिए खोल दिया। बनर्जी बाबू ने कहा, “अब यहाँ मैं बैठूंगा। ये दोनों मेम साहब के साथ पीछे बैठेंगे।”

ड्राइवर ने पिछला दरवाजा खोल दिया। नूरी पहले भीतर गई; क्योंकि बेंगा खिड़की के पास बैठने की जिद कर रहा था।

बनर्जी बाबू ने भगत-भगताइन को प्रणाम किया और फिर वह ड्राइवर की बगलवाली सीट पर बैठ गए।

ड्राइवर अपनी जगह पर आकर बार-बार हॉर्न बजाने लगा ताकि कार के आगे-पीछे खड़े बच्चे हट जाएँ।

इस हॉर्नबाजी ने अब्बास तथा उसकी नई बीवी को यह बता दिया कि अब गाड़ी छूटनेवाली है। दोनों दर्शक की तरह अपनी झोंपड़ी के सामने खड़े हो गए।

कार स्टार्ट हुई। कार के साइलेंसर से जो हवा निकली उसने कच्ची सड़क की धूल को बवंडर जैसा उड़ाना शुरू कर दिया। इस कृत्रिम बवंडर को पीछे छोड़ती हुई कार आगे निकल गई, पर बवंडर के कुछ धूलकण अब्बास तथा उसकी बीवी की आँखों में भी पड़ गए। फलतः अपनी आँखों को मलते हुए दोनों झोंपड़ी का दरवाजा बंद कर कोठरी में आ गए।

मध्यमा

कानपुर पहुँचकर नूरी को सुखद आश्चर्य हुआ। वह रास्ते-भर यह सोचती रही थी कि बनर्जी बाबू उस पर तरस खाकर अपने घर में दाई या नौकरानी का कोई काम दे देंगे। मगर कानपुर पहुँचने पर ऐसा नहीं हुआ। बनर्जी बाबू ने नूरी को अपनी कोठी में ही रखा। लगभग एक महीने तक नूरी बराबर शुभ्रा मेम साहब से यह कहती रही कि उसके लिए किसी छोटे-मोटे काम का प्रबंध कर दिया जाए ताकि वह अपना तथा अपने बेटे बेंगा का पेट पाल सके। शुभ्रा नूरी की बात सुनती और मुसकराकर चुप लगा जाती।

शुभ्रा लगभग चालीस की रही होगी। दप-दप करता हुआ गौर वर्ण। न पतली, न दुबली। गठा हुआ शरीर। गोल मुखड़ा। उभरे हुए कपोल। बहुत ही सुंदर आँखें, जिनके कारण उसका सौंदर्य मोहक हो उठा था। इस उम्र में भी शुभ्रा नवयौवना लगती थी। बनर्जी बाबू पैतालीस के आस-पास के रहे होंगे। सवा पाँच फीट लंबा शरीर। साँवला रंग। लंबा चेहरा। गोल-गोल आँखें। आँखों पर चश्मा। सिर पर घने काले केश जिन्हें बनर्जी बाबू बहुत सँवारकर रखते थे। दाहिने गाल पर कान के ठीक नीचे एक छोटा-सा मस्सा। महीन मूँछें। बनर्जी बाबू और शुभ्रा जब दोनों साथ-साथ होते, तो उन्हें देखकर यह बताना कठिन हो जाता कि दोनों की वास्तविक उम्र क्या है; क्योंकि दोनों ही 'नई जोड़ी' लगते थे। पर, दोनों के जीवन में संतान का जो अभाव था—उस अभाव ने दोनों को चिंता में डाल रखा था। किसी से दोनों को पता चला था कि राँची में एक आदिवासी है, जो संतान के लिए जड़ी-बूटी देता है। इसी जड़ी-बूटी की प्राप्ति के लिए दोनों राँची गए थे। राँची जाने पर उन्हें पता चला कि कुछ दिन पहले उस आदिवासी की मृत्यु हो गई, फलतः जड़ी-बूटी तो उन्हें नहीं मिली; हाँ, दोनों को नूरी और बेंगा जरूर मिल गए।

कुछ ही दिनों में नूरी के शरीर पर पानी चढ़ने लगा और उसका वास्तविक रूप-रंग उभरने लगा। बेंगा चेचक के दागों के कारण पहले जैसा सुंदर तो नहीं लगता था, परंतु उसे देखकर कोई भी यह अनुमान जरूर लगा सकता था कि पहले वह कितना सुंदर रहा होगा। इन दोनों की उपस्थिति से शुभ्रा के जीवन में एक नई ताजगी पैदा हो गई थी। वह उस ताजगी को खोना नहीं चाहती थी।

एक दिन शुभ्रा ने नूरी से कहा, “तुम मुझे मेम साहब मत कहा करो। तुम मुझे दीदी कहा करो।” उस दिन से नूरी शुभ्रा को दीदी ही बोलने लगी।

नूरी बार-बार शुभ्रा को यह याद दिलाती कि उसका इस घर में बहुत दिनों तक यों ही पड़े रहना ठीक नहीं है; क्योंकि वह मुसलमान है। यदि यह बात लोगों को मालूम हो जाती तो बनर्जी-परिवार का बड़ा अपमान हो सकता था। बात ठीक भी थी। उन दिनों जात-पात और धर्म-मजहब के कारण लोगों को बात-बात में पंद्रह आना घोषित कर दिया जाता था।

शुभ्रा ने हँसते-हँसते एक दिन नूरी से कहा, “नूरी, तुम यदि बुरा न मानो तो मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ।”

“बोलिए न दीदी, क्या कहना चाहती हैं आप?” नूरी ने बड़े प्रेम से पूछा।

“नूरी, तुम सुंदर हो। अभी तुम्हारी कोई विशेष उम्र नहीं है। तुम्हारे बारे में लोगों को यह मालूम भी नहीं है कि तुम हिंदू हो या मुसलमान। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी शादी एक हिंदू से करवा सकती हूँ। वह तुम्हारे बेटे को भी स्वीकार कर लेगा। कोई जल्दी नहीं है। खूब सोचकर बताना। अपनी दीदी को गलत मत समझना, नूरी। बहन, मैं तुम्हें सुखी देखना चाहती हूँ।”

शुभ्रा की इस बात को नूरी ने कानों से पी लिया था। वह तत्काल कुछ नहीं बोल सकी थी।

नूरी अपने कमरे में आ गई थी। बेंगा खा-पीकर सो रहा था। नूरी भी उसकी बगल में लेट गई। उसकी यही इच्छा हो रही थी कि उसे शीघ्र नींद आ जाए, पर नींद आज उससे दूर भागती जा रही थी। उसके कानों में शुभ्रा दीदी की बात बार-बार गूँज रही थी।

क्या नूरी को दूसरा विवाह कर लेना चाहिए?

क्या यह उचित होगा?

क्या एक पति के जीवित रहते दूसरे पुरुष को पति बनाना अनैतिक नहीं माना जाएगा?

अब वह मुसलमान है। क्या उसे फिर से हिंदू बन जाना चाहिए—सिर्फ विवाह करने के लिए?

नूरी के सामने ये प्रश्न बारी-बारी से आ-जा रहे थे। वह एक प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ नहीं पाती कि दूसरा प्रश्न उसके सामने आकर खड़ा हो जाता।

इतना तो नूरी भी समझ रही थी कि शुभ्रा दीदी ने उसकी भलाई को ध्यान में रखकर ही यह बात उससे कही है। इतना समझते हुए भी वह अपने को यह नहीं समझा पा रही थी कि एक पति के रहते हुए वह दूसरी शादी कैसे कर सकती है? एक बार उसके मन ने उससे कहा भी—तलाक के बाद मुस्लिम औरतें दूसरी शादी के लिए आजाद होती हैं। मगर नूरी के भीतर रचा-बसा हिंदू संस्कार इसे स्वीकार नहीं

कर पा रहा था। हिंदू लड़कियाँ केवल एक बार विवाह करती हैं। दूसरे विवाह के बारे में सोचना भी उनके लिए पाप है। 'पाप' इस शब्द ने नूरी को एकदम हिला-कर रख दिया। वह यह पाप नहीं कर सकती—उसने फैसला कर लिया।

लेकिन इस फैसले से बेंगा का नुकसान होगा। नूरी को भले ही पति की जरूरत न हो, लेकिन बेंगा को तो बाप चाहिए न। एक बाप, जो उसे पढ़ा-लिखा सके। जो उसे अपना नाम दे सके। नूरी को लगा कि केवल बेंगा के भविष्य को ध्यान में रखते हुए उसे अपनी शुभ्रा दीदी की बात मान लेनी चाहिए। यदि उसका दोबारा विवाह हो जाता है तो बेंगा की जिंदगी को निश्चित रूप से एक नई दिशा मिल जाएगी।

नूरी को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एक निष्कर्ष तक पहुँच गई है। बेंगा के भविष्य के लिए उसे ऐसा करना उचित लगा। परंतु, अचानक उसके सामने एक बहुत बड़ा 'लेकिन' आकर खड़ा हो गया। नूरी को खुद पर तो यह अधिकार है कि वह मुसलमान बनी रहे या फिर से हिंदू बन जाए। लेकिन—उसे यह अधिकार नहीं है कि वह बेंगा को हिंदू बना दे। बेंगा एक मुसलमान का बेटा है। नूरी तो हिंदू बन सकती है, मगर बेंगा कैसे हिंदू बन सकता है?

बेंगा हिंदू क्यों नहीं बन सकता? वह नूरी का भी बेटा है। उसने उसे अपने पेट में नौ महीने तक पाला है। वह उसके हाड़-मांस का अपना ही हिस्सा है। वह उसका तनय है। बेंगा पर नूरी का अब्बास से कहीं ज्यादा हक है। वह अपने बेटे को हिंदू क्यों नहीं बना सकती है? वह अपने बेटे को अपनी ही तरह ही हिंदू बनाएगी।

नूरी का निर्णय संकल्प का बाना पहनने ही जा रहा था कि उसके भीतर से एक और नूरी प्रकट हुई और कहने लगी—

'नूरी, तेरे शरीर पर यह कहीं नहीं लिखा है कि तू हिंदू है कि मुसलमान... लेकिन बेंगा के जिस्म पर यह लिखा है कि वह मुसलमान है... क्या तुझे याद नहीं है कि बेंगा का खतना हो चुका है... इसलिए बेंगा मुसलमान है और वह बराबर मुसलमान ही रहेगा... मुसलमान बराबर मुसलमान ही रहता है... वह चाहकर भी दूसरा मजहब कुबूल नहीं कर सकता... तू यह भी याद रख कि बेंगा मुसलमान है और तू उसकी माँ है... इसलिए तू भी मुसलमानिनी ही है... अब तू हिंदू नहीं बन सकती... अगर हिंदू बन भी गई तो तेरा भाँड़ा कभी भी फूट सकता है और जब भाँड़ा फूटेगा तो... समझ ले कि कितना बड़ा बावेलामच जाएगा...'

अगले दिन नूरी अपनी सद्कचची लेकर बेंगा के साथ बनर्जी बाबू और शुभ्रा के सामने खड़ी हो गई।

बनर्जी बाबू और शुभ्रा दोनों ही नूरी को इस मुद्रा में देखकर कुछ समझ नहीं सके। बनर्जी बाबू ने शुभ्रा की ओर देखा और शुभ्रा ने अपने पति की तरफ।

"हम जा रहे हैं, मेम साहब।" नूरी ने फर्श पर अपनी आँखें गड़ाए हुए कहा।

शुभ्रा ने नूरी से पूछा, “कहाँ जाने की तैयारी है ?”

“कहीं भी चले जाएँगे।” नूरी का उत्तर था।

“कहीं भी चली जाओगी ? यह राँची नहीं है—यह कानपुर है कानपुर।”

नूरी अपनी दोनों आँखें झुकाए केवल फर्श को देख रही थी। शुभ्रा नूरी के समीप आ गई। उसने बहुत धीरे-से पूछा, “क्या तुमने अपनी दीदी की बात का बुरा मान लिया ?”

“नहीं, दीदी।” नूरी का स्पष्ट उत्तर था।

“फिर ?”

“दीदी, आप लोगों का हम पर बड़ा उपकार है, इसलिए हम कभी भी नहीं चाहेंगे कि हमारे चलते आप लोगों के सामने कोई मुसीबत आ जाए। बस इसीलिए हम जा रहे हैं।” नूरी ने भारी गले से उत्तर दिया।

“बहन, मेरी एक बात मान सकती हो ?” शुभ्रा ने पूछा।

नूरी ने ‘हाँ’ में केवल अपना माथा झुला दिया।

“तुम केवल आज के लिए और रुक जाओ। आज लक्ष्मीवार (गुरुवार) है और लक्ष्मीवार को बंगाली अपने घर से लक्ष्मी को विदा नहीं करते। अगर तुम जाना ही चाहती हो तो कल चली जाना। मगर आज तो मैं तुम्हें किसी भी हालत में नहीं जाने दूँगी।”

नूरी चुपचाप बेंगा के साथ अपने कमरे की ओर लौट गई।

: २३ :

बनर्जी बाबू शुभ्रा की प्रतीक्षा कर रहे थे। शुभ्रा नूरी के कमरे में गई थी। उसे अब तक आ जाना चाहिए था। सामने पड़ी बंगला पत्रिका ‘देश’ उठाकर वह उलटने-पुलटने लगे। इसी बीच शुभ्रा के आने की आहट हुई। बनर्जी बाबू सजग होकर दरवाजे की तरफ देखने लगे।

शुभ्रा ने कमरे में प्रवेश किया। बनर्जी बाबू ने अनुमान लगाने का प्रयास किया कि वह क्या संदेश लेकर आई है। शुभ्रा के चेहरे से कुछ भी अनुमान लगाना संभव नहीं था, अतः उन्होंने स्वयं पूछा, “क्या हुआ ?”

“नूरी अब यहाँ रहना नहीं चाहती।” शुभ्रा ने बताया।

“क्यों ? उसे यहाँ क्या तकलीफ है ?”

शुभ्रा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

“तुमने उसके सामने जो प्रस्ताव रखा था, उसका क्या हुआ ?”

“बस यही जानिए कि नूरी एक ऐसी नारी है, जैसी नारी शरत् बाबू के उपन्यासों में भी नहीं मिल सकेगी।”

“ऐसी भी क्या बात है नूरी में ?”

“जो बात नूरी में है, उसे व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। उसके चरित्र और मन को तो शरत् बाबू जैसा कोई लेखक ही समझ सकता है।”

“अच्छा ! फिर भी तुम कुछ तो बताओ।”

“शायद आपको यह मालूम नहीं कि नूरी का पूर्वनाम क्या है ?”

“क्या है ?”

“सोनिया।”

“फिर वह नूरी कैसे बन गई ?”

“जब सोनिया के बाप ने अपनी बेटी को अब्बास के हाथ सौ रूप में बेच दिया, तब अब्बास ने इसका नाम बदलकर नूरजहाँ रख दिया। नूरजहाँ का ही संक्षेप रूप है नूरी।”

“हूँ...।”

“नूरी अपने को आज भी हिंदू ही मानती है, पर वह अपने को मुसलमान भी मानती है।”

“यह कैसे संभव है ?”

“वह एक हिंदू की बेटी है, इसलिए वह अपने को हिंदू मानती है और वह एक मुसलमान लड़के की माँ है, इसलिए वह अपने को मुसलमान भी मानती है।”

“क्या बच्चे की भी कोई पहचान होती है कि वह हिंदू है या मुसलमान ?”

“मुसलमानों में बच्चे की पहचान होती है।”

“क्या ?”

“खतना।” शुभ्रा ने सकुचाते हुए बताया।

“तो क्या बेंगा का खतना हो चुका है ?”

“हाँ।”

यह सुनकर बनर्जी बाबू चुप हो गए।

“नूरी के पुनः हिंदू बनने में यही सबसे बड़ी बाधा है। वह किसी को धोखा देना नहीं चाहती। अपने बेटे के लिए वह दूसरा विवाह भी नहीं कर सकती। मुस्लिम समाज में तो उसका फिर से विवाह संभव है, पर वह इसे भी स्वीकार करने को तैयार नहीं है।”

“तो ?”

“अब वह केवल बेंगा के लिए ही जीना चाहती है।”

“वह काम तो वह यहाँ रहकर भी पूरा कर सकती है।”

“उसे डर है कि कभी-न-कभी यह बात खुल ही जाएगी कि वह एक मुस्लिम बेवा है और जिस दिन ऐसा होगा—बनर्जी परिवार की प्रतिष्ठा को आँच आ सकती है। नूरी यह नहीं चाहती कि उसके कारण ब्राह्मणों का यह परिवार बदनाम हो।”

यह सुनते ही बनर्जी बाबू कुछ सोचने लगे। शुभ्रा अपने पति की बगल में बैठ गई। उसने अपने पति की ठुड्डी को ऊपर उठाते हुए कहा, “मैं सच कहती हूँ, यदि बेंगा के चेहरे पर चेचक के दाग नहीं होते तो मैं उसके मुसलमान होने के बावजूद उसे गोद ले लेती।”

बनर्जी बाबू अपनी पत्नी की इस बात का क्या जवाब देते। जो हो नहीं सकता था उस पर कुछ भी सोचना उन्हें निरर्थक लगा। उन्होंने शुभ्रा की बात का कोई जवाब न देकर यह पूछा, “फिर उसकी इच्छा क्या है?”

“वह यहाँ रहना नहीं चाहती।”

“फिर कहाँ जाना चाहती है वह?”

“यह तो उसे भी मालूम नहीं है।”

“कुछ तो सोचा होगा उसने?”

“उसने कुछ भी नहीं सोचा है।”

“यह कैसे हो सकता है?”

“यही सच है।”

“वह कब जाना चाह रही है?”

“वह तो कल ही जाना चाह रही है।”

“कल ही जाना चाहती है?”

“हाँ। पर मैंने अभी उसे रोक लिया है। चार-पाँच दिनों के बाद भेज दिया जाएगा उसे।”

“इस बीच क्या कोई नई बात हो जाएगी?”

“ऐसी तो कोई बात नहीं है।”

“जो हो, मैं तो जरा भी नहीं समझ पा रहा हूँ कि आखिर नूरी चाहती क्या है?”

“वह सिर्फ यह चाहती है कि उसे केवल सिर छिपाने के लिए कहीं कोई जगह मिल जाए और उसका बेटा बेंगा कोई हुनर सीख ले।”

“बेंगा अभी बहुत छोटा है। यदि वह बड़ा होता तो उसे मैं अपनी मिल में ही कोई काम दे देता।”

“मेरी एक राय मानेंगे आप?”

“बोलो।”

“काली मंदिर के पास एक वर्कशाप है न?”

“हाँ है।”

“उसके मालिक का क्या नाम है?”

“अमूल्यो।”

“वह तो आपका काफी आदर भी करते हैं?”

“हाँ, करता तो है।”

“आप बेंगा को उसी के वर्कशाप में रखवा दीजिए। वह वहाँ रहकर बिजली मिस्त्री बन जाएगा।”

“वाह ! राय तो काफी अच्छी है।”

“नूरी अपने बेटे के लिए ऐसा ही कोई प्रबंध चाहती है।”

“ठीक है, मैं अमूल्यो मिस्त्री को कल ही अपने ऑफिस में बुलाता हूँ। मगर, एक समस्या है।”

“क्या ?”

“मेरे कहने पर अमूल्यो मिस्त्री बेंगा को काम सिखाने के लिए तो अपने यहाँ जरूर रख लेगा, मगर वह किसी नौसिखुए को एक पैसा भी नहीं देता है। इस मामले में वह बड़ा कठोर आदमी है।”

“जब वह कुछ देगा ही नहीं, तो दोनों का गुजारा कैसे होगा ?”

“शुभ्रा, तुम चाहो तो मैं एक काम कर सकता हूँ।”

“क्या ?”

“जब तक बेंगा कमाने लायक नहीं हो जाता, मैं उसकी माँ को हर महीने सौ रुपए देता रह सकता हूँ।”

“नूरी को यह कभी भी स्वीकार नहीं होगा।”

“क्यों ?”

“वह भीख या दान में कुछ भी नहीं चाहती।”

“तब क्या हो सकता है ?”

“है एक उपाय।”

“क्या ?”

“आप अमूल्यो मिस्त्री को ही हर महीने सौ रुपए दे दिया कीजिए और अमूल्यो मिस्त्री रुपए बेंगा को दे दिया करे।”

“हाँ, यह तो हो ही सकता है।”

“और जब बेंगा काम सीख ले और बड़ा हो जाए तो उसे आप अपनी मिल में बिजली मिस्त्री की नौकरी दे दें।”

“हाँ, यह सुझाव बिलकुल ठीक है।”

“मगर दोनों के रहने का क्या प्रबंध होगा ?”

“उसका भी प्रबंध हो जाएगा।”

“कैसे ?”

“मैं हैदर से बात करूँगा।”

“कौन हैदर ?”

“अपना चपरासी हैदर।”

“अच्छा, अच्छा, वह !”

“हाँ। वह कोई-न-कोई रास्ता निकाल ही लेगा।”

“लेकिन अमृत्यो मिस्त्री से यह जरूर कह दीजिएगा कि बेंगा या उसकी माँ को यह कभी मालूम नहीं होना चाहिए कि हर महीने रुपए आप देते हैं अन्यथा जिस दिन नूरी को यह बात मालूम हो जाएगी, वह रुपए लेना उसी दिन से बंद कर देगी और....”

“यह मैं जानता हूँ। इतना तो मैं भी समझने लगा हूँ—इस औरत को।”

“लगता है, जनाब को गहरा अनुभव है—नारी-स्वभाव का !” शुभ्रा ने कटाक्ष किया।

६, मिस्त्री गली

इस कॉलोनी की यह सबसे लंबी गली है, जिसमें दोनों तरफ कुल मिलाकर एक सौ क्वार्टर बने हुए हैं। इन क्वार्टरों में नवभारत मिल्स में काम करनेवाले विभिन्न प्रकार के मिस्त्री रहते हैं, फलतः इस गली का नाम 'मिस्त्री गली' पड़ गया है।

इसी गली के नौ नंबर के क्वार्टर में रहते हुए बेंगा मिस्त्री ने चौबीस-पच्चीस वर्ष गुजार दिए। गली का बच्चा-बच्चा जानता है कि '६, मिस्त्री गली' का मतलब होता है बेंगा मिस्त्री का घर।

इस गली में कोई बीस-बाईस मुस्लिम परिवार हैं। लेकिन इन परिवारों में केवल बेंगा मिस्त्री का ही एकमात्र ऐसा परिवार है, जिसे छोटा परिवार कहा जा सकता है। बाकी मुस्लिम परिवारों की हालत यह है कि उनके क्वार्टर में घुसते ही हर तरफ केवल छोटे-बड़े बच्चे ही नजर आते हैं। बच्चों के शोर के कारण प्रत्येक घर मछली बाजार जैसा नजर आता है।

६, मिस्त्री गली अर्थात् बेंगा मिस्त्री का घर। नवभारत मिल्स का प्रसिद्ध एवं कुशल बिजली मिस्त्री। बिजली संबंधी जिस गड़बड़ी को दूर करने में चीफ इंजीनियर भी हार मान जाए, उस त्रुटि को बेंगा मिस्त्री चुटकी बजाकर दूर कर देता है। उसके इस कौशल के कारण उसके घर को मिल के प्रायः सभी लोग अच्छी तरह जानते हैं। गली में जब कोई नवागंतुक आता है, तो उसे गर्व के साथ यह जरूर दिखाया जाता है, "देखो, यह ६, मिस्त्री गली यानी बेंगा मिस्त्री का क्वार्टर है। यह वही बेंगा मिस्त्री है जो बड़े-बड़े इंजीनियरों के भी कान काटता है।"

दो छोटे-छोटे कमरे। आगे-पीछे सैंकरा-सा बरामदा। थोड़ी-सी खुली जगह सामने और उतनी ही खुली जगह पीछे की तरफ। इसे आँगन कहा जा सकता है। आँगन के कोने में पाखाना बना है। पीछे के बरामदे के आखिरी छोर पर एक छोटी-सी रसोई बनी है। ऊपर सीमेंट की छत, छत काफी नीची होने के कारण दोनों कमरे बराबर गरम रहा करते हैं।

जिस दिन बेंगा अठारह साल का हो गया था, उसके अगले ही दिन बनर्जी बाबू ने बेंगा को नवभारत मिल्स में बिजली मिस्त्री के रूप में बहाल कर दिया था।

नौकरी मिलने के साथ-साथ बेंगा को यह क्वार्टर भी मिल गया था। अब तो बनर्जी बाबू इस दुनिया में हैं नहीं वरना बेंगा मिस्त्री के सामने आज वे समस्याएँ होती ही नहीं, जिन समस्याओं से आज वह अकेले जूझ रहा है।

बनर्जी बाबू और उनकी पत्नी का एक कार दुर्घटना में निधन हो गया था। कार का ड्राइवर भी मारा गया था। केवल हेमंत बनर्जी बच गया था, जिसकी उम्र उस समय मुश्किल से सात-आठ साल रही होगी। बनर्जी बाबू और शुभ्रा बराबर यही कहा करते थे, “हेमंत हमारा बेटा कहाँ है? यह तो भगताइन मौसी का बेटा है। यह भगताइन मौसी के आशीर्वाद का ही प्रतिफल है।”

आज हेमंत बनर्जी ही नवभारत मिल्स का मालिक है। मगर, कहाँ बनर्जी बाबू और कहाँ हेमंत! दोनों में जमीन-आसमान का अंतर है। बनर्जी बाबू यदि देवता थे तो उनकी पत्नी देवी थी। मगर उन दोनों के घर में हेमंत तो ऐसा निकला कि क्या कहा जाए? शराब, शबाब और कबाब इन तीनों चीजों के पीछे वह खुद तो बरबाद हो ही रहा है, अपने साथ-साथ नवभारत मिल्स की लुटिया भी डुबो रहा है।

बेंगा मिस्त्री के क्वार्टर में घुसते ही बरामदे पर बैठी एक बुढ़िया नजर आती है, जिसकी आँखों पर तो चश्मा चढ़ा हुआ है, पर उसके प्रायः सभी दाँत अभी भी सलामत हैं और सिर के केश भी काले ही हैं। यह बेंगा मिस्त्री की माँ है—नूरजहाँ यानी नूरी उर्फ सोनिया। आस-पास कोई लाठी नहीं है, अतः स्पष्ट है कि बुढ़िया को चलने-फिरने के लिए लाठी की जरूरत अब तक नहीं पड़ी है।

बरामदे के सामने जो थोड़ी-सी खुली जगह है, वह तीन तरफ से तार के बाड़ों से घिरी है। इसमें कई प्रकार के मौसमी फूल लगे हैं। बरामदे के ठीक कोने के पास से ही लौकी की एक लता छत पर चढ़ गई है और छत पर कई छोटी-छोटी लौकियाँ दिखाई पड़ रही हैं। इस छोटी-सी खाली जगह में बागवानी कर उसे जिसने सुंदर और उपयोगी रूप प्रदान किया है—उसका नाम है शकीला।

बेंगा मिस्त्री की बेटी है—शकीला। उम्र उन्नीस-बीस के करीब। गोरी और सुंदर अपनी दादी के समान। तीखी नाक। पतले-पतले होंठ जो बिना कुछ लगाए ही लाल-लाल नजर आते हैं। लंबे-लंबे घने केश जो खुलने पर कमर के नीचे तक लहराने लगते हैं। बेंगा मिस्त्री ने शकीला को हाईस्कूल की परीक्षा पास करवा दी है। वह तो अपनी बेटी को बी० ए० तक पढ़ाना चाह रहा था, लेकिन मिस्त्री गली के दूसरे मुसलमानों के विरोध के कारण उसे अपना यह इरादा छोड़ देना पड़ा था। पहले मुहल्लेवालों ने इस बात का भी बड़ा विरोध किया था कि बेंगा अपनी बेटी को एक हिंदू स्कूल में क्यों पढ़ने के लिए भेजता था। तब बेंगा ने किसी की कोई बात नहीं सुनी थी। उसने लोगों के विरोध की तनिक भी परवाह नहीं की थी।

एक मौलवी ने तो बेंगा से गुस्से में यहाँ तक पूछ लिया था, “तुम अपनी बेटी

को क्यों तालीम देना चाहते हो? क्या तुम उससे नौकरी करवाओगे? अरे, तुम्हारी बेटी खत-वत लिख-पढ़ लेती है यही क्या कम तालीम है? कुछ दिनों में वह कुरान शरीफ भी पढ़ना सीख लेगी। इससे ज्यादा और कितनी तालीम दिलवाओगे अपनी बेटी को?"

शकीला हाईस्कूल की परीक्षा पास कर घर बैठ गई और बेंगा मिस्त्री पिछले कई वर्षों से उसकी शादी की चिंता में घुला जा रहा है।

यह जवान जो अभी-अभी एक दैनिक समाचार-पत्र हाथ में लिए बरामदे पर बुढ़िया की बगल में आकर बैठ गया है—यह बेंगा मिस्त्री का बेटा है—सत्तार। यह भी अपनी दादी पर ही गया है। रंग-रूप सब कुछ इसे अपनी दादी का ही मिला है। बी० कॉम० पास कर पिछले दो वर्षों से नौकरी की खोज में दीवाना बनता चला जा रहा है। अभी भी वह अखबार में यही देखेगा कि नौकरी के विज्ञापन कहाँ-कहाँ के लिए प्रकाशित हुए हैं।

सत्तार के सामने अभी-अभी जो औरत चाय की प्याली रख गई है, वह है सत्तार की माँ। उसका नाम है फातिमा। फातिमा को देखने से ऐसा कभी नहीं लगता कि वह सत्तार तथा शकीला की माँ भी हो सकती है। कई बार तो कइयों को ऐसा भ्रम भी हो चुका है कि फातिमा शकीला की शायद बहन है। इसी तरह फातिमा को सत्तार की बड़ी बहन समझने की भूल लोग अक्सर कर बैठते हैं।

इस क्वार्टर में आने के बाद ही बेंगा मिस्त्री की शादी फातिमा से हो गई थी। इसी घर में फातिमा दुलहन बनकर आई और इसी घर में वह दो बच्चों की माँ बनी। फातिमा तो और भी बच्चे चाहती थी, मगर अपने पति और सास से प्राप्त नसीहतों के कारण उसने यह अच्छी तरह जान लिया है कि बच्चे अगर खुदा की देन हैं, तो उस देन को अच्छी तरह सँभालना माँ-बाप का फर्ज होता है। इस फर्ज को निभाने के लिए यह जरूरी है कि घर में बच्चे कम हों।

सत्तार तथा शकीला को पढ़ाने-लिखाने के लिए बेंगा मिस्त्री ने मिल में हाड़-तोड़ मेहनत करने के अलावा बाहर भी कितना-कितना और कैसा-कैसा काम किया है, इसकी जानकारी मुहल्ले के एक-एक आदमी को है।

शकीला के हाथ पीले हो जाएँ और सत्तार को कोई नौकरी मिल जाए—इन दोनों कामों को पूरा करने के लिए बेंगा मिस्त्री सुबह साढ़े सात बजे घर से निकलता है और रात को नौ बजे के पहले कभी घर नहीं लौटता।

हाँ, यही है बेंगा मिस्त्री। खिचड़ी बालों के कारण चवालीस-पैंतालीस की उम्र में ही यह कैसा अघेड़ लगने लगा है।

अभी यह घर से निकल रहा है। अब यह रात के नौ बजे के बाद ही लौटेगा।

: २५ :

लगभग चार बजे से नूरी रास्ते की तरफ लगातार देखे जा रही थी। अब तो चारों तरफ हलका अँधेरा भी छाने लगा था। उसके सामने ही सत्तार की माँ फातिमा बैठी थी। इसी समय शकीला ने आकर बरामदे का बल्ब जला दिया। बल्ब का प्रकाश बरामदे पर फैल गया। नूरी ने माथा उठाकर एक बार बल्ब की ओर देखा। कुछ चिंतित स्वर में उसने फातिमा से पूछा, “बहू, सत्तार अब तक नहीं आया? वह कुछ बोलकर गया था क्या?”

“अम्माजी, उसने तो मुझसे यही कहा था—‘इंटरभिऊ’ के लिए जा रहा हूँ। तीन-चार बजे तक लौट आऊँगा।” फातिमा ने बताया।

“चार तो कब के बज गए।” नूरी ने फिक्र करते हुए कहा।

“उसे तो अब तक आ जाना चाहिए था। आ ही रहा होगा।” फातिमा ने कहा।

इसी समय नूरी के कानों में साइकिल की घंटी की आवाज सुनाई पड़ी। उसके कान खड़े हो गए। वह रास्ते की तरफ गौर से देखने लगी। एक साइकिल सवार सर्र से क्वार्टर के सामने से निकल गया। अब नूरी और भी उदास हो गई।

“दादी, अब अंदर चलो।” शकीला ने दादी से कहा।

“हाँ बेटी। चलती हूँ।” नूरी भारी मन से उठी और भीतर जाने लगी। उसने कमरे में प्रवेश ही किया था कि सत्तार की खड़खड़ाती हुई साइकिल बाहर बरामदे के पास आकर रुकी। नूरी ने मुड़कर सत्तार की तरफ संतोष के साथ देखा। उसके मुँह से अनायास ही यह सवाल निकल पड़ा, “आज बहुत देर कर दी तूने?”

“इंटरव्यू में काफी भीड़ थी, दादी। मेरा इंटरव्यू तो आज हो गया, लेकिन बाकी लोगों को कल बुलाया है।” सत्तार ने बताया।

बरामदे में साइकिल टिकाकर सत्तार कमरे में आ गया। आते ही वह तख्त पर पसर गया। पसरे-पसरे ही उसने अपनी अम्मा से कहा, “अम्मा, बहुत भूख लगी है।”

“बस अभी लाई।” फातिमा उठकर भीतर चली गई। जब वह लौटी तो उसके हाथ में एक प्लेट थी, जिसमें दालमोठ और दो बिस्कुट रखे थे। सत्तार उन्हें खाने ही जा रहा था कि नूरी बोल पड़ी, “खाने के पहले जरा अपना हाथ-मुँह तो धो ले।”

सत्तार को अपनी दादी का इस प्रकार टोकना कुछ अच्छा नहीं लगा। फिर भी वह चुपचाप भीतर चला गया।

सत्तार हाथ-मुँह धोकर खाने में जुट गया। नूरी उसके तख्त पर आकर बैठ गई। कुछ देर तो वह चुप बैठी रही। सत्तार की प्लेट खाली हो गई तब उसने पूछा, “आज कैसा हुआ तुम्हारा इंटरभिऊ?”

“इंटरव्यू तो अच्छा हुआ है, दादी।”

“अल्ला करे तेरी यह नौकरी लग जाए।”

“बस यही तो मुश्किल काम है अल्लाह के लिए।” सत्तार ने जरा हँसकर कहा।

“क्या मुश्किल है अल्ला के लिए?” नूरी ने तुरंत विरोध किया।

“आखिर वह बेचारा किस-किस को नौकरी देगा? सिर्फ चार जगहें हैं और इंटरव्यू देनेवाले पाँच सौ आए हुए हैं। आजकल किसी को नौकरी देना अल्लाह के बूते की बात नहीं रह गई है।”

“अगर यह अल्ला के बूते की बात नहीं है, तो फिर नौकरी कौन दे सकता है?”

“नौकरी देनेवाला।” सत्तार ने लापरवाही के साथ जवाब दिया।

“मतलब?”

“मतलब दफ्तर का सबसे बड़ा साहब।”

“कौन है वह?”

“वह जो है सो है, मगर वह किसी का भी नहीं है। वह उसी को नौकरी देगा, जो उसे बीस हजार रुपए नकद देगा।”

“बीस हजार?” ताज्जुब से नूरी की आँखें फैल गई और मुँह खुला-का-खुला रह गया।

“हाँ दादी—सिर्फ बीस हजार।” सत्तार ने इत्मीनान के साथ दोहरा दिया।

“यानी यह नौकरी भी तुझे नहीं मिलेगी?” नूरी ने उदास होते हुए पूछा।

“क्यों नहीं? यह नौकरी मुझे जरूर मिल सकती है।”

“वह कैसे सत्तार बेटे?” नूरी को जैसे आशा की एक किरण दिखाई पड़ी।

“अगर अब्बा बीस हजार रुपयों का इंतजाम कर दें तो यह नौकरी मुझे जरूर मिल सकती है।”

यह सुनकर नूरी चुपचाप उठी और भीतर चली गई।

सत्तार ने ट्रांजिस्टर का कान उमेठ दिया। एक फिल्ली गीत चल रहा था—

“भगवान् तुझे मैं खत लिखता, पर तेरा पता मालूम नहीं...”

□

सभी सो गए थे। केवल नूरी और फातिमा जाग रही थीं। रात के कोई दस बजे बेंगा आया। वह बेहद थका हुआ लग रहा था।

“आज तूने भी बहुत देर कर दी, बेटा?” नूरी ने पूछा।

“क्या सत्तार भी देर से आया था?” बेंगा ने अपनी अम्मा से जानना चाहा।

“उसका तो खैर इंटरभिऊ था।”

“कैसा गया उसका इंटरभिऊ?” बेंगा ने पूछा।

“वह बराबर यही कहता है--बढ़िया हुआ है। आज भी यही बोल रहा था।”

“कोई उम्मीद?”

“उम्मीद तो वही करे जिसकी गाँठ में बीस हजार नकद हों।”

“क्या जमाना आ गया है! सबको नोट चाहिए।”

नूरी पीछे कमरे में चली गई। इसी कमरे में नूरी, फातिमा और शकीला सोती थीं। शकीला गहरी नींद में थी।

फातिमा ने खाना परोस दिया था। बेंगा खाने के लिए बैठ गया।

“उधर गए थे क्या?” फातिमा ने बातचीत का सिलसिला शुरू करते हुए पूछा।

“हाँ, गया था।”

“कुछ पता चला?”

“हाँ। एक लड़के का पता चला है।”

“क्या करता है लड़का?”

“लड़का तो अभी कॉलेज में ही है।”

“घरवाले क्या करते हैं?”

“उनसे तो हमारी अभी कोई बात नहीं हुई है।”

“फिर किससे बात हुई है?”

“लड़के के मामा से बात हुई है।”

“घर-बार कैसा है?”

“भाड़े के मकान में रहते हैं। लड़के के वालिद पान की दुकान चलाते हैं। उसकी दो बीवियाँ हैं। यह लड़का पहली बीवी से है।”

“क्या बहुत बड़ा टब्वर है?”

“कोई उन्नीस-बीस जने हैं घर में।”

“क्या पान की ही दुकान से गुजारा हो जाता है सबका?”

“खाक गुजारा होता होगा।”

“लड़के के बारे में कुछ मालूम हुआ? कैसा है लड़का?”

“ठीक ही है।”

“रंग कैसा है?”

“रंग गहरा है।”

“पढ़ाई-लिखाई में कैसा है?”

“हाईस्कूल और इंटर तो थर्ड डिवीजन से ही किया
में कैसा करता है?”

“जब नींव ही कमजोर है तो आगे क्या कहा जा सकता है?”

“तुम्हारा कहना भी ठीक ही है।”

“कुछ अंदाज लगा—क्या चाहते हैं वे लोग ?”

“लड़के का मामा कह रहा था—बीस-पच्चीस से कम में तो काम नहीं ही बनेगा।”

“इस निखटू लड़के के लिए बीस-पच्चीस हजार ?”

“हाँ।”

“लड़के का मामा बता रहा था—अगर इतने रुपए लड़के के बाप को आज मिल जाएँ तो लड़के को कल ही नौकरी मिल जाएगी।”

“कहाँ ?”

“शायद किसी मिल में।”

“किस पोस्ट पर ?”

“चपरासी की जगह पर।”

“चपरासी लड़के के लिए बीस-पच्चीस हजार ! लड़के के बाप का दिमाग खराब तो नहीं हो गया है ?”

बेंगा उठकर हाथ धोने चला गया।

फातिमा थाली उठाकर रसोई की तरफ चली गई। उसी थाली में खाना निकालकर वह खुद खाने लगी।

बेंगा बाहर निकलकर बरामदे पर बैठ गया। उसने जेब से एक बीड़ी निकालकर सुलगा ली।

सामने रास्ते पर सन्नाटा छाया हुआ था। आस-पड़ोस के लोग अपने-अपने घरों में जा चुके थे। आज बरामदा कुछ ठंडा-सा लगा, इसलिए बेंगा उठकर कमरे में आ गया। बीड़ी उसने बाहर ही फेंक दी।

कमरे का दरवाजा भीतर से लगाकर बेंगा सत्तार के तख्त के नीचे से अपना बिस्तर निकालने लगा। इसी समय फातिमा आ गई। उसने कहा, “मैं तो आ ही रही थी बिस्तर बिछाने के लिए।”

फातिमा ने बिस्तर निकालकर फर्श पर बिछा दिया और कहा, “आइए, मैं आपके पैर दबा दूँ।”

बेंगा बिस्तर पर लंबा हो गया।

फातिमा पैर दबाने लगी। बेंगा को इस समय अपनी बीवी से पैर दबवाना अच्छा नहीं लगता। हर दिन वह यही सोचता कि इस कमरे में उसका जवान बेटा भी सो रहा है। इसका नतीजा यह होता कि उसकी नजर बराबर सत्तार की तरफ टिकी रहती। कभी-कभी उसकी इच्छा होती कि वह कमरे की रोशनी गुल कर दे। कई बार उसने ऐसा करने के लिए स्विच की तरफ हाथ बढ़ाया भी, पर फातिमा ने बराबर उसका हाथ रोक लिया था।

कमरा यदि बड़ा होता तो शायद बेंगा ने कमरे के बीच में लकड़ी की एक

दीवार ही बनवा दी होती। पर यह कमरा तो इतना छोटा है कि इसमें एक तख्त के अलावा दूसरा तख्त या चारपाई को डालना संभव ही नहीं। पिछला कमरा भी इतना ही छोटा है। वहाँ भी एक चारपाई है, जिस पर नूरी सोती है। फातिमा और शकीला फर्श पर ही बिस्तर बिछाकर सो जाती हैं।

हर दिन फातिमा अपने खाँविद के पैर दबाकर अपने कमरे में चली जाती है। जब वह जाने लगती है तो बेंगा के मन में एक अजीब-सी कसक उठती है। उसके जी में आता है कि वह फातिमा को एक बार अपनी बाँहों में भर ले। पर ऐसा करने का साहस वह जुटा नहीं पाता। वह देखता ही रह जाता है और फातिमा कमरे की बत्ती बुझाकर चली जाती है।

फातिमा के चले जाने के बाद भी बेंगा को इस कमरे में अपनी बीवी की उपस्थिति का एहसास बहुत देर तक होता रहता है। उसे लगता की बत्ती बुझाने के बाद फातिमा वहाँ खड़ी है और उसकी प्रतीक्षा कर रही है। कई बार उसने हाथ बढ़ाकर फातिमा को छू लेना भी चाहा, लेकिन फातिमा वहाँ खड़ी हो तब न।

इसके बाद बेंगा एक अजीब खालीपन का शिकार हो जाता। तब उसे लगता कि जिन बच्चों के लिए वह दिन-भर परिश्रम करता है, जिनके भविष्य को सँवारने के लिए वह मिल की नौकरी के अतिरिक्त जहाँ-तहाँ काम भी करता है, वही बच्चे इस समय उसके सुख के मार्ग में काँटे बन जाते हैं। मगर, ये काँटे भी कैसे हैं? ये काँटे तो ऐसे हैं, जिन्हें वह सच्चे हृदय से चाहता है और उसकी यही हसरत है कि वह काँटों के लिए कुछ विशेष कर जाए। बेंगा सोचता, आदमी भी क्या चीज है? वह फूलों से भी प्यार करता है और काँटों से भी।

: २६ :

सत्तार ने लोगों से सुना था कि आई० ए० या बी० ए० करना बेकार है। कॉमर्स पढ़ने से नौकरी जल्दी मिलती है। इसीलिए उसने बी० कॉम० किया था। पर बी० कॉम० की डिग्री प्राप्त किए दो साल से ऊपर गुजर गए और उसे कोई नौकरी नहीं मिल सकी। अब उसे यही लगता है कि यह बेकार की बात है कि बी० ए० करने से बेहतर बी० कॉम० या बी० एस-सी० करना होता है। सत्तार ने यह भी देखा कि बी० ए० करनेवाले लोगों को कई बार बी० कॉम० या बी० एस-सी० करनेवालों से पहले नौकरी मिल गई।

अब उसने यह अच्छी तरह जान लिया है कि नौकरी पाने के लिए डिग्री से ज्यादा जरूरी और भी बहुत सारी चीजें हैं, जो उसके पास नहीं हैं। उसके पास वे चीजें होती भी कहाँ से? वह यह अच्छी तरह समझता है कि वह एक मामूली बिजली मिस्त्री का बेटा है। उसके अब्बा ने उसे बी० कॉम० करवा दिया। यही बहुत बड़ी बात है। कभी-कभी उसे इस बात का मलाल जरूर होता कि अगर उसके

दादा बगैरह आजादी के लिए कभी जेल चले गए होते तो कितना अच्छा होता। स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते उन्हें पेंशन का लाभ तो होता ही। उसके अलावा उनके ताल्लुकात बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों और मंत्रियों से होते। अगर ऐसा होता तो आज सत्तार को नौकरी के लिए यों भटकना नहीं पड़ता। तब ऐसा भी हो सकता था कि उसके अब्बा को ही कोई ऊँचा पद मिल गया होता।

सत्तार की इच्छा थी कि वह एम० कॉम० करता। परंतु बी० कॉम० में उसे द्वितीय श्रेणी मिली थी और अंक भी अच्छे नहीं थे। यदि उसे प्रथम श्रेणी मिली होती या अंक ही ऊँचे मिल गए होते तो वह एम० कॉम० करने की कोशिश जरूर करता।

महंगाई हर दिन बढ़ती जा रही है। महंगाई में जितनी बढ़ोतरी हो रही है उसी अनुपात में बेंगा का वेतन नहीं बढ़ पा रहा है। यह बात सत्तार को भली-भाँति मालूम थी। इस कारण भी उसने एम० कॉम० करने का इरादा छोड़ दिया। उसके अब्बा को सत्तार की बेकारी ज्यादा न अखरे, इसलिए वह मेस्टन रोड में सुबह दो ट्यूशन करने लगा। शाम को एक शो रूम में वह एक घंटा टाइपिस्ट का काम भी करता। इस प्रकार वह अपने खर्च के लिए महीने में दो सौ रुपए कमा लिया करता। लौटते समय वह मेस्टन रोड के पुस्तकालय में थोड़ी देर बैठकर समाचार-पत्रों में प्रकाशित नौकरी के विज्ञापन आदि देखा करता।

नौकरी के लिए आवेदन-पत्र के साथ पोस्टल ऑर्डर, फोटो आदि भेजने और डाक खर्च का भार स्वयं उठाता। इंटरव्यू के लिए कभी-कभी उसे कानपुर के बाहर भी जाना पड़ता। इस यात्रा पर होनेवाले खर्च के लिए भी कभी उसने अब्बा से कुछ नहीं माँगा। वह अच्छी तरह समझता था कि उसके अब्बा की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि वह इन सारे खर्चों का बोझ उठा सकें।

सत्तार मेस्टन रोड के काम से फुरसत पाकर घर लौट आया और अब खाना खाकर ट्रांजिस्टर सुन रहा था। उसकी दादी नूरी उसकी बगल में आकर बैठ गई। कुछ पलों के बाद उसकी अम्माँ फातिमा भी आकर बैठ गई। बैठने के पहले फातिमा ने ट्रांजिस्टर बंद कर दिया।

शकीला गली के नब्बे नंबर के क्वार्टर में गई हुई थी। वहाँ उनकी एक सहेली रहती थी।

“क्या बात है, अम्माँ?” सत्तार ने पूछा।

फातिमा ने दादी से पूछने के लिए इशारा कर दिया।

“क्या बात है, दादी?”

नूरी ने अम्माँ से पूछने का संकेत कर दिया।

“कमाल है! दादी इशारा करती है कि अपनी अम्माँ से पूछो और अम्माँ इशारा करती है कि अपनी दादी से पूछो। आखिर मैं किससे पूछूँ?” सत्तार ने

दोनों से यह सवाल किया।

“अम्माँजी, आप ही बता दीजिए न कि क्या बात है?” फातिमा ने अपनी सास से अनुरोध किया।

“नहीं, नहीं, तू ही बता दे, बहू।” नूरी ने भार डालना चाहा।

“बोलो अम्माँ, क्या बात है?” सत्तार ने अपनी माँ से पूछा।

“बेटा...” फातिमा बोलते-बोलते अटक गई।

“हाँ, हाँ, बोलो अम्माँ।”

“आज उन्नाववाले आए थे।”

“तो?”

“उनका कहना है कि हम लोग और इंतजार नहीं कर सकते।”

“तो उनसे किसने इंतजार करने के लिए कहा है?”

“बेटा, तुम क्यों नहीं समझते कि लड़की पढ़ी-लिखी और खूबसूरत भी है।”

“है तो रहने दो।”

“बेटा, मैं तो यही कहूँगी कि तुम इस लड़की से शादी कर लो।”

“अम्माँ, क्यों इस लड़की से शादी कर लूँ मैं?”

“ये लोग गृहस्थी के सभी सामान देने को तैयार हैं। साथ में दस हजार नकद भी देंगे।”

“यानी उन्नाववाले मुझे खरीदने आए थे और मेरी कीमत भी लगा गए हैं?”

“नहीं, नहीं, ऐसी बात नहीं है, बेटा।”

“फिर क्या बात है?”

“उनका यह शौक है कि...”

“देखो अम्माँ, मैं तुमसे पहले भी कह चुका हूँ कि मैं अभी शादी करना नहीं चाहता।”

“यह बात तो तुम शुरू से बोल रहे हो। पर, आखिर तुम कब करोगे शादी? कभी-न-कभी तो करोगे ही शादी।”

“मगर, अभी मैं क्यों करूँ शादी?”

“अभी शादी करने में क्या हर्ज है?”

“अम्माँ, मैं तुमसे कुछ सवाल करूँ? बोलो, दोगी जवाब?”

“करो सवाल, दूँगी जवाब।”

“मान लो कि मैंने अपनी शादी कर ली और अपनी नई-नवेली दुल्हन के साथ इस घर में आ गया हूँ।” सत्तार ने बड़े अभिनय के साथ यह बात कही।

“पहले तुम ऐसा करके दिखाओ तो।” फातिमा ने हँसकर कहा।

“थोड़ी देर के लिए यह मान लो कि मैं जो बोल रहा हूँ—वह सच है।”

“मान ले बहू, मान लेने में अपना क्या जाता है।” नूरी ने फातिमा से कहा।

“चलो मान लिया। तो?” फातिमा ने सत्तार की तरफ देखते हुए पूछा।

“अब यह बताओ अम्माँ कि मेरे साथ जो नई-नवेली तुम्हारी बहू आई है, उसे तुम इस घर में कौन-सी जगह दोगी?”

“जैसे सभी यहाँ रहते हैं, वैसे उसका भी गुजारा हो जाएगा इस घर में।”

“यानी वह भी इस घर के किसी कोने में फर्श पर बिस्तर बिछाकर अपनी जिंदगी गुजार देगी। क्यों, यही बात है न?” सत्तार ने जरा तीखेपन के साथ यह पूछा।

“सुना आपने, अम्माँजी, यह लड़का कैसी-कैसी बातें कर रहा है?” फातिमा ने अपनी सास से उलाहनापूर्ण शब्दों में कहा।

“बहू, सत्तार कोई गलत बात तो नहीं ही बोल रहा है।” नूरी ने सत्तार का पक्ष लिया।

“यह ठीक क्या खाक बोल रहा है!” फातिमा तुनक गई।

“एक सवाल और अम्माँ?”

“क्या?”

“उसे खिलाओगी क्या?”

“जो हम सब खाते हैं, सो उसे भी खिलाया जाएगा।”

“अम्माँ, इसीलिए मैं कहता हूँ कि जब तक मुझे नौकरी नहीं मिल जाती, मैं शादी नहीं कर सकता। मैं नहीं चाहता कि इस तंग क्वार्टर में एक बदकिस्मत और बढ़ जाए।”

“तुम उसे बदकिस्मत कैसे बोल रहे हो? हो सकता है कि उसके पैर पड़ते ही तुम्हारी नौकरी तुरंत लग जाए।” फातिमा ने उम्मीद के साथ कहा।

“यह भी तो हो सकता है कि उसके आते ही मुझे कुछ हो जाए?”

“देखा आपने अम्माँ, यह लड़का कितना शैतान हो गया है?” फातिमा ने फिर शिकायत की।

“बहू, सत्तार कोई गलत बात नहीं बोल रहा है।” नूरी ने एक बार फिर सत्तार का समर्थन किया।

“देखो माँ, मैं शादी तभी करूँगा जब मेरी नौकरी लग जाएगी। जब तक नौकरी नहीं मिलती, मैं शादी नहीं कर सकता।” सत्तार ने साफ-साफ बता दिया।

“इसका मतलब तो यही हुआ कि शकीला भी तब तक कुँआरी ही बैठी रहेगी?” फातिमा ने अत्यंत करुण स्वर में यह बात कही।

“मेरी शादी से शकीला की शादी का क्या ताल्लुक है?” सत्तार पूछ बैठा।

“बेटा सत्तार, तुम कैसी नासमझी की बातें कर रहे हो? क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे अब्बा शकीला की शादी के लिए कितनी दौड़-धूप कर रहे हैं?”

“वह तो मैं जानता हूँ।”

“अगर तुम जानते हो तो फिर ऐसी बातें क्यों बोल रहे हो ? शकीला की शादी के लिए लड़केवाले बीस-पच्चीस हजार नकद माँगते हैं। इतनी मोटी रकम तुम्हारे अब्बा कहाँ से लाकर देंगे ? जरा तुम्हीं सोचो।”

“क्या सोचूँ मैं ?” सत्तार के मुँह से निकल गया।

“यही कि तुम्हारी छोटी बहन के हाथ जल्दी-से-जल्दी पीले हो जाएँ। अब वह बीस की हुई जा रही है। अगर और देर की गई तो जोड़ा मिलना भी दुश्वार हो जाएगा।”

“मगर, मुझसे तुम क्या सोचने के लिए कहती हो ?”

“बहुत मामूली-सी बात है। अगर तुम शादी के लिए तैयार हो जाओ तो शकीला की शादी तुरंत हो सकती है।”

“वह कैसे ?” सत्तार ने आश्चर्य के साथ पूछा।

“तुम्हारे अब्बा का कहना है कि वह दस हजार रुपयों का इंतजाम कर सकते हैं। उन्नाववाले तुम्हारी शादी पर दस हजार नकद देने को तैयार हैं। दोनों रुपयों को मिलाकर शकीला की शादी निपटाई जा सकती है।”

“तो यह बात है !” यह बोलकर सत्तार तख्त से उठकर खड़ा हो गया। वह कमरे के बाहर जाने लगा।

“बेटा सत्तार, ऐसे भागने से तो काम नहीं चल सकता।” फातिमा के स्वर में ललकार और अनुरोध दोनों का सम्मिश्रण था।

सत्तार रुक गया। वह बोलने लगा, “अम्माँ, मैंने किसी से सुना था कि पहले लोग शादी-ब्याह के मौके पर अपना खेत-वेत या कोई जायदाद बेच दिया करते थे। मगर, आज मैं यह क्या सुन रहा हूँ ? तुम लोग शकीला की शादी के लिए मुझे क्यों बेचना चाह रहे हो ? अम्माँ, मैं एक इनसान हूँ—खेत या जायदाद नहीं।”

यह सुनते ही फातिमा की आँखों में आँसू छलछला आए। वह गीली आवाज में बोली, “बेटा, यह तुम क्या बोल रहे हो ? तुम्हारी अम्माँ हूँ मैं। मैंने तुम्हें अपने पेट में नौ महीने तक रखा है। मैं तुम्हें कैसे बेच सकती हूँ ? क्या कोई माँ अपनी औलाद को बेचने के बारे में सोच भी सकती है ?”

फातिमा का अंतिम वाक्य नूरी के हृदय को छू गया। नूरी की आँखें अनायास ही छलछला पड़ीं। यह देखकर फातिमा ने पूछा, “आपकी आँखों में आँसू ?”

“नहीं बहू, ये आँसू नहीं हैं। बस यों ही जरा आँखों में पानी आ गया। कभी-कभी ऐसा हो जाता है। बूढ़ी आँखों के साथ ऐसा होता ही रहता है।” अपनी आँखों को साड़ी के पल्लू से पोंछते हुए नूरी ने कहा।

नूरी तख्त से उठ गई। उसने सत्तार के कंधे पर अपना एक हाथ रख दिया। सत्तार ने अपनी दादी की तरफ सवालिया निगाह डाल दी।

“चल बेटा, हम दादी-पोता चलकर जरा बाहर बरामदे में बैठें।”

“चलो, दादी।” सत्तार ने सहारा देते हुए कहा।

दोनों बरामदे पर आकर बैठ गए।

: २७ :

टिफिन के साथ कैटीन में बेंगा की मुलाकात मालीराम से हुई। बेंगा चाय पी रहा था और कुछ सोच रहा था। अचानक उसकी पीठ पर किसी ने हाथ रख दिया। बेंगा का ध्यान टूट गया। वह पीछे मुड़कर देखता कि मालीराम उसके सामने आकर खड़ा हो गया। मालीराम को अपने सामने देखते ही बेंगा बैंच से उठकर खड़ा हो गया। वह बोला, “नमस्ते, मालीरामजी।”

“नमस्ते, नमस्ते। बेंगा मिस्त्री, क्या सोच रहे थे तुम?” सामने की बैंच पर बैठते हुए मालीराम ने पूछा।

मालीराम मिल के अहाते में उन्हीं दिनों दिखाई पड़ता था, जब मजदूरों को तनख्वाह या बोनस मिलनेवाला होता था। मालीराम सूदखोरी का धंधा करता था, मगर दूसरे सूदखोरों की तरह नहीं। कम ब्याज पर कर्ज देना मालीराम की विशेषता थी। लेकिन वह हर किसी को कर्ज नहीं देता था। वह आदमी छांट-छांटकर ही सूद पर रुपए लगाता। कंधे तक लहराते हुए बड़े-बड़े बालों और ललाट पर लगे चंदन के तिलक के कारण मालीराम कोई ‘भक्त’ या ‘पंडित’ दिखता था। वह भगत था भी। उसके बारे में यह प्रसिद्ध था कि मालीराम काली की साधना करता है और उसे कोई सिद्धि भी प्राप्त है। लोगों की यह मान्यता बन गई थी कि यदि मालीराम किसी को कोई बात बोल देता है तो वह बात सच हो जाती है। इसका नतीजा यह था कि मालीराम से केवल वे लोग ही कर्ज लेते, जो वचन के अनुसार समय पर मूल और सूद दोनों चुकता कर सकते हैं।

मालीराम की बात का जवाब न देकर बेंगा मिस्त्री ने कहा, “आपके लिए चाय मँगवाता हूँ। आप कुछ खाना चाहेंगे?”

“बेंगा भाई, अब मैंने बाहर का खाना-पीना बिलकुल बंद कर दिया है।” मालीराम ने बताया।

“ऐसा क्यों, मालीरामजी?”

“जब से मैंने पढ़ा है कि वनस्पति में लोग जानवरों की चरबी मिला देते हैं, मैंने होटल का खाना-पीना बिलकुल बंद कर दिया है। मेरे घर में वनस्पति का प्रवेश भी वर्जित हो गया है।”

“यह तो आपने बहुत अच्छा किया, मालीरामजी।”

“ऐसा करने के सिवा दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं था।”

“पूरी दुनिया दौलत के पीछे पागल हुई जा रही है। दौलत कमाने के लिए लोग वनस्पति में जानवरों की चरबी मिलाने से भी बाज नहीं आते।”

“बेंगा भाई, तुमने यह तो बताया ही नहीं कि आखिर तुम किस सोच में पड़े थे ?” मालीराम ने पुराने सूत्र को पुनः थाम लिया।

“क्या बताऊँ मालीरामजी ? यही अपने बाल-बच्चों के बारे में कुछ सोच रहा था।”

“तुम्हारे तो दो ही बच्चे हैं न ?”

“हाँ, मालीरामजी।”

“तुम्हारा बेटा तो शायद बी० कॉम० पास कर चुका है ?”

“हाँ।”

“तुम्हारी बेटी भी हाई स्कूल पास है ?”

“हाँ, मालीरामजी।”

“फिर क्या सोच रहे थे तुम ?”

“मालीरामजी, पिछले दो साल से मेरा बेटा बी० कॉम० पास कर घर में बैठा है। नौकरी के लिए दौड़ते-दौड़ते उसकी जो हालत हो गई है, वह अब मुझसे देखी नहीं जाती। दूसरी तरफ लड़की को अब बीसवाँ लगने जा रहा है। उसकी शादी की बात जहाँ भी चलाता हूँ, लोग बीस-पच्चीस हजार की माँग करते हैं।”

“तुम्हारी बिरादरी में तो लेन-देन की बात नहीं चलती थी ?”

“मालीरामजी, आप बुरा न मानें तो मैं आपसे एक सच्ची बात कह दूँ ?”

“हाँ, हाँ, जरूर बोलो।”

“लेन-देन की यह बुराई हिंदू समाज से ही हमारे यहाँ घुस आई है। हिंदुओं की अच्छाई तो हम अपनाते नहीं, लेकिन उनकी बुराइयों को अपनाने में हमें फख्र मालूम पड़ता है।” बेंगा ने निर्भय होकर अपने मन की बात कह दी।

“बात तो तुमने बिलकुल पते की कही है।” मालीराम ने स्वीकार किया।

“मेरे बेटे को नौकरी देने के लिए भी लोग मोटी रकम माँगते हैं और बेटी की शादी के लिए भी। अब आप ही बताइए मालीरामजी कि मेरे जैसा एक मामूली बिजली मिस्त्री कहाँ से ला सकता है चालीस-पचास हजार रुपए ?”

“हाँ बेंगा भाई, तुम्हारी समस्या तो सचमुच बहुत गंभीर है।” यह कहकर मालीराम कुछ सोचने लगा। कुछ देर बाद उसने पूछा, “बेंगा भाई, नजीर खाँ से तुम्हारी जान-पहचान है कि नहीं ?”

“कौन नजीर खाँ ? यूनिशन के प्रेसिडेंट साहब तो नहीं ?” बेंगा ने पूछा।

“हाँ, हाँ, वही। इस मिल में तो उसी की पार्टी की यूनिशन है।”

“जी।”

“तुम एक बार उससे क्यों नहीं मिलते ? अगर नजीर खाँ चाहे तो तुम्हारे बेटे को इस मिल में आसानी से नौकरी दिलवा सकता है।”

“आप कह तो ठीक ही रहे हैं, मालीरामजी, कि यदि नजीर खाँ चाहें तो वह

मेरे बेटे को इस मिल में नौकरी दिलवा सकते हैं, मगर उनके बारे में अजीब-अजीब बातें सुनने को मिलती रहती हैं, बस इसीलिए....”

“देखो बेंगा भाई, तुम्हें आम खाने से मतलब है कि पेड़ गिनने से ?”

“वह तो ठीक है, मगर....?”

“यह सही है कि नजीर खाँ लालची आदमी है। वह शराबी भी है। उसमें और दूसरे ऐब भी हैं। फिर भी मेरा मन कहता है कि एक बार तुम्हें उससे जरूर मिलना चाहिए।”

“मालीरामजी, अगर आपका मन ऐसा कहता है तो मैं नजीर साहब से एक बार जरूर मिलने की कोशिश करूँगा।

“हाँ, जरूर मिलो उससे। देवी की इच्छा हुई तो तुम्हारी मुराद जरूर पूरी होगी।”

□

बेंगा सुबह नौ बजे नजीर खाँ के घर पहुँचा। रविवार होने के कारण नजीर खाँ से मिलनेवालों की भीड़ लगी थी। दस बजे के आस-पास नजीर खाँ अपनी बैठक में आया। बेंगा इस प्रतीक्षा में था कि जब सब लोग चले जाएँ, तभी वह नजीर खाँ से मिले।

लगभग साढ़े बारह बजे सभी मिलनेवाले चले गए। भीतर से नजीर खाँ की आवाज सुनाई पड़ी, “कल्लन, जरा देख तो बाहर कोई और भी मिलनेवाला बाकी है क्या ?”

बेंगा नजीर खाँ की बैठक में घुस गया। सामने नजीर खाँ बैठा-बैठा चबर-चबर पान चबा रहा था। खादी का सफेद कुरता और अलीगढ़ी पाजामा पहने वह गद्दे पर पसरकर बैठा था। फर्श पर पीकदान पड़ा था। उसकी उम्र बेंगा से कुछ ज्यादा ही लग रही थी। अपने गहरे रंग के कारण नजीर खाँ कुछ खूँखवार-जैसा भी लग रहा था।

“आदाब अर्ज, नेताजी।” बेंगा ने सहमते हुए अभिवादन किया।

“तुम कौन हो भाई ?” नजीर ने पीकदान में थूकते हुए पूछा।

“जी, मेरा नाम बेंगा मिस्त्री है। मैं नवभारत मिल में बिजली मिस्त्री हूँ।”

“बेंगा मिस्त्री ! यह कैसा नाम है !” नजीर ने अपना मुँह अजीब-सा बना लिया।

बेंगा इस बेटुके प्रश्न का क्या जवाब देता ! वह चुप लगा गया।

“कहो क्या बात है ?” नजीर खाँ ने पूछा।

“नेताजी, एक अर्ज लेकर आया हूँ आपके पास।”

“यहाँ सभी कोई-न-कोई अर्ज लेकर ही आते हैं। जल्दी बताओ क्या बात है ? बैठे-बैठे कमर अकड़ने लगी है।”

“नेताजी, मैं आपको अपने घर दावत पर बुलाने आया हूँ।” बेंगा ने तनिक संकोच के साथ कहा।

“दावत ! किस बात की दावत ? अच्छा, अच्छा, मैं समझ गया। जरूर तुम मुझसे कोई काम लेना चाहते हो।”

“नहीं नेताजी, ऐसी कोई खास बात नहीं है। बस यों ही...”

“तो तुम बस यों ही मुझे दावत देने आ गए हो ? कमाल है !”

“जी।”

“कहाँ रहते हो ?”

“मिस्त्री गली में। नौ नंबर के क्वार्टर में।”

“देखो भाई, क्या नाम बताया तुमने अपना ?”

“बेंगा मिस्त्री।”

“देखो भाई बेंगा मिस्त्री, इस दुनिया में ऐसा एक आदमी भी मुश्किल से मिलेगा जो यों ही किसी को दावत पर बुलाए। बिना मतलब के कोई किसी को दावत देता है क्या ? जरा तुम सोचकर बताओ।”

“यह तो आप ठीक ही बोल रहे हैं, नेताजी।”

“फिर तुम मेरा और अपना वक्त क्यों जाया कर रहे हो ? जो काम है, साफ-साफ बता दो। काम क्या है, यह जान लेने पर ही मैं तुम्हारी दावत कुबूल कर सकता हूँ। अगर काम करने लायक नहीं हुआ तो मैं तुम्हारी दावत कुबूल नहीं कर सकता।”

“नेताजी, जब आप पूछ ही रहे हैं, तो अब आपसे क्या छिपाऊँ।”

“हाँ, हाँ, बोलो क्या बात है ?”

“मेरा एक लड़का है।”

“कितना बड़ा ?”

“यही कोई तेईस का होगा।”

“पढ़ा-लिखा है ?”

“जी नेताजी। वह बी० कॉम० पास है।”

“किस डिग्रीजन से ?”

“सेकंड डिग्रीजन से, नेताजी।”

“तो उसे नौकरी चाहिए ? क्यों, यही काम है न ?”

“जी।”

“देखो बेंगा मिस्त्री, एक बात तुम अच्छी तरह जान लो कि आज के जमाने में नौकरी एक है तो उसे लपकनेवाले हजार हैं।”

“जी।”

“इसलिए आज नौकरी तो उसे ही मिल पाती है, जिसके पास लपकने की

सबसे ज्यादा ताकत होती है और यह ताकत उसी के पास होती है जिसकी जेबों में नोट होते हैं।”

“इसीलिए तो मेरे बेटे को अब तक नौकरी नहीं मिल सकी है। मैंने सोचा; इस गरीब की मदद तो सिर्फ आप ही कर सकते हैं—इस मामले में। आपके अलावा यहाँ मुसलमानों का और कौन मददगार है?”

“बस यहीं पर तो मैं मार खा जाता हूँ, बेंगा मिस्त्री। खैर देखूंगा। तुम्हारे घर पर और कौन-कौन लोग हैं?”

“मेरी अम्मा हैं। मेरी बीवी है। बेटा है और एक बेटि है।”

“बेटी कितनी बड़ी है?”

“उसे बीसवाँ लगा है।”

यह सुनते ही नजीर खाँ जरा सँभलकर बैठ गया। उसने रुचि लेते हुए पूछा, “तुमने उसकी शादी की है कि नहीं?”

“अब तक नहीं कर सका हूँ।”

“क्यों?”

“लड़केवाले बीस-पच्चीस हजार की माँग करते हैं।”

“तब तो तुम सचमुच बहुत बड़ी मुसीबत में हो, बेंगा मिस्त्री।”

“हाँ, नेताजी। समझ में नहीं आता कि कैसे क्या करूँ?”

“कोई बात नहीं। काली कमलीवाले ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा। वोलो कब की दावत है?”

“नेताजी, दिन आप ही मुकर्रर कर दीजिए तो ज्यादा अच्छा हो।

“जुम्मा के दिन कैसा रहेगा, रात के आठ बजे?”

“बिलकुल ठीक रहेगा, नेताजी।”

“तो तय रहा।”

“नेताजी, कितने लोगों का इंतजाम कर लूँ मैं?”

“देखो बेंगा भाई, मेरे साथ तो दर्जनों चमचे चलते हैं, लेकिन मैं तुम्हारे घर अकेला ही आऊँगा। मुझे पता है कि मिस्त्री गली के क्वार्टर बहुत छोटे-छोटे बने हुए हैं। यों भी मैं तुम्हें किसी फजीहत में डालना नहीं चाहता; क्योंकि तुम मुझे अपने आदमी जैसे लगने लगे हो।”

: २८ :

शुक्रवार के दिन नजीर खाँ की दावत थी, इसलिए क्वार्टर की सफाई-धुलाई का काम गुरुवार के दिन ही पूरा कर लिया गया।

फातिमा और शकीला दोनों ने मिलकर पूरे घर को झाड़ूवाली लग्गी से खूब अच्छी तरह साफ किया। इस काम में दोनों दोपहर को लगी थीं। पाँच बजे शाम

को काम खत्म हुआ।

शुक्रवार को बेंगा मिस्त्री ने मिल से छुट्टी ले ली थी। सत्तार को बता दिया था कि वह भी द्यूशन वगैरह करने के लिए घर से नहीं निकले और दिन-भर घर पर ही रहे।

घर के सभी सामान बाहर निकाले गए। दोनों कमरों तथा बरामदों की खूब अच्छी तरह धुलाई की गई।

सामनेवाला कमरा बिलकुल खाली कर दिया गया। केवल तख्त रहने दिया गया। उस पर आज वह भागलपुरी चादर बिछाई गई जो देखने में मखमल की बनी मालूम पड़ती थी और बिजली की रोशनी में बेहद खूबसूरत और चमकदार लगती थी।

आज के लिए खास तौर पर बेंगा मिस्त्री ने टेंट हाउस से एक मेज और एक नई कुरसी भाड़े पर मँगवाई थी। कुरसी एल्यूमीनियम के पाइप से बनी थी और देखने में चाँदी के सिंहासन जैसी लग रही थी। आमतौर पर ऐसी कुरसियाँ शादी के दिन दूल्हा तथा दुलहन के लिए मँगवाई जाती हैं। मेज पर वह कपड़ा बिछाया गया, जिसके ऊपर शकीला ने खुद अपने हाथ से कशीदाकारी की थी। इस कपड़े के ऊपर गुलदान रखा गया। इसके लिए बाजार से ताजे गुलाब के फूलों का गुल-दस्ता मँगवाया गया था।

दीवार पर जो पुराना कैलेंडर टँगा था, उसे हटा दिया गया। उसकी जगह पर वहाँ एक नया चित्र टाँग दिया गया, जिसमें बर्फ से ढँकी एक पहाड़ी और उसकी तलहटी में बह रही नदी बनी थी। नदी में अंडे जैसे सफेद पत्थर जहाँ-तहाँ दिख रहे थे। बड़ा आकर्षक दृश्य था।

कमरे में बिजली का पंखा नहीं था। आज के लिए बेंगा मिस्त्री ने उस दुकान से एक टेबल फैन माँग लिया था, जहाँ वह मिल की नौकरी के बाद काम किया करता था।

क्वार्टर की सफाई से गलीवालों को यह शक होने लगा कि यहाँ जरूर कोई खास बात है। कई लोगों ने पूछा भी कि क्या बात है; लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। सिर्फ यही कहा कि आज रात यहाँ कोई आनेवाला है। लोगों ने यह अनुमान लगाया कि शायद कोई लड़की देखने आ रहा होगा। चूँकि इसके पहले शकीला को देखने कई लोग आ चुके थे, फिर भी उसकी शादी तय नहीं हो सकी थी, अतः मुहल्लेवालों ने अपने मन से यह निष्कर्ष भी निकाल लिया कि इस बार बेंगा मिस्त्री यह बात पहले किसी को बताना नहीं चाह रहा।

बरामदे का बल्ब कल झाड़ू लगाते समय टूट गया था। उसके स्थान पर आज नया दूधिया बल्ब लगा दिया गया। इसकी रोशनी बड़ी प्यारी लग रही थी।

साढ़े सात बजे तक सबकुछ तैयार हो गया। घर के सभी सदस्यों ने अच्छे

कपड़े पहन लिए। नूरी को जबरदस्ती वह साड़ी पहनाई गई, जो साड़ी फातिमा को ईद पर खरीदकर बेंगा ने दी थी। शकीला ने शाटन का शलवार और कुरता पहना था। बेंगा ने अलीगढ़ी पाजामा और मलमल का कुरता पहन रखा था। उसने सिर पर गोल टोपी भी लगा ली थी। सत्तार काली पेंट और सफेद शर्ट पहने था। फातिमा ने रुबिया की लाल साड़ी पहन रखी थी। इस साड़ी में वह काफी जूँच रही थी।

साढ़े सात बजे से ही नजीर खाँ का इंतजार शुरू हो गया। उन लोगों को यह आशा थी कि नजीर खाँ आठ बजे तो आ ही जाएगा। मगर जब पौने नौ बजे रात तक भी उसका आगमन नहीं हुआ तो वे लोग आपस में शक भरी बातें करने लगे। इस समय तक तो आस-पड़ोस के लोग भी बार-बार ताक-झाँक करते रहे थे, लेकिन अब उन लोगों ने भी संभवतः यह मान लिया था कि आनेवाला अब क्या आएगा?

बेंगा मिस्त्री बेहद बेचैन हो रहा था। वह बरामदे में ही कुरसी डालकर बैठ गया। कुछ देर तक तो वह गली के नुक्कड़ पर भी जाकर खड़ा रहा था कि शायद नजीर खाँ क्वार्टर नंबर भूल गए हों और इधर-उधर भटक रहे हों।

ठीक नौ बजकर चार मिनट पर एक सफेद कार बेंगा के घर के सामने आकर रुकी। कार के रुकते ही बेंगा दौड़कर कार तक पहुँच गया। उसने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा, “आदाब, नेताजी।”

“आदाब बेंगा भाई। जरा माफ करना, मेरे आने में एक घंटे की देर हो गई। मैं घर से निकल ही रहा था कि लखनऊ से एक मिनिस्टर का फोन आ गया।”

“कोई बात नहीं। आइए, आइए।”

कार से उतरकर नजीर खाँ वे ड्राइवर की तरफ देखते हुए कहा, “कल्लन, अब तुम जाओ। तुम दस बजे तक यहाँ फिर पहुँच जाना।”

कल्लन कार के साथ तुरंत हवा हो गया।

“दरवाजे पर सत्तार फूलों की एक माला लिए खड़ा था। उसने आगे बढ़कर नेताजी के गले में माला डाल दी।

बेंगा मिस्त्री ने मुसकराते हुए बताया, “यह मेरा बेटा है—सत्तार।”

सत्तार ने ‘आदाब अर्ज’ कहा। नेताजी ने उसे अपने गले से लगा लिया। सत्तार गद्गद हो उठा।

नेताजी को सिंहासननुमा कुरसी पर बिठाया गया। नेताजी के बैठते ही घर में हरकत शुरू हो गई।

सबसे पहले बेंगा ने कमरे के सामनेवाले दरवाजे को भीतर से बंद कर दिया ताकि आस-पड़ोस के लोग अनावश्यक ताक-झाँक न कर सकें।

बेंगा तख्त पर आकर बैठ गया। उसने सत्तार के कान में कुछ कहा और सत्तार घर के भीतर चला गया।

सत्तार खाने की चीजें ला-लाकर मेज पर सजाने लगा। चीनी मिट्टी की छोटी-बड़ी प्लेटों से मेज भर गई। एक प्लेट में बिरियानी थी, दूसरी में मुरगा, तीसरी में कबाब, चौथी में तली मछलियाँ, पाँचवीं में सलाद और छठी में गरम-गरम चपातियाँ। मेज पर प्लेटों को सजाते ही पूरे कमरे में एक विशेष प्रकार की गंध फैल गई।

सबकुछ देखकर नेताजी ने कहा, “बाप रे ! क्या यह सबकुछ मेरे लिए ही है ?”

“जी।” बेंगा ने मुसकराहट बिखेरते हुए कहा।

“नहीं, नहीं, अकेले मैं इतना कैसे खा सकता हूँ ? आओ, तुम भी मेरे साथ बैठो।” नजीर खाँ ने इसरार किया।

“नहीं, नहीं, यह कैसे हो सकता है। मैं बाद में खा लूँगा।” बेंगा मिस्त्री ने झिझकते हुए कहा।

“चलो, बैठ जाओ मेरे साथ।” नेताजी ने बेंगा का हाथ खींचते हुए कहा।

“अच्छा, मैं अपने लिए अलग खाना माँगवा लेता हूँ।” बेंगा को झुकना पड़ा।

“इसकी क्या जरूरत है ?” नेताजी ने पूछा, “मेरे साथ ही खाओ।”

“नहीं, नहीं, कहाँ आप और कहाँ मैं ! यह हिमाकत मैं कैसे कर सकता हूँ।”

बेंगा उठकर भीतर जाने लगा। नेताजी ने जबरदस्ती उसे पकड़कर अपने सामने बिठा लिया और कहा, “इसलाम की यही तो खूबी है कि इस पर ईमान रखनेवाले सभी बराबर माने जाते हैं। इसलाम में न कोई छोटा होता है और न कोई बड़ा। जब गरीब-अमीर सभी एक ही दस्तरखान पर खा सकते हैं तो क्या हम दोनों एक मेज पर भी नहीं खा सकते ?”

बेंगा कुछ न बोल सका। वह मन-ही-मन नेताजी का कृतज्ञ हो उठा और चुपचाप बैठा रहा।

“तो बिस्मिल्लाह करें ?” नेताजी ने पूछा।

“जी।”

दोनों एक साथ शुरू हो गए।

सत्तार ने पूछ-पूछकर नेताजी को खिलाया। बेंगा तो अभी भी संकोच के कारण बहुत धीरे-धीरे खा रहा था। लग रहा था कि इस घर में मेहमान बनकर वही आया है और मेजबान तो नजीर खाँ है।

‘बाप रे ! क्या यह सबकुछ मेरे लिए ही है !’ नजीर खाँ ने प्लेटों को देखकर कहा तो था, मगर जब वह खाने लगा तो बाद में सत्तार को उतना ही खाना और परोसना पड़ा।

खाना खाकर नेताजी ने एक लंबी डकार ली। वह तख्त पर पसर गया।

सत्तार एक तश्तरी में पान, सुरती, सुपारी और सिगरेट की एक नई डब्बी लेकर हाजिर हो गया।

नेताजी ने चार बीड़े पान के उठाए और अपने जबड़े में डाल लिए। एक सिगरेट सुलगाकर उसने पूरी डब्बी अपनी जेब में रख ली।

वह पान चबा और धुआँ उड़ा रहा था।

नजीर खाँ ने डकार लेकर कहा, “वाह ! मजा आ गया बेंगा भाई। बहुत लजीज खाना बनवाया तुमने। इतना बढ़िया खाना तो बंबई के ताजमहल होटल-वाले भी नहीं बनाते हैं।”

खाने की प्रशंसा सुनकर बेंगा को राहत मिली।

बेंगा ने एक बात पर गौर किया कि जब से नजीर खाँ यहाँ आया था, रह-रहकर उसकी निगाह भीतर के कमरे की ओर मुड़ जाती थी। उसकी यह हरकत बेंगा को बेजा लग रही थी, पर वह करता भी क्या। वह नेताजी को ऐसा करने से रोक नहीं सकता था।

नजीर खाँ ने अपनी कलाई की तरफ देखा। घड़ी पौने दस बजा रही थी। गाड़ी आनेवाली ही थी। यह सोचकर उसने पूछा, “बेंगा भाई, तुम्हारे घर में इतना सन्नाटा क्यों है ?”

“सब भीतर हैं, इसीलिए।”

“यह देखकर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारे घर में इसलाम की बंदिशों का पूरा-पूरा खयाल रखा जाता है। घर में परदा तो होना ही चाहिए, मगर इतना भी नहीं जितना कि यहाँ तुम परदा निभा रहे हो।” नेताजी का कथन था।

“मैं अभी बुलाता हूँ सबको।” बेंगा को यह बोलना पड़ा।

“हाँ, जरूर बुलाओ। जब यहाँ आया हूँ तो अम्माँजी की दुआ लिए बगैर मैं कैसे जा सकता हूँ ? तुम्हारी बेगम ने इतना लजीज खाना खिलाया है, उन्हें कम-से-कम शुक्रिया बोलने का मौका तो दो।”

“मैं अभी बुलाता हूँ सबको।” बेंगा भीतर गया और तुरंत ही लौट भी आया। सबसे पहले नूरी निकली।

“मेरी अम्माँ हैं।” बेंगा ने बताया।

“आदाब, अम्मी।” नेताजी ने उठकर अभिवादन किया।

“तुम्हारी लंबी उम्र हो, बेटे।” नूरी ने दुआ की।

फातिमा सकुचाती हुई आई।

“यह मेरी बेगम है।” बेंगा ने परिचय कराया।

“आदाब।” नजीर खाँ ने कहा।

“आदाब।” फातिमा ने नजर झुकाकर जवाब दिया।

“बहुत लजीज खाना बनाती हैं आप।” नेताजी ने प्रशंसाभरी दृष्टि से फातिमा की तरफ देखा। फातिमा को देखते ही नजीर के दिल ने उससे कहा, ‘बेटा, जब माँ इस उम्र में भी इतनी खूबसूरत है, तो सोच ले इसकी बेटी कैसी

नाजनीन होगी ।’

फातिमा खाने की प्रशंसा सुनकर नेताजी को कोई जवाब नहीं दे सकी। बाद में उसने सोचा कि उसे कम-से-कम शुक्रिया तो बोल ही देना चाहिए था।

फातिमा के बाद भीतर से जब और कोई नहीं निकला तो नेताजी का दिल बैठने-सा लगा। उसने धीरे-से कहा, “क्यों बेंगा भाई, तुम्हारा कुनबा इतना छोटा है?”

“नहीं, नहीं, नेताजी। मेरी बेटी भी है। बाहर आने में जरा शरमा रही है।” यह बोलकर बेंगा ने खड़े-खड़े ही आवाज लगा दी, “आ जाओ, शकीला बेटी। शरमाने की कोई बात नहीं है।”

नेताजी की नजर दरवाजे की तरफ अटक गई। भीतर से धीरे-धीरे शकीला बाहर आई। वह नेताजी के सामने आकर खड़ी हो गई। आदाब बोलकर उसने कढ़ा हुआ एक रेशमी रुमाल नेताजी की तरफ बढ़ा दिया और बहुत धीमी आवाज में कहा, “इसे कुबूल करने की इनायत करें।”

नजीर खाँ शकीला को देखता रह गया। वह शकीला को उसके ‘आदाब’ का जवाब देना भी भूल गया। उसने हाथ बढ़ाकर रुमाल अपने हाथ में ले लिया, लेकिन ऐसा करते हुए उसने जान-बूझकर शकीला की नाजुक उँगलियों को छू भी लिया था। ऐसा करके उसे एक अजीब सुकून मिला।

रुमाल देकर शकीला अपनी माँ की बगल में आकर खड़ी हो गई।

नजीर खाँ के भीतर एक आग-सी सुलग उठी थी। उसके दिल में शकीला की चाल-ढाल, पोशाक, रूप-रंग यानी उसकी एक-एक चीज ने अपने असर का खूँटा गाड़ दिया था। मगर, उसकी लाचारी यह थी कि वह अपने मन की बात किसी के सामने अभी प्रकट नहीं कर सकता था। वह यह भी जान रहा था कि आज का दिन इस काम के लिए उपयुक्त नहीं है। वह सिर्फ शकीला के दिए हुए रेशमी रुमाल को अपनी मुट्ठी में बंद कर बार-बार उँगलियों से दबा रहा था। ऐसा करने से उसे जो तृप्ति मिल रही थी उसकी चमक उसके चेहरे पर साफ-साफ झलकने लगी थी। इस चमक को कुछ-कुछ बेंगा मिस्त्री ने ताड़ भी लिया था।

क्वार्टर के सामने कार आकर खड़ी हो गई। ड्राइवर ने दो-तीन बार हॉर्न बजाकर अपने आगमन की सूचना दे दी।

“तब बेंगा भाई, अब मैं इजाजत चाहूँगा।” नेताजी ने बेंगा की तरफ देखा।

“आपने हमारी दावत कुबूल कर हमें अपनी मेजबानी का मौका दिया, उसके लिए हम सभी आपके तहेदिल से शुक्रगुजार हैं।” बेंगा मिस्त्री ने खालिस उर्दू में शुकराना अदा किया।

“नहीं, नहीं, तुम मुझे शर्मिदा क्यों करते हो, बेंगा भाई? मैं कोई गैर हूँ क्या?”

‘मैं कोई गैर हूँ क्या?’ इस वाक्य को बोलते हुए उसने एक बार शकीला की तरफ हसरत-भरी नजर से निहार लिया।

“यह तो आपका बड़प्पन है, नेताजी।” बेंगा से चुप नहीं रहा गया।

“अच्छा, सबको मेरा आदाब। बेंगा भाई, काली कमलीवाले ने चाहा तो तुम्हारी दोनों मुरादे एक साथ पूरी हो जाएँगी। किसी दिन मुझसे मेरे दफ्तर में जरूर मिल लेना। जरा जल्दी ही।”

नजीर खाँ अपनी कार की ओर बढ़ गया।

: २६ :

जुम्मे के दिन नेताजी की दावत हुई और ठीक उसके अगले दिन यानी शनिवार को मिलवालों ने बेंगा को एक अफसर के साथ दिल्ली भेज दिया। वहाँ से मिल के लिए बिजली का काफी सामान खरीदना था। बेंगा ने बड़ी कोशिश की कि उसे दिल्ली न भेजा जाए, पर उसे जाना ही पड़ा। इस समय वह कानपुर छोड़ना नहीं चाह रहा था। वह नेताजी के पीछे लगकर सत्तार के लिए कोई रास्ता निकलवाना चाह रहा था। बेंगा के ऊपर इतना अधिक जोर डाला गया कि उसे जाना पड़ा। उसे यह भी मालूम नहीं था कि दिल्ली में उसे लगातार दस दिनों तक रुकना पड़ेगा। उसने दिल्ली में दस दिन, दस साल की तरह काटे। उसे वहाँ एक-एक पल गुजारना भी भारी लगा था।

दस दिनों के बाद वह घर लौटा। आते ही नूरी ने बताया कि नजीर खाँ का आदमी यहाँ कई बार उसके लौटने के बारे में पूछ गया है। उसने कहा है, ‘नेताजी को मिस्त्रीजी का बेसब्री से इंतजार है। इसलिए दिल्ली से आते ही उनको नेताजी के पास जरूर भेज दीजिएगा।’

बेंगा को यही उम्मीद थी। नहा-धोकर वह सीधे नेताजी के घर जाने की तैयारी करने लगा। गनीमत यह थी कि अफसर ने आज बेंगा को छुट्टी दे दी थी। यों भी वह आज दिन में बारह बजे घर पहुँचा था, इसलिए आज मिल जाने का कोई सवाल ही नहीं था।

नजीर खाँ अपनी बैठक में बैठा पान चबा रहा था। कल्लन ने आकर बताया, “बेंगा मिस्त्री आया हुआ है।”

यह सुनते ही नेताजी की बाँछें खिल गईं, जैसे किसी शेर की माँद में उसका शिकार खुद चलकर आ गया हो। उसने कहा, “देखो कल्लनमियाँ, बाहर जितने लोग बैठे हैं, उनसे कह दो कि नेताजी तुरंत लखनऊ जा रहे हैं। मुख्यमंत्री का फोन आया है।”

“जी।” कल्लन ने हामी भरी।

“मैं अभी पाँच मिनट में कपड़े बदलकर निकलता हूँ। तुम कार तैयार रखो।

और हाँ, बेंगा मिस्त्री को यहाँ बैठक में बुलाकर बिठा लेना ।”

“जी ।” कहकर कल्लन बाहर इंतजार कर रहे लोगों के बीच आ गया । उसने नेताजी का फरमान सबको सुना दिया । सभी जाने लगे । बेंगा मिस्त्री भी अपना मुँह लटकाकर जाने लगा । कल्लन ने सामने आकर उसके कान में धीरे-से कहा, “अरे म्याँ, आप किधर चले ? आपको तो नेताजी ने बैठक में बैठने के लिए कहा है ।”

कल्लन की इस बात का बेंगा पर संजीवनी बूटी-सा प्रभाव पड़ा । बेंगा की हताशा एकाएक काफूर हो गई और वह मुसकराता हुआ नेताजी की बैठक में आकर बैठ गया ।

नजीर खाँ कोई तीस मिनट बाद भीतर से निकला । उसके आने के पहले बैठक में इत्र की खुशबू पहुँच चुकी थी । बेंगा इधर-उधर देखने लगा कि एकाएक इत्र की खुशबू कहाँ से आने लगी है । जब नजीर खाँ सामने आ गया, तब बेंगा को यह पता चल सका कि बात क्या है । नजीर खाँ बिलकुल दूल्हे की तरह सज-सँवरकर निकला था । उसने अभी-अभी दाढ़ी बनाई थी और कपड़े बदले थे । पैरों में चम-चमाती हुई जरीदार जयपुरी जूती, शरीर पर रेशमी कुरता और सफेद चूड़ीदार पाजामा । कुरते पर बंडी । सिर पर कश्मीरी टोपी । नेताजी का यह बाना देखकर बेंगा ‘आदाब’ बोलना भी भूल गया । नजीर खाँ ने ही आज पहले बेंगा मिस्त्री को ‘आदाबर्ज’ कहा ।

अपनी इस चूक के लिए बेंगा भीतर-ही-भीतर झेंप का अनुभव करने लगा ।

“चलिए ।” नेताजी ने अनुरोध के स्वर में कहा ।

अपने लिए ‘चलिए’ शब्द सुनकर बेंगा चौंक पड़ा । इसके पहले नजीर खाँ बराबर उसे ‘तुम’ ही बोला करता था । बेंगा सोचने लगा, आज यह क्या हो गया है नेताजी को ? वह चुपचाप उठा । नेताजी ने आगे बढ़कर दरवाजा स्वयं खोला और बड़े अदब के साथ कहा, “आइए ।”

बेंगा ने डरते-डरते कहा, “आप तो अभी लखनऊ जा रहे हैं न ? आप जाइए । मैं फिर किसी दिन आ जाऊँगा ।”

“हाँ, मैं तो अभी लखनऊ ही जा रहा हूँ । मगर इससे क्या फर्क पड़ता है ? आइए, रास्ते में कुछ दूर तक आप भी मेरा साथ दीजिए । ज्यादा अच्छा तो यही होगा कि आप भी मेरे साथ लखनऊ चले चलिए । हम जल्द ही लौट आएँगे ।” नेताजी ने बड़ी मुहब्बत से यह बात कही ।

“नहीं, नहीं, मैं कहाँ जाऊँगा आपके साथ लखनऊ ? मेरे चलते खामखाह आपको परेशानी हो जाएगी । आप जाइए । मैं फिर किसी दिन आ जाऊँगा ।” बेंगा ने बचना चाहा ।

नेताजी ने बेंगा को अपनी कार में बिठा ही लिया । बेंगा तो कल्लन की बगल में बैठने जा रहा था, लेकिन नेताजी ने उसे अपने साथ पीछेवाली सीट पर अदब के

साथ बिठा लिया।

कार चल पड़ी। वह चलती रही। इस बीच रास्ते में दोनों के बीच कोई बात-चीत नहीं हुई। नेताजी ने धीरे-से कहा, “कल्लन मियाँ, बजाज कोठी चलना है।”

यह सुनकर बेंगा चक्कर में पड़ गया। वह सोचने लगा, यह बजाज कोठी क्या है? क्या यह लखनऊ में है?

देखते-ही-देखते कल्लन ने कार को पक्की सड़क से उतारकर एक कच्ची सड़क की तरफ मोड़ दिया। कुछ ही दूरी तय करने के बाद लोहे का एक गेट दिखाई पड़ा। गेट के सामने कल्लन ने कार रोककर हॉर्न बजाना शुरू कर दिया। भीतर से दौड़ता हुआ माली आया। उसने गेट खोल दिया।

कार भीतर घुस गई। एक कोठी के सामने आकर कार रुक गई।

कल्लन ने पीछे का दरवाजा खोला। नजीर खाँ कार से उतर गया। उसके बाद बेंगा मिस्त्री बाहर आया।

“क्या हम लोग इतनी जल्दी लखनऊ पहुँच गए?” बेंगा मिस्त्री ने आस-पास की चीजों को देखते हुए पूछा।

नेताजी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने केवल मुसकरा-भर दिया और कहा, “आइए।”

माली गेट बंद कर लौट आया। उसने कोठी का एक कमरा खोल दिया। नजीर खाँ कोठी में इस प्रकार घुस गया मानो यह उसकी बपौती कोठी हो। बेंगा की समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा था। वह हक्का-बक्का होकर कमरे की सजावट देखने में मशगूल हो गया।

“क्या लेना चाहेंगे, मालिक?” माली ने नेताजी से पूछा।

“माली, आज तुम्हारी जो मरजी हो, वही ले आओ।” नेताजी ने कहा।

“फिर भी?”

“आज मैं कुछ भी नहीं बोलूंगा।” नेताजी ने सब कुछ माली पर छोड़ दिया।

“ठीक है, मालिक।”

माली चला गया।

“आप खड़े क्यों हैं? बैठ जाइए।” नेताजी ने बेंगा से अनुरोध किया।

बेंगा सोफे पर सकुचाता हुआ बैठ गया। उसकी बगल में नजीर खाँ भी बैठ गया। उसके बैठते ही बेंगा जरा सरक गया ताकि नेताजी से उसका शरीर सट न जाए।

“आप इस तरह सरक क्यों गए?” नेताजी ने हँसते हुए पूछा।

बेंगा ने केवल मुसकराकर अपनी भूल पर एक परदा डाल दिया। उसने सिर्फ यह पूछा, “आप लखनऊ जानेवाले थे फिर...?”

नजीर खाँ खलनायक की तरह हँस पड़ा। वह बोला, “मेरा लखनऊ यहीं है।

जब मुझे किसी से कोई बहुत जरूरी बात करनी होती है, तो मैं यहीं चला आता हूँ अपने लखनऊ में।”

बेंगा मिस्त्री के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। यों भी उसका ध्यान कहीं और था। वह दीवार की तरफ देख रहा था। बल्ब के ठीक नीचे एक छिपकली थी, जो बल्ब के चारों ओर मँडराते हुए पतंगों को घात लगा-लगाकर निगल रही थी। कई बार तो ऐसा लगता कि पतंगे खुद चलकर छिपकली के मुँह तक चले आते थे। बेंगा ने कभी किसी से यह सुना था कि छिपकली जब साँस लेती है तो उसकी साँस में कोई ऐसी शक्ति होती है जो पतंगों को अपनी ओर खींच लेती है। बेंगा को यह खेल बड़ा अजीब लग रहा था।

“क्यों ? आप कहाँ खो गए ?” नेताजी ने बेंगा को टोका।

“जी कुछ नहीं। बस यों ही...” बेंगा सँभलकर बैठ गया।

“कहिए, कैसा रहा दिल्ली का सफर ?” नेताजी ने बातचीत का सिलसिला शुरू करते हुए पूछा।

“अच्छा ही रहा।” बेंगा ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

“आपका काफी समय लग गया दिल्ली में ?”

“जी।”

“इस दौरान मैंने आपके बारे में कई बार पता लगाया था।”

“मैं तो दिल्ली जाने के लिए कतई तैयार नहीं था। मगर, मजबूरन जाना ही पड़ा।”

“तो क्या हुआ। कभी-कभी आदमी को घर से बाहर भी निकलना चाहिए। यह भी एक बहुत जरूरी काम है।”

बेंगा चुप रह गया।

“क्या-क्या देखा आपने दिल्ली में ?”

“चाँदनी चौक का बिजली बाजार।”

“बस ?”

“जी।”

“खैर कोई बात नहीं। एक बार मैं ले चलूँगा आपको दिल्ली अपने साथ। मैं आपको दिल्ली का एक-एक कोना दिखा दूँगा।”

बेंगा अभी भी चुप था। कुछ देर के लिए नजीर खाँ भी चुप बैठ गया। फिर एकाएक वह बोलने लगा, “उस दिन की दावत मुझे आज भी याद है। मैं उसे कभी नहीं भूल सकूँगा। मुझमें एक खूबी है कि मैं जिस घर में नमक खा लेता हूँ, उसे कभी नहीं भुला पाता हूँ।”

“यह तो आपका बड़प्पन है, नेताजी।” बेंगा ने इतना कह देना बड़ा जरूरी समझा।

“आपको यह जानकर बड़ी खुशी होगी कि काली कमलीवाले की मेहरबानी से मुझे आपके दोनों ही काम एक साथ होते हुए नजर आ रहे हैं।”

“सच ?” लगा कि बेंगा के सामने किसी ने सपना परोस दिया हो।

“हाँ, यह सच है।”

“वह कैसे, नेताजी ?”

“आप चाहें तो आपके बेटे सत्तार की नौकरी लग सकती है और आपकी बेटी के हाथ भी पीले हो सकते हैं।”

“क्या आप यह बात सच कह रहे हैं, नेताजी ?” बेंगा को नेताजी की बात पर विश्वास नहीं हो रहा था।

“हाँ, यह सच है।”

“तो जल्दी बताइए कि मुझे क्या करना होगा ?”

“आपको कुछ नहीं करना है। जो कुछ भी करना है वह मुझे ही करना है। आपको तो सिर्फ हाँ-भर बोल देना है।”

बेंगा अकस्मात् ठिठक-सा गया। उसने पूछा, “मैं आपकी बात ठीक से समझ नहीं सका, नेताजी ?”

“तो मैं समझा देता हूँ।”

“जी।”

“सत्तार की नौकरी मैं आपकी मिल में ही लगवा दूँगा। अभी उसे यही कोई सात-आठ सौ रुपए मिल जाया करेंगे।”

“इसके लिए मुझे कितना खर्च करना पड़ेगा ?” बेंगा ने उत्साहित होकर पूछा।

“एक पाई भी नहीं।”

“नेताजी, सचमुच आप गरीबों के मसीहा हैं। आप हमारे सच्चे रहवर हैं। मैं आपका यह एहसान कभी नहीं भूल सकूँगा।” बेंगा भावुक हो चला।

“लेकिन, एक एहसान आपको भी मुझ पर करना होगा।”

“आप कहिए तो। मैं अपनी जान भी निछावर कर सकता हूँ आपके लिए।” बेंगा भावातिरेक में बोल गया।

“कहीं आप पीछे तो नहीं हट जाएँगे अपने कौल से ?”

“कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं होगा।”

“तो आप अपनी बेटी शकीला का हाथ मेरे हाथ में दे दीजिए और एक ही तीर से दो शिकार जल्द-से-जल्द कर डालिए।”

बरामदे में बैठी थीं। सत्तार अब तक ट्यूशन से नहीं लौटा था।

इस बार साँकल पटकने की आवाज काफी तेज हुई। फातिमा हड़बड़ाकर बाहर निकली। उसने दरवाजा खोल दिया। बरामदे पर एक रिक्शावाला खड़ा था। उसने घर के सामने खड़े रिक्शे की तरफ इशारा करते हुए कहा, “उन्हें उतार लीजिए।”

फातिमा ने देखा कि रिक्शे पर सत्तार के अब्बा हुड के लोहे को पकड़कर बैठे थे। वह हिल-डुल नहीं रहे थे। उनकी यह हालत देखकर वह जोर से चिल्ला पड़ी, “शकीला, जरा जल्दी बाहर आ। पता नहीं तेरे अब्बा को क्या हो गया है।”

शकीला और नूरी दोनों ही घबराकर बाहर निकलीं। फातिमा और शकीला दोनों ने मिलकर बेंगा को रिक्शे से उतारा। बेंगा अपनी बीबी और बेटी के कंधे का सहारा लेकर धीरे-धीरे चलता हुआ कमरे में आया और धड़ाम से सत्तार के तख्त पर गिर पड़ा। उसने अपने माथे को दोनों हाथों से कसकर दबा लिया।

फातिमा ने रिक्शेवाले को भाड़ा देते हुए पूछा, “इन्हें कहाँ से ला रहे हो, भैया?”

“इन्हें मैं स्टेशन से ला रहा हूँ।” रिक्शेवाले ने जवाब दिया और अपना रिक्शा मोड़कर चला गया।

सभी घबरा गए। नूरी ने बेंगा से पूछा, “क्या हुआ, बेटा?”

“सिर दर्द...सिर दर्द...” बेंगा बोलता जाता और अपने सिर को अपने ही हाथों से थप-थप मारता जाता। कभी-कभी वह अपने बालों को नोचने भी लगता। रह-रहकर वह मछली की तरह बिस्तर पर तड़पने लगता।

“लाइए, मैं आपका माथा दबा दूँ।” यह कहकर फातिमा बेंगा का माथा दबाने लगी।

इससे बेंगा की तकलीफ जरा भी कम नहीं हुई। अब उसने रह-रहकर बोलना शुरू कर दिया, “बाप रे बाप! यह सिरदर्द मेरी जान ले लेगा...”

“बहू, जल्दी से लवंग पीसकर ला और इसके ललाट पर उसका लेप लगा दे।” नूरी ने फातिमा से कहा।

फातिमा तुरंत उठकर चली गई। उसकी जगह पर शकीला ने अपने अब्बा का माथा दबाना शुरू किया।

बेंगा को राहत नहीं मिल पा रही थी। वह अभी भी पहले की ही तरह चीख-चिल्ला रहा था। उसका रह-रहकर तड़पना भी जारी था।

फातिमा लवंग पीसकर ले आई। उसके हाथ से नूरी ने लेप की कटोरी अपने हाथ में ले ली। उसने इशारे से शकीला को हटने के लिए कहा।

नूरी बेंगा के ललाट पर लवंग का लेप लगाने लगी। पहले तो बेंगा को ठंडक महसूस हुई। मगर, कुछ ही पलों के बाद उसे ऐसा लगने लगा कि उसके ललाट के

भीतर किसी ने तेज मसाला भर दिया है और अब ललाट की नसें तड़तड़ाने और सिकुड़ने-फैलने लगी हैं। इस नई तकलीफ को सहना उसके लिए कठिन हो गया तो उसने हथेली से ललाट पर लगे लेप को पोंछ डालने की कोशिश की। जब-जब उसने ऐसा करना चाहा, नूरी ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“बस जरा देर की तकलीफ है। इसे सह ले। सब ठीक हो जाएगा।” नूरी ने बेंगा को समझाया।

“उफ्! कैसी जलन हो रही है!!” बेंगा धीरे-धीरे शिथिल पड़ने लगा। उसे राहत मिलने लगी थी और ललाट पर लगा लेप धीरे-धीरे सूखकर पपड़ी जैसा रूप लेने लगा था।

बेंगा को राहत मिली तो सबकी जान में जान आई।

“तुम लोग अपना-अपना काम करो। अब इसे नींद आ जाएगी।” नूरी ने फातिमा और शकीला से कहा।

दोनों भीतर चली गईं।

नूरी बेंगा के पास बैठी रही।

सत्तार की खड़खड़ाती हुई साइकिल बरामदे के नीचे आकर रुकी। उसने बरामदे में साइकिल को चढ़ाया ही था कि बेंगा फिर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। वह पहले की तरह ही अपने सिर पर जोर-जोर से थप-थप मारने लगा।

सत्तार हड़बड़ाकर कमरे में आ गया। भीतर से फातिमा और शकीला भी निकल आईं। सत्तार को देखते ही उसकी अम्मा ने कहा, “अच्छा हुआ जो तुम आ गए। बेटा, जरा जल्दी से डॉक्टर टंडन के पास चले जाओ। उन्हें बुलाकर अपने साथ ही लेते आओ।”

सत्तार ने यह भी नहीं पूछा कि अब्बा को क्या तकलीफ है। वह जैसे आया था, वैसे ही उलटे पाँव साइकिल लेकर लौट गया।

बेंगा के चीखने-चिल्लाने की आवाज सुनकर आस-पड़ोस के लोग जमा होने लगे थे। हर औरत-मर्द को यह बताना मुश्किल हो गया कि बेंगा को क्या हुआ था। लोग अपने मन से ही कुछ-कुछ अनुमान कर घुसुर-फुसुर करने लगे थे।

डॉक्टर टंडन के आते ही कमरे में मौजूद सभी लोग एकाएक शांत हो गए। डॉक्टर साहब ने इशारे से लोगों को वहाँ से हट जाने के लिए कहा।

बेंगा की हरकतें अभी भी चालू थीं। डॉक्टर को देखकर वह और भी जोर-जोर से चिल्लाने लगा, “अब मैं नहीं बचूंगा, डॉक्टर साहब...यह सिर दर्द मेरी जान लेकर ही जाएगा...”

डॉक्टर टंडन ने बेंगा की पूरी जाँच की। ब्लड प्रेशर सामान्य था। शरीर में किसी प्रकार की तकलीफ का कोई लक्षण नहीं था। बेंगा ने यह जरूर बताया कि कल रात को वह ट्रेन में रात-भर जागता रहा था और आज भी उसे आराम करने

का मौका नहीं मिल सका।

नूरी ने चिंतित स्वर में डॉक्टर टंडन से पूछा, “मेरे बेटे को क्या हो गया है, डॉक्टर साहब ?”

“इन्हें कुछ भी नहीं हुआ है। मैं इन्हें एक सूई दे देता हूँ। सुबह तक ये ठीक हो जाएँगे। चिंता की कोई बात नहीं है।”

डॉक्टर साहब के इस कथन से सबको बड़ी राहत मिली। आस-पड़ोस के लोग अपने-अपने घरों को जाने लगे।

डॉक्टर टंडन ने बेंगा को एक सूई लगा दी।

बाहर रिक्शा खड़ा ही था। डॉक्टर साहब अपनी फीस लेकर उसी रिक्शे से लौट गए।

नूरी ने सत्तार से कहा, “बेटा, जा तू मेरी चारपाई यही ले आ। आज तू उसी पर सो जाना। अपने अब्बा को आज इसी तख्त पर सोने दो।”

“नही दादी, ऐसा कैसे हो सकता है? आपकी चारपाई वहीं रहेगी। मैं यहाँ फर्श पर बिस्तर बिछा लूँगा—अब्बावाला।”

सत्तार से यह जवाब सुनकर नूरी जुड़ा गई। उसे लगा कि सत्तार अब सिर्फ जवान ही नहीं हो गया है, बल्कि वह अपना फर्ज भी अच्छी तरह समझने-बूझने लगा है।

□

बेंगा मिल के जनरल स्टोर में छिपता-छिपता घुसा। स्टोर कीपर खरटे ले रहा था। स्टोर्स अफसर अपने चैंबर से गायब था। कहीं कोई नजर नहीं आ रहा था। बेंगा ने एक रोल से लगभग तीन गज लंबा ताँबे का तार काटा। तार को अपने हाथ में लपेटकर वह स्टोर के बाहर आ गया।

मिल के बाहर निकलकर बेंगा ने तार के ऊपर लगे प्लास्टिक को चाकू से छील दिया। भीतर से चमचमाता हुआ तार निकल आया। तार की चमक देखकर बेंगा को बड़ा अच्छा लगा। अब उसने तीन गज लंबे तार को बीच से मोड़ दिया और उसे वह रस्सी की तरह बटने लगा। ऐसा करने में उसे थोड़ी दिक्कत हो रही थी। तार को रस्सी का रूप देना कोई आसान काम तो था नहीं। खैर, धीरे-धीरे उसने यह काम पूरा किया।

बेंगा ने रस्सी के एक सिरے पर वह मोटा कपड़ा लपेटना शुरू कर दिया, जिसे वह अपने घर से लेकर निकला था। यह टुकड़ा किसी पुरानी पैंट का था। कपड़े को खूब अच्छी तरह लपेटकर उसने हत्था तैयार किया।

अब बेंगा ने हत्थे को अपनी दाहिनी मुट्ठी में कसकर दबाया और तार से बने हंटर को हवा में चार-पाँच बार कस-कसकर लहराया। ऐसा करने से ‘सप्-सप्’ की आवाज होती और इस आवाज को सुनकर बेंगा को बहुत खुशी हुई। उसके

मुंह से निकल पड़ा, “हाँ, अब ठीक है। अब आएगा मजा।”

बेंगा ने हंटर को अपनी कमर में लपेट लिया।

बेंगा अब शराब की एक दुकान पर आकर खड़ा हो गया। दुकान में विदेशी शराब की छोटी-बड़ी बोतलें करीने से सजाकर रखी हुई थीं।

दुकान पर बैठे जवान ने बेंगा से पूछा, “क्या चाहिए?”

बेंगा ने अपनी जेब से सौ रुपए का नोट निकालकर बड़ी लापरवाही के साथ उस जवान की तरफ उछालते हुए कहा, “जो तुम्हारे पास सबसे उमदा चीज हो, वही दे दो।”

जवान ने बेंगा की तरफ एक बोतल बढ़ा दी। वह बोतल लेकर जाने लगा। पीछे से जवान ने आवाज दी, “अपने बाकी पैसे तो लेते जाइए।”

“तुम रख लो।” बेंगा बगैर पीछे की तरफ मुड़े बोलता हुआ आगे बढ़ गया।

बेंगा शराब की बोतल लेकर एक होटल में घुस गया। होटल में बैठकर उसने कबाब मँगवाया। वह शराब पीता रहा और कबाब खाता रहा। जब उसके ऊपर नशा पूरी तरह सवार हो गया तब वह होटल का बिल चुकाकर वहाँ से निकला।

बेंगा ने एक टैक्सी रोकी। वह उस पर सवार हो गया। उसने कहा, “बजाज कोठी चलो।”

टैक्सी चल पड़ी।

बजाज कोठी पहुँचकर बेंगा टैक्सी से उतरा। कोठी का गेट पूरी तरह खुला हुआ था। माली का कोई अता-पता नहीं था।

बेंगा ने टैक्सी का भाड़ा चुकाया। उसने पाँच रुपए अधिक ही दिए, फलतः टैक्सीवाले ने जाने से पहले ‘सलाम साहब’ कहा।

बेंगा उस कमरे की तरफ बढ़ने लगा, जिस कमरे में नेताजी के साथ उसकी बातचीत हुई थी। कमरा भीतर से बंद था और बाहर घुँघरुओं की झनकार सुनाई पड़ रही थी। शायद भीतर मुजरा चल रहा था।

बेंगा ने दरवाजे पर कसकर एक लात मारी और दोनों पल्ले टूटकर फर्श पर गिर पड़े मानो वे गत्ते के बने हों।

सामने नजीर खाँ उर्फ नेताजी अपनी तीनों बीवियों के बीच बैठा हुआ रंडी का नाच देख रहा था।

बेंगा को देखते ही नजीर खाँ घबराकर उठ खड़ा हुआ। उसने पूछा, “यहाँ तुम्हें किसने आने दिया?”

“तुम्हारी मौत ने।” बेंगा ने अपनी कमर से हंटर को निकाला और नेताजी की जमकर धुनाई शुरू कर दी, “कमीने की औलाद...तीन बीवियों के रहते हुए भी तुम्हें एक बीवी और चाहिए...तू उससे शादी करना चाहता है जो तेरी बेटी से भी छोटी है...तू गरीबों का मसीहा बनता है...तू मजदूरों का नेता बनता है

“तू गंदी नाली का कीड़ा है...तेरे जैसे शैतान को मार ही डालना चाहिए... आज मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूँगा...”

बेंगा ने सप्-सप् हंटर चलाना शुरू कर दिया और नजीर खाँ जोर-जोर में चिल्लाने लगा, “बचाओ...बचाओ...”

“आज तुझे कोई नहीं बचा सकता...आज मैं तेरी जान लेकर रहूँगा...”

सत्तार चौककर उठ बैठा। अपने अब्बा को इस प्रकार बड़बड़ाता देखकर वह बेहद डर-सा गया। उसने सबको जगाया। सभी बेंगा के सामने खड़े हो गए। बेंगा अभी भी हवा में अपना दाहिना हाथ चलाए और बड़बड़ाए जा रहा था।

नूरी ने आगे बढ़कर बेंगा को जोर से झकझोर दिया। बेंगा की तंद्रा भंग हो गई। वह हक्का-बक्का होकर सबको गौर से देखने लगा।

बेंगा की पेशानी पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं।

: ३१ :

दिल्ली से लौटने के बाद बेंगा को घरवालों ने कभी खुश नहीं देखा। बेंगा काफी गुम-सुम रहने लगा था। पहले की तरह वह खुलकर किसी से बातचीत नहीं करता था। कुछ पूछने पर ‘हाँ’ या ‘नहीं’ बोलकर चुप लगा जाता था। उसके स्वभाव में हुए इस परिवर्तन का कारण किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

फातिमा ने बेंगा से कई बार यह जानना चाहा कि वह नेताजी से मिलने गया था, तो क्या हुआ? बेंगा बराबर यही कहता, “नेताजी से मुलाकात ही नहीं होती है।”

फातिमा ने नेताजी से बड़ी उम्मीद लगा रखी थी, इसलिए वह घर से निकलते समय हर दिन अपने मियाँ को यह याद दिलाना कभी नहीं भूलती, “आज नेताजी से जरूर मिलकर आइएगा।”

बेंगा ‘हाँ’ बोलकर घर से निकल जाता। रात को लौटने पर खाने के समय फातिमा हर दिन पूछती, “नेताजी के पास गए थे आप?” और हर दिन बेंगा झूठ बोल जाता, “नेताजी से मुलाकात नहीं हो सकी।”

नूरी भी बेंगा के स्वभाव में आए इस बदलाव को समझ रही थी। उसने कई बार बेंगा से यह जानने का प्रयास किया कि उस दिन नेताजी से मुलाकात हुई थी कि नहीं। यदि उनसे मुलाकात हुई थी तो नेताजी ने क्या जवाब दिया था? मगर, नूरी भी अपने बेटे से कुछ कबुलवा नहीं सकी।

उस दिन बेंगा की तबीयत अचानक कैसे खराब हो गई थी? उस रात बेंगा ने क्या सपना देखा था? वह बार-बार किसे मार डालने की बात दोहरा रहा था? ये कई सवाल थे, जो बेंगा के सामने नूरी के द्वारा कई बार रखे गए। लेकिन बेंगा ने किसी भी सवाल का कोई जवाब नहीं दिया। वह बराबर कहता, “बस यों ही

तबीयत खराब हो गई थी।...याद नहीं है कि सपने में मैंने क्या देखा था...मैं कहाँ किसी को मार रहा था?...मैं भला किसी को क्यों मारने लगा?"

नूरी और फातिमा दोनों को यह संदेह था कि जरूर कोई ऐसी बात हुई है, जिसे बेंगा छिपा रहा है। वह बात निश्चित तौर पर साधारण भी नहीं है। वह जरूर कोई ऐसी बात है जो बेंगा को भीतर-ही-भीतर खाए जा रही है। उस बात की गाँठ को दोनों खुलवाना चाह रही थीं, पर वह गाँठ खुल नहीं पा रही थी।

उस दिन दोपहर ढाई-तीन का समय रहा होगा। नूरी और फातिमा बरामदे में बैठी गेहूँ साफ कर रही थीं। सत्तार कह गया था, "मैं फिल्म देखने जा रहा हूँ। उधर से ही मेस्टन रोड ट्यूशन पढ़ाने चला जाऊँगा।" शकीला भी घर पर नहीं थी। वह गली में ही किसी सहेली के घर गई हुई थी।

बेंगा के क्वार्टर के सामने वही कार आकर रुकी, जिस कार पर उस रात नजीर खाँ यहाँ दावत खाने आया था। ड्राइवर भी वही था—कल्लन। कार से बुर्का पहने एक औरत उतरी।

बुर्कवाली को देखते ही सास-बहू उठ खड़ी हुई। बुर्कवाली ने आते ही दोनों से पूछा, "क्या जनाब बेंगा मिस्त्री का घर यही है?"

"जी।" फातिमा ने जवाब दिया।

"क्या वह घर पर हैं?"

"नहीं। वह तो काम पर गए हुए हैं।"

"कोई बात नहीं। आप दोनों...?"

"मैं बेंगा की माँ हूँ।" नूरी ने बताया।

"मैं उनकी बीवी हूँ।" फातिमा ने बताया।

"चलो, यह तो और भी अच्छा है।" यह बोलते हुए बुर्कवाली स्वयं घर के भीतर आ गई। वह सत्तार के तख्त पर आराम से बैठ गई। बैठने से पहले उसने अपना बुर्का उतार दिया। वह बोली, "मैं नेताजी की बहन हूँ।"

इतना सुनना था कि नूरी और फातिमा दोनों के चेहरों पर खुशी की लाली छा गई। नेताजी की बहन का स्वागत शुरू हो गया। उससे तुरंत पूछा गया, "आप क्या खाना चाहेंगी...आप क्या पीना चाहेंगी? ठंडा या गरम?" लेकिन वह बराबरी यही कहती रही, "यह सब फिर कभी हो जाएगा। अभी तो मैं एक बहुत जरूरी काम से यहाँ आई हूँ।"

उस औरत ने दोनों को कुछ भी करने से रोक दिया। फातिमा जब भी भीतर जाने की कोशिश करती, वह उसे जबरदस्ती अपने पास बिठा लेती। अब वह शुरू हो गई, "क्या बात है, बेंगा मिस्त्री ने नेताजी की बात का अब तक कोई माकूल जवाब नहीं दिया है?"

यह सुनकर सास-बहू ने एक-दूसरे को एक बार संशय के साथ देखा, मानो

दोनों को कारण पता हो, पर फिर भी एक ने दूसरे से कुछ छिपाने की कोशिश की हो।

“तो क्या मेरा बेटा नेताजी से मिलने गया था?” नूरी ने पूछा।

“क्या यह आप लोगों को मालूम नहीं है?” नेताजी की बहन ने पूछा।

एक बार फिर सास-बहू ने एक-दूसरे को सवालिया निगाह से देखा।

“बेंगा तो बोल रहा था कि नेताजी से उसकी मुलाकात ही नहीं हो पा रही है।” नूरी ने सच जानने की नीयत से यह बात कह दी।

“हो सकता है कि मिस्त्रीजी आप लोगों को यह बताना भूल गए हों। खैर, कोई बात नहीं। मैं उसी के लिए यहाँ आई हूँ और आज बात तय करके ही यहाँ से टलूंगी।”

“क्या?” फातिमा का माथा ठनका।

“बहन, तुम बड़ी किस्मतवाली हो। तुम्हारी किस्मत अब खुलनेवाली है।” बुर्कवाली ने अपना जाल फैलाना शुरू कर दिया।

“यह आप क्या बोल गई, मैं कुछ समझ नहीं सकी।” फातिमा ने ताज्जुब से पूछा।

“आपके मियाँ की मुलाकात नेताजी से हो चुकी है।” औरत ने बताया।

“मुलाकात हो चुकी है!” फातिमा जैसे आसमान से जमीन पर गिर पड़ी हो।

“हाँ, दोनों की मुलाकात हो चुकी है और नेताजी इस घर पर बहुत मेहरबान हो गए हैं।”

“वह कैसे?” नूरी और फातिमा दोनों ने एक साथ पूछा।

“नेताजी तो तुम्हारे बेटे को नौकरी दिलवाने के लिए कब से तैयार बैठे हैं।” बुर्कवाली ने अपना पिटारा खोल दिया।

“क्या यह सच है?” सास-बहू दोनों ने एक साथ प्रसन्नतामिश्रित आश्चर्य के साथ पूछा।

“हाँ, हाँ, यह बिल्कुल सच है।” बुर्कवाली ने ताईद की।

“बहू, जाओ जल्दी से इनका मुँह मीठा करवाओ।” नूरी ने बड़े उत्साह से फातिमा से कहा। फातिमा उठ भी गई, पर बुर्कवाली ने उसे फिर अपने पास बैठने के लिए विवश कर दिया।

“बहन, तुम अपनी बेटी की शादी के लिए भी परेशान हो न?” बुर्कवाली ने पूछा।

“हाँ, बहन।” फातिमा का उत्तर था।

“उसका भी इंतजार हो गया है।” बुर्कवाली ने बताया।

“सच!” लगा कि सास-बहू दोनों नाच उठेंगी।

“बस यही समझो कि तुम्हारी बेटी की किस्मत खुल गई। वह राज करेगी

राज। हवेली में रहेगी और कार में घूमा करेगी।” बुर्कवाली ने जानकारी दी।

“क्या यह सच है, बहन?” फातिमा ने पूछा।

“हाँ, हाँ, यह सच है।” बुर्कवाली ने इसकी पुष्टि भी कर दी।

“कौन है वह लड़का?” नूरी ने पूछा।

“लाखों में एक है वह।” बुर्कवाली ने परिचय न देकर केवल इतना ही कहा।

“कहाँ का है लड़का?” फातिमा का सवाल था।

“यहीं कानपुर का है और कहाँ का रहेगा?” बुर्कवाली का जवाब था।

“यह तो और भी अच्छी बात है।” नूरी का मन नाच उठा।

“लड़का क्या करता है? नौकरी करता है कि नहीं?” फातिमा ने जानना चाहा।

“नौकरी! तौबा तौबा!! वह नौकरी क्यों करेगा? उसके यहाँ तो दूसरे नौकरी करते हैं।” बुर्कवाली ने तारीफ का सिलसिला आगे बढ़ाया।

यह सुनकर नूरी का अनुभवी मन तनिक चिंता में पड़ गया। उसे दाल में कुछ काला नजर आया। फातिमा तो उत्साह में और भी कुछ पूछने जा रही थी, लेकिन नूरी ने उसे इशारे से रोक दिया। इस बार नूरी ने बड़े संयत स्वर में पूछा, “मगर बेटी, उस लड़के का नाम क्या है?”

“इस कानपुर शहर में उसका नाम कौन नहीं जानता है? उसकी तो गली-गली में शोहरत है।” बुर्कवाली अब अतिशयोक्ति पर उतर आई थी।

“जरा मैं भी तो सुनूँ उस मशहूर लड़के का नाम?” नूरी के स्वर में व्यंग्य की छौंक थी।

“वह मेरा भैया है। नजीर खाँ, सारा कानपुर जिसे नेताजी के नाम से जानता है।” बुर्कवाली ने बड़े गरूर के साथ कहा।

यह सुनकर नूरी और फातिमा दोनों सन्न रह गईं। नूरी को तो लगा कि उसकी छाती में किसी ने बरछी घुसेड़ दी है और वह घायल हिरणी की भाँति तड़प उठी। बहुत मुश्किल से उसने अपने को सँभाला और दहाड़ उठी, “तो यह बात है!... अब मैं समझी... जा, जाकर कह दे अपने भैया से कि उसका यह सपना कभी पूरा नहीं होगा... खूँसट के घर में तीन-तीन बीवियाँ पहले से पड़ी हैं... क्या उनसे उसका दिल नहीं भरता जो चला है अपनी बेटी जैसी लड़की से अपनी शादी रचाने का मसूबा बनाने?... कैसे कही उसने यह गलीज बात?... यह बात अपने मुँह से निकालते समय उसकी जीभ गलकर जमीन पर गिर नहीं पड़ी?... अगर तेरा भाई आज मेरे सामने खड़ा होता तो मैं उसका मुँह नोच लेती... अगर तू अपनी खैर चाहती है तो अभी तुरंत दफा हो जा यहाँ से... नहीं तो...”

बुर्कवाली नूरी का बदला हुआ रूप देखकर भयभीत हो गई। उसे कतई ऐसी उम्मीद नहीं थी कि यह बुढ़िया इतना ज्यादा ताव खा जाएगी। नूरी के उग्र रुख

को देखकर फातिमा भी डर-सी गई। उसकी तो बोलती ही बंद हो गई।

बुर्कैवाली कुछ बोलने ही जा रही थी कि नूरी एक बार फिर दहाड़ उठी, “जाती है कि निकालूँ झाड़ू?”

इतना कहना था कि बुर्कैवाली अपना बुर्का उठाकर भाग खड़ी हुई। उसे बुर्का तक पहनने का मौका नहीं मिल सका। वह परदे में आई थी, मगर गई यहाँ से बेपर्दा होकर।



रात को खाना खाकर जब बेंगा सोने चला, तब नूरी उसके सामने आकर बैठ गई। एक तरफ फातिमा भी आकर बैठ गई। बेंगा इस घरेबंदी का कारण नहीं समझ सका। इसलिए उसी ने पूछा, “क्या बात है, अम्माँ?”

“बेटा, तू झूठ कब से बोलने लगा है?”

“मैं झूठ बोलने लगा हूँ?” बेंगा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा।

“हाँ, हाँ, तू झूठा है। तूने मुझसे झूठ बोला है। तूने अपनी बीबी से झूठ बोला है।”

“यह तुम बोल रही हो, अम्माँ? मैं अपने ही घर में किसी से झूठ क्यों बोलूँगा?” बेंगा ने प्रतिवाद किया।

“ज्यादा बनने की कोशिश मत कर, बेंगा।” नूरी ने बेंगा को झड़प दिया।

“मैं बन रहा हूँ, अम्माँ?” बेंगा आसानी से झुकने को तैयार नहीं था।

“हाँ, हाँ, तू बन रहा है। क्या यह झूठ है कि तू नेताजी से उसी दिन मिल चुका था, जिस दिन तू दिल्ली से लौटकर आया था?” नूरी ने सीधा सवाल पूछा।

बेंगा ने अचानक चुप्पी साध ली।

“क्या यह भी झूठ है कि नेताजी से मिलने के बाद ही तेरे सिर में दर्द उठा था?”

बेंगा ने अपना सिर झुका लिया।

“सच-सच बता, क्या तूने सपने में नेताजी को नहीं देखा था और बार-बार तू उससे ही नहीं कह रहा था, आज मैं तुम्हें जिदा नहीं छोड़ूँगा?”

बेंगा के पास इन प्रश्नों का कोई जवाब नहीं था।

“बेटा, तूने यह अच्छा नहीं किया। तेरे मन पर इतना बड़ा बोझ था और तू अकेला इस बोझ को झेलता रहा। अरे, तू हमें सच बता देता तो क्या हो जाता? क्या हम सब मर जाते?”

“यानी तुम लोगों को सबकुछ मालूम हो गया है?”

“हाँ, मालूम हो गया है सबकुछ।” नूरी ने जोर देकर कहा।

“वह कैसे?” बेंगा के मुँह से सवाल फिसलकर बाहर निकल आया।

“आज उस खूसट की बहन आई थी कुटनी बनकर। मैंने उस सूपनखा को इस

घर से निकाल बाहर किया।”

बेंगा भौंचक्का होकर अपनी माँ की तरफ देखता रह गया।

इस चख-चख में सत्तार की नींद टूट गई थी। वह अपने बिस्तर पर पड़ा-पड़ा सबकुछ सुन रहा था। भीतर के कमरे में शकीला भी जाग गई थी और दरवाजे की ओट में खड़ी होकर वह भी सारी बातें सुन रही थी।

“देख बेटा, मैं तुझसे एक बात आज ही कहे देती हूँ...”

बेंगा ने धीरे से अपना माथा उठाकर अपनी माँ की तरफ देखा।

“मुझे यह मंजूर है कि सत्तार की नौकरी जिंदगी-भर न लगे। मगर, यह मुझे कभी मंजूर नहीं होगा कि नौकरी के बदले में शकीला उस शैतान के हवाले कर दी जाए जिसके घर में तीन-तीन बीवियाँ पहले से ही अपना करम फोड़ रही हैं। शकीला की डोली उसी के घर में जाएगी जो सिर्फ एक ही शादी करने का वादा करेगा...” इतना कहकर नूरी उठी और भीतर बढ़ने लगी। उसके भीतर पहुँचने के पहले ही शकीला अपने बिस्तर पर पहुँच गई थी।

सत्तार ने भी करवट बदलकर चादर से अपना मुँह ढँक लिया।

बेंगा गुम-सुम एक अपराधी की तरह बिस्तर पर बैठा रहा। फातिमा उठी और स्विच बोर्ड के पास खड़ी होकर बोली, “आप लेट जाइए तो मैं बल्ब बुझा दूँ।”

बेंगा भारी मन से बिस्तर पर पसर गया। फातिमा से स्विच ऑफ कर दिया। कमरे में अँधेरा फैल गया। लेकिन, इस अँधेरे में सभी जाग रहे थे, क्योंकि किसी की भी आँखों में आज नींद नहीं थी।

: ३२ :

दोपहर को काम-धाम से थोड़ी फुरसत मिली तो फातिमा लाड़ो के घर चली गई। मिस्त्री गली में उनसठ नंबर का क्वार्टर लाड़ो का था। लाड़ो का मियाँ नवभारत मिल में ही ड्राइवरी करता था। उसका नाम रहमत था।

लाड़ो बरामदे पर बैठी स्वेटर बुन रही थी। फातिमा को देखते ही उसने ऊन और सलाई एक किनारे रख दी और उलाहने के साथ बोली, “आओ बहन, आओ। तुमने तो मेरा घर ही भुला दिया।”

“नहीं बहन, ऐसी बात नहीं है। घर के काम-धाम से फुरसत मिले तब न कहीं आना-जाना करूँ।” फातिमा बोली।

“कहो कैसी हो? घर में सब ठीक-ठाक है न?”

“बस, ठीक ही है।”

“किसी से सुना था कि तुम्हारे घर पर एक दिन नेताजी आए थे—दावत पर?”

“किसने बताया तुम्हें?”

“अब किसने बताया था—उसका नाम तो याद नहीं आ रहा है। लेकिन क्या यह झूठी बात है?”

“नहीं।”

“बतानेवाले ने तो यहाँ तक बताया था कि नेताजी तुम्हारे सत्तार को कोई नौकरी दिलवाने जा रहे हैं और तुम्हारी बेटी शकीला की शादी भी वही तय करने-वाले हैं?”

“नहीं, यह सब झूठ है।”

“तो क्या उस आदमी ने मुझसे यह सब झूठ कहा था?”

“इसे झूठ ही समझ लो।”

“इसे झूठ ही समझ लूँ। यह कैसी बात हुई?”

“अब क्या बताऊँ, बहन?”

“क्या कोई खास बात है?”

“अगर तुम वादा करो कि तुम किसी को कुछ भी नहीं बताओगी, तो मैं अपना मुँह खोलूँ?”

“बहन, तुम मुझ पर यकीन कर सकती हो। मैं किसी को क्यों कुछ बताने लगी।”

“नेताजी हमारे घर दावत पर आए थे, यह सच है।”

“बाकी बात?”

“बाकी बात गलत भी है और कुछ-कुछ सही भी।”

“वह कैसे, फातिमा बहन?”

“नेताजी मेरे बेटे सत्तार को नौकरी दिलवाने को तैयार हैं, मगर बदले में वह चाहते हैं...” —बोलते-बोलते फातिमा बीच में अटक गई।

“बदले में क्या चाहते हैं नेताजी?”

“वह चाहते हैं कि शकीला का हाथ उनके हाथ में दे दिया जाए।”

“उस बुढ़े के हाथ में! तुम लोगों ने क्या जवाब दिया? तुम लोगों ने मिल-कर उसकी दाढ़ी क्यों नहीं नोच ली?” लाड़ो ने आक्रोश के साथ कहा।

“इससे क्या होता?”

“कहीं तुम लोगों ने यह रिश्ता मंजूर तो नहीं कर लिया?”

“नहीं बहन। मैं अपनी जिंदगी में तो ऐसी भूल कभी नहीं कर सकती।”

“बहुत अच्छा किया तुम लोगों ने जो इस रिश्ते को ठुकरा दिया।”

फातिमा चुप बैठी रही।

“इसका मतलब यह हुआ कि इधर तुम लोग काफी परेशान हो?”

“हाँ, लाड़ो बहन।”

“एक काम करोगी, फातिमा बहन?”

“बोलो न, बहन। जरूर करूंगी।”

“क्या तुमने बउराहा बाबा का नाम सुना है?”

“बउराहा बाबा! यह नाम तो मैं आज ही सुन रही हूँ। कौन हैं बउराहा बाबा?”

“बउराहा बाबा एक सिद्ध महात्मा हैं। वह जिससे जो कह देते हैं, उसका वह काम जरूर पूरा हो जाता है।”

“अच्छा।”

“आजकल बउराहा बाबा यहीं आए हुए हैं।”

“कहाँ ठहरे हैं?”

“सिविल लाइन की एक कोठी में ठहरे हैं।”

“क्या तुम उस कोठी का ठीक-ठीक पता जानती हो?”

“जानती हूँ। कल ही तो मैं गई थी उनके पास। मेरी तो यह राय है कि तुम अपने मियाँ को एक बार बउराहा बाबा से मिलने के लिए जरूर भेज दो। अगर कहीं उनका आशीर्वाद मिल गया तो तुम्हारे बेटे को नौकरी भी मिल जाएगी और तुम्हारी बेटी शकीला की शादी भी तय हो जाएगी।”

“क्या बउराहा बाबा सचमुच ऐसा कर सकते हैं?”

“बउराहा बाबा क्या नहीं कर सकते हैं। उनके बस में सबकुछ है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन्हें कुछ बताना नहीं पड़ता है। बाबा खुद जान लेते हैं कि मिलनेवाला उनके पास किस काम से आया है।”

“तब तो सचमुच बउराहा बाबा पहुँचे हुए फकीर हैं।”

“इसीलिए तो मैं तुमसे बोल रही हूँ कि उनके दर्शन के लिए एक बार भेज दो अपने मियाँ को।”

“जब ऐसी बात है, तो मैं कल ही उन्हें बउराहा बाबा के पास भेज दूंगी।”

□

बेंगा मिस्त्री को साधु-महात्माओं के कारनामों पर कतई विश्वास नहीं था। वह उनसे दूर-दूर ही रहता था। लेकिन पूरे कानपुर में बउराहा बाबा की बड़ी शोहरत थी। पिछले तीन-चार दिनों से फातिमा भी उसे बार-बार प्रेरित कर रही थी। इसका नतीजा यह हुआ कि बेंगा मिस्त्री भी बउराहा बाबा से मिलने चला गया।

एक आलीशान कोठी के सामने बउराहा बाबा के दर्शनार्थियों की भीड़ जमा थी।

एक हॉल के सामने दर्शनार्थी कतार में खड़े थे। कतार बहुत लंबी थी। इसी कतार में बेंगा भी खड़ा हो गया।

चूँकि बेंगा को साधु-महात्माओं पर विश्वास नहीं था, इसलिए वह यहाँ की

एक-एक गतिविधि पर नजर रख रहा था। कतार में सबसे आगे जो आदमी खड़ा होता, उससे बउराहा बाबा का एक चेला बड़ा हँस-हँसकर बतियाता। जब उस आदमी के कमरे के भीतर जाने की बारी आती, तब वह चेला पहले ही कमरे में चला जाता और उसके लौटने पर ही कतार में आगे खड़े व्यक्ति को भीतर जाने दिया जाता।

बेंगा कतार में अब सबसे आगे था। वह चेला उसके पास आकर खड़ा हो गया। उसने बातचीत शुरू कर दी, “आपका नाम क्या है?”

“बेंगा मिस्त्री।”

“क्या करते हैं?”

“एक मिल में बिजली मिस्त्री हूँ।”

“बच्चे कितने हैं?”

“दो। एक लड़का और एक लड़की।”

“लड़का क्या करता है?”

“बी० कॉम० पास करके नौकरी की खोज कर रहा है।”

“लड़की की शादी हो गई है?”

“नहीं।”

“कितनी बड़ी है लड़की?”

“बीस की होगी।”

इसी समय कमरे का दरवाजा खुल पड़ा। चेला भीतर चला गया। उसने लौटकर बेंगा से कहा, “अब आप जाइए।”

बेंगा मिस्त्री कमरे के अंदर चला गया। उसे कमरे में बड़ा अंधेरा लगा। उसके घुसते ही बउराहा बाबा की आवाज सुनाई पड़ी। वह बोल रहे थे, “आओ, आओ, बेंगा मिस्त्री। मैं तो तुम्हारा इंतजार कब से कर रहा हूँ। मगर, तुम बड़े मगरूर आदमी हो। तुम तो साधु-महात्माओं को भी शक की निगाह से देखते हो! आखिर तुम्हें आना ही पड़ा यहाँ। तुम सोचते थे कि यहाँ आए बगैर ही तुम्हारे बेटे का नौकरी मिल जाएगी और तुम्हारी बेटी की शादी हो जाएगी। क्यों? क्या मैं गलत बोल रहा हूँ?”

“मुझसे भूल हो गई, बाबा। मैं इसके लिए माफी चाहता हूँ।” बेंगा के ऊपर बाबा के वचन का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह दंडवत् होकर जमीन पर गिर पड़ा और पूछ बैठा, “मगर, बाबा आप मुझे दिखाई क्यों नहीं पड़ रहे हैं?”

एकाएक कमरे में अनेक बल्ब जल उठे। बेंगा की आँखें चौंधिया गईं। वह अपनी आँखें मलने लगा।

“क्यों, क्या हुआ रे कुत्ते की औलाद? क्या तू अंधा है? क्या मैं तुझे दिखाई नहीं पड़ रहा हूँ?” बउराहा बाबा एकाएक गालियाँ बकने लगा।

बेंगा ने पहले से ही सुन रखा था कि बउराहा बाबा जिसे अपना आशीर्वाद देना चाहते थे, उसे वह इसी प्रकार धुआँधार गालियाँ दिया करते हैं।

बेंगा ने अपनी दोनों आँखें खोलकर सामने देखा। बउराहा बाबा मचाननुमा एक ऊँची जगह पर बैठकर अपनी दोनों टाँगें झुला रहे थे और गंदी-गंदी गालियाँ बके जा रहे थे।

“रंडी की औलाद ! तू आगे क्यों नहीं बढ़ता ? आ, मेरे सामने आ।” बउराहा बाबा ने बेंगा को अपनी तरफ बुलाया।

बेंगा को चेले ने पहले ही बता दिया था कि जब बाबा उसे बुलाएँ तो उसे क्या करना है। बेंगा चुपचाप बउराहा बाबा के समीप चला गया। बाबा ने अपने झूलते हुए दोनों पैरों को स्थिर कर दिया। बेंगा ने श्रद्धा के साथ बाबा के दोनों पैरों को चूम लिया। ऐसा करते हुए उसे बड़ी घृणा मालूम हुई; क्योंकि बाबा के दोनों पैर बेहद गंदे और बदबूदार थे। पर, मरता क्या नहीं करता।

अब बेंगा ने अपनी पीठ बाबा की तरफ घुमा दी। बाबा ने कसकर एक लात बेंगा के चूतड़ पर मारकर कहा, “अपने चूतड़ दिखाता है। भाग जा यहाँ से। फिर कभी लौटकर मत आना यहाँ।”

यह मान्यता थी कि बाबा जिस आदमी के साथ ऐसा व्यवहार करते थे, उसकी मुराद अवश्य पूरी हो जाती थी और उसे फिर आशीर्वाद लेने के लिए और कहीं जाने की आवश्यकता नहीं होती थी।

चूतड़ पर लात खाकर बेंगा दूसरे रास्ते से बाहर निकल गया।

जब बेंगा मैदान में आ गया तो लोगों ने उसे घेर लिया और लोग उससे तरह-तरह के सवाल-जवाब करने लगे।

“क्या बाबा ने आपको गालियाँ दीं ?”

“हाँ, दीं।”

“कैसी-कैसी गालियाँ दीं ?”

“कुत्ते की औलाद...रंडी की औलाद...वगैरह-वगैरह...”

“और ?”

“बोलने लायक नहीं है।”

“क्या बाबा ने तुम्हें कहीं मारा भी ?”

“हाँ।”

“कहाँ ?”

“यहाँ।” बेंगा ने जगह बता दी।

किसी आदमी ने कहा, “तुम बड़े भाग्यशाली हो, भाई। लोग यहाँ बाबा की गालियाँ सुनने और चूतड़ पर लात खाने के लिए कहाँ-कहाँ से आकर जमा हैं, लेकिन बाबा हमें अपना आशीर्वाद दे ही नहीं रहे हैं। तुम्हें तो बाबा ने गालियाँ भी

दीं और चूतड़ पर अपनी लात भी जमा दी। अब तो तुम्हारी मनोकामना जरूर पूरी हो जाएगी।”

यह सुनकर बेंगा को भी अब थोड़ा-थोड़ा यह विश्वास होने लगा था कि साधु-महात्माओं में जरूर कोई दैवी ताकत होती है, नहीं तो इतने सारे लोग यहाँ क्यों आते ?

: ३३ :

बिरहाना रोड की एक प्राइवेट कंपनी में एक टाइपिस्ट की जगह निकली थी। विज्ञापन में कहा गया था कि उस उम्मीदवार को अधिमान दिया जाएगा, जो हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में टंकण कर सके।

टाइपिंग टेस्ट में लगभग दो सौ उम्मीदवार सम्मिलित हुए थे। इनमें से केवल पाँच उम्मीदवारों को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। इन पाँच उम्मीदवारों में एक नाम सत्तार का भी था। सत्तार ने हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जो टंकण किया था, उसमें एक भी त्रुटि नहीं निकली थी। इस कारण उसे पूरा-पूरा विश्वास था कि उसे यह पद प्राप्त हो जाएगा।

इंटरव्यू के लिए जो लोग आए थे, उन्हें एक बड़े कमरे में बिठाया गया। चूँकि कंपनी के चेयरमैन, मैनेजिंग डायरेक्टर और सेक्रेटरी तीनों ही किसी मीटिंग में व्यस्त थे, अतः इंटरव्यू में अभी विलंब था। समय काटने की नीयत से इंटरव्यू में आए लोग आपस में बातचीत करने लगे। इंटरव्यू के लिए तीन लड़कों तथा दो लड़कियों को बुलाया गया था। दरवाजे के समीप जो लड़की बैठी थी, वह काफी सज-सँवरकर आई थी। देखने में वह काफी सुंदर थी। उसे देखनेवाला हर आदमी यही कहता, “इसे तो फिल्मों में होना चाहिए था।” सत्तार को बराबर लगता रहा कि उसकी वास्तविक प्रतियोगिता उसी लड़की से है। इसलिए उसके मन में सहज उत्सुकता पैदा हुई कि वह उससे बातचीत कर यह जानने की कोशिश करे कि उसने टेस्ट कैसा किया है।

सत्तार मुसकराता हुआ उस लड़की के सामने पहुँच गया। उसने कहा, “नमस्ते।”

“नमस्ते।” लड़की ने जवाब दिया।

“क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ ?” सत्तार ने लड़की की बगलवाली खाली कुर्सी की तरफ देखते हुए पूछा।

“वाई नोट।” लड़की का उत्तर था।

“धन्यवाद।” बोलकर सत्तार लड़की की बगल में बैठ गया।

“आप भी इंटरव्यू देने आए हैं ?” लड़की ने पूछा।

“जी।”

“आपने टेस्ट कैसा किया है ?”

“अच्छा किया है ।”

“क्या आप हिंदी टाइपिंग भी जानते हैं ?”

“हाँ, जानता हूँ ।”

“तब तो आपका चांस बड़ा ब्राइट है ”

“क्यों ?”

“हिंदी टाइपिंग जाननेवाले को यहाँ प्रेफरेंस दिया जाएगा ।”

“आप भी तो जानती होंगी ?”

“सो सो ।”

“इंगलिश टाइपिंग तो आप बहुत अच्छी तरह जानती होंगी ?”

“स्पीड जरा स्लो है । मुझे तो बड़ा डर लग रहा है । पता नहीं क्या होगा ?”

“इसमें डरने की क्या बात है ? पाँच में से किसी एक का तो होगा ही और वह आप भी हो सकती हैं ।”

“थैंक्यू । आपकी बात से कुछ तो सहारा मिला ।”

सत्तार मन-ही-मन बड़ा खुश हो रहा था । उसे लड़की से कुछ पूछना भी नहीं पड़ा और लड़की ने स्वयं ही सबकुछ उगल दिया । सत्तार के मन में इस लड़की को लेकर जो एक भय था वह दूर हो गया । अब उसका आत्मविश्वास काफी बढ़ चला था ।

“आप बुरा न मानें तो क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ ?” सत्तार ने सकुचाते हुए पूछा ।

“रीटा चतुर्वेदी ।”

“ऋता या रीटा ?”

“रीटा—नाट रीता ।” लड़की ने जरा विरोध के साथ बताया ।

सत्तार वहाँ से हटकर एक दूसरे उम्मीदवार के पास आ गया । इस तरह उसने बारी-बारी से चारों उम्मीदवारों से यह पता लगा लिया कि कौन कितने पानी में है । कुल मिलाकर उसने यही निष्कर्ष निकाला कि आज उसके सितारे बुलंदी पर हैं और उसे यह नौकरी मिलकर रहेगी ।

करीब बारह बजे इंटरव्यू शुरू हुआ ।

सबसे पहले रीटा चतुर्वेदी को बुलाया गया । उसका इंटरव्यू पाँच मिनट तक चला । भीतर की बातचीत बाहर तो सुनाई नहीं पड़ रही थी, लेकिन रह-रहकर मिस रीटा और इंटरव्यू लेनेवालों के हँसने की सम्मिलित आवाज बाहर से जरूर सुनाई पड़ जाती थी ।

मिस रीटा कमरे से फुदकदी हुई निकली । उसके चेहरे पर निराशा का कोई चिह्न नजर नहीं आ रहा था । सत्तार को लगा कि शायद मिस रीटा को चुन लिया

गया है। पर सच क्या है यह तो उसे मालूम नहीं था। यह तो केवल उसका अनुमान मात्र था।

बाकी तीन उम्मीदवारों को दस मिनटों के भीतर ही छुट्टी मिल गई। जब वे लोग बाहर निकले तो उनके चेहरे लटके हुए थे।

अब सत्तार की बारी थी।

सत्तार भीतर गया। उसने तीनों सज्जनों का अभिवादन किया। उससे बैठने के लिए कहा गया। वह 'धन्यवाद' ज्ञापित कर बैठ गया।

कंपनी का चेयरमैन सेक्रेटरी और मैनेजिंग डायरेक्टर के बीच में बैठा हुआ था। तीनों के सामने नाम और पद की एक-एक तख्ती टेबुल पर रखी थी, इसी से सत्तार को यह जानकारी मिल गई कि वहाँ कौन किस रूप में बैठा था।

चेयरमैन ने सत्तार को बड़े ध्यान से देखा, ठीक वैसे ही जैसे ग्राहक किसी चीज को खरीदने के पहले देखता है। उसने अपना मुँह खोला, "आपका नाम?"

"अत्तारअली।"

"फादर का नाम?"

"श्री वेंगा मिस्त्री।"

यह सुनकर चेयरमैन चौंक पड़ा। उसने मैनेजिंग डायरेक्टर और सेक्रेटरी की तरफ बारी-बारी से इस तरह देखा मानो वह उनसे यह पूछना चाह रहा हो कि यह लड़का टाइपिंग टेस्ट में सफल कैसे हो गया।

"फादर क्या करते हैं?"

"नवभारत मिल में बिजली मिस्त्री हैं।"

"मिस्टर सत्तार, आपको यह जानकर खुशी होगी कि आपको टाइपिंग टेस्ट में सबसे ज्यादा नंबर मिले हैं।"

"यह मैं पहले से ही जानता था, सर।"

"यह आप पहले से जानते थे? वह कैसे?"

"क्योंकि मैंने टाइपिंग में कोई भूल नहीं की थी।"

"हाँ, यह सच है। यू आर ए वंडरफुल टाइपिस्ट!"

यह सुनकर सत्तार को लगा कि खुशी से वह रो पड़ेगा। बहुत मुश्किल से उसने अपने को नियंत्रित करते हुए कहा, "धन्यवाद, सर।"

"यह किसी भी कंपनी के लिए खुशनसीबी की बात होगी कि उसे आप जैसा टाइपिस्ट मिले। आज पढ़ाई-लिखाई का जो हाल है उसमें सही-सही टाइप करने-वालों का मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। आप तो हिंदी और इंग्लिश दोनों की टाइपिंग बहुत अच्छी तरह जानते हैं।"

"यह तो आप लोगों की दुआ का नतीजा है, सर।"

"गुड। बेरी गुड। आप बातचीत करने का तौर-तरीका भी जानते हैं। यह तो

और भी अच्छी बात है।”

इस बार सत्तार ने अपनी तरफ से कुछ बोलना ठीक नहीं समझा।

चेयरमैन एकाएक अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया। वह सत्तार के पास आ गया। सत्तार चेयरमैन को अपने पास देखते ही उठकर खड़ा हो गया।

चेयरमैन ने सत्तार से कहा, “मिस्टर सत्तार, दुनिया में हर आदमी के पास कोई-न-कोई योग्यता जरूर होती है। कोई यह योग्यता मेहनत करके प्राप्त करता है और किसी को यह योग्यता ईश्वर की तरफ से मिलती है। आपने टाइपिंग में जो कमाल हासिल किया है, वह प्राप्त की गई योग्यता है। क्या आपने इस बात पर भी कभी ध्यान दिया है कि कुदरत ने आपको इससे भी बड़ी एक योग्यता प्रदान की है?”

“मैं आपकी बात का मतलब नहीं समझ सका, सर?” सत्तार सचमुच चक्कर में पड़ गया था कि यह उससे कैसी बातें की जा रही थीं।

“आइए, मेरे साथ आइए।”

चेयरमैन अपने चेंबर से लगे बाथरूम में प्रविष्ट हो गया। सत्तार भी झिझकता हुआ चेयरमैन के पीछे-पीछे चला गया।

बाथरूम में एक आदमकद आईना लगा हुआ था। उसकी ओर संकेत कर चेयरमैन ने सत्तार से कहा, “जरा आप इस आईने के सामने आकर खड़े हो जाइए।”

सत्तार चेयरमैन के प्रस्ताव पर चकित था। फिर भी वह आईने के सामने जाकर खड़ा हो गया।

“मिस्टर सत्तार, देखा आपने? कुदरत ने आपको कितना खूबसूरत बनाया है? आपको तो फिल्मों में हीरो होना चाहिए—हीरो। मगर, आप सिर्फ टाइपिस्ट की एक मामूली नौकरी के लिए परेशान हैं।”

चेयरमैन अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। सत्तार भी अपनी जगह पर आ गया।

“मिस्टर सत्तार, फिल्मी पत्रिका तो जरूर ही पढ़ते होंगे आप?” चेयरमैन ने पूछा।

“जी, कभी-कभी पढ़ लेता हूँ।”

“क्या आप बता सकते हैं कि राजकपूर की क्या क्वालिफिकेशन है?”

“मेरी जानकारी में तो उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा भी पास नहीं की है।” सत्तार ने तुरंत जवाब दिया।

“बिलकुल ठीक। देखिए, राजकपूर तो मैट्रिकुलेट भी नहीं हैं, मगर आप तो सेकेंड डिवीजन से बी० कॉम० पास कर चुके हैं। एक नानमैट्रिक होकर भी राजकपूर ने पूरी दुनिया में जो शोहरत पैदा की है, वह कैसे संभव हो सका? उसे यह

शोहरत इसलिए मिल सकी, क्योंकि उसने अपनी प्रतिभा का सही लाइन में उपयोग किया। आप तो बी० कॉम० हैं। ग्रेजुएट हैं। आप क्या नहीं कर सकते इस दुनिया में ! आपको तो राजकपूर से भी ज्यादा ख्याति मिल सकती है इस संसार में।”

सत्तार हक्का-बक्का होकर चेयरमैन की तरफ देखने लगा।

“मिस्टर सत्तार, हम आपकी प्रतिभा को इस कंपनी में बरबाद होता हुआ नहीं देख सकते। आपकी जगह इस कंपनी में नहीं; बल्कि बंबई की फिल्मी दुनिया में है।”

सत्तार को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जिस कुरसी पर बैठा था, उस कुरसी को किसी ने धीरे-से पीछे खींच लिया है। वह क्या बोले, क्या नहीं बोले—उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उसने यह सपने में भी नहीं सोचा था कि कभी उसे इस प्रकार का साक्षात्कार भी देना पड़ सकता है। इस उलझनपूर्ण स्थिति में भी वह बोल पड़ा, “मगर सर, मुझे इस नौकरी की सख्त जरूरत है।”

“आई ऐम सॉरी।” यह बोलकर चेयरमैन ने घंटी का बटन दबा दिया। किर्-किर् की आवाज हुई और चपरासी ने चेंबर का दरवाजा खोल दिया।

सत्तार अभी भी याचनाभरी दृष्टि से चेयरमैन की तरफ देख रहा था।

“आइए साहब।” चपरासी ने ललकारा।

सत्तार चुपचाप बाहर चला गया।

सत्तार धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आ गया। उसे लगा कि वह एकाएक चूड़ा हो गया है और उसके पैर बाहर निकलने में भी असमर्थ हो गए हैं।

बाहर निकलने पर सत्तार को रीटा रास्ते के उस पार आइसक्रीम पार्लर में खड़ी दिखी। वह आइसक्रीम खा रही थी और हँस-हँसकर किसी से बातिया रही थी। मगर उसकी नजर सीढ़ियों की तरफ ही थी। उसने सत्तार को देख लिया। सत्तार ने भी उसे अपनी ओर देखते हुए देख लिया। मिस रीटा ने इशारे से उसे अपनी ओर बुलाया।

सत्तार रास्ता पार कर मिस रीटा के पास पहुँच गया।

“एक आइसक्रीम और देना।” रीटा ने दुकानदार से कहा।

“नहीं, नहीं, मुझे आइसक्रीम नहीं चाहिए।” सत्तार ने रोका।

“अरे लो यार, यह सब तो चलता ही रहता है। इस कंपनी में मेरी नौकरी लग गई है। लो, इसी खुशी में मेरी तरफ से अपना मुँह तो मीठा कर लो।”

यह सुनकर सत्तार को लगा कि किसी ने उसे बहुमंजिली इमारत से नीचे धकेल दिया है और वह नीचे जमीन पर गिरकर छटपटाता हुआ चिल्ला रहा है। उसने बहुत मुश्किल से अपने को काबू में रखा। एक बार तो उसकी इच्छा हुई कि वह दौड़कर फिर उसी कमरे में पहुँच जाए, जहाँ उसका इंटरव्यू हुआ था और वह चेयरमैन की टाई पकड़कर चिल्ला-चिल्लाकर पूछे, ‘अगर मैं हीरो बनने के लायक

हूँ तो तुमने यह नौकरी मिस रीटा को क्यों दे दी ? तुमने उससे भी यह क्यों नहीं कहा—मिस रीटा, तुम्हारी जगह इस कंपनी में नहीं है...तुम तो फिल्मों में हीरोइन बनने के लायक हो और तुम्हारी जगह वंबई में है ?'

: ३४ :

सत्तार को यकीन था कि बिरहाना रोडवाली नौकरी उसे मिल जाएगी। इस विश्वास के कई कारण थे। पहला कारण था कि उसने हिंदी तथा अँगरेजी टंकण में एक भी भूल नहीं की थी। दूसरा कारण था कि वह एक मात्र ऐसा टाइपिस्ट था जो हिंदी तथा अँगरेजी दोनों भाषाओं में समान दक्षता के साथ टंकण कर सकता था। तीसरा कारण था कि जब से उसके अब्बा बउराहा बाबा से आशीर्वाद लेकर आए थे, सत्तार को यह उम्मीद हो चली थी कि अब उसे नौकरी मिलने में देर नहीं है। चौथा कारण था मिस रीटा और अन्य उम्मीदवारों से बातचीत। इन सभी कारणों ने मिलकर सत्तार के आत्मविश्वास को मजबूत कर दिया था।

इंटरव्यू में सिफारिशें चलती हैं, रिश्तें चलती हैं और कभी-कभी ऊपर का हस्तक्षेप भी चल जाता है। कई बार जाति-बिरादरी भी चल जाती है। सुंदरता के कारण लड़कियाँ तो बराबर लड़कों को पछाड़ती ही रही हैं। सत्तार यह सब जानता था। लेकिन उस दिन उसे एक बिलकुल नया अनुभव प्राप्त हुआ। चेयरमैन चाहता तो वह साफ-साफ भी बोल सकता था कि उसकी कंपनी को अब कोई टाइपिस्ट नहीं चाहिए। ऐसा नहीं करके उसने सत्तार का इंटरव्यू लिया—लगभग दस मिनट तक। इंटरव्यू में उसने सत्तार की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की, पर नौकरी उसने बहुत चालाकी से उसे न देकर मिस रीटा को दे दी। सत्तार जब कभी इस घटना पर विचार करता तो उसे लगता उसकी नैया समुद्र की बावली लहरों के थपेड़ों को बर्दाश्त करते हुए किनारे तक तो आ पहुँची, लेकिन वह किनारे पर आकर डूब गई है।

क्या किनारे पर आकर भी कोई नाव डूब सकती है ?

नहीं ऐसा नहीं होता। मगर सत्तार को लग रहा था कि उसके साथ यही हुआ है। चेयरमैन ने बहुत होशियारी के साथ सत्तार का पत्ता काट दिया था। इस घटना को भूलना सत्तार के लिए कठिन हो गया था।

जब-जब सत्तार को यह घटना याद आती, वह बड़ा आहत होता। इस वारदात ने उसके आत्मविश्वास को डिगा दिया। बउराहा बाबा के प्रति जो श्रद्धा उसके हृदय में उत्पन्न हुई थी, वह भी तेजी से कम होने लगी। अब न उसे साधु-महात्माओं के आशीर्वाद पर विश्वास था और न किसी की ईमानदारी पर। कहीं न्याय नामक कोई चीज है, अब वह मानने को तैयार नहीं था। धीरे-धीरे उसके मन में यह बात जड़ पकड़ने लगी कि अब उसे इस जनम में तो नौकरी नहीं ही मिल सकेगी।

इस निराशाजनक स्थिति में उसका ध्यान घूम-फिरकर बराबर उन्नाववालों की तरफ चला जाता या फिर नेताजी की तरफ। वह सोचता कि उन्नाववालों की बात उसे मान लेनी चाहिए। मुमकिन है कि शादी के बाद उसे कोई नौकरी मिल जाए। माना कि उसकी तकदीर खराब है, मगर आनेवाली लड़की का भी तो अपना कोई भाग्य होगा। हो सकता है कि उसकी किस्मत के चलते ही सत्तार की किस्मत खुल जाए। उन्नाववाले दस हजार देने को तैयार भी हैं। अब्बा दस हजार का इंतजाम करने के लिए तैयार हैं ही। इस तरह बीस हजार रुपये का प्रबंध हो जाएगा और शकीला की शादी की जा सकेगी।

अगर सत्तार की नौकरी शादी के बाद भी नहीं लगी तो ? तब क्या करेगा वह ? यदि कहीं वह भी बाल-बच्चों के चक्कर में पड़ गया तब तो उसकी और भी दुर्दशा हो जाएगी।

यह सोचकर सत्तार काँप उठा। वह भीतर-ही-भीतर बोल पड़ा, 'नहीं, नहीं, मैं अभी शादी नहीं कर सकता।'।

तब क्या करे वह ?

वह पुनः चिंता में निमग्न हो गया। सोचते-सोचते उसके सामने नेताजी का चेहरा आ खड़ा हुआ। दुनिया में बस यही एक आदमी उसे नजर आता है, जिसके पास सत्तार की नौकरी का भी समाधान है और शकीला के निकाह का भी।

नेताजी सत्तार को नौकरी दिलवाने को तैयार हैं। मगर उनकी शर्त बस इतनी है कि शकीला की शादी नेताजी के साथ कर दी जाए। नेताजी अब्बास को पूरी तरह चिंतामुक्त करने में सक्षम हैं।

नेताजी का प्रस्ताव मान लेने पर फायदा-ही-फायदा है। न तो सत्तार की नौकरी के लिए किसी को रिश्तत ही देनी होगी और न शकीला के निकाह में किसी को दहेज ही देना होगा। ऐसा करने से अब्बा दस हजार रुपये का इंतजाम करने से भी बच जाएंगे।

लेकिन यह तो खुदगर्ज की बात हुई। वह ऐसा इसलिए सोच रहा है ताकि उसे नौकरी मिल जाए। यह तो अपनी बहन को देकर नौकरी पाना हुआ। अपनी नौकरी के लिए वह शकीला को नजीर खाँ जैसे खूसट को सौंप देना चाहता है। तौबा ! तौबा ! उसने यह कैसे सोच लिया। कितना घिनीता खयाल है उसका। कितना खुदगर्ज है वह !

'मैं खुदगर्ज नहीं हूँ।' सत्तार विरोध में बुदबुदाया।

अगर वह खुदगर्ज नहीं है तो उसने यह बात सोची कैसे ? उस दिन तो जब उसकी अम्मा ने उससे कहा कि उन्नाववाले आए थे, तो वह बिलकुल उखड़ ही गया था। यह समझाने के बावजूद कि उसकी शादी करने पर ही शकीला की शादी मुनहसर है। वह अपनी अम्मा की बात को समझने के बजाय उसे ही लेक्चर पिलाने

लगा। अगर वह अपनी बहन का घर बसाने के लिए अपनी शादी नहीं कर सकता तो वह यह कैसे सोच रहा है कि नेताजी के साथ शकीला का निकाह करवा देना चाहिए ताकि उसे नौकरी मिल सके।

क्या यह खुदगर्जी नहीं है ?

सोचते-सोचते सत्तार का माथा फटने लगा। आज सुबह से उसका यही हाल है। किसी भी काम में उसका मन नहीं लग रहा था। सुबह वह ट्यूशन करने के लिए घर से निकला था। वह मेस्टन रोड गया भी, पर फिर पता नहीं क्या मन में आया कि वह ट्यूशन पढ़ाने न जाकर फूलबाग में आकर बैठ गया। पहले तो यहाँ पहुँचकर उसे थोड़ी राहत मिली। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि यहाँ वह आराम से कुछ देर बिता सकता है। लेकिन कुछ ही देर के बाद उन सवालों ने उसे फिर घेर लिया जिनसे बचने के लिए वह यहाँ आ बैठा था।

सत्तार को कोई किनारा नजर नहीं आ रहा था। अब उसे नौकरी नहीं मिल सकेगी, यह बात उसके मन में घर कर चुकी थी। नौकरी नहीं मिलेगी, मतलब उसकी शादी भी नहीं होगी। उसकी शादी नहीं होगी तो शकीला की शादी भी नहीं हो सकेगी।

तो क्या वह इसी प्रकार बेरोजगार रहेगा ? क्या वह बराबर कुँआरा ही रहेगा ? क्या उसकी बहन शकीला की शादी कभी नहीं होगी ?

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जोर से चिल्लाकर कुछ बोलना चाहता है, मगर वह क्या बोलना चाहता है—यह वह खुद भी नहीं जानता।

□

बेंगा के मिल चले जाने पर सत्तार अपनी अम्माँ के पास बैठ गया। उसकी दादी और बहन वहाँ पहले से ही मौजूद थीं। सत्तार के हाव-भाव से फातिमा ने जान लिया था कि सत्तार कुछ कहना चाहता है। उसने पूछा, “क्या बात है, बेटा ?”

“अम्माँ, मैंने बहुत सोच-समझकर यह फैसला किया है कि मुझे उन्नाववालों के यहाँ शादी कर लेनी चाहिए।” सत्तार ने अपने मन की गाँठ खोल दी।

सत्तार की बात सुनकर फातिमा को बड़ा ताज्जुब हुआ। उससे कहीं ज्यादा ताज्जुब नूरी को हुआ। फातिमा ने पूछा, “अब क्या बात हो गई जो तुम इस शादी के लिए अचानक तैयार हो गए ?”

“ताकि शकीला के हाथ पीले हो सकें।” सत्तार ने बताया।

यह सुनते ही शकीला धीरे-से उठी और आँगन की तरफ चली गई। नूरी और फातिमा दोनों बड़े आश्चर्य के साथ सत्तार की ओर देखने लगीं। उन्हें यह यकीन ही नहीं हो पा रहा था कि यह वही सत्तार है, जिसने उस दिन साफ-साफ इस रिश्ते को ठुकरा दिया था।

“अम्माँ, मैं सच कह रहा हूँ।” सत्तार ने जोर देकर कहा।

तभी नूरी के कानों में किसी के सुबकने की आवाज आई। उसने कहा, “लगता है पड़ोस में कोई सुबक रहा है।”

“नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं है।” सुनने की कोशिश करते हुए फातिमा ने कहा।

“बहू, जरा ध्यान देकर सुनने की कोशिश करो।” नूरी ने जोर देकर कहा।

“हाँ।”

फातिमा अचानक उठ खड़ी हुई। वह आँगन की तरफ दौड़ी। उसका शक सही निकला। बावर्चीखाने के बाहर खड़ी शकीला सिसक रही थी। उसने दुपट्टे से अपने मुँह को ढाँप रखा था ताकि सिसकने की आवाज किसी और को न सुनाई पड़े।

फातिमा के पीछे-पीछे नूरी भी अपने पोते के साथ आ गई।

शकीला की सिसकियाँ और तेज हो गईं।

“क्या बात है, बेटी?” नूरी ने शकीला को अपनी छाती से लगाते हुए पूछा, “तू इस तरह यहाँ छिपकर सिसक क्यों रही है?”

शकीला ने अब रोना शुरू कर दिया। तीनों उसे चुप कराने की कोशिश करने लगे। परंतु शकीला के आँसू थे कि थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

“आखिर तू रो क्यों रही है?” नूरी ने बड़े प्यार से पूछा।

शकीला रोते हुए ही बोली, “दादी, भैया से कह दो कि वह उन्नाववालों के घर अपनी शादी न करे...”

“बेटी, तू यह बात क्यों कह रही है?” नूरी ने पूछा।

“दादी, मेरे लिए मेरे भैया को मत बेचो...” शकीला ने बहुत मुश्किल से यह वाक्य पूरा किया।

नूरी और फातिमा दोनों चक्कर में पड़ गईं कि इस बात की जानकारी शकीला को कैसे हो गई। जिस दिन सत्तार ने यह बात कही थी, उस दिन तो शकीला सामने थी भी नहीं।

“दादी, आप लोग मेरी शादी नेताजी से ही कर दीजिए। ऐसा करने से भैया को नौकरी भी मिल जाएगी और आप लोगों के सिर का एक बोझ भी उतर जाएगा... मैं नेताजी के साथ निकाह पढ़वाने के लिए तैयार हूँ...” यह सुनकर तीनों ठगे-से खड़े रह गए।

शकीला वहाँ से दौड़कर कमरे में चली गई और दादी की चारपाई पर पेट के बल लेटकर रोने लगी।

फातिमा शकीला की ओर जाने लगी तो नूरी ने उसे रोक लिया और कहा, “बहू, उसे रो लेने दो। उसे रोको मत। इससे उसका जी हलका हो जाएगा।”

नूरी ने ही सत्तार से कहा, “जा बेटा, तुम्हारी द्यूशन का समय हो रहा है।”

सत्तार चुपचाप वहाँ से चला गया।

“क्या बात है, बहू?” नूरी ने फातिमा से धीमी आवाज में पूछा।

“अम्माजी, शकीला अब सबकुछ समझने लगी है। उससे न तो अब अपने अब्बा की परेशानी देखी जा रही है और न सत्तार की बेकारी। वह कल से मुझपर जोर डाल रही है कि मैं उसका फैसला उसके अब्बा को सुना दूँ।”

: ३५ :

पिछले कुछ दिनों से बेंगा रात को देर से लौटने लगा था। कभी वह रात को साढ़े दस बजे आता तो कभी ग्यारह बजे। सहालग का मौसम था और एक नए मकान में वायरिंग का काम उसे मिल गया था। मकान काफी बड़ा था और निश्चित अवधि में ही वहाँ का काम पूरा करना था, फलतः वह देर रात तक रुककर काम में लगा रहने लगा। उस नए मकान से मकान मालिक अपनी बेटी की शादी इसी सहालग में करनेवाला था।

फातिमा सत्तार के तख्त पर बैठी स्वेटर बुन रही थी। सामने मेज पर सत्तार की घड़ी टिक्-टिक् कर रही थी। गली में पूरी तरह सन्नाटा था।

फातिमा ने घड़ी की तरफ देखा। ग्यारह बज रहे थे। इस समय तक तो सत्तार के अब्बा आ जाते थे, फिर आज इतनी देर क्यों हो रही है? वह सोचने लगी।

थोड़ी देर बाद ही बरामदे में बेंगा के खाँसने की आवाज हुई। फातिमा ने उठकर तुरंत दरवाजा खोला।

“क्या बात है, तू अब तक जग रही है?” बेंगा ने फातिमा से पूछा।

“नींद नहीं आ रही थी, इसीलिए स्वेटर लेकर बैठ गई थी।” फातिमा ने बताया।

“क्या सत्तार अब तक नहीं लौटा है?” बेंगा ने खाली तख्त को देखते हुए पूछा।

“पटकापुर में उसके किसी दोस्त की शादी है। वह कह गया है कि रात को वह वहीं रह जाएगा।”

“किस दोस्त की शादी है?”

“नाम तो उसने मुझे बताया नहीं पर कह रहा था कि वह लड़का उसके साथ कॉलेज में पढ़ता था।”

“अम्मा और शकीला?”

“दोनों सो रही हैं।”

बेंगा ने एक नजर कमरे को बड़े ध्यान से देखा मानो एक लंबे अर्से बाद उसे देख रहा हो।

“मुंह-हाथ धो लीजिए। मैं खाना निकाल देती हूँ।” फातिमा ने बेंगा के सामने बधना लाकर रख दिया।

बेंगा हाथ-मुंह धोकर आ गया।

इसी बीच फातिमा ने बेंगा का बिस्तर बिछा दिया। बिस्तर के सामने ही उसने खाने की थाली रख दी। बेंगा बिस्तर पर बैठ गया।

“बिसमिल्ला कीजिए।” फातिमा ने कहा।

“आ, तू भी साथ बैठ जा।” बेंगा ने बड़े प्यार से कहा।

“और दिन तो आप साथ में बैठने के लिए कभी नहीं कहते थे फिर आज क्यों बोल रहे हैं?” फातिमा ने तनिक कटाक्ष करते हुए पूछा।

बेंगा ने इस सवाल का कोई जवाब न देकर अपनी नजर कमरे में चारों तरफ दौड़ाई, जैसे वह आँखों के सहारे कहना चाहता हो कि वह क्या करे? यह घर ही इतना छोटा है कि वे दोनों साथ बैठकर खाना भी नहीं खा सकते।

फातिमा चुपचाप आकर बेंगा के साथ बैठ गई। बेंगा ने पहला निवाला फातिमा के मुँह की तरफ बढ़ा दिया। फातिमा ने भी ऐसा ही किया। हर दिन की तरह आज का खाना भी ठंडा ही था। फिर भी आज के खाने में बेंगा तथा फातिमा को एक नया स्वाद मिल रहा था—ऐसा दोनों ने अनुभव किया।

फातिमा ने सत्तार के तख्त पर बिछे बिस्तर को ठीक कर दिया। तख्त इतना चौड़ा था कि इस पर दो आदमी मजे में सो सकते थे। फातिमा ने कहा, “आज आप इसी पर सो जाइए।”

“और तू?”

“मैं आपके बिस्तर पर नीचे सो जाती हूँ।”

“तू भी इसी तख्त पर आ जा।”

“नहीं।”

“तो फिर मैं अपने ही बिस्तर पर सोऊँगा।”

“अच्छा चलिए, पहले आप अपनी टाँगें तो दबवा लीजिए।”

बेंगा तख्त पर लेट गया। फातिमा उसकी टाँगें दबाने लगी। तख्त से चूँ-चूँ की आवाज निकलने लगी, फलतः बेंगा अचानक उठकर बैठ गया। वह बड़बड़ाने लगा, “इस तख्त को यह मंजूर नहीं है कि मैं इस पर सोऊँ।”

यह सुनकर फातिमा को हँसी आ गई।

तख्त से उतरकर बेंगा अपने फर्शवाले बिस्तर पर आ गया। बेंगा के ऐसा करने पर फातिमा एक बार फिर हँस पड़ी। उसकी यह हँसी बेंगा को बड़ी विशिष्ट लगी। बहुत दिनों के बाद बेंगा ने ऐसी हँसी फातिमा के मुखड़े पर देखी थी।

फातिमा पुनः टाँगें दबाने लगी। उसने कहा, “आपको एक बात बताना चाहती हूँ, लेकिन आपको बताऊँ कि नहीं, यही समझ में नहीं आ रहा है।”

“बोल-बोल—क्या बात है?”

बेंगा का यह उत्तर सुनकर फातिमा को तनिक ताज्जुब हुआ। ताज्जुब इसलिए हुआ क्योंकि टाँग दबाते समय रात को फातिमा यदि अपने मियाँ से कुछ भी कहना चाहती तो बेंगा बराबर यही कहता था, “छोड़ो, फिर कभी बता देना। आज मेरी नींद क्यों हराम करना चाहती है तू?” मगर आज बेंगा ने वैसा जवाब नहीं दिया।

“आज आप घर में होते तो देखते कि इस घर में कैसा तमाशा हुआ था?”

“क्यों क्या हुआ था?”

जवाब में फातिमा ने सत्तार और शकीलावाली बातें बेंगा को बता दीं। यह सुनकर बेंगा कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध रह गया। कुछ रुककर उसने कहा, “इसका मतलब यह है कि मेरे दोनों ही बच्चे अब मेरी परेशानियों को खूब अच्छी तरह समझने लगे हैं।”

“हाँ। इसीलिए मुझे कभी-कभी बड़ा डर भी लगने लगता है।”

“ऐसा क्यों?”

“सोचती हूँ—दोनों में से कोई कहीं कुछ कर न बैठे।”

“नहीं-नहीं। तू ऐसा क्यों सोचती है? इस घर में ऐसा कभी नहीं हो सकता।”

“अल्ला करे कि आपके मुँह की बात ही सच हो। फिर भी न जाने क्यों मैं बराबर डरी-सी रहती हूँ।”

“डरने की कोई बात नहीं है। मेरे बच्चे नादान नहीं हैं।”

“आप क्या सोचते हैं?”

“इसमें सोचने की क्या बात है?”

“फिर?”

“सत्तार की शादी उसी समय करूँगा, जब उसकी नौकरी लग जाएगी।”

“तब तक शकीला को क्या आप इसी घर में बिठाए रखेंगे?”

“नहीं। मगर उसकी शादी मैं उस खूसट से कभी नहीं करूँगा।”

“आप जरा दूसरे ढंग से सोचकर क्यों नहीं देखते?”

“किस ढंग से?”

“जैसे, सत्तार अपने दोस्त की शादी में आज गया हुआ है। वहाँ वह देखेगा कि उसका दोस्त दूल्हा बना घोड़ी पर बैठा है, तो क्या उसके मन में यह तमन्ना नहीं जागेगी कि...?”

“जगेगी और जरूर जगेगी। जगनी ही चाहिए। लेकिन सत्तार को यह भी अच्छी तरह मालूम है कि शादी का मतलब है एक नए जिस्म का पूरा-पूरा बोझ उठाना। फिर दो जिस्म मिलकर और भी नए जिस्मों को पैदा करते हैं। उन सबकी

जरूरतों को पूरा करनेवाला ही घोड़ी पर सवार होने का हक रखता है। मेरा बेटा यह बात बहुत अच्छी तरह जानता है और समझता भी है। इसलिए उसका कहना बिलकुल दुरुस्त है कि वह शादी तभी करेगा जब उसकी नौकरी लग जाएगी।”

“इसका मतलब हुआ न कभी नौ मन तेल होगा और न कभी राधा नाचेगी। क्यों यही बात है न?”

“नहीं, यह बात नहीं है।”

“जब सत्तार शादी करेगा ही नहीं, तो शकीला को दहेज में देने के लिए रुपए कहाँ से आएँगे?”

“आएँगे, जरूर आएँगे। समय पर हर काम हो जाएगा। तू इसकी फिक्र मत कर। तू शकीला को बता दे कि उसका बाप अभी जिंदा है। अपने बाप के रहते उसे कोई फिक्र नहीं करनी है।”

फातिमा स्विच ऑफ करने के लिए उठी। बेंगा ने उसकी साड़ी का पल्लू थाम लिया। फातिमा ने पूछा, “यह क्या?”

बेंगा ने कोई उत्तर नहीं दिया।

फातिमा ने स्विच ऑफ कर दिया। कमरे में अँधेरा फैल गया। बेंगा ने साड़ी का पल्लू कसकर अपनी ओर खींचा और फातिमा धीरे-से उसके बिस्तर पर आ गई।

: ३६ :

नजीर खाँ जब नवभारत मिल में घुसा था, तब वह एक साधारण खलासी था। उन दिनों लोग उसे नजीर न कहकर ‘नज्जू’ कहा करते थे। धीरे-धीरे वह तरक्की करता हुआ आगे बढ़ता गया। वक्त ने उसे फोरमैन बना दिया। फोरमैन बनने से पहले ही वह यूनियन में काफी रुचि लेने लगा था। उन दिनों इस मिल में कामरेडों के साथ रहने के कारण लोग नजीर खाँ को भी कामरेड ही बोलने लगे थे। एक बार लोगों के जोर देने पर वह यूनियन के सचिव पद के लिए चुनाव में खड़ा भी हो गया। नजीर को यह जरा भी उम्मीद नहीं थी कि वह चुनाव में जीत जाएगा। मगर तकदीर ने उसका साथ दिया और वह चुनाव जीत गया।

यूनियन का सेक्रेटरी बनते ही नजीर में बदलाव आना शुरू हो गया। चुनाव में जीते उसे मुश्किल से चार महीने ही हुए होंगे कि एक दिन इंजीनियर से उसकी मारपीट हो गई। गलती नजीर की थी, फिर भी उसने इंजीनियर के ऊपर हाथ उठा दिया। यदि उसने केवल हाथ ही उठाया होता तो बात आई-गई हो जाती। लेकिन नजीर ने तो लोहे की एक छड़ से इंजीनियर की जमकर धुनाई भी कर दी थी। नतीजा यह हुआ कि प्रबंधक ने नजीर खाँ को निलंबित कर दिया। इस मामले की पूरी-पूरी जाँच के लिए एक जाँच समिति बनी। नजीर का मजदूरों पर अच्छा

प्रभाव था, फलतः मजदूरों ने नजीर के निलंबन को अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया और मिल में हड़ताल शुरू कर दी। हड़ताल से कंपनी को हर दिन लाखों का नुकसान होने लगा। घबराकर मैनेजमेंट ने यूनियन के साथ समझौता कर लिया। समझौते के अनुसार नजीर खाँ का निलंबन वापस ले लिया गया और उसे फोरमैन का पद दे दिया गया। इससे इंजीनियर ने अपने को बड़ा अपमानित महसूस किया और उसने मिल की नौकरी छोड़ दी।

इस घटना से नजीर का मनोबल बढ़ गया। मिल में देर से आना, अपना काम नहीं करना, मिल से जल्दी निकल जाना, टोकने पर अफसरों से गाली-गलौज करना और कभी-कभी मारपीट भी कर लेना नजीर की दिनचर्या बन गई। कोई कुछ कहता तो उससे वह बड़े गर्व से कहता, “मुझसे उलझना बहुत महंगा पड़ेगा। मेरा नाम नजीर खाँ है। जो मुझसे उलझता है, उसे इस मिल से अपना बिस्तर गोल कर लेना पड़ता है।”

नजीर की अशिष्टता तथा उद्दंडता से अफसर डरने लगे। धीरे-धीरे नजीर से लोगों ने कुछ भी कहना बंद कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि नजीर ने मिल में आना ही बंद कर दिया। वह केवल पहली तारीख को अपनी तनख्वाह लेने के लिए आता और कतार में खड़ा न होकर सीधे ‘कैश रूम’ में घुस जाता और सबसे पहले अपनी तनख्वाह लेकर चला जाता।

फिर नजीर खाँ यूनियन का अध्यक्ष बन गया था और लोग उसे नेताजी कहने लगे।

कामरेड नजीर खाँ ‘नेताजी’ कैसे बन गया, इसकी एक मनोरंजक कथा है।

कामरेड के रूप में नजीर खाँ महासचिव के पद तक पहुँच चुका था। उसने अनुभव किया कि वह कामरेड रहकर अपने लिए कुछ नहीं कर पा रहा है। उसके सामने यह स्पष्ट था कि यदि वह आनेवाले दिनों में भी कामरेड ही बना रह गया तो वह अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकेगा। ऊपर से पार्टी का इतना अधिक नियंत्रण था कि वह टस-से-मस नहीं हो सकता था। इसलिए उसने सोचा कि कुछ कर पाने के लिए यह जरूरी है कि वह उस पार्टी के झंडे के नीचे आ जाए जिसकी हुकूमत लखनऊ और दिल्ली में है। उसने यह भी देखा कि उसकी स्वयं की पार्टी को निकट भविष्य में भी हुकूमत की बागडोर नहीं मिलनेवाली है। अपने सलाहकारों से विचार-विमर्श के बाद कामरेड नजीर खाँ ने अपने साथियों के साथ सत्तारूढ़ पार्टी की सदस्यता स्वीकार कर ली। एक दिन मजदूरों ने देखा कि यूनियन ऑफिस के ऊपर पंजा छाप तिरंगा लहरा रहा था। नई यूनियन को मान्यता देने में मैनेजमेंट ने जैसी तत्परता दिखाई, वह भी आश्चर्यजनक थी। सुनने में आया था कि खुद मुख्यमंत्री ने मैनेजमेंट को ऐसा करने के लिए कहा था।

इस प्रकार कामरेड नजीर खाँ ‘नेताजी’ बन गया। अब उससे कोई ‘कामरेड’

कहता तो वह नुरंत पिनक जाता। नेताजी बनने के बाद नजीर खाँ ने मिल में आना बिलकुल बंद कर दिया। उसे घर बैठे तनख्वाह मिलने लग गई। वह मिल में तभी आता जब उसे किसी मीटिंग में शामिल होना होता या फिर कोई समस्या उठ खड़ी होती।

नजीर खाँ दस दिन कानपुर में रहता तो पंद्रह दिन लखनऊ में गुजारता। वहाँ एक सप्ताह से कम वह कभी नहीं रहता। महीने में एक चक्कर दिल्ली का वह लाजिमी तौर पर लगाता। नेताजी ने 'चमचा पुराण' का अपने जीवन में भरपूर उपयोग किया। इसका मुफल उसके सामने तेजी से आने लगा। ऊपरवाले भी नेताजी की इज्जत करने लगे; क्योंकि सबको यह पता लग चुका था कि नवभारत मिल के दो हजार वोटों का मालिक यही आदमी है। इसके अलावा चार-पाँच हजार मुस्लिम वोटों को बटोर पाने में भी वह सक्षम था।

नज्जू, जो कभी कानपुर की सड़कों पर नंगे पैर पैदल चला करता था, कामरेड बनने पर साइकिल से चलने लगा था। जब वह नेताजी बना तब उसने शुरू के दिनों में एक पुरानी मोटर साइकिल ले ली। अब तो उसके पास चार-चार कारें हैं। एक दर्जन डीलक्स बसों का वह मालिक है। उसके चार-पाँच ट्रक चलते हैं, जिनका काम है नवभारत मिल का कचरा ढोना। कचरा ढोने के नाम पर ट्रकों में क्या-क्या मिल से बाहर जाता है, इसकी सही जानकारी या तो नेताजी को रहती है या फिर उन अफसरों को, जिनके साथ नेताजी की मिलीभगत है।

मगर नजीर खाँ रहता उसी पुश्तैनी मकान में है, जो अब बाहर से खस्ता हाल लगता है। लोग उसे हवेली कहते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह हवेली बाहर से भले ही गिरने-गिरने को लगती है, मगर यह भीतर से काफी मजबूत है। नेताजी ने जान-बूझकर इस हवेली को बाहर से ऐसा रख छोड़ा है। भीतर से यह बहुत ही सुंदर है और इसमें सभी आधुनिक साज-सामान लगे हैं।

नजीर खाँ उस प्रभावशाली व्यक्ति का नाम था जिसके इशारे पर गुंडे कानपुर की किसी भी लड़की को नेताजी के सामने पेश कर सकते थे। लेकिन वह ताकतवर आदमी भी परेशान था। एक बिजली मिस्त्री की बेटी को पाने में उसे कामयाबी नहीं मिल रही थी।

नेताजी ने बेंगा मिस्त्री को कई बार अपने पास बुलवाया, लेकिन बेंगा मिस्त्री कोई-न-कोई बहाना बनाकर हर बार कन्नी काट गया। इस बात को लेकर नेताजी के मन में बड़ा गुस्सा था।

आज नजीर खाँ ने अपने दो खास आदमियों को नवभारत मिल में भेजा। उनसे यह कहा गया कि वे छुट्टी होने पर बेंगा मिस्त्री को कार में बिठाकर ले आएँ।

नजीर खाँ उन्हीं दोनों आदमियों के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था।

वैठक का परदा हिला। उन दोनों आदमियों ने बेंगा मिस्त्री को नेताजी के सामने

पेश कर दिया।

“आइए, आइए।” नजीर खाँ ने व्यंग्यात्मक लहजे में स्वागत किया।

नेताजी का संकेत पाकर दोनों आदमी बाहर चले गए।

“आदाब नेताजी।” बेंगा ने बेमन से अभिवादन किया।

“बैठिए। कहिए, क्या लेंगे—ठंडा या गरम? मेरी समझ में ठंडा ही ठीक रहेगा।” नजीर का लहजा अभी भी व्यंग्यात्मक ही था।

बेंगा मिस्त्री ने बिना किसी उद्वेग के कहा, “मुझे कुछ नहीं चाहिए।”

“ठीक है, मगर बैठिए तो।”

बेंगा एक कुरसी पर चुपचाप बैठ गया।

“घर में सभी खैरियत से हैं?” नेताजी ने आत्मीयता जताते हुए पूछा।

“जी।”

“अम्माँजी कैसी है?”

“ठीक हैं।”

“आपकी बेगम साहिबा?”

“वह भी ठीक हैं।”

“सत्तार मिर्या?”

“ठीक है।”

“किसी नौकरी का इंतजाम हुआ?”

“नहीं।”

“शकीला की शादी कहीं हुई?”

“नहीं।”

“मैं तो पहले से ही जानता था कि आप जरूर किसी परेशानी में होंगे, नहीं तो आप मेरे पास जरूर आते। एक बाप के लिए इससे बड़ी परेशानी की बात और क्या हो सकती है कि उसकी बेटी जवान हो गई हो और उसकी शादी कहीं भी नहीं हो पा रही हो? अगर ऊपर से जवान बेटा भी घर पर बेकार बैठा हो, तब तो उस आदमी की मुसीबतों का कहना ही क्या?”

बेंगा के प्रति नजीर खाँ अपनी सहानुभूति दिखा रहा था कि उसकी हालत पर हँस रहा था, यह बेंगा खूब अच्छी तरह समझ रहा था। इसलिए उसने चुप रहना ही बेहतर समझा।

“आपकी जो हालत है, उसे मैं खूब अच्छी तरह समझ सकता हूँ। आइए, जरा मेरे साथ-साथ आइए।”

नजीर खाँ उठकर खड़ा हो गया। बेंगा अनिच्छा दिखा रहा था, पर उसे नजीर के पीछे-पीछे चलना ही पड़ा।

नजीर बेंगा मिस्त्री के साथ अपनी हवेली के भीतरी हिस्से में पहुँचा। वह बेंगा

को हवेली के भीतरी हिस्से का एक-एक कोना दिखाने लगा। बेंगा ने इस हवेली के बारे में जैसा सुना था, वैसा ही पाया। हवेली भीतर से बहुत ही खूबसूरत लगी हुई थी।

“देखिए, यही है वह जगह जहाँ आकर आपकी बेटी राज करेगी।”

यह सुनते ही बेंगा का हृदय घृणा से भर उठा।

“निकाह के बाद ही मैं सत्तार को मिल में नौकरी दिलवा दूँगा। अगर आपको मुझ पर यकीन नहीं हो तो मैं पहले ही सत्तार को नौकरी दिलवा देता हूँ।”

बेंगा अभी भी चुप था।

“क्या मैं उम्मीद करूँ कि आप अपना फैसला दो-तीन दिनों में मुझे सुना देंगे?”

बेंगा ने साहस बटोरकर कहा, “मेरे घर में यह रिश्ता किसी को भी पसंद नहीं है।”

इस अस्वीकृति से नजीर तनिक भी विचलित नहीं हुआ मानो उसे अटल विश्वास हो कि यह काम तो होना ही है, चाहे जैसे भी हो और जब भी हो। उसने बड़े संयम के साथ कहा, “मुझे कोई जल्दी नहीं है। मैं आपसे तुरंत कोई जवाब नहीं माँग रहा हूँ। घर जाकर आप इस मामले पर एक बार फिर गौर कीजिएगा। मुझे पूरा-पूरा यकीन है कि आप और आपके घर के सभी लोग शकीला को जरूर इस हवेली की बहू बनाना चाहेंगे।”

: ३७ :

आज बुधवार है। बेंगा की साप्ताहिक छुट्टी है। वह घर पर ही है।

शकीला की तबीयत पिछले कई दिनों से खराब थी। फातिमा उसे लेकर अस्पताल गई थी।

सत्तार द्यूशन के लिए गया था।

नूरी पिछले बरामदे पर बैठी चावल साफ कर रही थी। बेंगा अपनी अम्मा के पास आकर बैठ गया। नूरी ने बेंगा का चेहरा देखकर समझ लिया कि वह कुछ कहना चाह रहा है। उसने पूछा, “क्या बात है, बेटा?”

“अम्मा, मैं तुमसे एक राय लेना चाहता हूँ।”

“बोलो, बेटा।”

“नेताजी ने एक दिन मुझे बुलवाया था।”

“तुम्हें उस आदमी के पास नहीं जाना चाहिए था।”

“मैं कहाँ जा रहा था। मैं तो उसकी सूरत भी नहीं देखना चाहता।”

“फिर?”

“छुट्टी के समय गेट पर उसके दो आदमी खड़े थे। मैं बाहर ब्रिकेला तो दोनों ने मुझे घेर लिया और गाड़ी में बिठाकर अपने साथ नेताजी के पास ले गए।”

“उन लोगों से तेरी हाथापाई तो नहीं हुई ?”

“नहीं ।”

“क्या बोल रहा था वह आदमखोर ?”

“वही पुरानी बात। उस दिन उसने मुझे अपनी हवेली भीतर से दिखाई। हवेली दिखाकर कहने लगा—देखिए, यही है वह जगह जहाँ आकर आपकी बेटी राज करेगी ।”

“उसकी हवेली देखकर कहीं तेरा मन डोल तो नहीं गया ?” नूरी ने चावल की थाली एक किनारे सरकाते हुए पूछा ।

“ऐसी बात नहीं है, अम्माँ ?”

“फिर ?”

“फिर भी मन में कई तरह के सवाल पैदा होते रहते हैं ।”

“कैसे सवाल ?”

“यह आदमी मेरे पीछे पड़ गया है। उसे मैं दावत पर बुलाकर बहुत पछता रहा हूँ ।”

“तुझे डर किस बात का है ?”

“अम्माँ, इस आदमी को तुम नहीं जानती हो। यह चाहे तो मुझे हर तरह से परेशान कर सकता है। मिल में इसकी बड़ी धाक है। यह मुझे वहाँ भी तंग करवा सकता है। इसके पास अनेक गुंडे हैं, जिनके लिए किसी की भी बहू-बेटी को उठा लेना बाएँ हाथ का खेल है ।”

“यानी तू डरकर यह चाहता है...”

“नहीं अम्माँ, मैं ऐसा कभी नहीं चाहता ।”

“तो ?”

“बस, मन में यही बात आती है कि...”

“हाँ, हाँ, बोल...तू रुक क्यों गया ?”

“अगर किसी दिन कोई ऐसी-वैसी बात हो गई तो मैं अपना चेहरा कहीं भी दिखाने लायक नहीं रह जाऊँगा ।”

“मैं समझ गई। तू उस खूसट से डरने लगा है। तू डरकर यह चाहता है कि शकीला उसके हवाले कर दी जाए। क्यों यही बात है न ?”

“मुझे तो इसके सिवा और कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है...और इतना तो है ही कि शकीला को वहाँ कोई तकलीफ नहीं होगी...सत्तार की बेकारी भी दूर हो जाएगी...”

“तूने अपनी बीवो से पूछा है ?”

“हाँ ।”

“वह क्या कहती है ?”

“वह तो एक ही बात कहती है—शकीला की शादी कर दो, चाहे जैसे भी हो।”

“यानी तुम दोनों की राय एक ही है।”

बेंगा चुप रहा।

“जब तुम दोनों की यह मरजी है तो मैं क्या कर सकती हूँ? जो जी में आए, वही करो। लेकिन मेरी नजर में ऐसा करना गलत होगा।” नूरी ने साफ-साफ कहा।

“मैं तो सिर्फ शकीला का सुख देख रहा हूँ।”

“शकीला का सुख?”

“हाँ, अम्माँ।”

“तूने यह कैसे समझ लिया कि शकीला वहाँ सुखी रहेगी?”

“वहाँ किसी भी चीज की कमी नहीं होगी उसे।”

“शायद तू नहीं जानता कि औरत को किस सुख की जरूरत होती है।”

बेंगा फिर चुप हो गया।

“जिस आदमी के घर में पहले से ही तीन बीवियाँ हैं और जिसके ताल्लुक़ात पता नहीं किस-किसके साथ रह चुके हैं, वह क्या समझेगा औरत के सुख को। उसके जैसे लोग तो औरत को अपने पैर की जूती ही समझते हैं। अभी उसके घर में तीन जूतियाँ हैं और अब एक जूती और बढ़ जाएगी। कभी वह यह जूती पहन लेगा और कभी वह। जिस दिन किसी जूती से उसका मन भर जाएगा, वह तीन बार तलाक़-तलाक़ मुँह से निकालेगा और औरत की सारी कहानी खतम हो जाएगी। क्या तू अपनी बेटी को ऐसा ही सुख दिलवाना चाहता है?”

बेंगा निरुत्तर-सा चुप बैठा रहा।

“बेटा, मैंने इस दुख को झेला है। मैं जानती हूँ कि यह तलाक़ का अल्फ़ाज क्या होता है। तलाक़ तो ऐसी दोधारी तलवार होती है जो औरत को कहीं का भी नहीं रहने देती। मैं इस तलवार से एक बार काटी जा चुकी हूँ। इसलिए मैं तो कभी नहीं चाहूँगी कि मेरी शकीला किसी के पैर की जूती बनकर महल में रहे और किसी दिन तलाक़ की तलवार से हलाक़ कर दी जाए।”

“अम्माँ, मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि आखिर मैं क्या करूँ? जब-जब इस मसले पर सोचता हूँ, मेरा माथा फटने लगता है।”

यह बोलकर बेंगा उठा और घर के बाहर निकलने लगा।

“बेटा, इस समय तू कहाँ जा रहा है?”

“कुछ काम है।”

“खाना खाकर जाता।”

“उधर ही कुछ खा लूँगा।”

नूरी अच्छी तरह जानती थी कि अब बेंगा को रोका नहीं जा सकता ।
बेंगा चला गया ।

नूरी ने चावल की थाली फिर उठा ली ।

वह सोचने लगी, 'मैं कहाँ पैदा हुई थी ? कहाँ-से-कहाँ आ गई ? माँ-बाप ने मुझे अब्बास के हाथ बेच दिया और उन्होंने सदा के लिए मुझे भुला दिया । किसी ने पलटकर यह जानने की कोशिश नहीं की कि उनकी बेटी जिंदा है या मर गई । उन्होंने मुझे ऐसे बेच दिया जैसे कोई कुंजड़ा सब्जी बेचकर उसके बारे में जरा भी नहीं सोचता ।

'इमली टोली आकर मैं इमली टोली की ही बनकर रह गई । इमली टोली की वह छोटी-सी झोंपड़ी ही मेरी दुनिया थी । हर साल बच्चे पैदा करने की मैं मशीन बन गई । उस आदमी ने मुझे बराबर मशीन ही समझा । उसकी नजर में मैं काम करनेवाली एक ऐसी मशीन थी, जो उसे जिस्मानी सुख भी पहुँचाती थी और हर साल बच्चे भी देती थी । मशीन की तरह जीते हुए भी मुझे कोई शिकायत नहीं थी । उस हाल में रहते हुए भी मैंने सब कुछ सहा । पर मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकी कि मेरी कोई सौत भी हो । जब मैंने अपनी सौत का विरोध किया तो मेरे मियाँ ने सिर्फ़ तीन बार तलाक़...तलाक़...तलाक़...बोल दिया और पिछली सारी बातें खतम हो गई । न मैं उसकी बीवी रही और न वह घर ही अपना रहा । इन तीन हरफों में इतनी ताकत है कि देखते-ही-देखते उन्होंने मेरा सबकुछ मुझसे छीन लिया ।'

इस समय नूरी को भगत मौसा और भगताइन मौसी की याद सताने लगी । दोनों के चेहरे उसकी आँखों के सामने नाचने लगे । उसने मन-ही-मन यह हिसाब लगाकर देखा कि वह कितने साल पहले कानपुर आई थी । राँची से आने के बाद नूरी ने चार-पाँच चिट्ठियाँ भगत-भगताइन के पास भिजवाई थीं । यहाँ से आखिरी चिट्ठी तब गई थी, जब बेंगा की शादी हुई थी । उस चिट्ठी का जवाब भी आया था और मौसा-मौसी ने फातिमा के लिए एक सुंदर साड़ी पार्सल से भिजवाई थी । साड़ी के भीतर से ग्यारह रुपए के नोट भी निकले थे । उसके बाद उनकी कोई खबर नहीं मिली । इधर से भी उनके पास कोई चिट्ठी-विट्ठी नहीं भेजी जा सकी ।

'लगता है कि मौसा-मौसी अब इस दुनिया में नहीं हैं ।' नूरी के मन ने उससे कहा । यह सोचकर ही नूरी काँप उठी । उसे लगा कि उसका सोचना बिलकुल सही है । दोनों अब जीवित नहीं होंगे । उसे मलाल होने लगा कि वह क्यों नहीं एक बार दोनों से मिल आई । वह तो जाना चाहती थी । उसने कई बार इसकी चर्चा बेंगा से की भी थी । लेकिन, जैसे-जैसे समय गुजरता चला गया, बेंगा की आर्थिक परेशानियाँ बढ़ती चली गई । सिर्फ़ तनख्वाह से घर चलाना मुश्किल था, इसलिए वह मिल में काम करने के बाद भी चार-पाँच घंटे बाहर काम करने लगा । उस पर धुन सवार

थी कि वह अपने दोनों बच्चों को पढ़ाएगा-लिखाएगा। उन्हें ऊँची तालीम दिलवाएगा। उसने कभी दिन को दिन और रात को रात नहीं समझा। यह बेंगा भी कितना अभाग निकला! बेचारा बचपन से ही खट रहा है और आज भी खटता चला जा रहा है। ऐसे में नूरी उससे क्या कहती? उसने बार-बार बोलना चाहकर भी अपने को रोके रखा। वह यह भी जानती थी कि यदि वह बेंगा से एक बार कहती कि मैं कुछ दिनों के लिए राँची जाना चाहती हूँ, तो बेंगा दूसरे ही दिन अपनी अम्माँ को राँची भेजने की पूरी तैयारी कर डालता। लेकिन अब तो यह भी संभव नहीं रह गया है। अब राँची जाकर होगा भी क्या? वहाँ मौसा-मौसी तो मिलेंगे नहीं। शायद इमली टोली में उसे कोई पहचाने भी नहीं। अब तो इमली टोली भी बदल गई होगी।

नूरी की आँखों के सामने वह झोंपड़ी आ गई, जिसे कभी वह अपना घर कहती थी। उसने एक झटके से उस झोंपड़ी को अपने जेहन से निकाल बाहर किया। ऐसा करने में उसकी आँखें अनायास ही गीली हो गई।

नूरी अब उस झोंपड़ी के बारे में सोचना भी नहीं चाहती।

आदमी की जिंदगी भी क्या चीज होती है? खासकर औरतों की जिंदगी। लोग ठीक ही कहते हैं कि औरत पानी होती है। उसे जिस बरतन में डाल दिया जाता है, वह उसी बरतन का आकार ग्रहण कर लेती है। मैं हिंदू परिवार में पैदा हुई थी। मुझे एक मुसलमान के हाथ बेच दिया गया और मैं मुसलमान हो गई। अब तो मुझे कोई पहचान भी नहीं सकता कि मैं कभी हिंदू भी थी। मगर एक बात है। पानी चाहे जिस बरतन में रहे, होता वह पानी ही है। उसमें पानी की खासियत बराबर बनी रहती है। शायद इसी खासियत के कारण उसने अपनी अंतिम इच्छा की जानकारी अपने बेटे बेंगा को बहुत पहले ही दे दी है। नूरी की अंतिम इच्छा यही है कि मरने पर उसका दाह-संस्कार किया जाए और उसकी राख तथा अस्थियाँ गंगा में बहा दी जाएँ; क्योंकि औरत पानी ही होती है, इसलिए उस पानी को पानी में ही मिल जाना चाहिए। जिंदगी-भर तो औरत की मिट्टी खराब होती ही है फिर उसे अंत में भी मिट्टी में क्यों मिलाया जाए?

: ३८ :

बेंगा की इच्छा थी कि वह अपनी बेटी शकीला की शादी बहुत दूर न करे। यही वजह है कि अब तक वह कानपुर के आस-पास ही लड़के तलाश करता रहा था। घर के सभी लोग यही चाहते थे कि लड़की नजदीक रहेगी तो ज्यादा अच्छा रहेगा। समय-असमय उसकी जानकारी मिलती रहेगी। जरूरत पड़ने पर तुरंत बुलाया जा सकेगा या फिर उससे जाकर मिला जा सकेगा। मगर अब तक लड़के की तलाश में बेंगा असफल रहा था। इसका कारण लड़कों की कमी नहीं, बल्कि

रूपयों का अभाव था ।

सच पूछा जाए तो अब तक उसे ऐसा कोई लड़का मिला भी नहीं था, जो उसे एकदम पसंद हो और जिसे पाने के लिए वह बेताब हो उठे । कोई लड़का पान की दुकान करनेवाला मिलता तो कोई किसी दूसरे की दुकान में नौकरी करनेवाला मिलता । कोई टैक्सी ड्राइवर मिलता तो कोई खलासी । कोई किसी बस का कंडक्टर मिलता तो कोई किसी सिनेमा का गेटकीपर । ज्यादातर लड़के ऐसे मिलते, जो बेकार होते । फिर भी उन सबकी कीमतें सुन-सुनकर बेंगा की आँखें फैल जातीं ।

जमाल बेंगा के साथ ही मिल में काम करता था । जमाल क्लर्क था । दोनों हमउम्र थे । दोनों में अच्छी पटती भी थी । दोनों की दोस्ती का राज यह था कि जमाल का बेटा इरफान, बेंगा के बेटे सत्तार के साथ कॉलेज में पढ़ता था । बेंगा ने एक मामूली बिजली मिस्त्री होकर भी अपने बेटे सत्तार को बी० कॉम० और अपनी बेटी को हाईस्कूल तक की तालीम दिलवाई थी, इसलिए जमाल बेंगा की काफी इज्जत करता था । वह बराबर यही कोशिश करता था कि दफ्तर के किसी भी काम में बेंगा को कोई दिक्कत न हो । इसका नतीजा यह हुआ कि दोनों एक-दूसरे के काफी समीप आ गए । सत्तार और इरफान तो दोस्त थे ही । अब बेंगा और जमाल भी एक-दूसरे के दोस्त बन गए थे । सत्तार अपनी परेशानियाँ अपने दोस्त इरफान को बताता और वह बात किसी-न-किसी रूप में जमाल तक भी जा पहुँचती । जमाल को यह बराबर पता चलता रहता कि बेंगा लड़के की तलाश में पिछले दो-तीन वर्षों से परेशान है । बेंगा ने उससे कभी कुछ कहा नहीं था, पर वह बेंगा की हर कठिनाई से वाकिफ था ।

खुदा की मेहरबानी से जमाल के पाँच लड़के थे । सब शादी-शुदा थे । लड़की का बाप होना क्या होता है, उस दुख को वह जानता ही नहीं था । लेकिन बेंगा को देखकर अब वह भी यह समझने लगा था कि लड़की का बाप होना आज के जमाने में जुर्म हो गया है । एक ऐसा जुर्म, जिसकी सजा लड़की के बाप को ज़िंदगी-भर भुगतनी पड़ती है ।

जमाल को एक लड़के की जानकारी मिली । लड़का दिल्ली का था और एक बैंक में क्लर्क था । देखने में वह अच्छे डील-डौल का और सुंदर था । लड़के का बाप दिल्ली का पुराना वारिशदा था । चाँदनी चौक की एक गली में उसका अपना मकान था, जहाँ उसने स्टेशनरी की एक दुकान खोल रखी थी । जमाल को यह पता चला कि वह अपने बेटे के लिए एक सुंदर लड़की की तलाश में है । उसकी कोई माँग भी नहीं है । उसकी चाहत यह है कि उसके घर में जो बहू आए, वह उसके बेटे की तरह ही खूबमूरत हो ।

जमाल ने इस लड़के के बारे में बेंगा मिस्त्री को सुबह जानकारी दी और शाम को दोनों दिल्ली की रेलगाड़ी पर सवार हो गए ।

दिल्ली पहुँचकर दोनों ने यह निश्चय किया कि सबसे पहले लड़के को देख लिया जाए। लड़का जिस बैंक में काम करता था, वह बैंक शाहदरा में था। दोनों वहाँ गए।

लड़का 'कैश काउंटर' पर बैठा था। जमाल और बेंगा ने दूर खड़े होकर लड़के को काम करते हुए देखा। उसके काम करने और ग्राहकों से पेश आने के तरीके से दोनों बहुत प्रभावित हुए। जमाल ने बेंगा के कान में कहा, "लगता है तुम्हारी बेटी शकीला के लिए ही खुदा ने इस लड़के को अब तक कुँआरा रख छोड़ा है।"

बेंगा को जमाल की इस बात से बहुत खुशी मिली। वह बोला, "आपके मुँह में घी-शक्कर।"

लड़के के बाप ने दोनों को रात के समय बातचीत के लिए बुलाया। उस समय तक उसकी दुकान भी बंद हो जाती थी।

लड़के के बाप का नाम था मुहम्मद बदरुद्दीन, पर वह अपने मुहल्ले में सबके बीच बदर भाई के नाम से जाना जाता था। उसके बेटे का नाम मुहम्मद कमरुद्दीन था, लेकिन वह भी अपने बाप की ही तरह कमर भाई के नाम से पुकारा जाता था।

बदर भाई ने खाने का बढ़िया इंतजाम किया था। पहले तो उसने जमाल और बेंगा मिस्त्री को खाना खिलवाया और फिर वह अपना फर्शी हुक्का लेकर बातचीत के लिए बैठ गया। हुक्का बता रहा था कि बदर भाई के घर में हुक्का पीने की बड़ी पुरानी परिपाटी रही है। बदर भाई बीच-बीच में हुक्का गुड़गुड़ाता जाता और बातचीत भी करता चलता। उसने पूछा, "सबसे पहले आप दोनों यह बताएँ कि लड़का आपको पसंद है या नहीं?"

"लड़का पसंद है।" बेंगा और जमाल दोनों ने जवाब दिया।

"चलिए, एक काम तो पूरा हो गया। बेंगा भाई, आप यह बताइए कि आप शादी कब कर सकते हैं?"

"आप जब कहें," बेंगा ने कहा, "मगर, क्या आप पहले लड़की को देख लेना पसंद नहीं करेंगे?"

"आप समझिए कि हमने लड़की देख ली है और वह हमें काफी पसंद है।" बदर भाई का जवाब था।

इस जवाब ने बेंगा मिस्त्री को चक्कर में डाल दिया। उसने बड़े ताज्जुब से पूछा, "आपने मेरी बेटी को कैसे देख लिया?"

बदर भाई ने मुसकराकर जमाल की तरफ देखते हुए कहा, "जमाल मियाँ मुझे झूठ नहीं बोल सकते। मुझे इनकी बात पर यकीन है।"

बेंगा मन-ही-मन जमाल के प्रति कृतज्ञ हो उठा। उसे अब तक यह मालूम नहीं था कि जमाल मियाँ बदर भाई के केवल परिचित ही नहीं, बल्कि विश्वासपात्र भी हैं।

“तब तो आप जब भी कहें, मैं शादी के लिए तैयार हूँ।” बेंगा ने बड़े उत्साह के साथ जवाब दिया।

“बेंगा भाई, कमर मेरा इकलौता बेटा है। हमारे घर में कोई बेटी भी नहीं है। आपकी लड़की को यहाँ कोई तकलीफ नहीं होगी। उसे हम अपनी बेटी की तरह ही रखेंगे। अल्लाह का दिया हुआ मेरे पास सब कुछ है। मेरी अपनी अच्छी दुकानदारी है। बेटा बैंक में नौकरी करता है। मेरे मन में किसी तरह का कोई लालच भी नहीं है कि मैं आपसे यह कहूँ कि मुझे यह चाहिए और वह चाहिए।”

बेंगा ने हुँकारी भरी।

“मैं तो सिर्फ इतना चाहता हूँ कि शादी जरा धूम-धाम से हो।”

“वाजिब है। होनी चाहिए।” बेंगा ने समर्थन किया।

“इस गली में मेरे बेटे कमर को सभी जानते हैं। लोग कमर को चाहते भी खूब हैं, चाहे वे हिंदू हों या मुसलमान। इसलिए मैं बहुत काट-छाँट भी करूँगा तो कम से कम एक सौ बाराती तो जरूर ही बारात में शामिल होंगे।”

“जी।”

“मैं कुछ भी नहीं चाहता। सिर्फ इतना चाहूँगा कि आप बारातियों के आने-जाने का भाड़ा अपने सिर पर ले लें।”

बेंगा ने मन-ही-मन हिसाब लगाकर देखा कि इस काम में ही कम से कम दस हजार का खर्च है। फिर भी उसने अपनी ओर से कुछ न बोलकर केवल ‘जी’ कह दिया।

“मैं कुछ भी नहीं चाहता। मैं सिर्फ यही चाहूँगा कि बारातियों का इस्तकबाल खूब अच्छी तरह हो।”

“जी।”

“और मैं क्या बोलूँ? आप अपनी बेटी की शादी कर रहे हैं, इसलिए आप तो जानते ही होंगे कि शादी में बेटी को क्या-क्या दिया जाता है। आप जो कुछ भी देंगे, अपनी बेटी को ही देंगे।”

“जी।”

“रही बात मेरे बेटे की। वह आपका दामाद बननेवाला है। मैं नहीं समझता कि आप उसे शिकायत का कोई मौका देना चाहेंगे।”

“जी।”

“और मैं क्या कहूँ? मैंने तो पहले ही आपको बता दिया है कि अल्लाह के फजल से हमारे पास सब कुछ है। उसने हमें सिर्फ बेटी नहीं दी है, सो हम चाहते हैं—अपनी बहू की शक्ल में एक बेटी... बाकी तो आप खुद समझदार हैं। आप क्यों चाहेंगे कि आपकी इज्जत को कोई बट्टा लगे?”

“जी।”

“बस, मुझे और कुछ भी नहीं कहना है। अब फैसला आपके ऊपर है।”

बेंगा मिस्त्री को दिल्लीवाला लड़का बेहद पसंद आ गया था, मगर उस लड़के का बाप बदर भाई बड़ा काइयाँ निकला। ‘मैं कुछ भी नहीं चाहता’ से वह अपनी बात शुरू करता और बहुत कुछ बोल जाता। बेंगा मिस्त्री ने हिसाब लगाकर देखा कि बदर भाई का ‘कुछ भी नहीं चाहता’ भी कम-से-कम पचास हजार की माँग कर रहा था। वह इतने रुपए कहाँ से लाएगा? अगर उसके पास चालीस हजार रुपए भी होते तो वह शकीला की शादी कब की कर चुका होता और आज उसका बेटा सत्तार भी कहीं नौकरी कर रहा होता।

दिल्लीवाले लड़के को पाना मुश्किल था बेंगा के लिए। मगर लड़का बेंगा के दिल में पैठ गया था। लड़का तो लायक था ही, घरवाले भी अच्छे थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि दिल्ली जैसी जगह में उनका अपना मकान था और वह भी चाँदनी चौक के इलाके में। यह जाहिर था कि इस घर में जाकर शकीला को कोई तकलीफ नहीं होगी। वह इस घर में बेटी भी होगी और बहू भी।

लड़के की तसवीर देखकर सभी बहुत खुश थे। नूरी और फातिमा दोनों की यही राय थी कि इस लड़के को हाथ से नहीं निकलने देना चाहिए।

शकीला तो मन-ही-मन दिल्लीवाले लड़के को अपना मान बैठी थी। उसने तसवीर देखी और उसे अपना दिल दे बैठी।

सत्तार ने एक बार फिर अपनी अम्माँ से कह दिया, “अब्बा से कह दो, वह इस लड़के को हाथ से न निकलने दें। इस लड़के को पाने के लिए अगर जरूरत हो तो मैं अभी उन्नाववालों के यहाँ शादी करने को तैयार हूँ।”

सारी बातें ठीक थीं। केवल बेंगा जान रहा था कि दिल्लीवाले लड़के को पाना उसके लिए आसमान से तारे तोड़ने के बराबर था। वह इतनी मोटी रकम का इंतजाम कहाँ से करे? उसके पास अगर कोई जमीन-जायदाद होती तो वह इस लड़के को अपना दामाद बनाने के लिए उसे बिना कुछ सोचे-समझे बेच डालता।

फिर भी बेंगा अभी दिल्लीवालों को ‘नहीं’ में जवाब देने को तैयार नहीं था।

: ३६ :

बेंगा मिस्त्री ने जमाल को एक काम सौंपा था कि वह कार्यालय से जरा पता लगाए कि प्रोविडेंट फंड से उसे कितने रुपए कर्ज के रूप में मिल सकते हैं।

जमाल ने एकाउंट देखा। बेंगा मिस्त्री के नाम पर बीस हजार से कुछ अधिक रुपए जमा थे। इसमें आधी रकम बेंगा ने जमा कराई थी और आधी रकम मिल की ओर से जमा की गई थी। चूँकि बेंगा की नौकरी काफी पुरानी थी, इसलिए बेंगा को जमा रकम का पचहत्तर प्रतिशत कर्ज में मिल सकता था। यानी बेंगा पंद्रह हजार रुपए कर्ज पाने का हकदार था।

टिफिन के समय जमाल ने यह हिसाब बेंगा को अच्छी तरह समझा दिया। बेंगा ने दुखी होकर जमाल से पूछा, “मेरे नाम जितने रुपए इस एकाउंट में जमा हैं, क्या वे पूरे के पूरे मुझे नहीं मिल सकते?”

“नहीं।” जमाल ने बताया।

“क्यों?”

“यह नियम है।”

“क्या?”

“पूरे-के-पूरे रुपए सिर्फ दो हालत में दिए जाते हैं।”

“किस-किस हालत में?”

“अगर कोई रिटायर हो जाए, तो उसे पूरे-के-पूरे रुपए मिल जाते हैं।”

“और?”

“या फिर कोई नौकरी के दौरान मर जाए।”

“जब आदमी मर ही जाएगा, तो मिलवाले उसे रुपए कैसे देंगे?”

“ऐसी हालत में रुपए मरनेवाले की बेवा को दे दिए जाते हैं।”

“अच्छा।” बेंगा को यह जानकारी आज पहली बार मिली।

“जमाल भाई, दिल्लीवाला लड़का हमारे घर के सभी लोगों को बेहद पसंद है। सभी यही कह रहे हैं—यह लड़का हाथ से निकलना नहीं चाहिए। मगर, इस लड़के को पाने के लिए कम से कम पचास हजार की जरूरत है। मान लीजिए कि मैं मिल से पंद्रह हजार कर्ज ले लेता हूँ, लेकिन बाकी पैंतीस हजार रुपए और कहाँ से आएँगे?”

“आपने अपना बीमा तो करवाया है न?” जमाल को अचानक यह सवाल सूझ गया।

“हाँ, करवाया तो है।”

“कितने का है?”

“पच्चीस हजार का है।”

“आपका बीमा कितने दिनों से चल रहा है?”

“करीब पंद्रह साल से।”

“सारी किश्तें चुकता हैं?”

“बिलकुल समय पर।”

“यह बीमा और कितने दिन चलने को है?”

“दस साल।”

“तो मुमकिन है कि आपको बीमा कंपनी से दस-बारह हजार का कर्ज मिल जाए।”

“कर्ज?”

“हाँ, कर्ज ।”

“कर्ज क्यों ? वहाँ तो मेरे ही रुपए जमा हैं न ?”

“हाँ, यह बात तो ठीक है कि बीमा कंपनी में आपके ही रुपए जमा हैं । लेकिन, अगर आप मरने के पहले या बीमा खतम होने के पहले रुपया निकालना चाहें, तो कंपनी आपको कर्ज दे सकती है और इसके लिए आपको नौ फीसदी की दर से सूद भी देना पड़ेगा ।”

“वाह ! कमाल की बात है । बीमा कंपनी मेरे ही जमा रुपए मुझे कर्ज में देगी और इसके लिए मुझसे नौ परसेंट सूद भी लेगी ? यह कहाँ का अंधा नियम है ?” बेंगा ने जरा क्रोध में यह बात कही ।

“यही नियम है ।”

“भाड़ में जाए ऐसा नियम ।” बेंगा को ताव आ गया । कुछ देर तक वह भीतर-ही-भीतर उबलता रहा ।

“बेंगा भाई, आप चाहें तो दस-बारह हजार का इंतजाम ऐसे भी हो सकता है ।” जमाल ने समझाया ।

“जमाल भाई, मान लीजिए कि मैं नौ परसेंट सूद पर रुपए लेने को तैयार हो जाऊँ तब भी तो मेरा काम नहीं बन पाएगा । मुझे पचास हजार की जरूरत है और इंतजाम सिर्फ पच्चीस हजार का हो रहा है । बाकी पच्चीस हजार रुपए और कहाँ से आएँगे ?”

“घर में सोना-चाँदी के कुछ गहने तो होंगे ही ?”

यह सुनकर बेंगा हँस पड़ा । उसने कहा, “जमाल भाई, आपने यह भी खूब पूछा ! भला चील के घोंसले में गोشت का टुकड़ा मिल सकता है क्या ?”

“मतलब ?”

“मतलब तो बहुत साफ है ।”

“क्या ?”

“मैं जो बचा सकता था, वह तो दोनों की पढ़ाई-लिखाई में लगा चुका हूँ । फिर मेरे घर में सोने-चाँदी के गहने कहाँ से आएँगे ?”

“आपके पास ऐसी कोई चीज है, जिसे आप गिरवी रख सकें ?”

“नहीं, कुछ भी नहीं ।”

“क्या सेठ टेकचंद आपकी कोई मदद नहीं करेंगे ?”

“सेठ टेकचंद बहुत जोर मारेंगे तो यही कोई चार-पाँच हजार तक दे सकते हैं और क्या ?”

“इससे ज्यादा नहीं देंगे वह ?”

“अगर मैं उनसे और ज्यादा की माँग करूँगा तो सेठजी मुझसे साफ-साफ कह देंगे—भाया, अगर तेरा काम इतने से चाल्ले है तो बोल, नहीं तो तू मेरा काम

छोड़कर कहीं भी जा सके है।—इस तरह सेठजी अपने चार-पाँच हजार भी बचा लेंगे।”

“मगर, आप तो उनके यहाँ वर्षों से काम कर रहे हैं?”

“इससे क्या होता है?”

“सेठजी को इसका तो खयाल रखना ही चाहिए?”

“क्यों?”

“यह तो इनसानियत का तकाजा है।”

“यदि हमारे सेठ टेकचंद इनसानियत का तकाजा मानते होते तो वह आज सेठ नहीं कहलाते। अगर वह मुझे पाँच हजार भी दे देंगे तो मैं समझूँगा कि उन्होंने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की है।”

“तब और क्या किया जा सकता है?”

“जमाल भाई, मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा है। लगता है कि यह लड़का भी हाथ से निकल ही जाएगा।”

जमाल भी सोच में पड़ गया। बेंगा तो चिंतित था ही। कुछ देर तक चुप रहने के बाद जमाल ने कहा, “बेंगा भाई, अगर आप इतने रुपयों का इंतजाम नहीं कर सकते हैं, तो ज्यादा अच्छा यही है कि दिल्लीवाले लड़के का खयाल आप अपने जेहन से निकाल दें।”

“लगता है कि यही मार सहनी पड़ेगी। मगर सवाल यह भी तो है कि शकीला के लिए और दूसरा लड़का कहाँ खोजूँगा? इससे अच्छा लड़का तो मिलने से रहा।”

“उसकी फिक्र आप मत कीजिए।”

“लड़की का बाप मैं हूँ तो फिक्र कौन करेगा?”

“मैं जो हूँ—लड़की का चाचा।”

“क्या आपकी निगाह में और भी कोई लड़का है?” बेंगा को आशा की एक नई किरण दिखाई दी।

“हाँ, है एक लड़का। इसके साथ शकीला की जोड़ी खूब जमेगी।”

“कौन है वह लड़का?”

“लड़का इलाहाबाद का है।”

“पढ़ा-लिखा है?”

“हाँ।”

“कितना?”

“शकीला की तरह वह भी हाईस्कूल पास है।”

“क्या करता है?”

“यूनिवर्सिटी में चपरासी है।”

“सरकारी नौकरी है क्या ?”

“सरकारी ही समझो ।”

“घर ?”

“घर अपना है ।”

“घर में और कौन-कौन लोग हैं ?”

“अब्बा, अम्मी, दादा, दादी और एक बहन । यों तो चार बहनें और थीं, मगर सबकी शादी हो चुकी है ।”

“भाई ?”

“तीन भाई और थे, जो पाकिस्तान चले गए हैं । अब उनका यहाँ आना-जाना नहीं होता है ।”

“लड़का कैसा है ?”

“देखने-सुनने में अच्छा है ।”

“इन लोगों की क्या माँग है ?”

“इनकी कोई माँग नहीं है ।”

“यह तो बड़े ताज्जुब की बात है कि इनकी कोई माँग ही नहीं है ?”

“हाँ, इनकी कोई माँग नहीं है ।”

“अच्छा ।”

“लड़के का बाप अपने बेटे की शादी बिना कुछ लिए-दिए करना चाहता है ।”

“वाह !”

“लेकिन वह अपने बेटे की शादी वैसे ही घर में करना चाहता है, जहाँ उसकी बेटी के लायक एक लड़का भी हो ।”

“यानी यह आदमी गोलहट ब्याह करना चाहता है ?”

“हाँ । अगर आप चाहें तो मैं इनसे बातचीत कर सकता हूँ । यह सौदा आपके लिए काफी अच्छा रहेगा ।”

“वह कैसे ?”

“बेंगा भाई, इस शादी में न आपको कुछ देना होगा और न लेना होगा ।”

“सो तो ठीक ही है, जमाल भाई । लेकिन इस तरह का रिश्ता मुझे पसंद नहीं आता । इस रिश्ते को मेरी अम्माँ भी शायद ही पसंद करे ।”

“बेंगा भाई, पहले आप अपने घर में सलाह-मशविरा कर लीजिए ।”

“एक मुसीबत और है ।”

“क्या ?”

“सत्तार ने तो एक तरह से कसम ही खा रखी है कि जब तक उसे नौकरी नहीं मिलेगी, वह अपनी शादी नहीं ही करेगा । इसलिए मुझे शक है कि वह इस तरह के रिश्ते को पसंद भी कर पाएगा ।”

“इसका भी एक उपाय है।”

“क्या?”

“आप प्रोविडेंट फंड से रुपए निकलवा लीजिए। पंद्रह हजार यहाँ से मिल जाएँगे। पाँच हजार आप अपने सेठ से माँग लीजिए। इन रुपयों को मिलाकर आप अपने सत्तार के लिए नौकरी का इंतजाम कर लीजिए। मेरे खयाल से यह सबसे तगड़ा उपाय है।”

“मगर बेटे की शादी या शकीला की शादी यों ही तो नहीं हो जाएगी। कुछ-न-कुछ तो खर्च करना ही पड़ेगा।”

“इसके लिए आप बीमा कंपनी से कर्ज ले लीजिए। ऐसा करने से आपके बेटे और बेटे दोनों की शादी हो जाएगी और सत्तार की नौकरी भी लग जाएगी।”

“ठीक है। मैं सोचूँगा। अब मैं चलना चाहूँगा।” बेंगा कुरसी से उठकर खड़ा हो गया।

“ठीक है बेंगा भाई। जैसा हो, बताइएगा।”

“जरूर। अच्छा, आदाब।”

बेंगा जमाल के कमरे से बाहर हो गया।

बेंगा के सामने अब दो विकल्प थे। यदि वह दिल्लीवाले लड़के के लिए रुपयों का इंतजाम नहीं कर पाता है, तो वह इलाहाबाद में बात छेड़ सकता है। इस रिश्ते में अब उसे कई खूबियाँ नजर आने लगी थीं। इस रिश्ते से तीन-तीन काम एक साथ होते नजर आए उसे। शकीला के हाथ भी पीले हो जाएँगे। सत्तार की शादी भी हो जाएगी और उसके लिए नौकरी का इंतजाम भी हो जाएगा। तीनों काम लगभग पैंतीस हजार रुपए में ही पूरे हो जाएँगे। सबसे बड़ी बात यह थी कि इतने रुपयों का इंतजाम करने में वह सक्षम था।

बेंगा को तो यह रिश्ता पसंद आने लगा, मगर सवाल यह था कि क्या उसकी अम्मा भी इस रिश्ते को पसंद करेगी? क्या फातिमा इस तरह की शादी के लिए तैयार हो जाएगी? क्या शकीला ऐसा रिश्ता चाहेगी? हो सकता है कि इस रिश्ते के लिए वह इन तीनों को मना भी ले, लेकिन सत्तार को मनाने में शायद वह कामयाब न हो सके।

: ४० :

बेंगा मिस्त्री ने प्रायः अपने सभी परिचितों से रुपयों के बारे में बातचीत की, लेकिन किसी ने भी उसे रुपए देने या रुपए का प्रबंध करवा देने के बारे में कोई आश्वासन नहीं दिया। सभी यही कहते कि यदि चार-पाँच सौ रुपए का मामला होता तो कोई बात नहीं थी। यहाँ तो पच्चीस-तीस हजार का मामला था।

बेंगा के एक सहकर्मी ने बेंगा की मुलाकात एक खान से करवा दी। खान ने

बेंगा से कहा, “ओय तुम पचीस हजार रुपया माँगता। हम तुमको एक लाख भी दे सकता है। तुम हमारा बिरादर है। हम भी मुसलमान तुम भी मुसलमान। हम तुम्हारा मदद नहीं करेगा तो और कौन करेगा ? बोलो, कब चाहिए रुपिया ?”

“खान साहब, आप सूद कितना लेंगे ?” बेंगा ने पूछा।

“इधर सबको पता है कि खान रुपिया में बारह पैसा लेता है एक महीना में। मगर तुम हमको महीना में दस पैसा देना। हम तुमसे जादा नहीं लेगा।”

“तो पचीस हजार रुपए का हर महीने कितना सूद हो जाएगा ?”

“दो हजार पाँच सौ रुपिया, बिरादर। बोलो मंजूर है ?”

यह सुनते ही बेंगा को लगा कि वह गश् खाकर गिर पड़ेगा।

“क्या हुआ बिरादर ? तुम कुछ बोलता क्यों नहीं ?” खान ने पूछा।

बेंगा की बोलती बंद हो गई थी। उसे प्रतीत हुआ कि उसकी चीभ तालू से चिपक गई है और अब उसके लिए कुछ भी बोलना नामुमकिन है। वह कठिनाई से बोल सका, “मैं घर में बातचीत करके कल आपको बता दूंगा।”

“ठीक है बिरादर, कल हम तुम्हारा इंतजार करेगा।” खान ने कहा।

बेंगा खान की कोठरी से ऐसे निकला, जैसे वह बहुत दिनों के बाद किसी जेल से मुक्त होकर निकला हो। वह रास्ते में सोचने लगा, ‘दो हजार पाँच सौ रुपए तो मुझे मिल से भी नहीं मिलते हैं, तो मैं इतने रुपए सूद में हर महीने कहाँ से दे सकता हूँ ? अब मेरे लिए ठीक यही है कि मैं दिल्लीवाले लड़के का खयाल अपने दिल से निकाल बाहर करूँ। उसे हासल करना मेरी कूबत की बात नहीं है। अब यही समझ लेना चाहिए कि शकीला की किस्मत में वह लड़का है ही नहीं।’

रात को खाना खा लेने के बाद बेंगा ने फातिमा से पूछा, “शकीला सो रही है क्या ?”

“हाँ।” फातिमा ने बताया।

“और अम्माँ ?”

“शायद जाग रही हैं। अभी तो वह खाँस रही थीं।”

“अगर शकीला गहरी नींद में हो तो जरा अम्माँ को यहाँ बुला लो।”

शकीला को यह पता था कि रात को जब उसके अब्बा लौटते हैं, तब उसकी शादी के बारे में कुछ-न-कुछ बात जरूर करते हैं। इसलिए वह ऊपर से तो यही दिखाती थी कि वह बहुत गहरी नींद में सो रही है, पर सच्ची बात यह थी कि वह इस समय जागती ही रहती थी।

फातिमा ने अपनी सास को बहुत धीरे से उठाया। वस्तुतः नूरी भी जाग ही रही थी और इंतजार कर रही थी कि कब उसे बुलाया जाता है। उसे मालूम था कि इस समय उसे बुलाया जा सकता है।

बेंगा ने अपने बेटे सत्तार को खुद जगा लिया।

चारों जमा हो गए।

बेंगा ने बहुत धीमी आवाज में सबको बता दिया कि वह पच्चीस-तीस हजार रुपयों का इंतजाम तो कर लेगा, मगर बाकी रुपए मिलने मुश्किल हैं। अगर वह बाकी रुपए खान से ले लेता है, तो हर महीने सूद कहाँ से लाकर देगा? इसलिए अब हम लोगों को यह सोच लेना चाहिए कि दिल्लीवाले लड़के से शकीला का निकाह नहीं हो सकता है।

शकीला के कान में यह बात पड़ी। उसे ऐसा एहसास हुआ कि किसी ने उसके कान में पिघला हुआ गरम सीसा डाल दिया है और सीसा कान के रास्ते होता हुआ भीतर-ही-भीतर पेट में चारों ओर फैल गया है। पेट के भीतर पहुँचते ही सीसा ठंडा होकर जम गया है, जिसके कारण उसका शरीर अकड़ गया है। वह हिल-डुल नहीं पा रही है।

बेंगा की बात सुनकर सभी सन्न रह गए। कुछ देर तक किसी ने कुछ नहीं कहा।

सन्नाटे को तोड़ते हुए सत्तार बोला, “अब्बा, मैं फिर कहता हूँ कि उन्नाववालों के यहाँ मेरी शादी तय कर दीजिए। सब कुछ ठीक हो जाएगा।”

“बेटा, उन्नाववाले तो दस ही हजार देंगे न? हमें तो बीस-पच्चीस हजार रुपयों की और जरूरत है।” बेंगा ने हिसाब समझाया।

“फिर क्या हो सकता है?” नूरी ने उदासी के साथ पूछा।

“जमाल भाई ने एक और लड़के के बारे में बताया है। लड़का इलाहाबाद का है। अगर हम लोग यह रिश्ता कुबूल कर लें तो एक साथ ही हमारे तीन काम हो सकते हैं। शकीला के हाथ भी पीले हो जाएँगे और घर में एक बहू भी आ जाएगी। सबसे बड़ी बात तो यह होगी कि सत्तार को नौकरी भी मिल जाएगी।”

इस रिश्ते के बारे में बेंगा ने पूरे विस्तार के साथ सबको बताया। पहले-पहल तो सबने इसके बारे में बड़े चाव से सुना, लेकिन जैसे-जैसे बात खुलती गई, सब-के-सब उदास होते चले गए। इस उदासी को समझने में बेंगा को देर नहीं लगी। उसे हर आदमी के चेहरे से उत्तर मिल चुका था। अब किसी से कुछ भी पूछना बेकार था।

नूरी उठकर भीतर चली गई। सत्तार अपने बिस्तर पर आ गया। बेंगा भी अपने बिस्तर पर लेट गया। अंत में फातिमा कमरे की बत्ती बुझाकर भीतर चली गई।

सभी सोने की कोशिश कर रहे थे, मगर नींद किसी को भी नहीं आ रही थी। सभी कुछ-न-कुछ सोच रहे थे।

आज की बातचीत ने शकीला को यह साफ-साफ बता दिया कि अब उसकी शादी दिल्ली में नहीं हो सकेगी। उसके अब्बा ने अपनी तरफ से एड़ी-चोटी का

पसीना एक करके देख लिया था कि उसके लिए पच्चार हजार रुपयों का इंतजाम करना नामुमकिन है। आज शकीला को यह पहली बार अनुभव हुआ कि पिछले कुछ दिनों से इस घर की खुशी जो खतम होती चली जा रही थी, उसकी वजह वह खुद है। अगर वह नहीं होती तो उसके अब्बा रुपए के लिए जिस-तिस के सामने हाथ फैलाकर जलील नहीं होते। अगर वह नहीं होती तो इस घर में खूसट नेताजी का आना नहीं होता। अगर वह नहीं होती तो उसके अब्बा अब तक रुपए खर्च करके सत्तार को नौकरी जरूर दिलवा देते। अब्बा के पास जितने रुपयों का इंतजाम है उतने रुपयों में तो भैया को नौकरी मिल ही जाती।

शकीला यह मानने लगी कि इस घर में मुसीबत की असली जड़ वही है। अगर वह नहीं होती तो घर के लोग इतने परेशान कभी नहीं होते। वह कौन-सा उपाय करे कि लोगों के चेहरे पर उदासी नजर न आए और उसके अब्बा को इतनी जिल्लत भी न उठानी पड़े।

एक उपाय तो यह है कि वह नेताजी से शादी करने के लिए खुद तैयार हो जाए। उसे याद हो आया कि वह तो इसके लिए तैयार थी; क्योंकि ऐसा करने से सत्तार भैया को नौकरी भी मिल जाती। मगर घरवाले ही इसके लिए तैयार नहीं हुए। दादी ने तो इसका सख्त विरोध किया। दादी के विरोध ने सबका मन बदल दिया। क्या हर्ज है कि शकीला एक बार और कोशिश करके देख ले। शायद इस बार लोग नेताजी के साथ उसका निकाह पढ़वाने को तैयार हो जाएँ।

इस बीच शकीला को दादी के खाँसने की आवाज सुनाई पड़ी। शकीला को प्रतीत हुआ कि दादी को शायद उसके मन की यह बात मालूम हो गई है, जिसके कारण दादी ने खाँसकर यह जता दिया है कि यह रिश्ता कभी नहीं हो सकता। अभी मैं जिंदा हूँ—मरी नहीं हूँ।

तब क्या करे वह? घर के लोग इलाहाबाद के रिश्ते में तो कोई दिलचस्पी ही नहीं दिखा रहे हैं। इस रिश्ते में आखिर ऐसी क्या बुराई है? उसके अब्बा अभी बता रहे थे—इस तरह का रिश्ता अच्छा तो नहीं ही होता है; क्योंकि ऐसे रिश्ते में झगड़े-झंझट का बड़ा डर रहता है। मान लो यह रिश्ता हो गया। अगर सत्तार अपनी बीवी से कुछ कहता है तो लड़की के घरवाले इसका बदला हमारी बेटी शकीला से लेंगे। बस जिदगी-भर यही चक्कर चलता रहेगा। इधर की बात उधर पहुँचेगी और उधर की बात इधर। इधर-उधर के चलते न तो यहाँ अमन रह पाएगा और न वहाँ।

मगर इस रिश्ते की एक बहुत बड़ी खूबी यह है कि इसे कुबूल कर लेने से अब्बा सभी मुसीबतों से एकदम निजात पा लेंगे। ठीक है, कल वह अपनी अम्माँ को बता देगी कि वह इलाहाबाद में शादी करने के लिए तैयार है।

लेकिन ?

शकीला की आँखों के सामने इसी समय दिल्लीवाले लड़के की तसवीर आ गई। जिस दिन दिल्लीवाले लड़के की तसवीर इस घर में आई थी, उस दिन चुपके से उसने वह तसवीर निकाल ली थी। उस तसवीर की बगल में अपनी तसवीर रखकर उसने दोनों तसवीरों को मिलाकर बहुत देर तक देखा था। जोड़ी खूब जम रही थी। इसीलिए तो शकीला ने उस लड़के को अपने दिल में बिठा लिया था। वह उस 'युगल छवि' को अपने दिल से कैसे निकाल बाहर कर सकेगी ?

फिर क्या करे वह ?

वह कर भी क्या सकती है ?

शकीला के बस में है ही क्या ? उसे लगा कि वह पैदा ही नहीं होती तो ज्यादा अच्छा होता। मगर पैदाइश पर उसका कोई जोर तो था नहीं। यह आदमी के बूते की बात नहीं है कि वह अपनी पैदाइश को रोक सके। यदि ऐसा हो सकता तो शायद यह वह भी कर लेती।

शकीला को अनायास एक वाक्या याद आया। इसी कानपुर शहर की घटना थी। दो या तीन बहनें थीं ! शायद कुली बाजार में रहती थीं। उनके बाबा उनके लिए लड़का खोजते-खोजते परेशान हो गए थे। लड़केवाले शादी में बहुत मोटी रकम माँग रहे थे। बेचारा बाप कहाँ से लाता उतने रुपए ? लड़कियों को धीरे-धीरे सब कुछ पता चल गया। एक दिन जब घर में कोई नहीं था, तो सभी बहनों ने अपने-अपने गले में साड़ी का फंदा डाल लिया और वे तीनों पंखे से झूल गईं। इस तरह उन तीनों लड़कियों ने अपने बाबा को रोज-रोज की जिल्लत सहने से बचा लिया। अगर शकीला भी ऐसा ही कुछ कर सके तो वह भी अपने अब्बा को मुसीबतों से छुटकारा दिला सकती है।

शकीला ने छत की तरफ देखा। छत में एक हुक लगा था, पर उससे कोई पंखा नहीं लटक रहा था। उसने सोचा—कोई हर्ज नहीं है। इस हुक के सहारे भी लटका जा सकता है।

शकीला को ऐसा भान हुआ कि उसके सामने एक और शकीला आकर खड़ी हो गई है और वह उससे पूछ रही है, 'शकीला, तू जो करना चाहती है, बड़े शौक से कर। लेकिन जरा यह तो बता कि तू ऐसा करना क्यों चाहती है ?'

'मैं अपने अब्बा को और जिल्लत से बचाना चाहती हूँ—ठीक वैसे ही जैसे कुली बाजार की लड़कियों ने अपने बाबा को रोज-रोज की जिल्लत से बचा लिया।' शकीला ने जवाब दिया।

'क्या कुली बाजार की लड़कियाँ सचमुच अपने बाबा को जिल्लत से बचा सकीं ?' दूसरी शकीला के इस सवाल ने शकीला को बेचैन कर दिया।

: ४१ :

“बेंगा मिस्त्री आज यहाँ आए थे क्या ?” कैटीन में घुसते हुए जमाल ने मैनेजर से पूछा ।

“पिछले दो-तीन दिनों से वह दिखलाई नहीं पड़ रहे हैं ।” मैनेजर ने बताया ।

“उनके बारे में आपको कोई जानकारी है क्या ?”

“कोई बता रहा था कि वह अपनी लड़की की शादी तय करने के लिए कहीं गए हुए हैं ।”

जमाल एक कुर्सी पर बैठ गया । चाय के लिए बोलकर वह यह सोचने लगा कि बेंगा भाई आखिर कहाँ गए होंगे ? दिल्ली तो वह जा नहीं सकते; क्योंकि वहाँ से तो एक खत उसके पास आ ही गया है । कहीं ऐसा तो नहीं कि बेंगा मिस्त्री इलाहाबाद चले गए हों ? हो सकता है । मगर, वह इलाहाबाद जाएँगे कहाँ ? जमाल ने तो बेंगा मिस्त्री से सिर्फ उस लड़के की चर्चा की थी । उसने यह कहाँ बताया था कि लड़के का नाम क्या है और उसके घर के लोग किस मुहल्ले में रहते हैं । बगैर नाम-पते के बेंगा मिस्त्री इलाहाबाद जाकर क्या करेंगे ?

फिर बेंगा मिस्त्री कहाँ जा सकते हैं ?

जमाल यह सब सोच ही रहा था कि कैटीन के मैनेजर की आवाज उसके कानों से टकराई, “लीजिए, बेंगा मिस्त्री इधर ही आ रहे हैं ।”

जमाल को मैनेजर की बात पर विश्वास नहीं हुआ । वह अपनी कुर्सी से उठकर दरवाजे तक आ गया । सचमुच बेंगा मिस्त्री कैटीन की तरफ चला आ रहा था ।

बेंगा ने कैटीन की सीढ़ी पर पैर रखा ही था कि जमाल ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर अपना हाथ टिकाते हुए पूछा, “मैं पिछले कई दिनों से आपको तलाश रहा हूँ । आप तो बिलकुल ईद के चाँद ही बन गए लगते हैं ।”

बेंगा की दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वह कुछ ज्यादा ही परेशान लग रहा था । यों बेंगा हर दिन दाढ़ी बनाने का अभ्यस्त था ।

“भीतर चलिए, जमाल भाई । वहाँ बैठकर सब बताऊँगा ।” बेंगा ने कहा ।

बेंगा की मेज निश्चित थी । वह बिलकुल कोने में बैठता था । वहाँ से कैटीन में आने-जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को देखा जा सकता था । बेंगा वहीं जाकर रुका ।

जमाल और बेंगा दोनों आमने-सामने बैठ गए । बेंगा ने ही बातचीत शुरू की, “मैं भी आपको ही तलाश कर रहा था, मगर आपके घर तक जाना मुमकिन नहीं हो सका । पहले आप बताइए कि घर के लोग खैरियत से हैं न ?”

“हाँ, सभी खैरियत से हैं । दिल्ली से बदर भाई का एक खत आया हुआ है ।” जमाल ने बताया ।

“क्या लिखा है, बदर भाई ने ?”

“उन्हें आपके जवाब का इंतजार है। वह अपने बेटे की शादी जरा जल्दी करना चाह रहे हैं।”

“उसी चक्कर में तो दौड़ता-दौड़ता मैं बेहाल हो गया हूँ।” बेंगा का बुझा-बुझा स्वर था।

“कोई रास्ता निकला?”

“रास्ता क्या निकलेगा? रुपए देनेवाले चाहते हैं कि मैं गिरवी रखने के लिए कुछ दूँ—जमीन-जायदाद या सोना-चाँदी। जमाल भाई, आप तो जानते ही हैं कि मेरे पास इन दोनों चीजों की कमी है।”

“इलाहाबादवाले लड़के के बारे में आपने घर में जिक्र किया?”

कैटीन का लड़का दोनों के लिए चाय और एक प्लेट नमकीन रखकर चला गया। चाय का एक कप बेंगा ने जमाल की तरफ बढ़ा दिया और नमकीन की प्लेट को बीच में रख दिया।

“हाँ, किया था।”

“फिर क्या हुआ?”

“क्या बताऊँ, जमाल भाई?”

“आपकी अम्मा ने क्या कहा?”

“उन्होंने कुछ भी नहीं कहा।”

“आपकी बेगम ने?”

“वह भी चुप रहीं।”

“और सत्तार ने क्या कहा?”

“उसने भी अपनी कोई राय जाहिर नहीं की।”

“यानी लोगों को यह रिश्ता अच्छा नहीं लगा?”

“मैं दूसरों की बात तो नहीं बता सकता, खुद मुझे भी इस तरह का रिश्ता करना कुछ जैच नहीं रहा है।”

“ऐसा क्यों, बेंगा भाई?”

“बड़ा खराब लगता है सोचते हुए भी कि जिस घर से लड़की लाई जाए उस घर को अपनी लड़की भी दी जाए। यह मुझे लेन-देन या अदला-बदली का मामला जैसा लगता है। जैसे कोई सौदागर खरीद-फरोख्त कर रहा हो।”

“मैं समझ गया। जब आपको ही यह रिश्ता पसंद नहीं है, तो फिर घरवाले इसे कैसे पसंद कर सकते हैं।”

“जमाल भाई, सच्ची बात तो यह है कि दिल्लीवाला लड़का हमारे घर के एक-एक जने को ऐसा भा गया है कि लोग उस रिश्ते के अलावा किसी और की बात सुनना भी नहीं चाहते।”

“बेंगा भाई, शादी आपको करनी है। आप अपनी बात कहिए। अगर दिल्ली-

चाला लड़का इतना ही पसंद है तो बोलिए बदर भाई को मैं क्या लिख दूँ।”

“जमाल भाई, क्या बदर भाई मुझे दो महीने की मोहलत और नहीं दे सकते?”

“ठीक है, मैं यही लिख देता हूँ। लेकिन, बेंगा भाई, दो महीने में आप रुपये कहाँ से ले आएँगे?”

“बस यही तो मुश्किल है। यह तो मुझे भी नहीं मालूम है।”

“फिर?”

“शायद इस दौरान कोई सूरत निकल आए।”

“क्या कहीं से कुछ उम्मीद है?”

“मैं आपसे क्या छिपाऊँ? सच तो यह है कि मुझे कहीं से भी कोई रास्ता निकलता हुआ बिलकुल नहीं दिखाई दे रहा है।”

“फिर किस चीज पर आपको इतना भरोसा है?”

“बस अल्लाह का भरोसा है। सोचता हूँ कि वह तो सब कुछ जानता है। वह बड़ा रहमदिल और कारसाज है। इस बीच शायद वही कोई करिश्मा कर डाले।”

“बेंगा भाई, मैं आपका दिल नहीं तोड़ना चाहता। लेकिन अगर आपको किसी खुदाई करिश्मे का भरोसा है, तो वह भरोसा बेमतलब है। अगर कहीं से आपको कोई उम्मीद है, तो साफ-साफ बतलाइए।”

“जमाल भाई, कहीं से कोई उम्मीद नहीं है। बस अब तो ऊपरवाले पर ही उम्मीद है।”

“ठीक है, जब आप मोहलत ही चाहते हैं तो मैं आज ही बदर भाई को खत लिख देता हूँ। मुझे यह उम्मीद भी है कि वह आपको जरूर मोहलत दे देंगे, क्योंकि आपकी बेटी शकीला उन्हें बेहद पसंद है।”

“जमाल भाई, इस पूरे कानपुर शहर में बस आप ही मेरे सब कुछ हैं। मैं आपको अपना दोस्त भी मानता हूँ और भाई भी। मैं तो आपको अपना बाप तक मानने को तैयार हूँ। आपके सिवा इस दुनिया में मेरा और कोई है भी तो नहीं।” यह बोलते-बोलते बेंगा की आवाज फँसने लगी।

“नहीं, नहीं, ऐसी भी क्या बात है,” कहता हुआ जमाल उठ गया, “अच्छा तो मैं चलता हूँ। मुझे काफी देर हो गई है। आप तो यहाँ कुछ देर और रुकेंगे?”

“हाँ।”

“अच्छा, आदाब।”

“आदाब, जमाल भाई।”

जमाल को विदा कर बेंगा सोचने लगा कि उसने ऐसा क्यों कह दिया कि इस दुनिया में उसका और कोई नहीं है? उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए। राँची में अभी भी उसका बाप जिंदा है।

बाप !

हाँ बाप—उसका अपना बाप ।

बेंगा अपने अब्बा के रंग-रूप को याद करने की कोशिश करने लगा । उसके जेहन में अब्बास की एक आकृति उभरने लगी । उसके मन में एक बात उठी । क्या हर्ज है कि एक बार वह राँची ही चला जाए । हो सकता है कि इस दौरान उसके अब्बा ने कोई कारोबार कर लिया हो और उन्होंने खूब दौलत पैदा कर ली हो । क्या वह अपने अब्बा से बीस हजार रुपए माँगेगा तो वह इनकार कर देंगे ? नहीं, नहीं, वह ऐसा कभी नहीं करेंगे ।

जब उन्हें मालूम होगा कि उनकी पोती की शादी रुपयों की कमी के चलते अटक रही है, तो वह जरूर मदद करेंगे ।

यह सोचकर बेंगा ने अपने को बड़ा उत्साहित पाया । वह मन-ही-मन राँची जाने के बारे में सोचने लगा । उसने यह भी तय कर लिया कि आज ही वह स्टेशन जाकर पता लगाएगा कि राँची के लिए रेलगाड़ी कब यहाँ से जाती है और वहाँ तक का कितना भाड़ा है ।

अचानक उसे एक बात याद आ गई । राँची में सिर्फ उसके अब्बा ही नहीं होंगे, उस घर में एक नई औरत भी तो आ गई थी, जिसके बारे में इमली टोली के लोग यह कहा करते थे कि यह बेंगा की नई माँ है ।

बेंगा की नई माँ !

यह सोचकर बेंगा कुछ उदास हो गया । उसे वहाँ की सारी बातें याद आने लगीं । उसी औरत के कारण उसके अब्बा ने उसकी माँ को तलाक दिया था । क्या वह औरत अब्बास को बेंगा की मदद करने देगी ?

नहीं, नहीं । अगर बेंगा के अब्बा मदद करना भी चाहेंगे तो वह काली औरत अब्बास को ऐसा कभी नहीं करने देगी । हो सकता है कि वह बेंगा से यह पूछ बैठे, 'अब याद आई है अपने अब्बा की ? जब रुपयों की जरूरत पड़ी तो चले आए यहाँ अब्बा को खोजने ! इसके पहले क्यों नहीं खोजा अपने अब्बा को ?'

हाँ, बेंगा से यह भूल तो जरूर हो गई है कि इस बीच उसने अपने अब्बा की कोई खोज-खबर नहीं ली । उसने भगत-भगताइन को तो खत भेजे, लेकिन अपने अब्बा को कभी कोई खत नहीं डाला । पता नहीं, उसके अब्बा किस हाल में होंगे ? यह भी तो हो सकता है कि उनकी माली हालत अच्छी नहीं हो । यह भी मुमकिन है कि वह इस दुनिया में...

नहीं, नहीं, बेंगा को ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए । मगर बेंगा ने अपने अब्बा के बारे में कुछ जानने की कोशिश पहले क्यों नहीं की ? वह ऐसा करता भी कैसे ? उसकी अम्माँ ने बेंगा के अब्बा को अपने दिल से बिल्कुल निकाल बाहर किया था । ऐसे में बेंगा कर भी क्या सकता था ?

अपनी अम्माँ के बारे में सोचते ही बेंगा के सामने एक बात और साफ हो गई ।

चह यह कि बेंगा राँची जा ही नहीं सकता। उसे इसकी इजाजत अम्मा से कभी नहीं मिलेगी। किसी तरह झूठ बोलकर अगर बेंगा राँची चला भी गया और वहाँ से रुपए भी मिल गए तो भी वह उन रुपयों से शकीला की शादी नहीं कर पाएगा। उसकी अम्मा उसे ऐसा करने की इजाजत कभी भी नहीं देगी।

राँची जाने के लिए जो जोश बेंगा के भीतर उठा था, वह सोड़े के झाग की तरह बैठने लगा। मगर राँची की याद से बनर्जी बाबू और उनकी मेम साहब की एक-एक बात बेंगा को याद आने लगी। बनर्जी बाबू और उसकी मेहरबानियों का ही यह नतीजा है कि बेंगा और उसकी माँ जिंदा रह सके वरना पता नहीं दोनों की किस्मत में क्या बदा था।

बनर्जी बाबू और उनकी मेम साहब के लिए बेंगा का हृदय कृतज्ञता से भर उठा। 'आज अगर बनर्जी बाबू होते या उनकी मेम साहब ही होतीं तो बेंगा को रुपए के लिए इतना दौड़ना नहीं पड़ता।' बेंगा ने सोचा।

एक लंबी साँस छोड़ता हुआ बेंगा अपनी कुर्सी से उठकर दरवाजे की ओर बढ़ने लगा।

: ४२ :

"मुना आपने कुछ?" फातिमा ने अपने पति से पूछा।

"क्यों, क्या हुआ?" बेंगा ने बधना आँगन में रखते हुए फातिमा से जानना चाहा।

"चालीस नंबर में जो दारोगासिंह रहते थे न, कल रात को उनका इंतकाल हो गया।"

"अयँ! यह तुझसे किसने कहा?"

"उनके घर के सामने बड़ी भीड़ लगी है। अब तो मुहल्ले के सब लोगों को यह बात मालूम हो गई है।"

"क्या कह रही है तू? आज बुधवार है न?"

"हाँ।"

"इसी सोमवार को तो वह मिल की नौकरी से रिटायर हुए हैं। देखने में अच्छे-खासे थे। नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। जरूर तूने कुछ गलत सुना है?"

"मैंने कुछ गलत नहीं सुना है। रतन की माँ अभी-अभी वहाँ से होकर आ रही है। उसीने मुझे बताया है। वह बेचारी झूठ क्यों बोलेगी?"

"अगर यह सच है तब तो बहुत ही बुरा हुआ उसके घरवालों के साथ।"

"हाँ। उनके घर में भी सत्तार जितना एक लड़का है और शकीला जितनी एक लड़की है। दोनों की शादी अब तक नहीं हुई है। लड़का बेरोजगार बैठा है। उसे अब तक कोई काम नहीं मिल सका है।"

“या अल्लाह ! यह क्या है ?” बेंगा ने आकाश की तरफ देखकर मानो अल्लाह से पूछा ।

हाथ-मुंह धोकर बेंगा भी दारोगासिंह के क्वार्टर की तरफ बढ़ गया । क्वार्टर के सामने गली के काफी लोग जमा थे । बेंगा भीतर गया । सामनेवाले कमरे में दारोगासिंह की लाश जमीन पर रखी थी । उसके इर्द-गिर्द मुहल्ले की कई औरतें बैठी रो रही थी । दारोगासिंह की बीवी और बेटी तो रो-रोकर पागल हुई जा रही थीं । औरतें उन्हें सँभालने की कोशिश कर रही थीं, पर दोनों माँ-बेटी रह-रहकर लाश से लिपट जाती और उस पर अपना माथा पटकने लगतीं ।

बड़ा हृदयविदारक दृश्य था । बेंगा से ज्यादा देर तक वहाँ रुका नहीं जा सका । वह बाहर आ गया ।

एक कोने में चार-पाँच आदमी खड़े होकर बातचीत कर रहे थे । सभी मिल के ही लोग थे और इसी गली में रहते थे । बेंगा उन्हीं लोगों की तरफ बढ़ गया । बेंगा को देखकर सभी एकाएक चुप हो गए । बेंगा ने उनसे पूछा, “यह कैसे हो गया ? आज बुधवार है और अभी सोमवार को ही तो दारोगासिंह रिटायर हुए थे । हम सबने मिल में उन्हें विदाई दी थी । उन्हें कोई रोग भी नहीं था ?”

एडवर्ड दारोगासिंह की वगल में ही रहता था इकतालीस नंबर में । उसने कहा, “यह तो ठीक है कि दारोगासिंह को कोई रोग नहीं था, मगर रिटायर होते ही उन्हें दुनिया का सबसे बड़ा रोग लग गया और उसने उनकी जान ले ली ।”

“दुनिया का सबसे बड़ा रोग लग गया ! मैं समझ नहीं सका एडवर्ड भाई कि आखिर आप कहना क्या चाहते हैं ?” बेंगा ने खुलासा जानना चाहा ।

“बेंगा भाई, हुआ यह कि मंगलवार की सुबह को दारोगासिंह रोज की तरह जगे और मिल जाने के लिए तैयार होने लगे । जब उनकी बीवी ने यह पूछा कि आज भी आप हर रोज की तरह तैयार क्यों हो रहे हैं, तो दारोगासिंह ने जवाब दिया, ड्यूटी पर जाना है । इस पर दारोगासिंह की बीवी हँस पड़ी और उसने बताया—अब आप रिटायर हो गए हैं । आज से आपको ड्यूटी पर नहीं जाना है । यह सुनते ही दारोगासिंह बेहोश हो गए । तुरंत उन्हें अस्पताल ले जाया गया । दिन-भर डॉक्टरों ने काफी कोशिश की, मगर शाम तक दारोगासिंह को होश नहीं आ सका । आखिर कल रात को दस बजे वह इस दुनिया से चल बसे ।”

“डॉक्टरों ने क्या बताया ? आखिर उन्हें क्या हो गया था ?” बेंगा ने बड़ी उत्सुकता के साथ पूछा ।

“दिल का जबरदस्त दौरा ।” एडवर्ड ने बताया ।

“यह तो बहुत ही बुरा हुआ ।”

“उसी बात की तो हम लोग चर्चा कर रहे थे कि आप भी आ गए ।” एडवर्ड ने कहा ।

“पता नहीं इस परिवार का क्या होनेवाला है? शायद यह बात ऊपरवाला ही जानता हो?” चौबेजी ने आकाश की ओर देखते हुए कहा।

“सबसे कठिन समस्या तो यह है कि दारोगासिंह के घर अभी कोई कमाने-वाला नहीं है। लड़का अब तक बेकार बैठा है। घर में एक जवान बेटी भी है। अब तक उसकी शादी हो जानी चाहिए थी, लेकिन दारोगासिंह उसकी शादी भी नहीं कर सके।” एडवर्ड ने दारोगासिंह की पारिवारिक समस्याओं का परिचय दिया।

“एक महीने के अंदर यह क्वार्टर भी खाली करना पड़ेगा। पता नहीं कैसे क्या करेंगे ये बेचारे और क्वार्टर खाली करके कहाँ जाएँगे?” चौबे ने सवाल उठाया।

“लोगों का कहना है कि दिल का दौरा तो उसे ही पड़ता है, जिसे ब्लड प्रेशर होता है। क्या दारोगासिंह को पहले से ही ब्लडप्रेसर था?” बेंगा ने जानकारी चाही।

“बिलकुल नहीं।” एडवर्ड ने बताया।

“फिर?” बेंगा का सवाल था।

“मृत्यु का कोई निगम नहीं होता, बेंगा भाई। वह जिसे चाहती है, सुला देती है। उसके आगे डॉक्टरी विद्या धरी-की-धरी रह जाती है।” चौबे का उत्तर था।

“अभी तो मिल का हिसाब-किताब भी बाकी होगा?” बेंगा ने आगे पूछा।

“यही तो सबसे बड़ा चक्कर पड़ गया।” एडवर्ड बोला।

“क्यों?”

“दारोगासिंह होते तो सारा हिसाब-किताब कुछ दिनों में ही साफ हो जाता। मगर अब तो मिलवाले तरह-तरह का अड़ंगा डालेंगे। वे दारोगासिंह की विधवा से कहेंगे—‘आप प्रमाण-पत्र लेकर आइए कि आप दारोगासिंह की पत्नी हैं।’ जरा आप ही सोचिए कि इस बेतुके सवाल को सुनकर उस अभागी औरत पर क्या गुजरेगी?” एडवर्ड ने भावी संकट की ओर संकेत कर सबको चौंका दिया।

“तालिब भाई, आप बिलकुल चुप खड़े हैं। क्या बात है? आप कुछ सोच रहे हैं क्या?” चौबे ने तालिब से पूछा।

“चौबेजी, मैं सोच रहा हूँ कि यदि दारोगासिंह को इतनी जल्दी मरना ही था, तो वह दो दिन पहले क्यों नहीं मर गए?” तालिब ने अपनी इस बात से एक बार सबको चक्कर में डाल दिया।

“तालिब भाई, यह आप कैसी ऊटपटाँग बात बोल रहे हैं? क्या ऐसे मौके पर इस तरह की बात भी कोई बोलता है? कम से कम इस अवसर पर तो आपको यह बात नहीं ही बोलनी चाहिए थी।” चौबे ने विरोध के स्वर में कहा।

“चौबेजी, मैं इसके लिए माफी चाहता हूँ कि मेरी बात से आपको तकलीफ हुई। मगर, मेरे बोलने का मतलब वह नहीं था, जो आप समझ बैठे हैं।” तालिब ने नम्र स्वर में सफाई पेश की।

“क्या मतलब था आपके कहने का ?”

“चौबेजी, दारोगासिंह मेरे अच्छे दोस्तों में थे। उन्हें मैं बहुत करीब से जानता हूँ। इन दिनों वह कितने परेशान थे, शायद आप लोगों को मालूम न हो।” तालिब ने गंभीर होते हुए कहा।

“क्या एडवर्ड से भी ज्यादा जानते हैं आप दारोगासिंह के बारे में ?” चौबे ने तेवर के साथ पूछा।

“हाँ।” तालिब ने बड़े विश्वास के साथ कहा।

यह सुनकर चौबे ने एडवर्ड की तरफ देखा यह जानने के लिए कि क्या तालिब सच बोल रहा था।

“तालिब भाई ठीक ही कह रहे हैं। दारोगासिंह और तालिब भाई की खूब पटती रही है। इसलिए तालिब भाई से ज्यादा और कौन जान सकता है दारोगासिंह की परेशानियों के बारे में।” एडवर्ड ने स्वीकार किया।

“पिछले कुछ दिनों से दारोगासिंह अक्सर अपने रिटायरमेंट को लेकर कुछ-न-कुछ सोचते ही रहते थे। उन्हें सबसे बड़ी फिक्र थी अपनी बेटी की शादी की। बेचारे अक्सर कहा करते थे—अगर मेरी बेटी राजपूत के घर में पैदा नहीं हुई होती तो उसकी शादी कब की हो गई होती।” तालिब ने बताया।

“दारोगासिंह ऐसा क्यों कहा करते थे ?” बेंगा ने पूछा।

“क्योंकि बिहार के राजपूतों में तिलक-दहेज की काफी माँग होती है।” तालिब ने बताया।

बेंगा के जी में आया कि वह बोल पड़े कि तो मुसलमान अब कहाँ पीछे हैं इस मामले में। पर उसने सोचा कि यह बेमौसम का राग हो जाएगा और लोग इसका बुरा भी मान सकते हैं। कम से कम तालिब को तो यह बात बुरी लग ही सकती थी।

“नौकरी करते हुए दारोगासिंह अपनी बेटी की शादी नहीं कर सके, यह गम उन्हें बराबर खाए जा रहा था। दूसरी तकलीफ उन्हें यह थी कि उनका बेटा अब तक बेकार बैठा है। वह यही सोचा करते थे कि नौकरी में रहते हुए जब ये दोनों काम वह नहीं कर सके तो रिटायर होने के बाद कैसे कर सकेंगे ? ये दोनों मामूली संकट नहीं थे उनके सामने।” तालिब ने दारोगासिंह की निजी बातों का खुलासा किया।

“सो तो ठीक है, लेकिन आपने वह बात...?” चौबे बीच में टपक पड़ा। लगा कि उसे तालिब की वह बात बहुत बुरी लगी थी, फलतः वह उसे अब तक भूल नहीं सका था।

“चौबेजी, मैंने वह बात इसलिए कही थी कि अगर दारोगासिंह नौकरी में रहते हुए रिटायर होने के दो-तीन दिन पहले गुजर गए होते, तो हम लोग उनके

बेटे को मिल में जरूर कोई-न-कोई काम दिलवाकर छोड़ते।” तालिब ने उस बात का रहस्य खोला।

“हम लोग मतलब?” चौबे का तेवर बना हुआ था।

“यानी यूनियन के लोग।” तालिब का स्पष्ट उत्तर था।

“क्या ऐसा संभव था?” चौबे ने संदेह के साथ पूछा।

“हाँ।” तालिब के उत्तर में विश्वास का अटल भाव था।

“अगर ऐसा हो जाता तब तो दारोगासिंह की सारी तकलीफें दूर हो जातीं।” बेंगा ने अपनी ओर से कहा।

“तब दारोगासिंह के परिवार को क्वार्टर भी नहीं छोड़ना पड़ता। बेटे को नौकरी मिल ही जाती। मिल में दारोगासिंह के जो रुपए हैं, वे रुपए भी आसानी से मिल जाते। बीमे के रुपए ऊपर से मिलते। इन रुपयों को मिला-जुलाकर दारोगासिंह की बेटी की शादी की जा सकती थी।” तालिब ने अपनी पिछली बात की पुष्टि में यह स्पष्टीकरण दिया।

“बेटी की शादी तो अभी भी उन रुपयों से की जा सकती है, जो रुपए मिल और बीमा से मिलनेवाले हैं।” चौबे ने बताया।

“चौबेजी, अब तो मामला यह है कि इस घर के लोग मिलनेवाले रुपयों को लड़की की शादी में ही लगा देंगे तो फिर खाएँगे क्या और रहेंगे कहाँ? एक महीने के भीतर इन्हें एक घर की भी तलाश करनी होगी। चार-पाँच सौ रुपए से कम में क्या कोई घर मिलता है आजकल? इसीलिए मैंने कहा था कि अगर दारोगासिंह को इतनी जल्दी इस दुनिया से जाना ही था, तो अगर दो-तीन दिन पहले... फिर आज बात ही कुछ और होती। मेरे बोलने का मतलब सिर्फ यही था, चौबेजी।” तालिब ने समझाया।

तालिब की इस बात से सभी प्रभावित हुए। चौबे भी। तालिब की इस बात का सबसे गहरा असर पड़ा बेंगा मिस्त्री पर। उसे लगा कि यह तालिब बड़े काम का आदमी है। इसलिए बेंगा ने तालिब से पूछा, “तालिब भाई, मैं आपसे अकेले में कुछ बातचीत करना चाहता हूँ?”

“आप चलेंगे न भैरव घाट? हम लोग वहीं बातचीत कर लेंगे। क्यों ठीक रहेगा न?”

“हाँ, यह ठीक रहेगा।” बेंगा को तालिब की राय जँच गई।

: ४३ :

आज छुट्टी थी। इसलिए बेंगा दारोगासिंह की शव-यात्रा में बेहिचक शामिल हो गया। शव-यात्रा में शायद वह शामिल नहीं भी होता, लेकिन उसे तालिब से कुछ जरूरी बातचीत करनी थी, इसलिए वह अर्थी के साथ गंगाजी तक चला गया।

गंगाजी जाना बेंगा के लिए बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ। वहाँ तालिब भाई से उसकी बड़ी लंबी बातचीत हुई। उस बातचीत से बेंगा ने जो नतीजा निकाला, उससे उसे बड़ी राहत का अनुभव हुआ। उसे थोड़ी देर के लिए ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एकाएक सभी समस्याओं से मुक्त हो गया है। उसकी बेटी शकीला की शादी दिल्लीवाले लड़के से ही हो गई है। घर में सभी बहुत खुश हैं। सत्तार को नौकरी भी मिल गई है। ये काम वास्तव में अब तक हुए नहीं थे, मगर ये काम हो सकते थे। बस, बेंगा को थोड़ी हिम्मत से काम लेने के लिए अपने आप को तैयार करना था।

पिछले कई वर्षों की भागदौड़ ने उसे बता दिया था कि शकीला की शादी कोई आसान काम नहीं। उसी तरह सत्तार की नौकरी भी एक कठिन समस्या थी। पर दोनों ही काम आसानी से हो सकते थे अगर बेंगा के पास रुपए होते। लेकिन एक बिजली मिस्त्री के पास उतने रुपए आते कहाँ से, जिनसे वह अपने बेटे के लिए नौकरी और बेटी के लिए लायक दूल्हा खरीद पाता। अगर बेंगा ने चोरी-बेईमानी का सहारा लिया होता तो वह बिजली मिस्त्री होते हुए भी बहुत कुछ कर सकता था। मगर उसकी अम्माँ ने उसे बचपन से ही ईमानदारी का पाठ पढ़ाया था। अब तो बेंगा चांहकर भी ईमानदारी का दामन नहीं छोड़ सकता था। वह ईमानदारी के रास्ते पर चलते हुए ही अपने बेटे को नौकरी दिलाना चाह रहा था और शकीला के लिए दूल्हे की तलाश में लगा था। उसका यह कौल भी था कि इस काम के लिए वह नेताजी का कहा कभी नहीं मानेगा। वह खूसट तो निहायत घटिया किस्म का आदमी निकला। वह अपनी बेटी देकर अपने बेटे के लिए नौकरी कभी भी मंजूर नहीं कर सकता।

तालिब से मिलने का बड़ा फायदा हुआ बेंगा को। बेंगा को जब चारों तरफ अँधेरा-ही-अँधेरा नजर आ रहा था, तब तालिब से उसे रोशनी की एक ऐसी किरण मिल गई, जिसके सहारे वह अपनी जिदगी के इस अँधेरे को दूर कर सकता था। उसे तालिब के द्वारा बतलाई गई तरकीब पसंद आ गई। सच तो यह है कि तालिब ने कोई नई तरकीब नहीं बताई थी, लेकिन बेंगा ने तालिब की बातों से अपने लिए एक तरकीब खुद निकाल ली। इस तरकीब पर चलकर वह सत्तार को नौकरी भी दिलवा सकता था और शकीला की शादी भी दिल्लीवाले लड़के के साथ करवा सकता था। सबसे बड़ी बात यह थी कि ऐसा करने के लिए उसे किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं थी।

मगर दुनिया में कोई भी चीज ऐसी नहीं है कि वह किसी को सेंट-मेंट में ही मिल जाए। हर चीज की अपनी एक कीमत होती है, जिसे चुकाए बगैर किसी को कुछ नहीं मिल सकता। आदमी अपनी प्यास बुझाने के लिए नदी से जितना चाहे पानी ले सकता है। नदी पानी का दाम नहीं वसूलती, पर पानी की भी एक कीमत

होती है। प्यासे को नदी के पास जाना पड़ता है और झुककर पानी पीना पड़ता है। यह मशक्कत ही पानी की कीमत होती है।

तालिब की बातों से बेंगा को तरकीब निकलती हुई दिखी, उसे आजमाने के लिए बेंगा को कुछ खर्च नहीं करना था। मगर उस तरकीब की कामयाबी की भी एक कीमत थी और वह कीमत रुपए-पैसे से नहीं चुकाई जा सकती थी। इसके बावजूद वह कोई छोटी-मोटी कीमत नहीं थी। वह एक ऐसी कीमत थी जिसे चुकाना हर आदमी के वश की बात नहीं थी।

वह कीमत थी—बेंगा की जान। अगर बेंगा अपनी नौकरी के दौरान किसी प्रकार मर जाए तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान तत्काल निकल आए। यदि वह मर जाता है, तो मिल उसके बदले में उसके बेटे को नौकरी दे देगी। यह मिल की कोई मेहरबानी नहीं होगी। ऐसा उसे कानूनन करना होगा। इस तरह एक बड़ी समस्या खुद-ब-खुद दूर हो जाएगी।

बेंगा के मरते ही उसकी बीवी फातिमा को प्रोविडेंट फंड के सारे रुपए मिल जाएंगे। बीमा कंपनी भी उसकी बीवी को पच्चीस हजार रुपए दे देगी और उसे बाकी किस्तों का भुगतान भी नहीं करना होगा। मिल की तरफ से ग्रेच्युटी के भी कुछ रुपए फातिमा को मिल जाएंगे। तीनों रुपयों को मिला देने से ये रुपए करीब साठ हजार से ज्यादा ही हो जाएंगे। इतने रुपयों से शकीला की शादी बहुत ही धूमधाम से की जा सकेगी।

लेकिन इस सपने को सच बनाने के लिए बेंगा को अपनी जान देनी होगी। उसे मरना होगा। खुदकुशी करनी होगी उसे।

क्या वह ऐसा कर पाएगा ?

इस सवाल के सामने आते ही बेंगा को लगा कि उसके जिस्म के भीतर से एक और बेंगा निकल आया है, जो उसके सामने आकर खड़ा हो गया है। उसकी आवाज तो बेंगा जैसी ही है, मगर उसकी शक्ल-सूरत कुछ साफ-साफ नजर नहीं आ रही है। उसे देखकर यही लगता है कि उसके सामने कोई साया खड़ा है। बेंगा और साया की बातचीत शुरू हो जाती है। सबसे पहले साया पूछता है, 'तो तू खुदकुशी करना चाहता है ?'

'हाँ।' बेंगा ने जवाब दिया।

'कर पाएगा ?'

'क्यों नहीं ?'

'इसके लिए बहुत हिम्मत चाहिए।'।

'उतनी हिम्मत है मेरे पास।'।

'इससे तेरी अम्माँ को बहुत तकलीफ होगी।'।

'जानता हूँ।'।

‘तेरी बीवी को भी तकलीफ होगी।’

‘यह भी जानता हूँ।’

‘हो सकता है कि इस खुदकुशी के चलते सत्तार तुझसे नफरत करने लगे और मिलनेवाली नौकरी को छोड़ बैठे।’

‘यह भी मुमकिन है।’

‘हो सकता है कि शकीला दिल्लीवाले लड़के के साथ शादी करने से इनकार कर दे।’

‘मैं उसे समझाकर मरूँगा।’

‘यह तू क्या कह रहा है ? ऐसे में तो तेरा कोई भी मकसद पूरा नहीं हो पाएगा और बात भी खुल जाएगी कि तू खुदकुशी करनेवाला है।’

‘मैं इसका खयाल रखूँगा कि यह बात नहीं खुले।’

‘यानी तू मरने की पूरी तरह ठान चुका है?’

‘इसके अलावा और कोई रास्ता है ही नहीं।’

‘क्यों ? तू नेताजी की बात क्यों नहीं मान लेता है ? अभी भी मान ले उनकी बात। ऐसा करने से सत्तार को नौकरी भी मिल जाएगी और तेरी बेटी की शादी भी हो जाएगी। सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि तू भी खुदकुशी करने से बच जाएगा।’

‘उस खूसट को अपनी बेटी देने से अच्छा तो यही है कि मैं अपनी जान दे दूँ।’

‘तो तू मरना ही चाहता है?’

‘हाँ।’

बेंगा को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह साया फिर उसके शरीर में प्रविष्ट हो गया है और अब वह उससे कोई सवाल नहीं पूछ रहा है।

लेकिन अब बेंगा एक नए सवाल में उलझ गया। वह मरेगा कैसे ? उसने खुदकुशी के तरीकों पर गौर करना शुरू किया। रेल से कटकर मरना बड़ा भयानक होता है। किसी कार या ट्रक के नीचे आना भी वैसा ही तकलीफदेह होता है। तो क्या वह नींद की गोलियाँ खाकर चुपचाप सो जाए ? मगर कभी-कभी गोलियाँ नकली भी निकल जाती हैं। एक उपाय यह है कि वह गंगाजी में कूदकर अपनी जान दे दे। यह ठीक उपाय नहीं है; क्योंकि कभी-कभी लोग डूबनेवाले को बचा भी लेते हैं। अगर उसे भी किसी ने बचा लिया तो एक दूसरी मुसीबत में फँस जाएगा वह। हो सकता है कि छलाँग लगाते समय सिर्फ उसके हाथ-पाँव ही टूट जाएँ और उसकी जान न निकले। इसलिए यह तरीका भी ठीक नहीं है। तो क्या वह फाँसी का फंदा गले में डालकर मर जाए ? नहीं, ऐसा करना मुमकिन नहीं। घर में कोई-न-कोई बराबर मौजूद रहता ही है। इस काम के लिए तो एक ऐसा कमरा चाहिए, जिसमें कोई आता-जाता नहीं हो। ऐसा कमरा उसके पास कहाँ है ? तो क्या वह

खुद अपने को छूरा मार ले ? यह तो और भी मुश्किल काम है ।

तब क्या करे बेंगा ?

चलो, यह बाद में सोच लिया जाएगा कि कैसे खुदकुशी की जा सकती है । बस खयाल यही रखना है कि खुदकुशी का उपाय ऐसा हो कि जिस्म को कम-से-कम तकलीफ हो और जान भी निकल जाए ।

असली सवाल तो यह है कि क्या वह सचमुच मरना चाहता है ? क्या मरते समय उसे अपनी खूबमूरत बीवी फातिमा का चेहरा याद नहीं आएगा ? क्या उसे अपनी माँ की याद नहीं आएगी, जिससे वह वादा कर चुका है कि वह खुद हिंदू रीति से गंगाजी के तट पर उसका दाह-संस्कार करेगा ? क्या वह अपनी बेटी शकीला की शादी देखे बगैर ही मर सकेगा ? अरे अभी तो उसे अपने नाती-पोतों का मुँह भी देखना है । अभी उसकी उम्र ही क्या हुई है, चवालीस-पैंतालीस की उम्र भी कोई उम्र होती है । इस समय तो आदमी फिर से एक बार जवान होता है और उसके भीतर जीने की एक नई ललक पैदा होती । अभी मिल में उसकी काफी लंबी नौकरी बाकी है । क्या वह इस नौकरी को छोड़कर मर सकेगा ? अभी तो उसे एक तरक्की और मिलनेवाली है । क्या वह यह तरक्की का मौका भी छोड़ देना चाहता है ?

हाँ, हाँ, वह सब कुछ छोड़ देगा । अब उसे किसी भी चीज की चाहत नहीं है । क्या धरा है इस जिंदगी में ? कुछ भी तो नहीं है । न घर में चैन है और न मिल में । जिधर भी देखो, गुंडों का राज है । जो तिलक-दहेज के खिलाफ बोलता है, वही तिलक-दहेज में सबसे मोटी रकम वसूलता है । जो अपने को मजदूरों का सच्चा नेता बताता है, वह मजदूरों को सबसे बड़ा धोखा देता है । जो दूसरों को चोर बताता है, वह खुद महाचोर निकल जाता है । सबसे मजे की बात यह है कि आज ऐसे लोगों का ही राज है । ये साले जो करते हैं, वह कभी नहीं बोलते और ये जो बोलते हैं, वह कभी भी नहीं करते । यह दुनिया ऐसे ही दोगलों की दुनिया है । ऐसी दोगली दुनिया में अब और रहकर क्या होगा ?

आखिर इस दुनिया ने उसे दिया भी क्या है, जो वह इस दुनिया के बारे में कोई मोह रखे अपने मन में ? कुछ भी तो नहीं मिला है उसे इस दुनिया से । उसने अपना बचपन सुअरों के बीच बिता दिया । किसी तरह मरकर बचा भी तो उसके बाप ने उसकी माँ को तलाक दे दिया । मर-मरकर उसकी माँ ने उसे पाला-पोसा । दूसरे बच्चे जब खेलते, तब वह गैरेज में लोगों की भद्दी-भद्दी गालियाँ सुनता और बात-बात पर मार खाता । न वह पढ़-लिख सका और न कोई रूतबा ही पा सका ।

नवभारत मिल की नौकरी भी कोई नौकरी है क्या ? यहाँ काम करनेवाले आदमियों का तेल निकल जाता है—तेल । पूरे आठ घंटे की ड्यूटी लेते हैं ये । टिफिन का समय भी जोड़ दो तो ड्यूटी पूरे नौ घंटे की हो जाती है ! नौ घंटे तक

मिल में रहने के बाद आदमी पूरी तरह बेकार हो जाता है।

यह कानपुर शहर भी बड़ा घटिया शहर है। जहाँ भी देखो गंदगी फैली नजर आती है और आसमान धुएँ से भरा रहता है। क्या होगा इस शहर में और जीकर?

इस तरह एक लंबे आत्ममंथन के बाद बेंगा ने यह निश्चय कर लिया कि वह खुदकुशी जरूर करेगा। इससे अच्छा रास्ता उसके सामने और कोई हो ही नहीं सकता। वह खुदकुशी कर उन कामों को आसानी से पूरा कर सकेगा, जिन कामों को वह अपने जीते-जी न तो अब तक पूरा कर सका है और न कभी पूरा कर ही पाएगा। ऐसे जीने से क्या फायदा? इससे बेहतर तो मौत ही है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह बेंगा की मौत मौत नहीं, अपने बच्चों के लिए की गई एक शानदार कुर्बानी होगी—एक ऐसी कुर्बानी जिसे लोग इज्जत के साथ याद किया करेंगे।

: ४४ :

आज फिर वही घटना हुई।

बेंगा मिल से निकल रहा था। गेट के पास नेताजी की कार खड़ी थी। कार के पास नेताजी के वही दो आदमी जो पिछली बार थे, खड़े थे। दोनों को देखते ही बेंगा का दिल धक्के से रह गया। उसने चाहा कि वह किसी प्रकार बच निकले। इस नीयत से वह मजदूरों की भीड़ में घुस गया। मगर उन दोनों की गिद्धदृष्टि से बचना संभव नहीं हो सका। दोनों ने बेंगा को देख लिया। दोनों एक साथ चिल्ला पड़े, “मिस्त्रीजी, जरा इधर आइए।”

अब बेंगा क्या करता? वह चुपचाप दोनों के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसने पूछा, “क्या बात है?”

“नेताजी ने आपको सलाम बोला है। चलिए।” एक आदमी ने कार का पिछला दरवाजा खोलते हुए कहा।

“मैं अभी नहीं जा सकता।” बेंगा ने दृढ़ता से जवाब दिया।

“क्यों?” दोनों ने एक साथ पूछा।

“मेरी घरवाली बीमार है। उसके लिए मुझे दवा लेकर तुरंत पहुँचना है।”

“तो क्या हुआ? हम आपको इसी कार से आपके घर पलक झपकते पहुँचा देंगे। आपको जरा भी देर नहीं होगी। आइए, बैठ जाइए कार में।” एक ने कहा।

एक तरह से उस आदमी ने बेंगा को धकियाकर कार में बिठा दिया।

गाड़ी चल पड़ी।

बेंगा मन-ही-मन कल्पना करने लगा कि आज नेताजी का व्यवहार उसके साथ कैसा होगा और नेताजी द्वारा पूछे गए सवालों का वह क्या जवाब देगा। आज वह अपने को डरा हुआ पा रहा था।

बेंगा को नेताजी के सामने आसामी की तरह हाजिर किया गया। उस समय

नजीर खाँ किसी से बातचीत कर रहा था। उसने बेंगा को देखते ही बातचीत बंद कर दी और उस आदमी को इशारे से जाने के लिए कह दिया। वह आदमी चुपचाप उठकर चला गया, पर उसकी आँखों में बेंगा के लिए तनिक घृणा का भाव साफ-साफ दिख रहा था। बेंगा के कारण उसकी बातचीत बीच में ही अटक गई थी, शायद इसी कारण।

“आइए, आइए, आप तो सचमुच आजकल ईद के चाँद बन गए हैं।” नेताजी ने कटाक्ष किया।

आज न तो बेंगा ने नेताजी से आदाब कहा और न नेताजी ने ही बेंगा का अभिवादन किया।

“मेरी घरवाली बीमार चल रही है। उसके लिए मुझे दवा लेकर जल्दी घर पहुँचना है।” बेंगा ने कहा।

“जल्दी ही भिजवा देंगे आपको।”

“आज क्यों बुलवाया है आपने मुझे?” बेंगा ने बेखौफ होकर सीधा सवाल किया।

एकाएक नजीर खाँ का चेहरा बदल गया। उसके गालों तथा नेत्रों से क्रोध टपकने लगा। इस बदले हुए रूप को देखकर बेंगा मिस्त्री तनिक सहम गया।

“सबसे पहले तू यह बता कि तू अपने आपको समझता क्या है?” नेताजी ने सवाल दागा।

बेंगा ने चुपचाप अपना माथा झुका लिया।

“तू यह क्यों नहीं समझता कि तू बड़ा खुशनसीब है, जो तेरी बेटी इस हवेली में दुलहन बनकर आनेवाली है। वह यहाँ राज करेगी—राज। मैं तुझे अपना रिश्तेदार बनाना चाहता हूँ; मगर एक तू है जो बिदके जा रहा है—बिदके जा रहा है!”

बेंगा अभी भी चुप खड़ा था।

“आज तू साफ-साफ बता कि तेरी नीयत क्या है? मैंने सुना है कि तू अपनी लड़की की शादी दिल्ली में किसी लौंडे से करने की तैयारी कर रहा है? बोल क्या यह झूठ है?”

बेंगा मौन रहा।

“सच चाहे जो भी हो, उससे मुझे क्या लेना-देना है। आज मैं तुझसे आखिरी बार कह रहा हूँ कि अगर तेरा मन कानपुर से भर नहीं गया है तो तू मुझे सिर्फ तारीख बता दे कि मैं कब बारात लेकर तेरे दरवाजे पर आ जाऊँ?”

बेंगा का माथा थोड़ा और झुक गया।

“तो यह बात है। तू आज कोई जवाब नहीं दे रहा है, इसका सीधा मतलब यह है कि तेरी राय में अब तक कोई फर्क नहीं पड़ा है।” यह कहकर नजीर खाँ ने

बेंगा के समीप आकर एक बार उसे झकझोर दिया।

झकझोरे जाने के बावजूद बेंगा कुछ न बोला।

बेंगा को नजीर खाँ ने एक बार फिर झकझोर दिया। इस बार बेंगा ने अपना माथा उठाकर नेताजी की तरफ देखा। उसने देखा—नजीर खाँ आज अपने असली रूप में था।

“अरे ! तू तो अभी भी जिंदा है ! मैं तो डर गया था कि कहीं तू खड़े-खड़े टें तो नहीं बोल गया ?

“हाँ, अब तू अपना मुँह खोल। बता, क्या कहना चाहता है तू ?”

“नेताजी, आप घबराइए मत। जरा सब्र से काम लीजिए। मैं यह कोशिश कर रहा हूँ कि घरवाले आपकी बात मान लें। उन्हें मनाने के लिए थोड़ा वक्त तो चाहिए न ?”

“क्या यह सच है ?”

“हाँ।”

“बोलिए, कितना वक्त चाहिए आपको ?” नजीर खाँ अचानक ढीला पड़ गया और ‘तू’ से सीधे ‘आप’ पर आ गया।

“कम से कम तीन महीने का वक्त तो चाहिए ही।”

“फिर एक काम कीजिए आप।”

“क्या ?”

“कल आप अपने सत्तार को मेरे पास भेज दीजिए।”

“क्यों ?”

“मैं चाहता हूँ कि मेरे होनेवाले साले साहब की नौकरी पहले हो जाए। काली कमलीवाले ने चाहा तो आपके साहबजादे को कल ही अपोइंटमेंट लैटर मिल जाएगा।”

“मगर वह तो बाहर गया हुआ है।”

“खैर, कोई बात नहीं। जब वह लौटे तो उसे मेरे पास तुरंत भेज दीजिएगा।”

“जी। तो अब मैं जाऊँ ?”

“यह मैं कैसे कह सकता हूँ ?”

नेताजी ने कल्लन को पुकारा।

बेंगा समझ गया कि कल्लन को क्यों बुलाया गया है। इसलिए बेंगा ने कहा, “मैं यों ही चला जाऊँगा।”

“आखिर गाड़ियाँ किस दिन के लिए हैं ?” नजीर खाँ ने मुसकराकर कहा।

“मुझे डॉक्टर से मिलते हुए जाना है।”

कल्लन आ गया। नजीर खाँ ने आदेश दिया, “साहब को कार में ले जाओ। ये जहाँ जाना चाहें, ले जाना और आखिर में इनके घर पहुँचा देना।”

बेंगा को लगा कि वह मछली की तरह जाल में फँस गया है और इससे मुक्त होने की कोई सूरत नहीं है।

नजीर खाँ बेंगा के साथ-साथ कार तक आया। बेंगा को पिछली सीट पर बिठाकर नजीर खाँ ने उसके कान में धीरे-से कहा, “मेरे साथ अगर कोई धोखा हुआ तो मैं तुम्हारे लिए बड़ा खतरनाक साबित हो सकता हूँ।”

गाड़ी चल पड़ी।

बेंगा सोच में पड़ गया कि वह क्या करे? यह आदमी तो अब गुंडागर्दी पर उतर आया है। इससे कैसे निपटे?

इसमें सोचने की क्या बात है? बेंगा ने यह निश्चय तो कर ही लिया है कि उसे क्या करना है। वह खुदकुशी करनेवाला है। जब वह दुनिया में रहेगा ही नहीं तो यह नजीर खाँ उसका क्या बिगाड़ लेगा?

यह सोचकर बेंगा को थोड़ी राहत मिली। उसने तय कर लिया कि अब वह किसी से नहीं डरेगा—नजीर खाँ से भी नहीं। जब उसे मौत का डर नहीं रहा, तब वह इस अदने-से आदमी से क्यों खौफ खाए? शायद नजीर खाँ को यह मालूम नहीं है कि उसकी बात का जवाब उसे कभी नहीं मिल पाएगा। उसे जवाब देगा कौन? जवाब देनेवाला तो चला ही जाएगा इस दुनिया से। बेंगा का मन कानपुर से क्या— इस दुनिया से ही भर गया है।

अब बेंगा सोचने लगा कि वह तो खुदकुशी कर लेगा, लेकिन उसके घरवालों को क्या-क्या करना है, यह उन्हें कैसे पता चलेगा? अक्सर खुदकुशी करनेवाले आदमी के रिश्तेदारों को पुलिसवाले काफी परेशान करते हैं, इसलिए बेंगा को इस तरह मरना चाहिए कि पुलिसवाले उसके परिवारवालों को तंग न कर सकें।

खुदकुशी करने के पहले वह एक चिट्ठी लिखेगा। उस चिट्ठी में वह सबकुछ समझाकर लिखेगा कि किसे क्या करना है और कैसे करना है। वह एक चिट्ठी पुलिस के नाम भी लिखेगा, जिसमें इस बात का उल्लेख होगा कि वह खुदकुशी कर रहा है। इसमें किसी का कोई अपराध नहीं है, अतः उसके घर के किसी भी आदमी को तंग नहीं किया जाए।

हाँ, यही उपाय सबसे अच्छा है।

बेंगा ने एकाएक कल्लन से कहा, “कल्लन भाई, गाड़ी रोक दीजिए। मैं यहीं उतरना चाहता हूँ।”

“क्यों, मैं आपको घर पहुँचा देता हूँ?”

“नहीं, नहीं, मेरा काम यहीं है। मुझे जरा देर भी हो सकती है ~~इसलिए~~ ^{आप} चले जाइए, मुझे यहाँ उतारकर।”

कल्लन ने कार रोक दी। बेंगा कार से उतर गया। ~~कल्लन गाड़ी लेकर चल~~ गया।

बेंगा चार-पाँच मिनट तक खड़ा सोचता रहा कि अब वह क्या करे ?

अनायास उसके पैर जमाल भाई के घर की तरफ मुड़ गए ।

जमाल घर पर ही था ।

बेंगा को देखते ही जमाल ने कहा, “मैं आपकी तरफ ही जाने की सोच रहा था । अच्छा हुआ आप खुद यहाँ आ गए ।”

“कोई खास बात है क्या ?” बेंगा ने कौतूहल से पूछा ।

“हाँ ।”

“क्या ?”

“दिल्ली से बदर भाई का खत आया है । उन्होंने लिखा है कि वह तीन महीने तक इंतजार कर लेंगे । मगर इससे ज्यादा मोहलत वह नहीं दे सकेंगे ।”

“मेहरबानी करके आप बदर भाई को यह लिख दीजिए कि इंशा अल्लाह यह शादी तीन महीने क्या उससे काफी पहले ही हो जाएगी ।”

“अच्छा तो यह बात है ! यह तो बहुत ही खुशी की बात है । कहीं से कोई लाँटरी निकलनेवाली है क्या, बेंगा भाई ?” जमाल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पूछा ।

“जहाँ चाह, वहाँ राह ।” बेंगा के मुँह से यह वाक्य स्वयमेव निकल गया ।

: ४५ :

बेंगा ने कल ही सबको बता दिया था कि अगले दिन उसकी सालगिरह है । इस पर नूरी ने कहा था, “अरे, तू तो गरमी के दिनों में पैदा हुआ था, फिर तू अपनी सालगिरह जाड़े के दिनों में कैसे मनाने जा रहा है ? तुझे यह क्या सूझी ? इसके पहले तो तूने अपनी सालगिरह कभी नहीं मनाई ?”

इस पर बेंगा ने कहा, “अम्माँ, यह ठीक है कि कल मेरी सालगिरह नहीं है...।”

“फिर ?”

“एक पहुँचे हुए हाजी ने मुझे बताया है कि अगर मैं कल अपनी सालगिरह धूमधाम से मना लूँ, तो मेरे अटके हुए सारे काम देखते-ही-देखते पूरे हो जाएँगे । इसीलिए कल मैं अपनी सालगिरह मना रहा हूँ ।”

“जब ऐसी बात है तो तुझे पहले ही बता देनी चाहिए थी ।”

यह जानकर सबको खुशी ही हुई थी । बेंगा ने कल ही खाने-पीने के सामानों का इंतजाम कर दिया था । बाजार से वह दो मुरगियाँ भी खरीद लाया था ।

बेंगा ने सबको बता दिया था कि उसकी सालगिरह कैसे मनाई जाएगी । उसने मिल से आधी बेला की छुट्टी ले रखी थी ।

घर में चहल-पहल मची थी। सभी ने साफ-सुथरे कपड़े पहन रखे थे। घर को धो-पोछकर साफ-सुथरा कर दिया गया था।

करीब ग्यारह बजे सामने के कमरे में एक दरी बिछा दी गई और मान लिया गया कि वही दस्तरखान है। उस पर खाने-पीने के सामान लाकर रख दिए गए।

बेंगा ने सबको बुलाकर दस्तरखान के इर्द-गिर्द बैठने के लिए कहा। सामने एक कटोरे में खीर थी। उस कटोरे को अपनी अम्मा की तरफ बढ़ाते हुए बेंगा ने कहा, “लो अम्मा, यह खीर तुम मुझे अपने हाथ से खिलाओ।”

यह सुनकर सबको हँसी आ गई। नूरी भी एक पल के लिए शरमा-सी गई।

“यह तुझे क्या सूझी है?” नूरी ने ने हँसते हुए बेंगा से पूछा।

“अम्मा, आज मेरी सालगिरह है, इसलिए मुझसे कोई कुछ भी न पूछे। मैं जैसा कहता हूँ, बस उसे पूरा करे।”

नूरी ने एक चम्मच खीर बेंगा के मुँह में डाल दी। यह दृश्य सबके लिए बड़ा मनोरंजक था। फातिमा तो दुपट्टे से अपना मुँह ढँककर हँसने लगी। उसे क्या पता था कि कुछ देर के बाद लोग उस पर भी हँसेंगे।

बेंगा ने खीर का कटोरा फातिमा के सामने रख दिया और कहा, “ले, अब एक चम्मच खीर तू मुझे खिला।”

इस प्रस्ताव पर एक बार फिर सबकी हँसी छूट गई। फातिमा तो जरा पीछे भी सरक गई। मगर जब बेंगा ने उसके दाहिने हाथ में चम्मच थमा दिया, तब उसे वही करना पड़ा जैसा बेंगा चाह रहा था।

फातिमा के हाथ से खीर खाकर बेंगा ने एक चम्मच खीर फातिमा के मुँह में जबरदस्ती डाल दी। वह कहती रह गई, “यह क्या कर रहे हैं...” लेकिन बेंगा ने फातिमा को खीर खिला ही दी।

इस पर सत्तार और शकीला बहुत खुश हुए। दोनों खुशी के मारे तालियाँ बजाने लगे।

अब बेंगा ने अपने बेटे सत्तार और बेटी शकीला से कहा, “अब तुम दोनों मुझे सालगिरह मुबारक कहो।”

सत्तार और शकीला ने अपने अब्बा की खुशी के लिए ‘सालगिरह मुबारक’ कहा।

बेंगा की आँखें एकाएक गीली हो आईं। शकीला ने पूछा, “अब्बा, आप रो रहे हैं?”

“नहीं बेटा, ये खुशी के आँसू हैं। लोग अपनी सालगिरह हर साल मनाते हैं। मैं पहली बार अपनी सालगिरह मना रहा हूँ, इसलिए दिल खुशी से भर आया है।” बेंगा ने नम आवाज में कहा।

“अब हम लोग हर साल आपकी सालगिरह मनाया करेंगे।” सत्तार ने

उत्साहित होकर कहा ।

“नहीं, नहीं, इसकी अब कोई जरूरत नहीं पड़ेगी । अरे, मैं कौन अपनी सालगिरह मनानेवाला था ? यह तो हाजी साहब के कहने पर ऐसा कर रहा हूँ । यों भी आदमी की पैदाइश तो एक ही बार होती है, इसलिए उसे अपनी सालगिरह भी एक ही बार मनानी चाहिए ।”

ऐसा लगा कि बेंगा की बात से सभी सहमत थे, अतः किसी ने और कुछ नहीं कहा ।

“अब हम लोग बिस्मिल्लाह करें ।” बेंगा के कहने की देर थी कि सभी खाने पर टूट पड़े ।

इस तरह सबके साथ बैठकर खाना खाने का यह पहला मौका था—इस घर में । इसलिए सभी बहुत खुश थे । रह-रहकर बेंगा ही बीच-बीच में चुटकुले सुनाता और बाकी लोग हँस पड़ते । अगर कभी किसी चुटकुले पर किसी को हँसी नहीं आती, तो बेंगा अकेले ही ठहाका लगाने लगता ।

बेंगा का यह रूप सबके लिए नया था । खासकर नूरी बेहद हैरान थी कि आखिर बेंगा को आज क्या हो गया है, जो वह इस तरह की हरकतें कर रहा है । पर वह बेंगा की माँ थी न, इसलिए अपने बेटे को खुश देखकर भीतर-ही-भीतर अपने को खुश पा रही थी ।

खाने का काम समाप्त हो गया ।

शकीला ने तुरंत जूठे बरतन हटा दिए । दरी भी हटा दी ।

फातिमा एक शीशे की कटोरी में इलायची और सौंफ लेकर आई । बेंगा ने अपनी बीवी को इतने ध्यान से देखा कि मानो उसने उसे कभी देखा ही न हो या फिर उसे वह पहली बार देख रहा हो ।

बेंगा के देखने के इस ढंग से बेंगा की बेटी शकीला बेहद शरमा गई । फलतः वह भीतर चली गई । सत्तार भी बाहर चला गया । नूरी तो पहले ही बरामदे पर जा चुकी थी ।

बेंगा ने आगे बढ़कर फातिमा को अपनी बाँहों में भर लिया । वह बार-बार उसका चुंबन लेने लगा ।

बेंगा ने अचानक फातिमा को अपनी ओर खींचा था, इस वजह से उसके हाथ की कटोरी फर्श पर गिरकर चूर-चूर हो गई । कटोरी के टूटने से जो आवाज हुई उसे सुनकर सत्तार, नूरी तथा शकीला तीनों कमरे में आ पहुँचे । कमरे के भीतर के दृश्य को देखकर सभी अवाक थे; क्योंकि बेंगा अभी भी फातिमा को अपनी बाँहों में लपेटे था और वह बार-बार उसका चुंबन ले रहा था ।

फातिमा किसी प्रकार अपने को छुड़ाकर आँगन की तरफ भाग गई । उसे बड़ा खराब लग रहा था । उसे अपने मियाँ की यह हरकत जरा भी पसंद नहीं आ सकी ।

वह भीतर-ही-भीतर कह रही थी, 'इस आदमी को अपने जवान बेटा-बेटी का भी खयाल नहीं रहा।'

सत्तार और शकीला दंग रह गए इस नजारे को देखकर। नूरी भी ताज्जुब में थी।

बेंगा ने अपनी सालगिरह मनाने के लिए नए कपड़े पहन रखे थे। नई लुंगी और कुरता। सिर पर टोपी। कुरते से इत्र की खुशबू आ रही थी। इत्र का फाहा उसके कान में भी खँसा था।

अब वह अपने कपड़े बदलने लगा। ड्यूटी पर जाने के लिए उसके खास कपड़े थे। उन कपड़ों को पहनकर वह तैयार हो गया। उसने पुकारा, "बेटी शकीला, जरा अपनी अम्माँ को बुलाओ।"

"जी।" शकीला ने भीतर से जवाब दिया।

फातिमा बेंगा के सामने लजाती हुई आकर खड़ी हो गई। बेंगा ने उसे फिर उसी प्रकार देखना शुरू किया। फातिमा सहमकर जरा पीछे हट गई और उसने पूछा, "बोलिए।"

"रात का खाना चार बजे तक जरूर बना लेना।" बेंगा ने आदेश दिया।

"ऐसा क्यों?" फातिमा ने आश्चर्य से पूछा।

"हो सकता है कि रात का खाना बनाने का मौका फिर तुम लोगों को न मिल सके।"

"आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?"

"बात ही कुछ ऐसी है।"

"क्या बात है?"

"वह बात शाम को मालूम होगी। अच्छा, अब मैं ड्यूटी पर जा रहा हूँ।"

यह कहकर बेंगा बाहर निकल गया। जाते-जाते बेंगा ने सत्तार से कह दिया, "बेटा, अगर कहीं जाओ, तो चार बजे तक घर जरूर लौट आना। यहाँ तुम्हारी जरूरत पड़ेगी।"

"जी।" सत्तार ने हामी भरी।

फातिमा की समझ में यह नहीं आ सका कि उसके मियाँ रात का खाना चार बजे तक ही क्यों बनाने के लिए कह गए हैं? ऐसी कौन-सी बात होनेवाली है कि हमें रात का खाना बनाने का मौका बाद में नहीं मिल पाएगा? हो सकता है, अपनी सालगिरह की खुशी में आज वह सबको फिल्म दिखाने की सोच रहे हों। हाँ, जरूर यही बात होगी।

यह सोचकर फातिमा ने राहत का अनुभव किया।

: ४६ :

मिल के चारों कोनों पर चार मीनारें बनी थीं। हर मीनार की ऊँचाई लगभग पचास फीट थी। ये मीनारें, 'वाच टावर' कहलाती थीं। इन पर बड़े-बड़े बल्ब लगे थे। रात के समय ये बल्ब जलाए जाते थे और उनकी सहायता से मिल के भीतर निगरानी रखी जाती थी।

एक टावर में कुछ गड़बड़ी आ गई थी। इसके बल्ब पिछले तीन दिनों से नहीं जल रहे थे। मीनारों की देखभाल तथा मरम्मत का काम बेंगा मिस्त्री के जिम्मे था। कल बेंगा मिस्त्री ने इस मीनार पर काम किया था, पर कल इसे ठीक करना संभव नहीं हो सका था।

मीनार लोहे के ऐंगलों से बनी थी और उस पर चढ़ने के लिए लोहे की खड़ी सीढ़ी थी। मीनार की ऊँचाई को देखकर लोग सहम जाते थे। कुछ ऊँचाई तक सीढ़ी पर चढ़ना तो किसी के लिए भी मुमकिन था, मगर पूरी सीढ़ी पर चढ़ना कठिन था। चढ़ते समय लोग डर जाते थे और नीचे उतर आते थे। यों इस पर चढ़ने की मनाही भी थी। इस पर केवल बिजली मिस्त्री ही चढ़ सकते थे।

बेंगा ने अपने अफसरों से यह वादा किया था कि आज वह मीनार को निश्चित रूप से ठीक कर देगा। वह मीनार पर चढ़ा और मीनार की मरम्मत में लग गया।

बेंगा मिस्त्री की कुशलता से सभी परिचित थे। बेंगा ने जो कह दिया, वह उसे पूरा कर देगा—ऐसा सभी मानते थे।

सदा की तरह बेंगा अपने काम में लग गया। उसने बल्बों के सभी पाइंटों को खोल दिया। वह एक-एक होल्डर को खोलकर जाँचने लगा। उसने सबकी सफाई की। जब वह स्वयं संतुष्ट हो गया, तब उसने सभी होल्डरों को यथास्थान लगा दिया। सभी बल्ब ठीक थे ही।

बेंगा ने ऊपर से इशारा किया, "लाइन दो।"

मीनार के नीचे खड़े बेंगा के सहायक ने चिल्लाकर आवाज लगाई, "लाइन।"

पास की गुमटी के सामने लगा बल्ब जल उठा। उसका अर्थ था कि लाइन चालू कर दी गई है। बेंगा ने नीचे जलते हुए बल्ब को देखा, फिर मीनार के बल्बों को। वह समझ नहीं पाया कि जब सब कुछ ठीक है, तो मीनार के बल्ब क्यों नहीं जल रहे हैं।

बेंगा ने ऊपर से पुनः इशारा किया, "लाइन बंद करो।"

लाइन बंद कर दी गई। गुमटी के सामने लगा बल्ब बुझ गया।

बेंगा ने फिर से काम करना शुरू कर दिया। उसने पहले जो-जो किया था उसकी फिर से जाँच की। मीनार पर चढ़े बेंगा को दो घंटे हो गए थे। उसने सूरज की तरफ देखकर अनुमान लगा लिया कि अब चार बज रहे होंगे।

बेंगा ने ऊपर से संकेत किया, "लाइन दो।"

नीचे बेंगा का सहायक चिल्ला पड़ा, “लाइन ।”

गुमटी के सामने लगा बल्ब जल उठा ।

मीनार के पास खड़े बेंगा के सहायक ने ऊपर देखा । मीनार के बल्बों के जलते ही बेंगा का शरीर एकाएक असंतुलित हो गया और वह मीनार से नीचे जमीन की तरफ गिरने लगा । बेंगा का सहायक जोर से चिल्ला पड़ा, “उस्ताद !” और देखते-ही-देखते बेंगा जमीन पर आ गिरा ।

जमीन पर गिरते ही उसके सिर से खून बहने लगा । जमीन से माथा टकराने के कारण एक विस्फोट की-सी आवाज हुई । बेंगा कुछ बोल भी नहीं सका और उसके प्राण पखेरू उड़ गए ।

मिल में खतरे का सायरन बज उठा । देखते-ही-देखते मिल मजदूरों ने बेंगा की लाश को चारों तरफ से घेर लिया ।

उस समय यूनियन ऑफिस में एक जरूरी बैठक चल रही थी, जिसमें नजीर खाँ भी आया हुआ था । एक व्यक्ति दौड़ता हुआ नेताजी के पास पहुँच गया और उसने सारी बात नेताजी को बता दी । नजीर खाँ मीटिंग छोड़कर भागा-भागा बेंगा के पास आ गया ।

नेताजी को देखते ही मजदूरों ने उसे रास्ता दे दिया । बेंगा के पास खड़े दो हट्टे-कट्टे मजदूरों ने नेताजी से कहा, “हम लोग आपका ही इंतजार कर रहे थे ।”

नेताजी ने झुककर बेंगा को ध्यान से देखा-परखा । उसने सीने पर हाथ रख-कर देखा । लोगों ने समझा कि नेताजी यह देख रहे हैं कि दिल की धड़कन चालू है या नहीं, पर वास्तव में नजीर खाँ यह पता लगाना चाहता था कि जेब में क्या है ? जेब में एक लंबा लिफाफा मोड़कर रखा हुआ था । नेताजी ने जेब से लिफाफा निकालकर खोला । भीतर से तीन पन्ने निकले । उन पन्नों पर कुछ लिखा हुआ था । नेताजी ने उन पन्नों को मोड़कर लिफाफे में रख दिया और लिफाफे को पहले की ही तरह मोड़कर अपनी बंडी की भीतरी जेब में डाल लिया ।

एंबुलेंस गाड़ी के आने की आवाज सुनाई पड़ी ।

भीड़ एक किनारे हो गई ।

एंबुलेंस में बेंगा का शव रखा गया ।

गाड़ी में खुद नजीर खाँ भी सवार हो गया ।

गाड़ी अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी ।

□

डॉक्टरों ने बेंगा को मृत घोषित कर दिया था । लाश अब पुलिस के कब्जे में थी । पोस्टमार्टम के बाद ही घरवालों को लाश मिल सकती थी ।

नजीर खाँ का अब अस्पताल में कोई काम नहीं था । वह अपनी हवेली में लौट आया ।

पलँग पर लेटकर वह उन पन्नों को पढ़ने लगा, जो बेंगा की जेब से निकले थे।
उन पर लिखा था—

“प्यारे बेटे सत्तार,

मेरी यह दिली ख्वाहिश थी कि मैं तुम्हें ऊँची-से-ऊँची तालीम दिलाता, मगर ऐसा करना मुमकिन नहीं हो सका। मैं तुम्हें ज्यादा नहीं पढ़ा सका। हर बाप का यह फर्ज होता है कि वह अपनी औलाद का घर भी बसाए। मैं यह काम भी नहीं कर सका।

शकीला के हाथ पीले हो जाएँ, इसके लिए मैंने बहुत कोशिशें कीं। मुझे इसमें भी कामयाबी नहीं मिल सकी। न तो मैं तुम्हें नौकरी दिलवा सका। और न शकीला की शादी ही कर सका। एक बाप के लिए इससे बड़ी नाकामयाबी और क्या हो सकती है ?

एक उपाय तो यह था कि मैं नेताजी की बात मान लेता। अगर ऐसा मैं कर पाता तो तुम्हें नौकरी भी मिल जाती और शकीला की शादी भी हो जाती। मगर ऐसा करने के लिए मुझे अपनी शकीला बेटी की कुरबानी देनी पड़ती। यह काम मैं कैसे कर सकता था ? मैं अपनी बेटी की शादी नेताजी जैसे नीच और कमीने आदमी के साथ कैसे कर सकता था ? मैं गरीब जरूर हूँ, लेकिन मेरी आँखें यह नहीं देख सकती थीं कि मेरे दामाद की उम्र मुझसे भी कहीं ज्यादा हो।

इसी बीच दिल्लीवाले लड़के के बारे में मालूम हो गया। यह लड़का हर लिहाज से अच्छा है। यह लड़का सबको पसंद भी है। शकीला को भी यह लड़का भा गया है। यह मैं जानता हूँ। मगर इस लड़के की कीमत पचास हजार है। अगर मेरे बस में होता तो मैं इस लड़के की कीमत तुरंत अदा कर देता।

रुपए के इंतजाम के लिए मैं पागल बना फिरता रहा। मगर मुझे कामयाबी नहीं मिली। कोई मुझे रुपए देता भी कैसे ? न तो मेरी कोई हैसियत है और न मेरे पास कोई जमीन-जायदाद ही है। अपनी मेहनत-मशक्कत से मैं जितना कमा सका, वह मैंने तुम्हारी और शकीला की पढ़ाई-लिखाई पर खर्च कर दिया।

जब मेरी शादी हुई थी, तब न नौकरी बिकती थी और न दूल्हा। देखते-ही-देखते दुनिया बदल गई और ये दोनों चीजें बिकने लगीं। जिसके पास थैली हो वह मनचाही नौकरी खरीद ले और खरीद ले मनपसंद दूल्हा। मेरे पास दौलत नहीं है, इसलिए मैं दोनों में से एक चीज भी तुम लोगों के लिए नहीं खरीद सका।

इस बीच मुझे एक हकीकत मालूम हुई कि मैं जिंदा रहकर इन दोनों

चीजों का कभी भी इंतजाम नहीं कर पाऊँगा। पर, अगर मैं मरने को तैयार हो जाऊँ, तो तुम्हें नौकरी भी मिल जाएगी और शकीला की शादी भी दिल्लीवाले लड़के के साथ ही हो सकेगी। इसलिए बहुत सोच-समझकर मैंने खुदकुशी करने का फैसला किया।

यह खत तुम्हें तब मिलेगा, जब मैं इस दुनिया से कूच कर चुका होऊँगा। इस खत में मैंने जैसा लिखा है, वैसा ही करना।

मेरे मरने के बाद—

- (१) मेरी मिल के मालिक तुम्हें मेरे बदले में तुम्हारी काबिलियत के हिसाब से कोई नौकरी दे देंगे। जाहिर है कि तुम्हें कोई अच्छी पोस्ट ही दी जाएगी।
- (२) तुम्हारी अम्माँ को मिल से प्रोविडेंट फंड के करीब बीस हजार रुपए मिलेंगे। कुछ रुपए ग्रेच्युटी के भी मिलेंगे। कितने, यह तो मुझे पता नहीं है। बीमा कंपनी से भी तुम्हारी अम्माँ को पच्चीस हजार रुपए मिलेंगे।
- (३) जो रुपए मिलेंगे, वे कुल मिलाकर पचास हजार से ज्यादा होंगे। इन रुपयों से अपनी बहन शकीला की शादी दिल्लीवाले लड़के से कर देना। यह तुम्हारा फर्ज होगा।
- (४) नौकरी मिलते ही तुम अपनी शादी भी कर लेना।
- (५) मेरी अम्माँ यानी तुम्हारी दादी एक हिंदू की बेटी हैं। उन्होंने मुझसे यह वायदा करवाया था कि उनकी मौत के बाद मैं उन्हें दफनाऊँगा नहीं, बल्कि उन्हें आग दूँगा। उनका यह आखिरी अरमान है कि हिंदू रीति से ही उनकी चिता सजाई जाए और मैं अपने हाथ से उन्हें आग दूँ। अब यह मुमकिन नहीं रहा। यह काम मैं तुम्हें सौंपता हूँ। मुझे पूरा यकीन है कि तुम अपनी दादी के इस आखिरी अरमान को मेरी तरफ से जरूर पूरा करोगे।

बेटा, दुनिया में हर चीज की एक कीमत होती है। कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। तुम्हारी नौकरी और शकीला का दूल्हा खरीदने के लिए जीते-जी मैं कुछ नहीं कर सका। मेरे सामने यह भी जाहिर हो गया कि मैं जिंदा रहकर ये दोनों काम कभी पूरा नहीं कर पाऊँगा। इसलिए मैंने यह तय किया है कि अगर मेरी कुरबानी से ये दोनों काम पूरे होते हों तो जिंदा रहने से बेहतर तो मर जाना ही है।

मैं जानता हूँ कि मेरी खुदकुशी से सबको तकलीफ होगी, मगर मेरे सामने इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं था।

अपनी दादी और अम्माँ का पूरा-पूरा खयाल रखना।

आज सालगिरह के बहाने, मैंने जो बेजा हरकतें कीं, उनके लिए मैं सबसे माफी माँगता हूँ। मैंने कहा था न कि हर आदमी को अपनी सालगिरह एक ही बार मनानी चाहिए; क्योंकि वह पैदा एक ही बार होता है—बार-बार नहीं। मौत भी आदमी को एक ही बार मिलती है। तुम लोग समझ लेना कि इस दुनिया में बेंगा मिस्त्री का कभी कोई वजूद नहीं था, वह पैदा होने के साथ ही मर गया। जो कभी था ही नहीं, उसके लिए रोना कैसा ?

तुम्हारा अब्बा—

बेंगा मिस्त्री

पुलिस के लिए

मैंने अपनी मरजी से खुदकुशी की है, इसलिए इस बाबत किसी को भी हलकान-परेशान न किया जाए।

: ४७ :

बेंगा मिस्त्री की मौत ने उसके परिवार को हिलाकर रख दिया। अब तक जबकि उसका चहारम भी खत्म हो चुका था, उसके घर के लोग गम से उबर नहीं सके थे।

फातिमा बैठी-बैठी गुम हो जाती और अचानक रोना शुरू कर देती। सालगिरह के नाम पर उसके खाँविद ने जो नाटक किया था, उसकी एक-एक बात वह याद करती और रोती चली जाती। उन्हें जाना था इसीलिए तो उस दिन उन्होंने सबसे अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने के लिए कहा था और सबके साथ मिलकर खाना खाया था। फातिमा को अपनी बाँहों में भरकर उन्होंने उसका जो चुंबन लेना शुरू कर दिया था और इस बात की जरा भी परवाह नहीं की थी कि घर में सत्तार और शकीला दोनों के अलावा अम्माँजी भी हैं—उसका मतलब अब फातिमा के सामने साफ होने लगा था।

बेटे की मौत ने नूरी को तो जीते-जी लाश ही बना दिया था। वह एक गठरी की तरह कहीं भी पड़ी रहती। न किसी से बोलती, न बतियाती। अगर कोई कुछ बोलता तो वह अचानक चौंक पड़ती। लगता जैसे किसी ने उसे सपने से जगा दिया हो।

अब तक किसी को भी यह मालूम नहीं हो सका था कि बेंगा की मौत कैसे हुई थी। लोग यही मानकर चल रहे थे कि बेंगा एक हादसे का शिकार हो गया। मगर शकीला यह मानने को कतई तैयार नहीं थी। वह यह मान बैठी थी कि उसके अब्बा ने अपनी जिदगी से तंग आकर खुद अपने आपको खत्म कर दिया। इस हादसे की वजह वह अपने आपको ही मानने लगी थी।

सत्तार ने अपने हाथ से अपने अब्बा को कब्र में सुलाया था, मगर इस बात पर उसे खुद भी यकीन नहीं होता कि उसके अब्बा अब इस दुनिया में नहीं हैं। उसे यही लगता कि वह अपनी ड्यूटी पर गए हुए हैं। हमेशा की तरह वह रात को साढ़े नौ-दस बजे तक घर लौट आएँगे। इसलिए वह दस-न्यारह बजे रात तक जागता रहता।

कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था कि बेंगा मिस्त्री उस दुनिया में चला गया है जहाँ से लौटकर कोई नहीं आता।

बेंगा की मौत के बाद नजीर खाँ सत्तार के साथ-साथ हर जगह जाता-आता रहा। वह अस्पताल गया, थाने गया, कब्रिस्तान गया—मतलब जहाँ-जहाँ जाना आवश्यक था, वह सत्तार के साथ वहाँ-वहाँ गया। अस्पताल और थाने के लोग ऐसे गम के मौके पर भी किसी को माफ नहीं करते और अपनी दस्तूरी लेकर ही छोड़ते हैं। इन खर्चों को नेताजी ने खुद निपटाया। कब्रिस्तान में भी कई तरह के खर्चे थे। इन खर्चों को भी नजीर खाँ ने ही पूरा किया। सत्तार को तो कुछ पता ही नहीं था कि कैसे क्या करना था। उससे जैसे-जैसे कहा गया, वह करता चला गया। कब्रिस्तान से मिलनेवाले मृत्यु प्रमाण-पत्र को नेताजी ने खुद अपनी देख-रेख में सत्तार से भरवाया और उसे अपने ही पास रख लिया।

नेताजी ने अपने तीन-चार आदमियों को बेंगा के घर पर बिठा दिया था ताकि सत्तार को किसी तरह की कोई दिक्कत न हो। वह खुद भी बीच-बीच में आकर सत्तार से मिल जाता। वह सबको समझाता। अब नजीर खाँ इस घर का एक ऐसा हितैषी बन गया था कि उसके सामने आने में न तो फातिमा कोई परदा करती, न शकीला ही कोई झिझक।

नेताजी की पारखी आँखों ने यह परख लिया था कि अगर शकीला कमसिन है तो उसकी अम्माँ इस उम्र में भी कम दिलकश नहीं है। अब तो शकीला को पाने की चाहत और भी बढ़ गई थी, क्योंकि ऐसा करके वह फातिमा को भी पा सकता था।

सत्तार को किसी से यह बात मालूम हो गई थी कि उसके अब्बा की जेब से कोई लिफाफा निकला था, जिसे नेताजी ने अपने पास रख लिया था। उस लिफाफे में क्या था, यह जानना सत्तार के लिए बहुत जरूरी था। लेकिन वह कैसे नेताजी से उस लिफाफे के बारे में पूछे? यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। उसे डर था कि कहीं नेताजी इस बात पर खफा न हो जाएँ। नेताजी ने अभी इस परिवार की जैसी मदद की थी, उसे याद कर सत्तार का जोश ठंडा पड़ जाता और वह उस लिफाफे के बारे में पूछना चाहकर भी नेताजी से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं बटोर पाता।

जमाल को भी अपने दोस्त की मौत का गहरा सदमा पहुँचा था। उसने तो

कभी सोचा भी नहीं था कि उसका दोस्त उसे दगा देकर इतनी जल्दी कूच कर जाएगा। बेंगा ने कभी उससे ऐसी कोई बात नहीं की थी, जिससे उसे जरा भी अंदाज लग पाता कि उसके दोस्त की जिंदगी का चिराग अब गुल होनेवाला ही है। रह-रहकर उसके मन में बस एक ही बात आती कि नेताजी ने जो कागज अपने पास रख लिया था, जरूर उसमें कोई खास बात होगी। हो सकता है कि मरने के पहले बेंगा ने... नहीं, नहीं, ऐसा सोचना भी गुनाह है। बेंगा जैसा दिलेर आदमी ऐसा नहीं कर सकता। वह क्यों खुदकुशी करने को मजबूर होता? वह तो हिम्मत-वाला इनसान था। खुदकुशी तो बुजदिल किया करते हैं।

जो हो, उस लिफाफे के बारे में नेताजी से तो पूछना ही पड़ेगा। अगर उस लिफाफे में कोई खास बात नहीं है, तो नेताजी ने उसे अपने पास क्यों रख छोड़ा है? अगर वह लिफाफा बेकार है, तो भी उन्हें वह लिफाफा सत्तार को लौटा देना चाहिए था।

वह लिफाफेवाली बात जमाल के गले में बार-बार अटक रही थी। सत्तार अपने जमाल चाचा से उस लिफाफे के बारे में अब तक कई बार चर्चा कर चुका था।

जमाल ने यह तय कर लिया कि आज शाम को वह नेताजी की हवेली की तरफ जरूर जाएगा। नेताजी से उसकी पटती है और शाम के समय नेताजी के साथ उसकी बातचीत ढंग से हो सकेगी। मिल में सत्तार को जल्दी-से-जल्दी नौकरी मिल सके, इसके बारे में भी नेताजी से सिफारिश करनी थी। जब तक नजीर खाँ मैनेजमेंट से खुद नहीं कहेगा, मैनेजमेंट यों ही चुप बैठा रहेगा। उसे क्या गरज पड़ी है कि वह सत्तार को घर बैठे ही नौकरी दे दे?



नजीर खाँ अपनी हवेली में नहीं था। यह जानकर जमाल उदास हो गया। कुछ देर इंतजार करने के बाद वह लौटने लगा। वह गेट तक पहुँचा ही था कि नेताजी की कार आती हुई दिखी।

जमाल लौट आया।

कार से उतरते ही नेताजी ने कहा, “आदाब जमाल भाई, आप कब से मेरा इंतजार कर रहे थे?”

“आदाब,” जमाल ने जवाब दिया, “ज्यादा देर नहीं हुई।”

“शायद आप लौटने लगे थे?”

“जी।”

“आइए, आइए। अगर आप लौट जाते, तो मुझे बेहद तकलीफ होती।”

नजीर खाँ बैठक में जरा रुककर भीतर चला गया। जमाल को भी अपने साथ लेता गया।

अब दोनों एक सोफे पर साथ-साथ बैठे थे। नेताजी ने ही शुरू किया, “बेंगा मिस्त्री के साथ जो हादसा हुआ, उसने मुझे तो दहलाकर रख दिया है। इसके पहले इस मिल में ऐसा कभी नहीं हुआ। बेंगा मिस्त्री जैसा चुस्त आदमी कैसे इस हादसे का शिकार हो गया, यह बात अब भी मेरी समझ में नहीं आ पाती है।”

“बेंगा मिस्त्री की मौत ने मुझसे मेरा सबसे अजीज दोस्त छीन लिया है।” जमाल ने अपना दुख बताया।

“हाँ, वह मैं जानता हूँ। आप दोनों में खूब पटती थी। बेंगा मिस्त्री को आप पर यकीन भी बहुत ज्यादा था।”

कुछ देर के लिए दोनों मौन हो गए।

“नेताजी...” जमाल कुछ बोलते-बोलते रुक गया।

“जमाल भाई, आप बोलते-बोलते रुक क्यों गए? बोलिए न, क्या बात है?”

“नेताजी, आप तो जानते ही हैं कि उस घर में कमानेवाले सिर्फ बेंगा मिस्त्री ही थे।”

“हाँ, बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।”

“अब तो वह रहे नहीं।”

“क्या किया जाए? जब खुदा को ही ऐसा ही मंजूर था तो कोई क्या करे?”

“घर में खानेवाले चार-चार आदमी हैं।”

“हाँ।”

“एक महीने के बाद उनसे क्वार्टर खाली करने के लिए भी कहा जा सकता है?”

“कहा ही जाएगा।”

“इसीलिए मैं आपसे यह गुजारिश करने आया हूँ कि...”

“बोलिए न... आप खामखवाह तकल्लुफ कर रहे हैं।”

“इस बीच अपने अब्बा के बदले सत्तार को नौकरी मिल जाती, तो यह उजड़ता हुआ घर बच जाता।”

नजीर खाँ ने कुछ भी नहीं कहा।

“इस बीच प्रोविडेंट फंड का हिसाब, ग्रेच्युटी का मामला, बीमा का दावा इन सबको जल्द निपटाना भी जरूरी है और ये सारे काम आपकी मदद के बगैर कैसे हो सकते हैं?”

“आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं, जमाल भाई। मैं भी तो यही चाहता हूँ कि सत्तार की नौकरी जल्द लग जाए और बेंगा मिस्त्री का सारा हिसाब-किताब भी साफ हो जाए। लेकिन सवाल यह है कि यह सब आखिर होगा कैसे?”

“क्या कोई अड़चन है, नेताजी?”

“हाँ, बहुत बड़ी अड़चन है।”

“क्या ?”

“अब क्या बताऊँ आपसे, जमाल भाई ?”

“क्या बताने लायक नहीं है ?”

“रुकिए, एक मिनट। मैं अभी आता हूँ।”

यह कहकर नजीर खाँ कमरे से निकल गया। दो मिनट के भीतर ही वह लौट आया। उसके हाथ में एक लिफाफा था। उस लिफाफे को जमाल की तरफ बढ़ाते हुए नजीर खाँ ने कहा, “लीजिए, इसे खोलकर खुद पढ़ लीजिए। आप सब कुछ समझ जाएँगे।”

लिफाफे के भीतर से पन्नों को निकालकर जमाल पढ़ने लगा। पूरे खत को पढ़कर जमाल हक्का-बक्का रह गया। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

“जमाल भाई, देखा आपने कि आपके अजीज दोस्त ने क्या गुल खिलाया है ? इस खत की जानकारी पता नहीं कैसे पुलिसवालों को मिल गई। वे लोग मेरे पीछे पड़ गए कि यह तो खुदकुशी का मामला है। मैंने दस हजार रुपए नकद गिनकर इस खत को किसी तरह बचाया है।”

जमाल चुपचाप सुन रहा था।

“अगर यह बात सबके सामने खुल गई कि बेंगा मिस्त्री ने खुदकुशी की है, तो आप जानते हैं कि क्या होगा ? बेंगा मिस्त्री के घरवालों को बीमे का एक नया पैसा भी नहीं मिलेगा। मिल का मैनेजमेंट भी तन जाएगा और वह सत्तार को नौकरी देने से साफ-साफ इनकार कर देगा। इसी तरह प्रोविडेंट फंड और ग्रेच्युटी के पूरे-पूरे रुपए देने में मैनेजमेंट आनाकानी कर सकता है। अब आप ही बताइए जमाल भाई कि मैं कैसे मदद करूँ बेंगा मिस्त्री के घरवालों की ?”

: ४८ :

नेताजी की कार आकर रुकी।

सत्तार ने खिड़की से ही कार को अपने घर के सामने रुकते हुए देख लिया। वह बाहर निकला। उसने अदब के साथ नजीर खाँ का स्वागत किया। बाहर के कमरे में पहुँचकर सत्तार ने नेताजी से कहा, “आइए, बैठिए।”

“सत्तार मियाँ, आज बहुत जरूरी बात करने आया हूँ। अगर भीतर कोई और जगह है, तो वहीं चलो। मैं चाहता हूँ कि इस बातचीत में घर के सभी लोग शरीक हों।” नेताजी ने कहा।

“ठीक है। मैं अभी आया।” कहकर सत्तार भीतर चला गया।

नजीर कब तक खड़ा रहता। वह सत्तार के तख्त पर बैठ गया।

कोई पाँच मिनट के बाद सत्तार बाहर आया। उसने कहा, “आ जाइए, भीतर ही बैठते हैं।”

भीतर के कमरे से नूरी का खटोला हटा दिया गया था। बिस्तर भी कहीं और रख दिया गया था। जमीन पर एक दरी बिछी थी और उसके ऊपर एक सफेद चादर।

“बैठिए नेताजी।” सत्तार ने अनुरोध किया।

नजीर खाँ दरी पर बैठ गया।

“बाकी लोगों को भी बुला लो।” नेताजी का आदेश था।

सत्तार ने खड़े-खड़े आँगन की तरफ देखा। बारी-बारी से सभी आकर कमरे में खड़ी हो गईं।

“आदाब, अम्माँजी।” नजीर ने नूरी का अभिवादन किया।

“खुश रहो, बेटा।” नूरी ने दुआ दी।

फातिमा तथा शकीला ने हाथ उठाकर नेताजी का मौन अभिवादन किया। नजीर खाँ ने भी उत्तर में वैसा ही किया।

नूरी, फातिमा तथा शकीला तीनों अपराधी की तरह दीवार से सटकर खड़ी हो गईं।

“आप तीनों भी बैठ जाएँ, तो ठीक रहेगा।” नजीर खाँ ने तीनों की ओर देखकर कहा।

तीनों जमीन पर ही बैठ गईं।

कुछ क्षणों तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। इस सन्नाटे को तोड़ते हुए नजीर खाँ ने बातचीत का सिलसिला शुरू किया, “अम्माँजी, आपके बेटे वेंगा मिस्त्री ने जो काम किया है, उसकी जानकारी तो अब तक आप लोगों को जमाल भाई से मिल ही गई होगी?”

इस बात का किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

“सत्तार, लो देख तो वह खत जो तुम्हारे अब्बा की जेब से मुझे मिला था।” नेताजी ने खत की फोटो कापी सत्तार की तरफ बढ़ा दी।

सत्तार खत लेकर पढ़ने लगा। वह पूरा खत पढ़ गया। उसकी आँखें बार-बार खत के तीसरे पैराग्राफ पर अटक जातीं, जिसे बड़ी सावधानी से काटा गया था। एक-एक शब्द को इतनी सावधानी से काटा गया था कि यह पता लगाना मुश्किल था कि इस पैराग्राफ में क्या लिखा था।

“तुम चाहो तो यह खत सबको सुना दो।” नजीर खाँ ने सत्तार से कहा।

सत्तार पत्र पढ़कर सबको सुनाने लगा। कमरे का वातावरण अत्यंत बोझिल हो गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि सब रो पड़ेंगे। लेकिन सभी ने बहुत हिम्मत से खुद को रोके रखा।

जब सत्तार ने खत पढ़ना खत्म किया, तब नजीर खाँ ने तीनों औरतों की तरफ देखकर यह परखना चाहा कि उन सब पर इस खत का क्या असर पड़ा है और वह

जो अब बोलने जा रहा है, उसका उन पर कैसा प्रभाव पड़ सकता है।

उसने बोलना शुरू किया, “सत्तार, यह खत मैंने तुम्हें इसलिए दिखा दिया ताकि तुम्हें हकीकत मालूम हो सके। यह खत नहीं है, यह तो एटम बम है—एटम बम। गनीमत समझो कि पुलिस के आने से पहले यह खत मेरे हाथ लग गया था वरना क्या-से-क्या हो जाता। फिर भी पुलिसवालों को इस खत की जानकारी कहीं से मिल ही गई। अब मैं तुम्हें क्या बताऊँ कि इस खत को बचाने के लिए मैंने पुलिसवालों को दस हजार नकद देकर उनका मुँह बंद किया है। अगर यह खत पुलिसवालों को मिल जाता, तो लेने के देने पड़ जाते।”

“जमाल चाचा से यह मुझे पहले ही मालूम हो गया था।” सत्तार ने बताया।

“सत्तार, मामला बड़ा टेढ़ा हो गया है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि सबके सामने ही बातचीत हो।” नेताजी ने पहला पासा फेंका।

“कैसी बातचीत?” सत्तार ने ताज्जुब के साथ पूछा।

“देखो भाई, तुम ठहरे ग्रेजुएट और मैं ठहरा अँगूठाछाप आदमी। मैं सीधी-सादी बात जानता हूँ, इसलिए मुझे जो कहना है वह साफ-साफ कहे देता हूँ।”

“कहिए।” सत्तार ने कहा।

“जो आदमी इस दुनिया में है नहीं, उसके बारे में कोई बात करना मुनासिब तो नहीं लगता, मगर मजबूरी है कि बेंगा भाई का जिक्र करना ही पड़ेगा। बेंगा भाई तुम्हारी बहन की शादी और तुम्हारी नौकरी के लिए बेहद परेशान रहा करते थे। मैंने तुम्हारी नौकरी और तुम्हारी बहन की शादी दोनों के उपाय उन्हें सुझाए थे। लेकिन बेंगा भाई को शायद मेरी तजवीज पसंद नहीं आई। वह अपने ढंग से सोचते रहे और काम करते रहे। नतीजा सबके सामने है। उनकी जान भी चली गई और अपने जीते-जी वह अपनी बेटी की शादी और तुम्हारी नौकरी भी नहीं देख सके। उन्होंने अपने साथ जो किया सो किया, मगर यह खत लिखकर तो उन्होंने तुम सबको बेपनाह, बेसहारा और मुफलिस बना दिया है।”

सभी चुपचाप सुन रहे थे।

“अगर यह खत बीमा कंपनी के हाथ लग जाए, तो वह तुम लोगों को पच्चीस हजार तो क्या एक नया पैसा भी नहीं देगी। उलटे अगर वह चाहे तो तुम लोगों को मुकदमे में भी फँसा सकती है।”

इस घमकी से सभी भयभीत नजर आए। इससे नेताजी को बड़ी राहत मिली। उसे लगा कि अब उसके पैर फतह की ओर बढ़ चले हैं।

“अगर यह खत मिलवालों को मिल जाए, तो वे तुम्हें कभी भी नौकरी नहीं देंगे—यूनियन के जोर डालने पर भी नहीं। इतना ही नहीं, वे प्रोविडेंट फंड और ग्रेजुटी के रूप भी रोक सकते हैं। तुम लोगों के ऊपर जो सबसे बड़ी मार पड़ने-वाली है, सो यह कि एक महीने के बाद तुम लोगों से यह क्वार्टर खाली कर देने के

लिए कहा जाएगा।”

“फिर हम लोग कहाँ जाएँगे?” फातिमा बीच में ही बोल पड़ी।

“अगर आप लोग अक्ल से काम लेंगे तो ऐसी नौबत कभी नहीं आएगी।” नजीर खाँ ने बड़े विश्वास के साथ कहा।

“इसका क्या उपाय है?” सत्तार पूछ बैठा।

“अब तुम लोगों के सामने दो ही रास्ते हैं। अगर तुम लोग पहले रास्ते का चुनाव करते हो तो उसमें खुशहाली-ही-खुशहाली है। उस रास्ते पर चलने से तुम्हें नौकरी भी मिल सकती है और तुम्हारी बहन की शादी भी हो सकती है। तुम लोगों को यह क्वार्टर भी खाली नहीं करना पड़ेगा। ऊपर से बीमा कंपनी, प्रोविडेंट फंड और ग्रेच्युटी के रुपए भी तुम लोगों को मिल जाएँगे।”

सत्तार ने नेताजी की तरफ अर्थभरी दृष्टि से देखा। नजीर खाँ ने समझ लिया कि सत्तार यह पूछना चाहता है कि अगर इस रास्ते को मंजूर नहीं किया गया तो क्या होगा?

“अगर तुम लोग पहला रास्ता मंजूर नहीं करते, तो सबसे पहले तुम लोगों को यह क्वार्टर खाली करना पड़ेगा। अगर तुम लोग इसे खाली नहीं करोगे, तो तुम लोगों को पुलिसवाले धक्के मारकर यहाँ से निकाल बाहर करेंगे। सत्तार, जरा सोचो कि तुम अकेले क्या-क्या कर सकोगे? अभी तो तुम खुद बेकार हो। क्या तुम चाहोगे कि तुम्हारी बहन कुँआरी बैठी रह जाए और तुम लोगों को इस क्वार्टर से निकाल बाहर कर दिया जाए? क्या तुम लोग यह भी चाहोगे कि तुम लोगों को बीमा, प्रोविडेंट फंड और ग्रेच्युटी के रुपए नहीं मिलें?”

परिस्थिति की गंभीरता ने सबको गूँगा बना दिया। सत्तार ने धीरे-से पूछा, “तो आप ही बताइए न कि हम लोग क्या करें?”

“सत्तार, यह बात तो तुम बताओ कि तुम लोग क्या करना चाहते हो? बस यही जानो कि एक तरफ तुम इस क्वार्टर में अपने कुनबे के साथ बने रह सकते हो, तुम्हें नौकरी भी मिल सकती है, तुम्हारी बहन की शादी भी हो सकती है। सिर्फ उसकी शादी ही नहीं होगी, उसे तो हवेली में राज करने का मौका मिलेगा—एक मलिका की तरह।”

“कहीं आप अपनी ही शादी की बात तो नहीं कर रहे हैं?” सत्तार पूछ बैठा।

“तुमने बिलकुल ठीक समझा।” नजीर खाँ ने मुसकराते हुए जवाब दिया।

“यह नामुमकिन है। मेरे अब्बा इस शादी के सख्त खिलाफ थे।” सत्तार ने छूटते ही जवाब दिया और आवेश में आकर अपने हाथ में पकड़े पत्र के पन्नों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

सत्तार के इस काम से नूरी, फातिमा और शकीला तीनों ताज्जुब में पड़ गईं, फिर भी तीनों में से किसी ने उसे टोका नहीं। सिर्फ शकीला वहाँ से उठकर भीतर

आँगन की तरफ चली गई।

“सत्तार, मुझे पहले से ही पता था कि तुम यही करोगे और इस बेजान खत के टुकड़े-टुकड़े कर डालोगे। लेकिन खत के टुकड़े-टुकड़े कर देने से हकीकत तो नहीं बदल जाएगी। मैं तुम लोगों को यही समझाने आया हूँ कि जरा हकीकत को समझने की कोशिश करो। तुम्हारे अब्बा इस हकीकत से अपनी आँखें चुराते रहे। क्या नतीजा निकला? उन्हें अपनी जान गँवानी पड़ी। लेकिन, सवाल यह है कि वह अपनी जान की कुरबानी देकर भी इस हकीकत को बदल सके क्या?”

“क्या है हकीकत?” सत्तार ताव में था।

“क्या एक ही बात मुझे बार-बार समझाने की जरूरत होगी? अगर ऐसी ही बात है, तो लो सुनो—मैं तुम्हारी बहन शकीला से शादी करना चाहता हूँ। अगर तुम लोग यह रिश्ता पसंद कर लेते हो तो मैं तुम्हें मिल में तुरंत नौकरी दिलवा दूँगा। बीमा कंपनी और मिल से मिलनेवाले सभी पावने दिलवा दूँगा। और अगर तुम लोगों ने यह दिश्ता बेंगा की ही तरह ठुकरा दिया तो...”

“तो क्या?” सत्तार गुस्से से उबलने लगा था।

“तो बेंगा मिस्त्री का असली खत मैं खुद पुलिस, बीमा कंपनी और मिल के मैनेजमेंट को दिखा दूँगा।” बंडी की जेब से असली खत निकालकर दिखाते हुए नजीर खाँ ने कहा।

“तो इससे क्या होगा?” सत्तार बेखौफ होकर पूछ बैठा।

“पुलिस तुम लोगों के खिलाफ मुकदमा दायर कर देगी...बेंगा मिस्त्री की मौत एक हादसा मानी जा रही है...तब वह खुदकुशी का मामला बन जाएगी... तुम लोगों को जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है...और सत्तार तुम? तुम कचहरी के चक्कर लगाते-लगाते इस जवानी में ही बूढ़े हो जाओगे...”

सब-के-सब घबरा-से गए।

“दूसरी ओर जब तक इस मुकदमे का फैसला नहीं हो जाएगा, तुम लोगों को कहीं से भी एक नया पैसा तक नहीं मिल पाएगा—न मिल से, न बीमा कंपनी से।”

अब सबके चेहरों पर घबराहट छप-सी गई, जिसे पढ़ने में नेताजी की घाघ आँखों को तनिक भी देर नहीं लगी। उसने जान लिया कि अब लोहा पूरी तरह गरम हो चला है और उस पर इसी समय हथौड़ा चला देना चाहिए। सो नजीर खाँ ने वही किया। वह बोला, “और सबसे बड़ा पहाड़ जो तुम लोगों पर टूटेगा वह यह कि तुम लोग इस क्वार्टर से धक्के मारकर निकाल बाहर कर दिए जाओगे।”

नूरी नेताजी की इन बातों को और बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने पहले भी इस बेमेल रिश्ते का विरोध किया था और आज भी वह विरोध ही करती, अगर उसका बेटा बेंगा जिंदा होता। मगर, अभी तो नेताजी की बातचीत सत्तार से हो

रही थी। अब सत्तार ही इस घर का मालिक था। वह जैसा चाहे करे या उसकी माँ की जैसी मरजी हो—वह करे। अब नूरी अपने भीतर किसी को रोकने-टोकने की कूबत नहीं पा रही थी, अतः वह भी शकीला की ही तरह उठकर आँगन की तरफ चली गई।

“सत्तार, मैं तुम मोगों को जितना समझा सकता था, मैंने समझा दिया। बाकी तुम लोग खुद समझो कि तुम लोगों के हक में क्या है।” इतना कह नजीर खाँ उठ खड़ा हुआ और बाहर निकलने लगा। अचानक पीछे मुड़कर वह पुनः बोला, “सत्तार, तुम्हें यह गलतफहमी नहीं होनी चाहिए कि तुम्हारी बहन शकीला कोई जन्नत की हूर है, जिसके बगैर मैं मर जाऊँगा। मगर, यह एक हकीकत है कि मेरी मदद के बगैर तुम लोग कुछ भी नहीं कर सकोगे। तुम लोगों को दर-दर की ठोकरें खानी होंगी। माँगने पर तुम लोगों को कोई भीख भी नहीं देगा। इस पूरे कानपुर शहर में अगर तुम लोगों को कोई पनाह, मदद, इज्जत और रुतबा दे सकता है—तो वह सिर्फ मैं हूँ—नजीर खाँ।”

यह बोलकर नजीर खाँ तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ा। फातिमा बिजली की तरह उठी और नजीर खाँ के सामने आकर खड़ी हो गई। उसने गमगीन आवाज में अनुरोध करते हुए कहा, “सत्तार की बातों का आप बुरा मत मानिएगा। अभी यह नया-नया लड़का है। इसके ऊपर अचानक मुसीबत का यह पहाड़ टूट पड़ा है। यह बेचारा क्या जाने कि अपने से बड़ों के साथ कैसे पेश आना चाहिए।”

“ठीक है। अभी तो मैं जा रहा हूँ। आप लोग अच्छी तरह सोच-समझकर अपना फैसला मुझे जल्द बता दीजिएगा।” और नेताजी ने अपने कदम आगे बढ़ा दिए।

“मैं आपसे एक अर्ज करना चाहती हूँ।” फातिमा अपना आँचल फैलाकर नजीर खाँ के सामने खड़ी हो गई।

“बोलिए।” नजीर खाँ रुक गया।

“कम से कम सत्तार के अब्बा का चालीसवाँ तो गुजर जाने दीजिए।” फातिमा ने गीली आवाज में कहा।

“ठीक है। मैं कर लूँगा इतना इंतजार।”

नजीर खाँ अपनी कार की तरफ बढ़ गया। उसके जाते ही आँगन से शकीला के जोर-जोर-से रोने की हृदयविदारक आवाज सत्तार और फातिमा के कानों से टकराई।

सत्तार और फातिमा दोनों घबराकर आँगन की तरफ दौड़े।

